व्यापार-दर्पण

लेखक—

छविनाथ पाण्डेय बी.ए., एल. एल. बी.

—*—

प्रकाशक—

अखिल भारतवर्षीय

मारवाड़ी अग्रवाल महासभा

१६०, हरिसन रोड,

कलकत्ता।

प्रथमबार १०००]   श्रावण १९८२   [मूल्य सजिल्द २)

प्रकाशक—
वसन्तलाल मुरारका
मन्त्री
अ०भा० मारवाडी अग्रवाल महासभा
१६०, हरिसन रोड,
कलकत्ता ।

मुद्रक—
किशोरीलाल केडिया
वणिक् प्रेस
१, सरकार लेन
कलकत्ता ।

निवेदन

महासभाने इससे पूर्व 'व्यापार-सगठन' नामकी पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसमें व्यापारके प्राय सभी आवश्यक अगों-पर विचार किया गया था, किन्तु दु खकी बात है कि व्यापारिक जनताने उसे जैसा अपनाना चाहिये था वैसा नहीं अपनाया। किन्तु महासभाका उद्देश्य है कि व्यापारी जनतामें व्यापार-सम्बन्धी विषयोंका प्रचार किया जाय, अत इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये वर्तमान पुस्तक व्यापारी समाजके सम्मुख रखी जा रही है।

इस पुस्तकमें व्यापारियोंके कामकी बहुतसी ऐसी बाते हैं जिनकी उन्हें हमेशा आवश्यकता पडा करती है। आरम्भमे भारतकी वर्तमान आर्थिक अवस्थापर विचार करते हुए यह बतलाया गया है कि यहाके कृषि तथा उद्योग-धन्धे दोनोंकी उन्नति के लिये किन किन सुधारोंकी आवश्यकता है। इसके बाद भारत-के प्रधान प्रधान बन्दरगाहों तथा व्यवसायकेन्द्रोंका वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् यह दिखलाया गया है कि भारतमें कौन कौन वस्तु किस-किस परिमाणमें आती है और कौन-कौन वस्तु किस-किस परिमाणमें यहासे बाहर जाती है। लड़ाइके पहले यहाके आयात-निर्यातकी क्या अवस्था थी, बाद कैसी रही,

और अब कैसी है—इन सब बातोंपर विशद् रूपसे प्रकाश डाला गया है। हरेक सच्चे व्यापारीको इन सब बातोंका जानना बहुत ही आवश्यक है। इसके बाद भारतमें व्यापारकी कौन-कौनसी मण्डियां हैं और वहां कौन-कौनसी वस्तुओंका विशेष रूपसे व्यवसाय होता है और वह मण्डी रेलसे कितनी दूर है, आदि आवश्यक बातोंका वर्णन किया गया है। अन्तमें विलायती हुंडियोंका हिसाब ठीक करनेके लिये एक्सचेंज टेबुल दिये गये हैं और किस बन्दरसे कौनसा माल किस प्रकारसे किस परिमाणमें जाता है, इसकी तालिका दी गयी है। रेलवे-सम्बन्धी खास-खास नियमोंका भी उल्लेख कर दिया गया है, जिससे व्यापारियोंको अपने हर रोजके व्यापारमें जो कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं उनमें कमी हो जाय। तात्पर्य यह कि हर प्रकारसे इस बातकी चेष्टा की गयी है कि व्यापारियोंको अपने व्यापारमें सुविधा हो। हां, कई एक आंकड़े कुछ पुराने हो गये हैं, किन्तु यदि पाठकोंने हमारे इस प्रयासको अपनाया तो हम चेष्टा करेंगे कि आयात-निर्यातके नये आंकड़े देकर एक विशेष पुस्तिका द्वारा इस कमीको पूरा कर दें। आशा है, पाठकगण हमारे व्यापारिक पुस्तकें निकालनेके इस उद्योगको अपनाकर हमें आगे भी ऐसी ही पुस्तकें निकालनेके लिये उत्साहित करेंगे।

विनीत—

प्रकाशक।

विषय-सूची

प्रथम परिच्छेद

भारतकी वर्त्तमान आर्थिक दशा

भारत कृषि प्रधान देश है। ३२ करोडमेंसे प्राय बाईस करोड निवासी केवल कृषिके बल जीते हैं और यही इस देशका प्रधान उद्योग-धन्धा रहेगा। इसलिये इस देशकी व्यवसायिक चर्चा करते समय यहाकी कृषिकी अवस्थाको लक्ष्यमें रखकर ही कुछ कहा जा सकेगा। बल्कि यों कहिये कि यहाकी आर्थिक व्युत्पन्नता और व्यवसायिक सम्पन्नताका मूल आधार कृषि है।

१९१९-२० के आकडोंके देखनेसे विदित होता है कि भारतमे कितनी एकड भूमिमें खेती की गई थी। नीचे जो आकडे दिये गये हैं उनमें गेहूं, कपास और पाटके अतिरिक्त देशी राज्योंके आकडे शामिल नहीं किये गये हैं।

चावल	७६४	लाख एकड
गेहू	२६६	„ „

कपास	. .	२३३	लाख एकड़
ज्वार		२२४	,, ,,
तेलहन	...	१४८	,, ,,
बाजरा	...	१४५	,, ,,
चना		१२६	,, ,,
जव		७४	,, ,,
भुट्टा	. .	६६	,, ,,
पाट	. .	२८	,, ,,
गन्ना	. .	२७	,, ,,

भोजनकी सामग्रीमेंसे चावल, गेहू और जवका चालान बाहर जाता है। मिलजुमले पैदावारका १०वां भाग गेहू और ७वा भाग चावल विदेशोंमें चला जाता है। कपासकी पैदावारमेंसे आधीसे भी अधिक विदेश चालान जाती है। तेलहनकी रपतनी इसके अनुसार कम या वेशी होती है। तीसी प्राय. कुलकी कुल विदेश चली जाती है। यहां इसका बहुत कम प्रयोग होता है। मूंगफली, राई और तिलीके प्राय पांचवें हिस्से बाहर जाते हैं। इस तरह कुलमें तेलहनकी रपतनी सबसे अधिक होती है। पाटका चालान भी अभी आधी पैदावारके करीब होता है। पर जिस तरह पाटकी मिलें खुल रही हैं उससे आशा है कि कच्चे मालका चालान कम होते होते रुक जायगा।

लोगोंका मत है कि यहाके किसान खेतोंसे उतना माल नहीं

पैदा करते जितना अन्य देशवाले करते हैं अथवा जितना यहाके खेतोंसे निकल सकता है। इण्डस्ट्रियल कमीशनके सदस्योंने भी इस बातपर जोर दिया है कि अभी बहुत कुछ गुंजायश बाकी है। गन्ना और चीनीका व्यापार इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। चीनीके व्यापारकी वास्तविकताकी जाचके लिये जो कमीशन बैठा था उसकी रिपोर्ट है कि क्यूबा और जावामें जितनी चीनी पैदा होती है उसका यहा एक तिहाई और छठा हिस्सा चीनी पैदा होती है। यही हाल चावल, गेहू और कपास आदिका भी है।

यद्यपि कृषि-प्रधान देश होनेसे कच्चा माल यहा इफरात होता है फिर भी अभी पैदावार बढानेकी गुंजायश है। गल्लाकी पैदावारसे देशभरका भरण पोषण होकर भी विदेश कुछ सामान जा सकता है। कपासकी पैदावार इतनी है कि आधी तो यहाकी मिलोंमें खपती है और आधी चालान जाती है। पाटका तो यह भाण्डार है। यहींके पाटसे ससारभरका काम चलता है। तेलहन इतना पैदा होता है कि यहाकी सम्पूर्ण आवश्यकता पूरी करके भी बहुतसा माल विदेशोंमें भेजा जाता है। ससारकी हाटमें चायकी जितनी बिक्री है उनका ४० प्रति सैकडे यहासे जाता है। गन्नेकी खेती भी इतनी होती है कि यहाकी आवश्यकता भर खांड, गुड और सीरा (जिसकी खपत चीनीसे सात गुनी अधिक है) पैदा हो जाता है।

यह तो यहाकी कृषिकी अवस्था है। अब कल कारखानोंकी

अवस्था देखिये। वर्तमान समयमें यहा दो प्रकारके बडे बडे कारखाने हैं—सूत और पाटके। १९१९ में—इसी वर्षको हमने गणनाके लिये लिया है—यहा २७७ सूत कातने और कपडा बिननेके कल कारखाने थे, जिनमें ३०६,३१० आदमी काम करते थे। ऊपरके आकडेमें उन १४०, ७८६ आदमियोंकी गणना नहीं की गई है जो १९४० कपास साफ करनेवाली कलोंमें काम करते हैं। इसी तरह पाटके ७६ कारखाने थे जिनमें २७६,०७९ आदमी काम करते थे। इस आकडेमें भी उन ३३, ३१६ आदमियोंकी शुमार नहीं की गई है जो २११ पाट साफ करनेवाले और गाठ बाधनेवाले कारखानोंमें काम करते थे। इन दोनोंके बाद रेलवे कल-कारखानों और चावल कूटनेके कारखानोंका स्थान है जिनमें क्रमश १२६, १३४ और ४८,५६३ आदमी काम करते हैं। इसके बाद छोटे छोटे कल कारखानोंका स्थान है; जैसे इञ्जीनियरिंग वर्क-शाप, चमडे सिझानेका काम, कपडा बनानेके कारखाने, लोहा ढालनेके कारखाने, तेल निकालनेके कारखाने हैं। हर तरहके कारखानोंको मिलाकर यहा कुछ १३६७, १३६ आदमी काम करते हैं। ऊपर जो ब्यौरा दिया गया है उसमे कोयलेकी खानोंमें काम करनेवाले मजूरोंकी गणना नहीं की गई है और न उन मजूरोंकी गणना की गई है जो देहातोंमें छोटे छोटे कल कारखानोंमें काम करते हैं, क्योंकि केवल कोयलेकी खानोंमें प्राय २०३, ७५२ मजूर और देहातोंमें (चरखे और करघेमें) २० लाखसे भी अधिक आदमी काम करते हैं।

यही भारतके कल कारखानोंकी अवस्था है। इन कल कारखानोंको चलानेके लिये जिन साधनोंकी जरूरत पडती है उनका भी थोडेमें यहींपर दिग्दर्शन करा देना उचित होगा।

(१) कल कारखानोंको चलानेके लिये ईंधनकी आवश्यकता पडती है। ईंधनकी सामग्री प्रधानतया तीन हैं—(१) कोयला (२) जल शक्ति और (३) तेल। कोयलेकी खानें जिस तरह निकल रही हैं उससे यह पूरी आशा की जाती है कि व्यवसायिक उन्नतिमें इनसे पूरी सहायता मिलती रहेगी। यद्यपि व्यवसायिक केन्द्रोंके आस पास ही कोयलेकी खानें नहीं हैं फिर भी व्यवसायपर इसका बहुत बडा असर साधारण अवस्थामें नहीं पड सकता। जलप्रपातसे बिजलीकी जो शक्ति निकाली जायगी उससे भी भविष्यमें व्यवसायकी सहायताकी अच्छी आशा की जा सकती है। तेलका अभीतक कुछ भी भरोसा नहीं किया जा सकता, क्योंकि बलूचिस्तान तथा पञ्जाबमें तेल निकलनेवाली जमीनका मूल्य इस समय इतना महगा हो रहा है कि उनसे तेल निकालकर कल कारखानोंके चलानेका काम नहीं लिया जा सकता। आसाममें तेलकी जो खानें हैं उनमें आशाजनक काम नहीं हो रहा है। मध्य आसामके बदरपुर स्थानमें जो नई खानें निकली हैं उनकी उपयोगिता अभीतक अविदित ही है। बर्माकी खानोंसे अन्धाधुन्ध काम लिया जा रहा है पर किसी न किसी दिन उनका भी अन्त होगा। उस समय क्या किया जायगा, यह समझमें नहीं आ रहा है, क्योंकि नई

खानें नहीं निकल रही हैं। हा, इस देशमें जंगल इतने अधिक और विस्तृत हैं कि उनकी लकडियोंका प्रयोग ईंधनके लिये बडे मजेमें किया जा सकता है और सुविधा भी हो सकती है। पर इसमें भी एक कठिनाई है। कल-कारखानोंके केन्द्रों और लकडियोंके उपजनेके स्थानोके बीच इतना अधिक अन्तर है कि सुभीतेसे काम नहीं हो सकता। फिर भी इस समय जो अवस्था है उसे देखकर यही कहा जा सकता है कि कल कारखानोंकी उन्नत्तिमें ईंधनकी व्यवस्था किसी तरहकी बाधा उपस्थित नहीं कर सकती।

(२) दूसरा साधन मजूर हैं। मजूरो की अवस्था बडी ही चिन्ताजनक है। इस सम्बन्धमें अकालके कारणोंकी जाच करनेके लिये जो कमीशन बैठा था उसने अपनी रिपोर्टमें जो कुछ लिखा है उसे उद्धृत कर देना अनुचित न होगा। कमीशनने लिखा है.—"देहातो में खेतो में काम करनेवाले मजूरोंकी सख्या इतनी अधिक है कि अनुमान नहीं किया जा सकता। अधिकसे अधिक उत्पादन करनेके लिये भी इतने मजूरोंकी आवश्यकता नहीं पड सकती।" इतनेपर भी कल-कारखानेवालोंको सदा मजूरोंके लिये परेशान होना और सिर पीटना पडता है। उन्हें कामभरके लिये मजूर कभी भी नहीं मिलते। इस विषम अवस्थाके दो प्रधान कारण मालूम होते हैं। पहला कारण तो यह है कि जिन नगरो में कल कारखाने खुले हैं वहा पहलेसे ही मजूरो का टोटा है। इसलिये बाहरसे मजूरो को

मगाना पडता है। इस तरह नये लोगो के आनेसे जनसंख्यामें जो वृद्धि हुई उसके अनुसार रहनेके लिये जगहका बन्दोबस्त नही हो सका। अहमदाबाद और बम्बईके कपडेके कारखानोंमें मजूरोंकी तंगीके यही दो प्रधान कारण हैं। एक तो उनके रहनेके लिये उचित जगहका प्रबन्ध नही है, दूसरे वहाकी सामाजिक परिस्थिति उनके अनुकूल नहीं है। इन विपरीत अवस्थाओंके कारण जो मजूर वहा काम करने जाते हैं वे अधिक दिनतक टिक नहीं सकते और थोडे दिन काम करनेके बाद ही फिर देहातोंमें लौट जाना चाहते हैं। यदि ये असुविधायें दूर कर दी जाय तो मजूरोंकी कमीका प्रश्न आसानीसे हल हो जाय।

इसके अतिरिक्त दूसरा भी कारण है जो मजूरोंके काफी परिमाणमें न मिलनेमें सहायक हो रहा है। यह मजूरोंके स्वभावमें ही जम गया है। एक तो मजूर अपने पैतृक घर-बारको सहजमें छोडकर दूर देशमें काम करनेके लिये जाना नहीं चाहते। पुत्र कलत्रका मोह उन्हें इस तरह बाध रखता है कि वे अपनी जगहसे हट नहीं सकते। दूसरे उन्हें बंधे तोरपर काम करनेकी आदत नहीं। वे स्वच्छन्द रहकर अपनी इच्छाके अनुसार काम करना अधिक पसन्द करते है। पर अधिक सुविधा और आरामके सामने यह बाधा भी धीरे धीरे दूर हो सकती है। इससे पूरी आशा की जाती है कि कल कारखानोंकी बढतीके साथ साथ यदि मजूरोंके लिये उचित

सुविधायें कर दी जाय तो उनकी कमी नहीं पड सकती और इस तरह देहातोंके बेकार मजूर कारखानोंमें काम करके राष्ट्रकी सम्पत्तिको और भी अधिक बढ़ावेंगे।

(३) तीसरा साधन कच्चा माल है। इस विषयमें यह देश संसारके सभी देशोंसे सम्पन्न है। वर्त्तमान समयमें अनेक राष्ट्रोंके कल-कारखाने केवल इस देशकी बदौलत चलते हैं। अगर इस देशसे कच्चे मालका भेजा जाना बन्द कर दिया जाय तो कितनोंका काम बन्द हो जाय।

(४) माल तैयार होनेके बाद खपतकी चिन्ता पडती है। लोग बाजार ढूढते हैं। सौभाग्यसे इस देशके कारखानेवालोंको इसकी भी चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी, क्योंकि वे जितना माल तैयार करेंगे सबकी खपत यहीं हो जाया करेगी। भीतरी आवश्यकता पूरी तरहसे मिटा देनेके बाद उनके पास बहुत कम तैयार माल रह जायगा जिसे बेचनेके लिये उन्हें बाजार खोजना पडेगा। माल भेजनेके लिये सवारीकी भी शिकायत नहीं है। रेलवे सिस्टम इतना प्रौढ हो गया है कि अब मार्गमें किसी तरहकी कठिनाई उपस्थित नहीं हो सकती। व्यवसायिक उन्नतिके साथ साथ रही सही कमी भी पूरी हो सकती है।

(५) पाचवा साधन पूजी है। कुछ दिन पहले यहाके धनी महाजन वाणिज्य व्यवसायमें रुपया लगानेसे डरते थे। बैंकोंमें जमा करके ६) सैकडे सूद खाना या हुण्डी चलाना वे इससे कहीं अच्छा समझते थे, क्योंकि उनकी यही धारणा थी कि

व्यवसायमें जो रुपया लगाया जायगा वह डूब जायगा। पर धीरे धीरे वह अवस्था भी दूर हो गयी। अब लोग इस तरफ आने लगे हैं और कारखाना आदि खोलनेमें बड़ी उदारताके साथ धन-व्यय करनेके लिये तैयार रहते हैं।

भारतका विदेशी व्यापार भी दिन दिन उन्नतिपर है। १८६४-५ से १८६८-६ अर्थात् इन पाच वर्षोंमें आयात निर्यातसे औसत आमदनी ८७५६ लाख रुपयेकी हुई। १६०६-१० से १६१३ १४अर्थात् इन पाच वर्षो में आयात तथा निर्यातसे औसत आमदनी ३७५,६० लाख रुपया हुई। लडाईके ठोक पहलेकी आमदनी ४४०,३३ लाख रुपये थी। १६१६-२० में वही आमदनी ५३४,७६ हो गई और १६२० २१में वही आमदनी बढकर ५६१,६४ लाख हो गई। १६२१ २२ में कई कारणोंसे व्यापार मन्दा रहा और केवल ५१०,०५ लाख रुपयेकी आमदनी हुई। युद्धके बाद आमदनीके एकाएक बढ जानेका प्रधान कारण यह है कि वस्तुओं का मूल्य बढ गया है। वजनके हिसाबसे १६१३ १४ के बनिस्वत १६२०–२१ में बहुत कम माल आया और गया।

विदेशी व्यापारका ब्यौरा देखनेसे प्रगट होगा कि बाहरसे माल आया है कम पर यहासे भेजा गया है अधिक। नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि प्रतिवर्ष जो माल यहा मगाया जाता है उसका मूल्य काटकर आयातसे कितनी आमदनी होती है और उसमेंसे कितनेका प्रतिवर्ष सोना और चादी आता है।

	सन १९०९-१० से सन १९१३–१४	सन १९१४ १५ से सन १९१८–१९	१९१९-२०.
ाल जो बाहर भेजा गया।	७२५६ लाख	६६५८ लाख	१११०६ लाख
ख़जाना जो बाहरसे आया।	३८८८ ,,	३१७७ ,,	६४,५६ ,,
ायातसे जो अधिक आमदनी हुई	३३८८ ,,	३४८१ ,,	४६ ५० ,,

१९२० २१ में यह अवस्था एक दमसे बदल गई। जहा ३० से ४० करोड तकका माल अ धक जाता रहा वहा ८६ करोडका माल अधिक आगया। १९२१-२२ में भी निर्यातसे आयात ४४ करोड अधिक रहा। अवस्था धीरे धीरे सुधर रहीं हैं।

नीचेकी तालिकामें आयात और निर्यातका व्यौरा दिया गया है।

आयात	१९०९-१०से १९१३-१४	१९१४-१५से १९१८-१९	१९१९-२०	१९२०-२१	१९२१ २२
	लाख रुपया	लाख रुपया	ला०रु०	ला०रु०	ला०रु०
खाने पीनेकी वस्तु और सुरती	२१८५ ,,	२६३९ ,,	४१,१३ ,	३५ ९७ ,,	५०,९२ ,,
कच्चा माल	१०,०३ ,,	९,५२ ,,	१७,३७ ,,	१७,११ ,,	२२,०१ ,,
तैयार माल	१११,८० ,,	१०८५६ ,,	१४५,२५,,	२७४,९७ ,	१८६,४७ ,,
फुटकर	२,१७ ,,	३,३३ ,,	४ २९ ,	७,५५ ,	४,३२ ,,
सरकारीसामान	५,८२ ,,	११,४५ ,,	१३,७३,,	११,५४ ,,	१४,५७ ,,
कुलजोड़	१५१,६७	१५९,२५	२२१,७०	३४७,१४	२८७,५०

निर्यात					
खाने पीनेकी चीजें तम्बाकू	६२,६७ला०रु०	५६,५७ला०रु०	ला०रु० ४२,२३ ,	ला०रु० ४३,२७	ला०रु० ५२,२१
कच्चा माल	१०२ ५३ ,,	८४,६६ ,	१५६ ८३ ,,	१०३ ४३ ,	१०६,७३ ,,
तैयार माल	५१ ८८ ,,	६६ ४० ,,	१०३ २५ ,,	८६,६१ ,,	६१,६७ ,
फुटकर	२,१२ ,,	२,०४ ,,	३,७१ ,,	४,२६ ,,	४,६४ ,,
सरकारीसामान	११ ,	१,७२ ,,	५,६६	६,५६ ,,	३,२१ ,,
कुल जोड	३७१ २८	३८७ १४	५३६,६८	५६५,०३	५१३ २६

ऊपरकी तालिका देखनेसे विदित होता है कि आयातमें सबसे गहरी मद तैयार मालकी है। आयातका ७० से ८० प्रतिसैकडे तैयार माल है। दूसरा स्थान चीनीका है जो खाने पीनेकी वस्तुओंके मदमें आ जाती है। निर्यातकी रकम सब मदोंमें प्राय बराबर है। निर्यातके मदमें ४० से ५० प्रतिसैकडे तो केवल कपास, पाट, तेलहन, खाल, चमडा है। तीस प्रतिसैकडे तैयार माल है और २० प्रतिसैकडे खाने पीनेकी चीजें हैं। तैयार मालमें सूत और सूती कपडा है। ८ प्रतिसैकडे लोहा और इस्पात है। ६, ७ प्रतिसैकडे मशीनरी और ४ प्रतिसैकडे रेलवेके सामान हैं।

ऊपर हमने जो तालिका दिखाई है उससे स्पष्ट है कि तैयार मालके लिये हमें विदेशोंपर ही निर्भर रहना पडता है। हम कच्चा माल थोडे मूल्यमें बेचकर तैयार माल अधिक दाम देकर

खरीदते हैं। इसका परिणाम कई तरहसे बुरा हो रहा है। एक तो देशकी लक्ष्मी बाहर चली जा रही है, दूसरे यहाके मजूरोंको काम नहीं मिल रहा है और वे भूखों मर रहे हैं, तीसरे हम अपने पैरों खडे होना नहीं सीख रहे हैं। इसलिये आवश्यकता इस बातकी है कि हम काफी सख्यामें कल-कारखाने खोलकर अपनी व्यवसायिक उन्नति पूरी कर लें। व्यवसायिक उन्नतिसे हमें निम्नलिखित लाभ होंगे।

(१) व्यवसायिक उन्नतिसे देशकी सम्पत्ति बढ जायगी और देश धनी हो जायगा, क्योंकि अभी जो रुपया हम लोग विदेशी तैयार माल खरीदनेमे लगाते हैं वह—या उतने सामानके लिये उससे कम—अपने ही देशके व्यापारियोंको देंगे। इस तरह घरकी रकम घरमें ही रह जायगी। उद्योग धधोंके खुल जानेसे मजूरोंको काफी काम मिलने लग जायगा और खेतीके सहारे जितने रहते हैं उतने नहीं रहेंगे।

(२) जो फालतू रुपया इधर उधर लगाया जाता है अथवा बेकार पडा रहता है वह काममें लग जायगा और उसकी उत्पादक शक्ति बढ़ जायगी। उद्योग-धधोंके खुल जानेसे रुपयोंकी वृद्धि होगी और नये नये उद्योग धधे खुलते रहेंगे। इस तरह देशका धन वर्गवृद्धिके हिसाबसे बढता रहेगा।

(३) मजूरोंका प्रयोग अच्छी तरहसे होने लगेगा। अभी तो जहा काम है वहा मजूर नहीं है और जहा मजूर हैं वहा काम नहीं है। पीछे जैसा हमने बतलाया है मजूरोंकी समस्या आसानीसे हल हो जायगी। मजूरोंका उचित तरहसे प्रयोग

होनेसे देशकी उत्पादनकी योग्यता बढ जायगी। इससे मजूरोंको अधिक वेतन मिलने लगेगा जिससे उनकी आर्थिक दुरवस्था मिट जायगी। उद्योग धधोंके खुलनेसे गावोंके मजूर शहरोंमें आ जायगे। इससे गांवोंमें भी सघर्ष कम हो जायगा और देहातके मजूरोंको अधिक वेतन मिलने लगेगा।

(४) उद्योग धधोंकी वृद्धिसे एक लाभ यह भी होगा कि सरकारी आमदनी बढ जायगी और सार्वजनिक सुधारकी अधिक योजना होगी। इस समय सुधारके लिये जिस किसी तरफ हाथ बढाया जाता है आर्थिक कठिनाई वहीं आ उपस्थित होती है। कितने सुधार जो हर तरहसे आवश्यक और अभिवाञ्छित हैं केवल रुपयेके अभावके कारण नहीं किये जाते। पर उस अवस्थामें यह शिकायत न रहेगी। सरकारी आमदनी बढ जायगी और सुधारकी योजना की जायगी।

(५) उद्योग धधोंकी उन्नति विना हममें राष्ट्रीयताके भाव उदय नहीं हो सकते। हम शक्तिसम्पन्न नहीं हो सकते। हममें आत्मबल नहीं आ सकता।

इसलिये आवश्यकता इस बातकी है कि यहा अधिकाधिक उद्योग धंधे खोले जाय, मालका मंगाना बन्द किया जाय और कच्चे मालका बाहर भेजना रोका जाय। इससे प्रत्येक व्यक्तिका कल्याण होगा, जनसमुदायका कल्याण होगा और राष्ट्रका कल्याण होगा। व्यापारमें प्रवृत्त होनेके लिये जिन साधनोंकी आवश्यकता है वे कहासे प्राप्त हो सकते हैं, उनका उपयोग किस तरहसे किया जाता है आदि बातोंका विस्तृत दिग्दर्शन आगेके परिच्छेदोंमें कराया गया है।

द्वितीय परिच्छेद

बन्दरगाह और व्यवसायकेंद्र

(क) बन्दरगाह

प्रकृतिने अवनीतलके इस खण्डपर—जिसे भारतवर्ष कहते हैं, जिसका हमें अपनी मातृभूमि कहनेका अभिमान है—अधिक कृपादृष्टि दिखलाई है, इसे सब साधनोंसे भरपूर कर दिया है। भूगोलसे अनुसधान किया जाय तो मालूम होता है कि उत्पादनकी जितनी अधिकता इसमें है और कहीं नहीं है। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो इस देशमें पैदा न होती हो। इसीसे इस देशके निवासी किसी भी अन्य राष्ट्रपर निर्भर नहीं करते थे। सारा सामान अपने घरपर उपजाते थे और उसीको आपसमें बदलकर अपनी आवश्यकता पूरी करते थे। समयके चक्रमें पडकर युगका परिवर्तन हुआ। विदेशोंसे संबंध स्थापित हुआ। रुचिमें परिवर्त्तन हुआ। विदेशोंके साथ वाणिज्य व्यवसायकी आवश्यकता प्रतीत हुई। तब यह जाननेकी आवश्यकता पडी कि भारत विदेशोंके साथ व्यापारिक सम्बन्ध जोडनेके योग्य है कि नहीं।

विदेशोंके साथ व्यापारिक सबन्ध जोडनेके लिये दो बातें जरूरी हैं। पहले तो देशमें सामान बहुतायतसे पैदा होते हों और

दूसरे सामान ले जाने और ले आनेवाले साधनोंकी सुविधा हो। इन्हीं दोनों बातोंको लेकर हमें भारतकी व्यवसायिक योग्यताकी जांच करनी होगी।

उत्पादनके सम्बन्धमें तो हमने पहले ही लिख दिया है कि प्रकृतिने इस देशपर विशेष कृपा दिखलाई है। भगवती वसुन्धराने अपना भण्डार खोल दिया है। पैदावार बेशुमार होती है। पर व्यापार करनेके साधनोंकी सुविधा नहीं है। भारतके तीन ओर समुद्र है पर किनारा इतना पथरीला और छिछला है कि जहाजोंके खड़े होनेके लिये बन्दरगाहोंकी सुविधा नहीं। पश्चिमी किनारोंपरही कुछ बन्दरगाह ऐसे हैं जहां जहाजें आकर लग सकती हैं, पर बरसातके दिनोंमें उनका भी मुंह प्राय बन्द हो जाता है। केवल बम्बई, कराची और मार्मुगोआके बंदरगाह काम देते हैं। पूर्वी किनारेपर एक भी बन्दरगाह नहीं हैं। बड़ी कठिनाईके बाद अप्राकृतिक उपायोंसे काम लेकर समुद्रका पानी बांध द्वारा रोक कर मद्रासमें एक बन्दरगाह बनाया गया है जिससे बारह महीने काम लिया जा सकता है। इसके बाद हम और आगे बढ़ते हैं और कलकत्ताकी जांच करते हैं। कलकत्ता नगर जो गंगा नदीकी डेल्टाके मुंहपर बसा हुआ है सामुद्रिक व्यवसायका सबसे उत्तम स्थान हो सकता है। पर इसके मार्गमें दो कठिनाइयां हैं। एक तो यह समुद्रसे दूर है। दूसरे हुगली और चटगांवके पास कुछ प्राकृतिक बाधाएं ऐसी आगई हैं कि जहाजोंका मार्ग स्वतन्त्र नहीं रह गया है। रंगूनमें भी वही सुविधा है। कलकत्ताकी भांति

यह भी उत्तम व्यवसायिक केन्द्र हो सकता है। इसके अनेक नगर जैसे रगून, मौलमीन, वेसिन, टवाय—नदीकी डेल्टामेंही वसे हैं, समुद्रसे वहुत दूरीपर नही हैं। इन सब सुविधाओंके रहते भी एक कठिनाई इतनी भीषण आ पडी है कि उनकी महत्तापर पानी फिर गया है। भीतरसे माल यहातक पहुचानेका कोई भी उपयुक्त मार्ग या साधन नहीं है।

इस तरह बन्दरगाहोंका इतना वडा अभाव हो गया है कि भारतका सारा व्यापार केवल गिने गिनाये पाच वन्दरगाहों—वम्बई, कराची, कलकत्ता, रगून और मद्रास—के सिरपर पडता है। इनमें केवल कराची और वम्बईके वदरगाह प्राकृतिक हैं अन्य सवोंका निर्माण कराया गया है।

इतना लिखनेके वाद उचित होगा कि भारतसे सबध रखनेवाले अर्थात् जिन्हें हम भारतीय कह सकते हैं,उन सभी वदरगाहोंका नाम और स्थानका पता दे दें। इससेव्यवसायियोंके मार्गमें वडी सुविधा होगी। हम पश्चिमसे उठते हैं और पूर्वको चलते हैं।

अदन—पहला वन्दरगाह हमें अदनका मिलता है। लाल सागर तथा हिन्द महासागरसे जहा अदनकी खाडी मिलती है ठीक उसीके मुहानेपर यह वन्दरगाह है। अदन प्रान्त वम्बई सरकारके मातहत है फिर भी अदनकी गणना भारतके वन्दरगाहोंमें पूरी तरहसे नहीं होती। इस वन्दरगाहसे फ्रास, इटालीके नजदीकी उपनिवेश, अवीसिनीया, अरव, सूदान, फारसकी खाडी

तथा मोम्बासा आदि प्रदेशोंका व्यवसायिक संबंध है। जो माल इन देशोंको जानेवाला होता है वह यहीं उतर जाता है और इन प्रदेशोंसे आनेवाला माल यहीं जहाजोंपर चढ़ता है। इस बन्दरगाहसे सबसे अधिक लाभ अमरीका उठाता है। इस बन्दरगाहपर लदनेवाला माल अधिकांश अमरीका जाता है।

कराची—कराची बन्दरगाह बम्बई सूबाके सिन्ध प्रान्तमें है। भारतसे यूरोप जानेके लिये यह सबसे निकटवर्ती बन्दरगाह है। भारतका विदेशी व्यवसाय प्राय डेढ सौ वर्षों से इसी बन्दरगाहके द्वारा होता आया है। इतना होनेपर भी कराची बन्दरगाहसे विदेशी व्यापार बहुत कम होता है। १८७८ तक तो यह नहींके ही बराबर था। इस सन्‌के बाद पंजाबसे यहातक रेलकी लाइन बिछा देनेके बाद यह बन्दरगाह कुछ चमका। इस बन्दरगाहपर अधिकतर रूई, गेहू, जव, तेलहन, ऊन, खाल और जानवरोंकी हड्डिया लदती हैं। जो माल यहा उतरता है प्राय सरकारी होता है और वह नार्थ वेस्टर्न रेलवेके काममें आता है। ऊनी और सूती कपडे, चीनी, लोहा, फौलाद, मिट्टीका तेल और कोयला यहा उतरते हैं।

रेलकी सुविधा—क्वेटा और सक्खरसे होती हुई एक सीधी रेलवे लाइन कराची आई है। हैदराबाद (सिंध) में जोधपुर बीकानेर रेलवेका इससे मिलान है। इसके अतिरिक्त सिन्ध प्रान्तमें एक छोटी लाइन काम करती है।

१९०७ के बादसे कराचीके बन्दरगाहसे खूब रोजगार होने

लगा है। और यह रोजगार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है
नीचे जो तालिका दी जाती है उससे मालूम होगा कि कराच
बन्दरगाहका रोजगार दिन प्रति दिन किस तरह बढ़ता ज
रहा है।

कराची।

सन्	आयात (पौंडमें)	निर्यात (पौंडमें)
१८६७ ६८	५,८०७,१५६	४,८४८,०२०
१९०२ ०३	७,७३२,०९९	६,९४७,०१५
१९०७ ०८	१४,४४०,१२७	७,४२८,४२२
१९१२ १३	१६,६०३,२२५	२४,६८०,८४७
१९१३ १४	१७,७४३,८४४	१९ ७८२,०४९
१९१४-१५	१४,०८०,९५४	१५,५९६,२४८
१९१५-१६	१३,८६६,७०४	१५,४०१,८५१
१९१६-१७	१२,२०६,४६८	१९,१३९,४२४
१९१७ १८	१५,३५७,७१३	२४,५५९,०९१
१९१८ १९	१३,७२९,५५६	१९,०२४,०१३
१९१९-२०	२२,३६०,९९२	१९,०८०,९२३
१९२०-२१	३३,५७९,८४५	२०,०६९,५२७
१९२१-२२	२८,८८७,१६५	१४,५९८,९४०
१९२२-२३	२४,६८२,२९६	२२,५६६,६८८

कराची बन्दरगाहको बढ़ाकर सर्वोत्तम बन्दरगाह बनानेके लिये जो बन्दोबस्त किया गया है उसमें प्राय २७१०००००) रु० खर्च होंगे। युद्धकी वजहसे यह काम अबतक रुका रहा पर अब शीघ्र ही हाथमें लिया जायगा। इसका श्रीगणेश तो एक तरहसे कर दिया गया है।

बम्बई—बम्बई बन्दरगाह भारतके बन्दरगाहोंमें सबसे प्रधान है। प्रकृतिका इसे परम प्रिय पुत्र कहना चाहिये। बम्बईका अतीत इतिहास गौरवशाली नहीं है। केवल १८३८ के बाद बम्बईपर लोगोंकी दृष्टि पड़ने लगी। इसी साल एक ओर तो इङ्गलैण्डके साथ बम्बईका सबंध स्थापित किया गया और दूसरी ओर रेल लाइनों द्वारा बरार आदि रूई उपजानेवाले तथा पजाब और संयुक्तप्रान्त आदि गेहू उपजानेवाले प्रदेशोंके साथ इसके सबंधकी व्यवस्था की जाने लगी। अमरीकाके गृह कलहके बादसे बम्बईका बन्दरगाह रूईके व्यापारके लिये सबसे आगे बढ गया।

रेलकी लाइनें—गुजरात और उत्तरी भारतसे होकर बम्बई बडौदा और मध्यभारत रेलवे लाइन आई है। दक्खन, मध्य भारत, गङ्गाका मैदान, कलकत्ता तथा मद्रासले ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे आई है। बम्बई बन्दरगाहसे प्रधानतया रूइ, कोयला, खाल, सुन, अनाज, तेलहन लदकर बाहर जाता है, और विदेशोंसे सोना, चादी, सुती कपडा, बिसातीखाना, धातु, मशीन, कलपुर्जे, मिट्टीका तेल, चोनी और लकडी इस बन्दर

गाहपर उतरते हैं। इसी बन्दरगाहसे होकर यात्री लोग हजाज जाते हैं। फारसकी खाडीमें जितने बन्दरगाह हैं सबके साथ इसका व्यवसायिक संबंध है।

नीचे जो तालिका दी जाती है उससे विदित होगा कि बम्बईके बन्दरगाहसे कौन कौनसा माल कितनी संख्यामें बाहरसे आता है और बाहर जाता है।

बम्बई।

सन्	आयात (पौंडमें)	निर्यात (पौंडमें)
१८९७ ९८	३४८५०,३३०	२८८८९,२६०
१९०२-०३	३८,५६२,०००	३९१०४,४६०
१९०७-०८	६०,८५२,३३०	४६,७११,०००
१९१२-१३	८५,४७१,६६०	५६,९२२,६६०
१९१७ १८	७९,६४२,६६०	७० ९२१,६००
१९१८-१९	९६,१५३,६५८	६७,२७५,०००
१९१९ २०	११६,३७९,४०३	१०७,८६५,९८१
१९२० २१	१३७,१०९,११०	९२,५१३,४९१
१९२१-२२	११३,४९८,१९६	८९,८९३,२९७
१९२२ २३	१२३,४४५,३३२	९३,५७१,३११

बम्बई बन्दरगाहके बढानेकी भी व्यवस्था हो रही है।

मारमुगोआ—मारमुगोआ बन्दरगाह बम्बईसे दक्षिणकी ओर प्राय तीन सौ मीलकी दूरीपर है। यह बन्दरगाह पर्तगाल

सरकारके राज्यमें पड़ता है। भारतीय पुर्तगाल रेलवेका यहीं नाका है। इसकी उन्नति अभी हालमें ही हुई है। यहाका प्रधान व्यवसाय आयात है। मैसूर, हैदराबाद (दक्खिन) दक्षिन, बम्बई की पैदावार खासकर रूई यहासे बाहर जाती है। हालमें रूईकी रफ्तनी रुक गई है। बसराके लिये नमक, लकड़ी यहींसे लदकर जाते हैं।

इन प्रधान बन्दरगाहोंके अतिरिक्त और भी अनेक छोटे छोटे बन्दरगाह हैं जहासे साधारण व्यापार होता है। बरसातके दिनोंमें ये बन्दरगाह प्राय बन्द रहते हैं। केवल आठ महीने यहा जहाज आते और जाते हैं। इनमेंसे कुछ प्रधान बन्दरगाहोंके नाम ये हैं—मगलोर, टेलिचरी, माही, कालीकट, कोचीन, अलप्पी, कीलन तथा टूटीकोरिन। ये सब बन्दरगाह बम्बई बन्दरगाहके नीचे हैं। ऊपरकी ओर भी बम्बई और कराचीके बीचमें छोटे छोटे बन्दरगाह हैं—कैटीबन्दर, लिरगण्डा, माण्डवी, द्वारका, और पोरबन्दर। द्वारका बड़ौदाकी राजधानीमें है और हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र द्वारकानाथ जानेका मार्ग है। पोरबन्दर काठियावाड़में है। किसी समयमें पोरबन्दरसे विदेशी व्यापार अच्छा होता था। इससे आगे डयू और सूरतके बन्दरगाह हैं। सूरतपर ही पहले पहल अंग्रेजोंने कोठिया बनाई थीं। १७ वीं और १८ वीं सदीमें अरबके सामुद्रिक व्यापारमें सूरतका प्रधान स्थान था। १९ वीं सदीके आरम्भसे सूरतका व्यापार गिरने लगा और धीरे धीरे बम्बई बन्दरगाहकी ओर खिच गया।

धनुषकोदी—दक्षिणमें रामेश्वरके पास यह बन्दरगाह अभी १९१३ में बनाया गया है। तबसे इसकी शनै शनै अच्छी उन्नति हो रही है। कहवा, मछली, चावल, रबर, चाय तथा सूती कपड़े यहांसे लदकर बाहर जाते हैं।

नेगापट्टम—पूर्वी किनारेपर यह पहला बन्दरगाह नीचेकी ओरसे है। साउथ इण्डियन रेलवेका यहा अन्त होता है। इस बन्दरगाहसे प्राय. सुरती दल दलकर बाहर जाती है। नेगापट्टम बन्दरगाहका प्रधान निर्यात है यूरोपके लिये जमींकन्द। (युद्धके पहले जमींकन्दका अधिकाश भाग मार्शलीज और ट्रीस्टी जाता था)। रंगीन सूती कपड़ा, सुरती तथा ताजा फल पेनाग, सिगापुर और कोलम्बो जाता है। लका तथा मलाय द्वीपके रबरके खेतोंमें काम करनेवाले शर्तबन्द कुलियोंके भेजनेका भी यह प्रधान बन्दरगाह है।

कारिकल—कारिकल बन्दरगाह फरासीसी राज्यमें है। पर धेलेभर भी व्यापार फ्रांससे नही होता। लका और स्ट्रेट सेटलमेंटमें यहासे चावल जाता है और यही इसका प्रधान व्यवसाय है।

कुदालोर—कुदालोर बन्दरगाह पाण्डिचरीसे बारह मील है। यहासे मार्शलीज जमींकन्द जाता है। लङ्का और जावामें दाली जाती है तथा स्ट्रेट सेटलमेंटमें रगीन सूती कपड़ा जाता है।

पाण्डिचरी—पाण्डिचरीका प्रधान व्यवसाय निर्यात है। यहासे होकर फ्रान्स, अधीनस्थ देश तथा उनके आसपासके ब्रिटिश प्रदेशोंमे जमींकन्द बहुतायतसे जाता है। इसके अति-

रिक रेंडीका तेल, लाल मिरचा, घी आदि यहासे लदकर बाहर जाता है। शराब, रुई, मिट्टीका तेल आदि यहा आकर उतरता है। पाण्डिचरीके बन्दरगाहमें एक सुविधा यह है कि आयात मालपर किसी तरहका कर नहीं बैठाया गया है। जिन मालोंपर ब्रिटिश भारतमें कर बैठाया गया है उन्हें फ्रासके अधिकृत गावों-में स्वतन्त्र (विना करके) ले जानेका खास प्रबन्ध फ्रास सरकारकी ओरसे है।

मद्रास—मद्रासमें कोई बन्दरगाह नहीं था। अभी हालमें ही समुद्रमें बाध बाधकर यह बन्दरगाह बनाया गया है। दो प्रधान रेल लाइनों—दक्षिणी महाराष्ट्र रेलवे, दक्षिणी भारत रेलवे—का यह नाका है। मद्रास बन्दरगाह होकर ये माल देशमें आते हैं—सूती कपडा और सूत, धातु और कच्चा लोहा, सूत और धागा, रेलवे सामान, मशीन और कलपुर्जे, चीनी, मसाला, तेल, बिसातखाना। प्रधान निर्यात—तेलहन, चमड़ा, रुई, अनाज, दाल, कहवा, चाय, सन तथा मसाला।

मद्रास।

नीचेकी तालिकासे विदित होगा कि मद्रासका बन्दरगाह दिनोंदिन किस तरह उन्नति कर रहा है।

सन्	आयात (पौंडमें)	निर्यात (पौंडमें)
१८९७ ९८	४,७८६,६८६	३,०८३,७३८
१९०२ ०३	५,०१५,२४९	३,६२२,७९४
१९०७ ०८	७,१९८,०१२	४,९१८,६४८
१९१२ १३	८,४३८,०५६	६,००४,८१५
१९१७ १८	८,८५९,७७४	७,२२४,४३८
१९१९ २०	११,८१५,८१२	१२,९९९,७४३
१९२१-२२	१५,७१२,८२०	७,९१८,३९६
१९२२ २३	१५,४२०,७७०	९,१५२,८२६

मछलीपट्टम—मछलीपट्टम बन्दरगाह कृष्णा नदीकी डेल्टामें है। कलकत्तासे मद्रास जो रेल लाइन गई है उसीकी एक शाखा बेजवाडासे यहां चली गई है। इस बन्दरगाहसे व्यवसायको किसी तरहकी सुविधा नहीं है। पांच मीलके भीतर बड़े जहाज भी नहीं आ सकते।

कोकोनाडा—कोकोनाडा बन्दरगाह गोदावरी नदीकी डेल्टापर है। सात मीलकी दूरीपर बड़े जहाज लगते हैं और स्टीमरों द्वारा उनपर माल पहुंचाया जाता है। इस बन्दरगाहसे इंगलैण्ड और फ्रान्स रूई जाती है। लंका और मारिशस चावल तथा धान जाता है। अमरीकासे मिट्टीका तेल आता है जावासे खांड आती है और इंगलैण्डसे धातुयें आती हैं

कलकत्तेसे जो रेलवे लाइन मद्रास गई है उसीकी शाखा शामल-कोटसे कोकोनाडा गई है।

विजगापट्टम—विजगापट्टमसे दो मीलपर वाल्टेयर है। यहापर बगाल नार्थ वेस्टर्न रेलवे और मद्रास सदर्न मराठा रेलवेका जकशन है। इस बन्दरगाहको गहरा करने तथा व्यवसायके लिये उपयोगी बनानेका प्रबन्ध हो रहा है। यहासे माल लद लदकर कलकत्ता और मद्रास आता है और वहींसे विदेश जाता है।

इसके बाद बिमलीपट्टम, गोपालपुर, बालासोर, चाद्बाली, तथा कटकके बन्दरगाह हैं। कटकसे कोलम्बो और मारिशस चावल तथा तेलहन जाता है। बाहरसे नमक और धागा आता है।

कलकत्ता—इस देशका यह सबसे प्रधान बन्दरगाह है। जव, चाय और कोयलेका व्यवसाय प्रधानतया इसी बन्दरगाहसे होता है। बिहार तथा सयुक्तप्रान्तमें पैदा होनेवाला गेहू और बीज इसी बन्दरगाहसे बाहर जाता है। ईस्ट इण्डियन (स्टेट) रेलवे, बगाल नागपुर तथा ईस्टर्न बगाल रेलवेका यही नाका है। इससे इन लाइनों द्वारा जो कुछ माल आता है सब कलकत्ता बन्दरगाहपर लदता है। बगाल और आसामका सारा माल यहींसे होकर आता जाता है।

विदेशोंसे जो माल आता है वह जेटीमें उतरता है। जेटियोंमें बडे बडे गोदाम हैं जहा माल जहाजोंसे उतारे जाते हैं।

अगर माल तुरन्त हटाना न हो तो किरायेपर जगह लेकर गोदाम-में माल रख दिया जा सकता है।

कलकत्ता।

नीचेकी तालिकासे मालूम होगा कि कलकत्तेका सामुद्रिक व्यवसाय दिनोंदिन किस तरह उन्नत हो रहा है।

सन्	आयात (पौंडमें)	निर्यात (पौंडमें)
१८९७ ९८	२४,१९४,५५६	३४,११५,६९४
१९०२-०३	२७,२०६,५८७	३६,२२२,६७३
१९०७-०८	४४,७४५,९३९	५५,७७०,४४८
१९१२-१३	४४६,१९८,२७०	७४,५७१,५३२
१९१७-१८	४७,५५२,७६७	६२,१४१,१७०
१९२१-२२	७०,६३५,८५९	६०,९५५,१२७
१९२२-२३	५७,०११,६५३	७६,८८१,३६८

खिदिरपुर डक—खिदिरपुर डक पहले पहल १८९२ में काममें लाया गया। बहुत दिनतक यहा केवल लदाईका काम होता रहा। अब चावल और चीनी यहा उतरने भी लगा है। खिदिरपुर डकके पास ही कान्तापुकर गोदाम है। यहापर अनाज और तेलहनके बोरे जमा होते हैं। खिदिरपुर डकके दूसरी ओर खाल और चायके गोदाम हैं। चायके लिये नया गोदाम बन रहा है। खिदिरपुरके आगे बजबज है। यहापर प्रत्येक पेट्रोल

तथा मिट्टीके तेलकी कम्पनीका गोदाम है। पेट्रोल और मिट्टी का तेल यहीं गोदाममें रखा जाता है और खर्चके लिये यहींसे चालान जाता है। काशीपुरसे खिदिरपुरतक डक रेलवे सर्विस है। पाटकी गांठें भी इन्हीं रेलोंद्वारा डकमें आती हैं। खिदिरपुर डकमे सबसे बडो सुविधा यह है कि यहा माल उतरने और लदनेकी भिन्न भिन्न जेटिया बनी हैं। पर बम्बई आदि बन्दरगाहोंमें यह बात नहीं है जिससे व्यापारियोंको बडी असुविधा और हैरानी उठानी पडती है। भीडभाडमें बहुत परेशान होना पडता है।

खिदिरपुरस आगे बढकर गार्डनरीचमें दूसरा डक बन रा है। उसका नाम होगा किग जार्ज डक। १६२० में इसका निम णकार्य आरम्भ हो गया है। तबसे बहुत कुछ बन गया है। आर है १६२७ में यह डक पूरा हो जायगा। इससे कलकत्ताके व्य सायको बडी सुविधा मिलेगी।

चटगाव—चटगाव बन्दरगाह पूर्वी बगालमें है। १६ स सदीसे ही यह व्यवसायका केन्द्र था पर १८६५ के शुरूसे इस महत्व प्राप्त किया है। इस बन्दरगाहसे प्रधानतया पाटका व्यव साय होता है। इसके अलावा चाय, चावल और धान भी बाह भेजा जाता है। आयातकी प्रधान वस्तु नमक है।

अकयाब—बर्माका सबसे प्रधान बन्दरगाह है। पश्चिम किनारेपर यही एक बन्दरगाह है। यहासे चावल बाहर जात है और बाहरसे कोयल, रस्सा वगैरह आकर यहा उतरता है।

रंगून—रंगून बन्दरगाह रंगून नदीके मुहानेपर है। समुद्र से यह २४ मीलकी दूरीपर है। यहीं पर बर्मा रेलवेका मुहाना है। बर्मा रेलवे बेसिन, हेनजाडा प्रोम, मोलमीन, मण्डाले और मिटकीना होकर गई है। रंगून बन्दरगाहपर प्रधानतया सूती कपडे, सूत, धातुके सामान, सिल्क, चीनी, नमक, मशीनरी, कलपुर्जे, बिसातीखाना आदि उतरता है। यहांसे होकर चावल, अनाज, दाल, मोम, खाल, रूई, लकडी, रबर, तथा सुरती बाहर जाते हैं।

रंगून।

सन्	आमदनी (पौंडमें)
१८६०-६१	७०,५६६
१६०५-०६	१२७,५४२
१६१३-१४	३४५,६५२
१६१४-१५	३०२,५३२
१६१७-१८	२७५,६८७
१६१८-१६	३४८,४८१
१६२१-२२	५०१,२६१
१६२२-२३	५१२,६४६

इन बन्दरगाहोंके अतिरिक्त मोलमीन, टवाय तथा मर्गुईके बन्दरगाह हैं। इन बन्दरगाहोंसे अधिकांश रबर, टिन, तथा मोती बाहर जाते हैं। बाहरसे जो माल आता है वह नगण्य है।

नीचे लिखी तालिकासे विदित होता है कि भारतके बन्दरगाहोंसे किन किन देशोंके जहाज कितना कितना माल ले जाते हैं।

देश	युद्धके पहले का औसत*	१९१९ २०	१९२० २१	१९२१ २२	१९२२ २३
ब्रिटन†,	२५९३	२३१३	२५५२	२४०३	२४५०
जर्मनी	२२५	—	४	२१	४३
आस्ट्रिया हङ्गरी	११९	—	—	—	—
जापान	६२	२०६	१७७	१४९	१३९
नार्वे	५३	४५	५१	२९	३९
डच	३९	३१	४५	५०	८१
इटाली	३६	३८	५७	४९	७६
फ्रान्स	२८	२३	१७	५	४
रूस	१३	८	४	—	—
ग्रीस-(यूनान)	५	७	६	६	२३
स्वेडन	४	१२	१७	१४	२२
अमरीका	—	३९	११८	६१	८५
चीन	—	११	१०	८	३
अन्य छोटे देश	९	१७	१७	८	११
कुल जोड़-	३१८६	२७४९	३०६८	२८०३	२९७९

* १९०९-१० से १९१३-१४ तक।

† इसमें ब्रिटिश भारतमें रजिस्टरी शुदा स्टीमरे भी शामिल हैं।

(ख) प्रधान व्यवसायिक केन्द्र

आरम्भमें लिखा जा चुका है कि भारतका विदेशी व्यवसाय प्रधानतया केवल पांच बन्दरगाहोंमें—कलकत्ता, मद्रास, बम्बई, रंगून और कराचीमें केन्द्रित है। भारतके २२ करोड़से भी अधिक निवासी गांवोंमें रहते हैं। इसलिये यह आवश्यक है कि उन प्रधान प्रधान नगरोंका नाम दे दिया जाय जो इन ग्रामोंसे माल बटोरकर बन्दरगाहोंपर लाते हैं अथवा विदेशोंसे जो माल आता है उन्हें इन ग्रामवालोंतक पहुंचाते हैं। इस हिसाबसे कलकत्ताका महत्व सबसे अधिक है। कलकत्ता पाटके व्यवसायका केन्द्र है। इसके अलावा यहांपर अनेक आटा, चावल और तेलके कारखाने हैं। लोहेके कारखाने, चमड़ा साफ करनेके कारखाने भी हैं। कलकत्तासे जमशेदपुर केवल १५० मील है। यहांपर ताताका प्रसिद्ध लोहेका कारखाना है।

बम्बई—का प्रधान व्यवसायिक कारखाना सूत और कपड़ेकी मिलें हैं। प्राय ८० कपड़ेकी मिलें बम्बईमें हैं।

बम्बईमें और कलकत्तेके कारखानोंमें एक भेद है। कलकत्तेके कारखाने प्राय सभी अंग्रेजी कम्पनियोंके हाथमें हैं। बम्बईके सारे कारखाने हिन्दुस्थानियोंके हाथमें हैं।

मद्रास—में केवल दो कपड़ेकी मिले हैं। पर इनमें सबसे उत्तम कपड़ा उत्पन्न होता है।

रंगून—का प्रधान व्यवसाय चावल है। इसके अलावा लकडी और तेलके भी कारखाने हैं। रंगूनका व्यवसाय प्रधान तया अंग्रेजोंके हाथमें है। हिन्दुस्थानी और चीनी भी काफी संख्यामें व्यापार करते हैं।

कराची—का प्रधान व्यापार गेहू है। यहाका व्यापार केवल अंग्रेजों और पारसियोंके हाथमें है।

कानपुर—संयुक्तप्रान्तमें कानपुर व्यवसायमें सबसे बढा चढा है। यहासे होकर सभी प्रधान रेलवे लाइनें गई हैं। मञ्चेस्टरके सूती कपडे, विसातखाना, कलपुर्जे यहा बम्बई तथा कलकत्तेसे आते हैं। यहा चमडेका कारखाना, ऊनका कारखाना तथा सूती कपडेका कारखाना है। इसके अलावा अन्य अन्य छोटे मोटे कारखाने हैं।

दिल्ली—दिल्ली ब्रिटिश भारतकी राजधानी है। नव रेलवे लाइनें यहापर आकर मिलती हैं। सूती, ऊनी और रेशमी कपडे के व्यापारका प्रधान केन्द्र है। यहापर भी सूत कातने और कपडा बुननेकी कलें हैं तथा बिस्कुटका कारखाना है। आटेकी कई मिलें हैं। दिल्लीकी कारीगरी प्रसिद्ध है। हाथीके दांतपर नक्काशी, जवाहिरातका काम व गोटा पट्टा तथा जरी का काम और सोने चांदीकी नक्काशी यहा अच्छी होती है।

अहमदाबाद—कपडेके व्यवसायके लिये बम्बईके बाद अहमदाबादका ही स्थान है। यहा ६४ सूती कपडेकी मिलें हैं।

तृतीय परिच्छेद ।

भारतका विदेशी व्यापार

(१) *आयात*

प्रथम परिच्छेदमें हम लिख आये हैं कि प्रकृतिने इस देश
पूर्ण कृपा की है। इसका फल हम पग पगपर देखते हैं। प्राच
समयमें हम भारतके निवासी अपनी अपनी आवश्यकता
सभी वस्तुयें अपने आप ही तैयार कर लेते थे। हमें विदेशियों
मुह नहीं ताकना पड़ता था। अपनी आवश्यकताको प
करनेके बाद हम करोड़ों रुपयोंका माल प्रतिवर्ष विदेशों
भेजते थे। उसके बदले हम वहासे सोना, चादी, ध
या मसाला मंगाते थे। एक तो भारतके निवासी अप
आवश्यकताकी पूर्ति स्वयं अपने आप कर लेते थे, दूसरे वे सा
गीका जीवन बिताते थे, विलासिता उनमें छूतक नहीं गई थ
इससे विदेशोंसे मगाने लायक उनके लिये कोई वस्तु नहीं थ
इसलिये जो कुछ सामान वे विदेशोंमें भेजते थे उसके बदले
कीमती धातु और मसाले मगा लिया करते थे। सामुद्रिक रास
भी उस समय इतना सहज नहीं था। अफ्रीकाका चक्कर काट
गुड होप अन्तरीपसे जहाजें जाती थीं। स्वेज नहरका मार्ग अ
समय नहीं खुला था। इससे विदेशी व्यापारी भी कम मूल्य

सी चीजें लेकर यहा आनेका साहस नहीं करते थे। इससे
ारतका आयात उस जमानेमें कुछ नहीं था।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके आगमनके बादसे भारतका भाग्य-
तारा मन्द पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी व्यापारके लिये ही
ारतमें आई थी। अगर यह खाली व्यापारी कम्पनी रह जाती तो
ी शायद भारतके भाग्य सूर्यपर यह दीर्घकालव्यापी राहुकी छाया
हीं पड़ी रहती, पर भारतके भाग्यसे मुगल सम्राट् औरंगजेबने
ूटका बीज बो दिया था। इन्हींके राजत्वकालमें बड़े बड़े शत्रु
त्पन्न होगये थे, जो मुगल साम्राज्यको मटियामेट कर देनेके
यत्नमें थे। अपनी जिंदगीभर तो उसने तार टूटने न दी, पर उस-
ी नीतिसे मुगल-साम्राज्य अवश्य जर्जर हो गया था। उसके
ाद उसकी सन्ततिकी कमजोरी और नादानीसे तथा अमीर
मरावोंकी बेईमानीसे मुगल साम्राज्यके टुकड़े टुकड़े हो गये।
जिस उमराको जहा अवसर मिला उसने वहीं अपना अधिकार
मा लिया। परिणाम यह हुआ कि एक मुगल साम्राज्यके
थानपर अनेक छोटे छोटे राज्य हो गये। इतनेपर भी आपसकी
ाहने पिण्ड न छोड़ा। एक दूसरेके राज्यका हड़प लेनेका यत्न
ोता ही रहा। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने अपने कारखानोंकी रक्षाके
लिये कुछ अंग्रेज और कुछ देशी सैनिक शिक्षित कर रखे थे।
वसर देखकर इन्हीं सैनिकोंकी मदद वह एक या दूसरे
ाजाको देती और बखशिशमें उससे दो चार मौजे ले लेती और
अनेक तरहकी व्यवसायिक सुविधा माग लेती।

१६ वीं सदीके प्रथम चरणके आरम्भ तक बंगालके प्रधान प्रधान स्थान, बम्बईमें सूरतके आसपासके नगर, मद्रासके कुछ नगर तथा संयुक्तप्रान्तमें काशीके आसपासके कुछ नगर ईस्ट इण्डिया कम्पनीके हाथ आ गये थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने पहलेसे यह देख रखा था कि जबतक भारतकी कलाका नाश नहीं किया जाता तबतक हमारा व्यवसायिक सिक्का यहा नहीं जम सकता। निदान अधिकार-सम्पन्न होकर कम्पनीने अपना दाव चलाया। भारतमें उसने कपडेका कारखाना खोल दिया और कारीगारोंको अपने कारखानोंमें बुलाने लगी। जो आनेसे इनकार करते उन्हें तरह तरहसे सताती और उनके परिवारवालोंको तंग करती। बिचारे अपनी तथा अपने वंशकी मर्यादाकी रक्षाके लिये अपना अगूठा कटवाकर बेकार हो जाते। इस तरह भारतका व्यवसाय धीरे धीरे नष्ट हुआ। इसी समय यूरोपमें मशीनोंका आविष्कार हुआ। इनकी सहायतासे कपडे सस्ते बनने लगे। भारतके व्यापारी सस्तेपनमें इनका मुकाबला नहीं कर सकते थे। परिणाम यह हुआ कि भारतका व्यापार नष्ट हो गया और भारत विदेशियोंका मुहताज हो गया। उस समयसे भारतका आयात बढ़ गया। अंग्रेजोंके संसर्गसे नई रोशनीका प्रकाश फैला और हमलोग उसके भी शिकार बन गये। स्वेज नहरका मार्ग प्रशस्त हो गया, इससे मार्गकी भी कठिनाई जाती रही। ये सब कई कारण इकट्ठे होकर काम करने लगे और यूरोपीय व्यवसायियोंकी बहुत दिनकी आस पूरी हुई।

वाणिज्य व्यापार एकदमसे नष्ट हो गया। घरमें रुपया नहीं रह गया कि माल खरीदकर उसके बदले रुपया दे। उधर अंग्रेज व्यवसायी तैयार माल यहा ला लाकर बाजार भरने लगे, पर कच्चे मालका उनके यहा अभाव था। उनकी आख उसपर लगी हो थी। बस, यह अचूक अवसर भी हाथ लग गया। जो तैयार माल विदेशोंसे आता उसके बदले कच्चा माल यहासे जाता। धीरे धीरे ज्यों-ज्यों विलासिताने आवश्यकताका रूप धारण किया तथा रहासहा कलाकौशल भी नष्ट होता गया त्यों त्यों आयातकी बढती होती गई और उसके साथही निर्यातकी बढ़ती हुई। तैयार माल कम-वजनी अधिक मूल्यका होगा पर कच्चा माल अधिक-वजनी कम मूल्यका होगा। इससे आयातका परिमाण जिस तरह बढ़ता जायगा कच्चे मालके निर्यातका परिमाण भी उसी तरह बढता जायगा। इससे थोडे ही दिनोंमें भारतको अपने कर्मका फल भोगना पड़ा और आयातसे निर्यात बढ गया। वह यहातक बढा कि हमें अपना पेट काटकर भी उसे पूरा करनेका दुर्दिन देखना पडा। जब हमलोगोंने कुछ होश सम्हाला और अपना घर सुधारना चाहा तो सरकारने टागें अडा दीं। हमलोग मुंह फाड फाडकर चिल्लाते रहे कि मुक्तद्वार वाणिज्यकी नीति उठाकर सरक्षित व्यापारकी नीति चलाइये जिससे विदेशी प्रतियोगिताके भयसे मुक्त होकर हमलोग फिर कल कारखाने खोलें और अपने ऊपर आई हुई इस विपत्तिको टालें। पर सरकारको इसकी क्या फिकर है! वही मुक्तद्वार वाणिज्यकी नीति अब भी

प्रचलित है। बड़ी बड़ी अभ्यर्थना और कोशिशोंके बाद फिस्कल कमीशन बैठा। पर वहां भी मतभेद रहा। इस विषयपर आगे चलकर प्रकाश डाला जायगा।

हमने ऊपर दिखलाया है कि किन किन उपायोंके द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनीने भारतका वाणिज्य नष्ट किया और इसे केवल कच्चा माल उत्पन्न करनेवाला देश बनाकर छोड़ दिया। नीचे हम जो तालिका देते हैं उससे प्रगट होगा कि किस सालतक आयातके मुकाबिले निर्यात कम रहा और कबसे आयातके मुकाबिले निर्यात अधिक हुआ और अब किस अवस्थाको पहुंचा है।

भारतका विदेशी व्यापार पौंडमें

सन्	आयात	निर्यात पौंड
१८६५—१८६६	३२,८८०,०००	३८,४४०,०००
१८७०—७४	२७,५६६,६३६	३८,५६०,०००
१८७५- ७६	३२,१४६,६६६	४२,०८६,६६६
१८८०—८४	४१,२१३,३३८	५३,६७६,६६६
१८८५—८६	५०,०८६,६६६	६०,१८६,६६६
१८६०—६४	५६,१३३,३३३	७२,४४६,६६६
१८६५—६६	५६,०४०,०००	७५,६५३,३३३
१६००—०४	७३,७६३,३३३	६१,०४६,६६६
१६०५—०६	१०४,०००,०००	११६,८६५,१६७
१६१०—१४	१३२,५८०,०००	१५५ ०३४,६५८
१६१५—१६	१३२,२१३,७८२	१५५,४२०,५२०
१६२०—२३	२१७,६५७,६५५	२०५ ०७५,७३६

आयात और निर्यातके इस दारुण इतिहासको एक अंग्रेजकी जबानी ही आप सुनिये और उसपर विचार कीजिये। उसने लिखा है—"ईसाकी पहली सदीमें—अर्थात् १६०० वर्ष पहले—भारतसे विदेशोंमें मसाला,हीरा,पन्ना या जवाहरात तथा उत्तमसे उत्तम सूती कपड़ा जाता था। इसके बदले भारतमें मूंगा,ताम्बा, टिन, सीसा और सोना-चांदी आते थे। (स्मरण रखनेकी बात है कि एक भी ऐसी वस्तु बाहरसे नहीं आती थी जिसकी आवश्यकता हमारे दैनिक जीवनमें पड़ती हो।) यही हालत सत्रहवीं सदीतक रही। १६१६ में ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सूरतमें अपना चरण रखा। ईस्ट इण्डिया कम्पनीका प्रारम्भिक इतिहास निराशा और विपत्तिका इतिहास है। भारतकी कला और सस्ताईका वह मुकाबिला नहीं कर सकती थी। भारतमें व्यवसाय करनेके लिये उसे फिर भी नगद सिक्के निकालकर देने पड़ते थे। इससे इङ्गलैण्डमें विरोध उठ खड़ा हुआ कि ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतमें व्यवसाय करनेका जो अधिकार दिया गया है उसे छीन लिया जाय; क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं। अपनी रक्षा करनेके लिये कम्पनीने घाटा सहकर विलायतका बना ऊनी माल यहां बेचकर रुपया चुकाना आरम्भ किया। पर इससे कबतक काम चल सकता था। ढाका और सूरतकी कला, हाथकी सफाई और फुर्तीका सामना कोई नहीं कर सकता था। यहांसे बनकर जो माल विलायत जाता,कर आदि देनेपर भी वह वहांके तैयार मालसे नफेके साथ सस्ता बिकता। निदान ब्रिटिश पार्लि-

मेंटने दो कानून बनाकर भारतीय कपड़ोंका प्रयोग जुर्म ठहराया। इधर ब्रिटिश सरकार बारूदके लिये रेह (सज्जी) और सन (पाट) चाहती थी। बिचारी ईस्ट इण्डिया कम्पनीपर दूसरी विपत्ति आ गई। अठारहवीं सदीके मध्यमें ईस्ट इण्डिया कम्पनीने कुल ६० लाखका माल बेचा था और २ करोड़ सत्तर लाख नकद रकम भेजनी पड़ी थी। इसीके बाद प्लासीके मैदानमें बंगालके नवाबका पराजय हुआ और क्लाइवकी चालबाजीसे मीरजाफर, उसके बाद मिरान और मीरकासिम बंगालके नवाब हुए। यहींसे भारतका सितारा मन्द पड़ा और अंग्रेजोंके भाग्यसूर्य चमके। फिर जिन जिन घृणित और हेय उपायोंका सहारा लेकर इन लोगोंने भारतीय व्यवसायका मटियामेट किया उसका वर्णन हमने पीछे किया ही है। प्लासीके युद्धके पहले ६० लाखका माल आया था और २ करोड़ सत्तर लाख नकद देना पड़ा था। पर प्लासीके युद्धके तीन वर्ष बादसे लेकर २६ वर्षके भीतर ही भीतर ईस्ट इण्डिया कम्पनीने भारतमें चार करोड़ अस्सी लाख पौंडका माल बेचा और केवल एक करोड़ ४० लाख पौंड नकद देना पड़ा। कच्चा माल अभीसे अधिक जाने लगा था पर तैयार माल अभी कम आता था। पहले केवल ३६००००००) का व्यापार होता था पर २६ वर्ष बाद ही व्यापार बढ़कर ६२००००००) का हो गया। इसके बादसे भारतके व्यवसायका प्रवाह उलटा चला। तैयार मालका आयात बढ़ने लगा और तैयार मालका निर्यात घटने लगा। १९ वीं सदीके मध्यकालके आते न आते भारतको वही चीजें अर्थात्

सूती कपडा और चीनी विदेशोंसे मगानी पड़ीं जिन्हें वह १० वर्ष पहले वहा भेजकर उनसे नकद रुपया लेता था। लकाशायरके सूती कपडे बहुतायतसे भारतमें आने लगे। १८६६ ७० में विदेशोंसे भारतमें कुल २१,६४६,६६० पौंडका सूती माल वाहरसे आया था। उसमें १०,८४६,६६० पौंडका माल केवल इङ्गलैण्डसे आया था। हमने यही लिखा है कि अग्रेजोंके ससर्गसे हमारी विलासिता भी बढ गई। उसका प्रमाण वही अग्रेज लेखक देता है कि "१,०००,००० पौंडकी शराब और नसीली चीज आई। वर्तन आदिके लिये ताबा ६०६,६६० पौंडका, लोहा ८७३,३३० पौंडका तथा निकल ५००,००० पौंडका विदेशोंसे आया। इस समयतक चीनीने वह प्रधान स्थान नहीं प्राप्त किया था। पर पचास वर्ष भी नहीं बीतने पाये थे कि भारतको चीनीके लिये भी विदेशियोंका सहारा लेना पडा। पचास वर्षमें ही चीनीके लिये हमें विदेशियोंको ४७३,६६० पौंडसे ५,०००,००० पौंड वार्षिक देना पडा। इसके बाद तेल, दियासलाई और बिसातीखानेकी आयात है। मसाला जिस सख्यामें पहले भारतसे विदेशोंको जाता था उसके दूने परिमाणमें वह विदेशोंसे आने लगा। इधर कुछ दिनोंसे लोहा, कलपुर्जे तथा रेलोंके सामानकी आयात बढ़ गई है। अलमोनियम और कलईदार बर्तनोंकी माग घट गई है।"*

नीचेकी तालिकासे पता चलता है कि भारतमें विदेशोंसे कौन कौन वस्तु किस परिमाणमें आती है।

---

* Commercial Information for India by C W, E Cotton के आधारपर।

ऊपर लिख आये हैं कि रेशमकी सबसे अधिक खपत बर्मामें है। इससे बर्माकी समृद्धिका पता चलता है। बाहरसे दूध और मक्खन जो कुछ आता है उसकी खपत अधिकाश बर्मामें ही होती है। इससे प्रगट होता है कि बर्माके लोग गोवंशके पालनके बखेड़ेमें नहीं पड़ना चाहते। इसके अलावा विलासिताकी सामग्री जैसे बिस्कुट, सीगार, सेंट, लवेण्डर आदिकी खपत भी बर्मामें ही सबसे अधिक है। इससे प्रगट होता है कि बर्मापर विदेशी सभ्यता और आचार-विचारका अधिक प्रभाव पड़ा है।

परिवर्तन—युद्धके कारण सब वस्तुओंका मूल्य बढ़ गया था। इससे लोगोंकी रुचि और प्रकृतिपर असर अवश्य पड़ा है। इधर स्वदेशी आन्दोलन और असहयोगने भी लोगोंकी रुचिमें परिवर्तन डाल दिया है। इससे भी विदेशी आयात-व्यवसायपर कुछ असर अवश्य पड़ा है, पर अभी निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा। युद्धके कारण व्यवसायकी ओर भी लोगोंकी प्रवृत्ति कुछ बढ़ी है। इसका फल यह हुआ है कि रासायनिक दवाओंकी आमद अधिक होने लगी है। जापानी सलाईके दर्शन अधिक सख्यामें होने लगे हैं। इसका कारण सिगरेटका अधिक प्रचार प्रतीत होता है और गांववालोंकी रुचिमें परिवर्तन है। जहा पहले देहातोंमें आग हर वक्त सुलगा करती थी वहा भी अब सलाईसे काम लिया जाने लगा है।

बैठे तमाशा देख रहे हैं। जो हमसे कहीं पीछे थे, जो हमारे सहारे जीते थे वही आज हमें जिला रहे हैं। १८५३ ५४में इङ्गलैण्डसे ७६ प्रति सैकडे माल आता था, चीनसे ५, आस्ट्रेलियासे ४, फ्रांससे ३॥, पएटवर्प और केडिजसे भी माल आता था पर वह नगण्य था। १९०३-४में इङ्गलैण्डका परिमाण घटकर ६४ ६ हो गया था पर इससे हमने लाभ नहीं उठाया। यह भी विदेशियोंके हाथमें ही चला गया। अभीतक बेलजियम, जर्मनी, रूस, जापान और अमरीका का नाम निशान नहीं था। ५० ही वर्ष बाद हम देखते हैं कि ये सब राष्ट्र भी अपना व्यवसाय बढ़ाकर भारतमें प्रतियोगिताके लिये आ खड़े हुए। बेलजियम ३ ६,जर्मनी ३ ४,रूस २ ६,आष्ट्रिया हंगरी २ ६, फ्रांस १ ६, अमरीका १ ५, जापान १ ५ प्रति सैकडे माल भेजते रहे। इनके बाद हम १९१३—१४ के युगमें आते हैं। इङ्गलैण्डका माल उसी परिमाणमें आता रहा, बेलजियम २ ३ प्रति सैकडे रह गया। रूस एकदम मैदानसे गायब हो गया। जर्मनी बढ़कर ६ ६ तक गया। अमरीका २ ६, जापान २ ६, पर हमारी दशा ज्योंकी त्यों बनी रही। नील रंगका व्यवसाय जो अबतक हमारे हाथमें था उसे भी जर्मनीने हथिया लिया और हम उससे भी हाथ धो बैठे। जर्मनीका माल इतना सस्ता होता था कि उसकी प्रतियोगिता कोई नहीं कर सकता था। ब्रिटिश सरकारने मुकद्दार वाणिज्यकी जो नीति चलाई थी उसके अनुसार कर बैठाकर उन मालोंको भारतमें आनेसे रोका भी नहीं जा सकता था।

	१९१३-१४,	१९१८-१९,	१९१९-२०,	१९२०-२१,	१९२१-२२,	१९२२-२३
टेन	६४१	४५५	५०५	६१०	५६७	६०२
नी	६९	—	०२	१४	२७	५१
वा	५८	६६	९४	४७	८९	५५
पान	२६	१९८	९२	७९	५१	६२
मरीका	२६	९५	१२१	१०५	८१	५७
लजियम	२३	८०३	३	१६	२०	२७
स्ट्रीया हगरी	२३	—	०६	२	१	१
ेट सेटलमेंट	१९	३३	२९	१४	१५	१९
ास	१५	११	९	११	८	८
ारीशस	१४	१५	६	३	८	४
ाली	१२	५	७	१२	७	९
ेन	९	१४	१८	९	९८	१२
लैण्ड	८	१	५	९	९	.९
ास्ट्रेलिया	५	१३	१६	४	३५	४
ांगकांग	५	१०	१३	७	६	६
ारस	४	६	११	४	६	८
ीलोन (लंका)	४	१७	१२	६	५	६
स	०३	०३	०१	०६	.०२	००६

ऊपरकी तालिका देखनेसे विदित होता है कि हमारी अव-
थासे सभी विदेशी व्यवसायी लाभ उठा रहे हैं और हम बैठे

बैठे तमाशा देख रहे हैं। जो हमसे कहीं पीछे थे, जो हमारे सहारे जीते थे वही आज हमें जिला रहे हैं। १८५३ ५४में इङ्गलेण्डसे ७६ प्रति सैकडे माल आता था, चीनसे ५, आस्ट्रेलियासे ४, फ्रांससे ३॥, एण्टवर्प और फेडिजसे भी माल आता था पर वह नगण्य था। १९०३ ४में इङ्गलैण्डका परिमाण घटकर ६४ ६ हो गया था पर इससे हमने लाभ नहीं उठाया। यह भी विदेशियोंके हाथमें ही चला गया। अभीतक बेलजियम, जर्मनी, रूस, जापान और अमरीका का नाम निशान नहीं था। ५० ही वर्ष बाद हम देखते हैं कि ये सब राष्ट्र भी अपना व्यवसाय बढाकर भारतमें प्रतियोगिताके लिये आ खडे हुए। बेलजियम ३ ६,जर्मनी ३ ४,रूस २ ६,आष्ट्रिया हंगरी २ ६, फ्रास १ ६, अमरीका १ ५, जापान १ ५ प्रति सैकडे माल भेजते रहे। इसके बाद हम १९१३—१४ के युगमें आते हैं। इङ्गलैण्डका माल उसी परिमाणमें आता रहा, बेलजियम २ ३ प्रति सैकडे रह गया। रूस एकदम मैदानसे गायब हो गया। जर्मनी बढकर ६ ६ तक गया। अमरीका २ ६, जापान २ ६, पर हमारी दशा ज्योंकी त्यों बनी रही। नील रगका व्यवसाय जो अबतक हमारे हाथमें था उसे भी जर्मनीने हथिया लिया और हम उससे भी हाथ धो बैठे। जर्मनीका माल इतना सस्ता होता था कि उसकी प्रतियोगिता कोई नहीं कर सकता था। ब्रिटिश सरकारने मुक्तद्वार वाणिज्यको जो नीति चलाई थी उसके अनुसार कर बैठाकर उन मालोंको भारतमें आनेसे रोका भी नहीं जा सकता था।

इसीके बाद युद्धकी काली घटा यूरोपके आसमानपर मंडराने लगी। जापान चीलकी भांति आकाशमें मंडरा रहा था और युद्धका नाटक देख रहा था। इस युद्धसे उसने असीम लाभ उठाया। इस समय भारतका अधिकांश छोटा मोटा व्यापार जापानके हाथमें है। जापानके दुर्भाग्यसे १६२३ सितम्बरके भूचालने जापानका नाश कर दिया। अब जापानको उठते उठते कुछ समय लगेगा। भारतके लिये यह सुअवसर दैवयोगसे उपस्थित हुआ है। भारतको इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिये। दियासलाई, सूई, पीपरमिण्ट, अर्क कपूर, जीनतान, फैंसी रूमाल आदि—जो जापानसे आते थे—इस समय भारतमें तैयार किये जायं तो बाजार हाथमें आ सकता है। इस समय बाजारमें कोई प्रतिस्पर्धी नहीं रहा। किसीकी प्रतियोगिता नहीं करनी है। उचित लाभपर माल बेचनेसे बाजार अवश्य हाथमें आ जायगा। शीशेके कारखाने खोलनेका भी यह अच्छा सुयोग हाथमें आया है।

(२) *निर्यात या रफ्तनी*

कुछ लिखनेके पहले उचित होगा कि सक्षेपमें भारतके निर्यातका इतिहास दे दिया जाय। भारतके निर्यातका इतिहास भारतकी समृद्धिका इतिहास है। संसारके राष्ट्र जब प्रारम्भिक अवस्थामें थे उसी समयसे भारत अपना तैयार माल विदेशोंके

बाजारोंमें भरता रहा है। इसका प्रधान निर्यात-व्यापार कपड़ा और मसाला था। कपड़ेकी बुनाई और बारीकी तथा वेल बूटा और कसीदा काढ़नेमें इसने इतनी ख्याति प्राप्त की थी कि बड़े बड़े राज दरबारके समारोहोंमें यहांके बने वस्त्रोंका आदर होता था। रमणियां बड़े चावसे अपने पतियोंसे कहतीं कि ढाकेकी मलमल मगा दीजिये। इस तरह करोड़ोंका कपड़ा हर साल एक एक प्रान्तसे विदेशोंको जाता था। भारतका यह निर्यात व्यापार अति प्राचीन कालसे चला आता है। इतिहास पढ़नेसे मालूम होता है कि जिस समय रोम साम्राज्य अपनी उन्नतिके शिखरपर था उस समय रोमके शाही महलमें भारतके कपड़े ही शोभा देते थे। महारानी क्लियोपेट्राको ढाकाको मलमलके सामने दूसरा कोई कपड़ा नहीं भाता था। इसकी बारीकीपर ये मुग्ध थीं। इसकी बारीकीका अनुमान इतनेसे ही कर लीजिये कि सारा थान एक साथ एक अगूठीके छेदसे होकर निकल सकता था। भारतका निर्यात व्यापार कितना उन्नत था इसका दिग्दर्शन हम पूज्य माल-वीयजीकी उस रिपोर्टसे दे देना चाहते हैं जिसे उन्होंने इण्डस्ट्रियल कमीशनके सदस्यकी हैसियतसे लिखा था। उस रिपोर्टमें अधिकतर सदस्योंके मतका प्रतिवाद करते हुए उन्होंने अपनी अलग रिपोर्ट लिखकर यह दिखलाया है कि जो लोग भारतको केवल कृषि प्रधान और कच्चा माल उपजानेवाला देश कहते हैं वे भ्रममें हैं। अति प्राचीन कालसे ही भारत तैयार मालसे ससारकी आवश्यकता पूरी करता आया है। उन्होंने अग्रेज इतिहास-

डिग्बी साहबने "प्राप्परस ब्रिटिश इण्डिया"में लिखा है :—

	पौं०	शि०	पेंस
रेशमी कपडा १०० पौंडके मूल्यपर	८१	०	११
रूई १०० पौंडपर	०	१६	११
सूती माल	८१	२	११
ऊन (तैयार) फी सैकडे	८४	६	३
ढाका मलमल (बूटेदार) १०० पौंडपर	३२	६	२
अन्य सूती माल	३२	६	२

इङ्गलैण्डसे जो माल भारत आता था उसपर किसी तरहका कर नहीं बैठाया जाता था। जिस समय इङ्गलैण्डमें भारतीय सूती मालपर ८१पौंड कर था उस समय इङ्गलैण्डके बने मालपर भारतमें २॥) सैकडे महसूल था। इसी समय इङ्गलैण्डमें मशीन आदिका आविष्कार हुआ जिससे उनके यहां अधिक और सस्तो चीजें तैयार होने लगी। इस संबन्धमें मिस्टर विलसनने ठीक ही लिखा है.—"१८१३ में गवाही देते समय कहा गया है कि इस सालतक भारतके बने सूती और ऊनी कपडे इङ्गलैण्डके बने कपड़ोंसे कहीं सस्ते बिकते थे, फिर भी उनसे ६० और ७० प्रति सैकडे लाभ होता था। इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि इङ्गलैण्डके व्यापारकी रक्षाके लिये यातो भारतके बने मालका यहा आना ही एक दम रोक दिया जाय या ७० या८० प्रति सैकडे महसूल लगा दिया जाय। अगर उस समय इन उपायोंसे काम न लिया गया होता तो पेटली और मैंचेस्टरके कारखानोंपर ताला चढ़ा देना पड़ा होता और स्टीम-इञ्जन आदिकी सहायता

किसी कामकी न हुई होती। भारतके व्यवसायका गला घोंटकर इनकी रक्षा की गई। अगर उस समय भारत स्वतंत्र होता तो वह भी इसका बदला लेता और उसी तरहके कर बैठाकर इङ्गलैण्ड-के बने मालको भारतमें घुसने न देता। उस समय वह विदेशी शासनका कड़ुआ फल चख रहा था, इसलिये वह अपनी रक्षा नहीं कर सका। ब्रिटिश माल बिना महसूल दिये ही भारतके बाजारोंको पाटने लगे। भारतीय कारीगरों और व्यवसायियोंकी किसी तरह बराबरी न कर सकनेपर उन्होंने राजनीतिक अधि-कार दुरुपयोग किया और बेईमानीसे उन्हें दबाया।"

इसी तरह जहाज-निर्माणका काम भी हम लोगोंके हाथोंसे निकल गया। जहाज-निर्माणमें हम लोगोंका क्या स्थान था इस सम्बन्धमें अध्यापक राधाकुमुद मुखर्जीने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री आफ इण्डियन शिपिंग"में लिखा है—"दारा और सिकन्दरशाहने भारतसे सैकड़ों जहाज अपने लिये बनवाये थे। भारतके जहाज अफ्रिका और मेक्सिकोतक बराबर आते जाते थे।" डिग्बी साहबने लिखा है कि १०० वर्ष पहले अर्थात् आजसे २५० वर्ष पूर्व जहाज बनानेका काम यहां बड़ी उत्तमतासे होता था।"

सन् १८०० ई० में अर्थात् आजसे १२३ वर्ष पूर्व भारतके बड़े लाट वेलेस्ली साहबने कम्पनीके सामने अपनी रिपोर्ट पेश की थी। उसमें उन्होंने लिखा था। "कलकत्ताके बन्दरगाहमें इस समय १०,००० टनके जहाज मौजूद हैं जो भारतके बने हैं। इनमें माल इङ्गलैण्डतक आ सकता है। कलकत्ताके बन्दरगाहपर

लोगोंके निजी जहाज इतने हैं, उनकी बनावट इतनी मजबूत है कि यहाके व्यापारियोंके लिये जहाजोंकी कमी भी कमी नहीं पडेगी।"

पर यह भी इङ्गलैण्डवालोंको सह्य नहीं था कि भारतके बने जहाजोंमें माल जाय। वहा शोर गुल मचने लगा। परिणाम यह हुआ कि कम्पनीके डायरेक्टरोंने उन जहाजोंसे काम लेना कानूनन रोक दिया।

ब्रिटेनने इसी घृणित नीतिसे काम लिया। १८३३ के बादसे यह नीति और जोरोंसे चलाई गई। परिणाम यह हुआ कि भारतका व्यवसाय एकदम नष्ट हो गया।

इसके साथ ही कच्चा माल बाहर भेजनेके लिये उन्होंने अधिकाधिक उत्साह प्रदान करना आरम्भ किया। १८ वी सदीमें इङ्गलैण्ड अपने उपनिवेशोंका प्रयोग कच्चा माल तैयार करानेमें करने लगा। उपनिवेशोंसे कच्चा माल इङ्गलैण्ड आता था और तैयार माल विदेशोंमें जाता था। अमरीकाकी स्वाधीनताके बाद उपनिवेश तो इनके चंगुलसे निकल गये। भारत उस समयतक इनके हाथमें आ ही गया था। इन्होंने इसे ही अपना साधन बनाया। भारत सरकारकी भी सदासे यही नीति रही है। रूईके उत्पादनके लिये जो चेष्टाये की गई हैं वे इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। भारत सरकारने १७८८ से लेकर आजतक समय समयपर रूईकी पैदाइश तथा जाति बढानेका सदा यत्न किया है पर रूईसे कपडा तैयार करानेकी बात एकबार भी नहीं सोची है।

रेलवेकी लाइनें भी इसी गरजसे बिछाई गई। इसके जनक लार्ड डलहौजीने अपनी रिपोर्टमें स्पष्ट शब्दोंमें कहा है कि सबसे अधिक लाभ यह होगा कि भारतके कोने कोनेसे कच्चा माल बटोरकर इङ्गलेण्ड भेजनेमें इन रेलोंसे असीम लाभ होगा।

इस तरह धीरे धीरे हम इस दशाको पहुंचा दिये गये कि सिवा कच्चा मालके हमारे पास और कुछ नहीं रहा जो हम विदेशोंको भेजते। आज भारतका निर्यात ससारमें शायद सबसे अधिक होगा पर उससे लाभ क्या है, यह कहते शर्म आती है।

अब भारत यूरोपीय देशोंके लिये कच्चा माल देनेका साधन हो गया है और जबतक इसकी शासन व्यवस्था नहीं सुधरती तबतक यही हालत जारी रहेगी। साधारणत यहा चावल और गेहू आवश्यकतासे कहीं अधिक पैदा होते हैं। इससे इनका चालान स्वाभाविक बात है, रूई, पाट, जाल, चमडा तथा तेलहनको इनमें शामिल कर देनेसे आधा निर्यात इन्हीं वस्तुओंका होजाता है। आसू पोंछनेके लिये चट और बोरेका चालान तैयार मालमें गिनती करानेके लिये है।

यहांपर यह भी दिखला देना उचित होगा कि यह कच्चा माल किस परिमाणमें किन किन देशोंमें जाता है। ३७ प्रति सैकडे माल तो इङ्गलैण्ड तथा अन्य ब्रिटिश उपनिवेशोंमें जाता है। यूरोपके अन्य देशोंमें कुल मिलाकर १८ प्रति सैकडे जाता है। अमरीकामें १२, अफ्रीकामें ३ और आस्ट्रेलियामें २ प्रति-सैकडे जाता है। शेष एशियाई मुल्कों—जापान और चीनमें ही रह

जाता है। रूई और लोहेका चालान अधिकतर इङ्गलैण्ड जाता है। यूरोपीय महायुद्धके पहले चमड़ेकी अधिकांश रफ्तनी जर्मनी होती थी। लड़ाईमें यह रफ्तनी इङ्गलैण्ड और इटाली जाती थी। लड़ाईके बाद भी जर्मनी इस व्यापारको फिर हथियानेके प्रयासमें है! जर्मनीमें चावलका चालान भी बहुत जाता है। जमींकन्द और तेलहन फ्रान्समें अधिक जाता है। रूई जापान अधिक मंगाता है। पाट तथा बोरा अधिकतर इटाली और ब्रिटनमें जाता है। तेलहनकी खपत बेलजियममें अच्छी है। नीचेकी तालिकासे यह और स्पष्ट हो जायगा। इस तालिकामें यह दिखलाया गया है कि भारतसे सम्पूर्ण निर्यात व्यापारका कितना भाग किस देशमें जाता है।

देशका नाम	१९१३-१४	१९१८-१९	१९१९-२०	१९२० २१	१९२१-२२	१९२२-२
ब्रिटन	२३.४	२६.२	३०.४	१२.१	१६.६	२२ ०
जर्मनी	१०.६	—	.४	३ ७	७.०	७.५
जापान	६.२	१२.१	१४ ८	१० १	३६.५	१३ ३
अमरीका	८.६	१३ ८	१५.६	१४.५	१०.८	११.५
फ्रान्स	७.१	३.६	५ ३	३ ६	४.२	५.१
बेलजियम	४.६	.००४	३.०	५.३	३.५	३.८
अस्ट्रिया हंगरी	४.०	०६	.१	.४	.४	.४
लङ्काद्वीप	३.७	४.२	३.५	४.७	५ ०	४.१

देशका नाम	१९१३-१४	१९१८-१९	१९१९-२०	१९२० २१	१९२१-२२	१९२२-२३
इटाली	३.२	४०	२७	२८	२५	३४
हांगकांग	३२	२०	२८	३०	२.७	२२
स्ट्रेट्स सेटलमेंट	२.८	२९	२३	३६	३.२	२५
चीन	२.३	११	३५	३५	४.८	४.६
हालैण्ड	१.८	०३	५	.५	१२	१.३
आस्ट्रेलिया	१.६	२६	११	२६	१७	१८
रूस	१०	—	—	—	००२	.००३
मिस्र	९	६१	१०	१४	९	१२
जावा	८	१४	६	१२	१७	१०
फारस	६	१३	६	८	९	७
मारीशस	५	६	४	७	९	८
अन्य देश	९५	१४१	११२	१५२	१२२	१२७

प्रधान निर्यात

पाट और बोरा—पाटकी दो जाति होती है--सन और पटुवा। संसारभरमें पाटकी जितनी खपत है प्राय सब यहींसे पूरी होती है।

पाटकी खेती गंगा और ब्रह्मपुत्र नदीकी डेल्टामें होती है। बङ्गाल सूबा, आसाम, कूचबिहार, बिहार और उड़ीसामें भी कुछ जिले

इसकी खेतीके लिये उत्तम है। गंगाकी बाढसे खेतोंमें नई मिट्टी पडती है। इससे खाद वगैरहकी भी आवश्यकता इन खेतोंमें नहीं रहती। बेहन (बीज या बेंगा) छोट देनेके बाद फिर रखवाली करने, निराने या सोहनेकी जरूरत नही पडती। पाटका पौधा आपसे आप उगकर १० फुटसे १२ फुटतक बढ जाता है। कच्ची फसल काट ली जाती है और तीन सप्ताहतक पानीमें सडायी जाती है। सड जानेसे पतले पतले लम्बे रेशे पौधे डण्ठलसे अलग हो जाते हैं। पौधोंको साफ पानीमें पीटकर धोया जाता है, फिर बाहर धूपमें सूखनेके लिये रख दिया जाता है। जरा नमी रहते ही डंठा अलग कर लिया जाता है और रेशे रह जाते हैं। रेशे निकालनेका काम अभी मशीनों द्वारा नहीं किया जाता है। पाटकी खेती मार्चमें शुरू होती है और मईतक बोआई होती रहती है। जुलाईसे सितम्बरतक फसल तैयार हो जाती है। नीचेकी तालिकामें यह दिखलाया गया है कि किस सनमें कितने एकड खेतमें पाट बोया गया और कितनी गांठ पाट पैदा हुआ।

सन्	एकड भूमि	पैदावार गाँठोंमें ४०० पौण्डकी एक गाठ
१९०४	२८,६६,७००	४०,००,००
१९०६	२८,७६,६००	७२,०६,६००
१९१४	३३,५२,२००	१०,४४,३६,००
१९१५	२३,७६,०००	७३,४४,८००
१९१६	२७,०२,०००	८३,०६,३००

सन्	एकड़ भूमि	पैदावार गांठोंमें ४०० पौंडकी एक गांठ
१९१७	२७,३५,०००	८८,६७,२००
१९१८	२५,००,४००	६६,५५,७००
१९१९	२८,३८,६००	८४,०८,१३,००
१९२०	२५,०६,०००	५६,१५,०००
१९२१	१५,१८,०००	३६,८५,०००
१९२२	१८,००,०००	५४,०८,०००
१९२३	२३,१३,०००	६६,२३,०००

हर साल नेपालसे प्राय ६०,००० गाठें आती हैं और मद्रासके विम्बीपट्टम प्रदेशमें भी कुछ पाट पैदा होता है। यह इस आकडेमें शामिल नही किया गया है।

इस तालिकासे प्रगट होता है कि गत चालीस वर्षोंमें पाटकी खेतीमें ४०० प्रति सेकडेकी बढती हुई है। लड़ाईके पहले ३१,६६,६०० एकड भूमिमें पाट बोया गया था। १९१८ में फसल अच्छी नहीं रही। १९१९ में ३००,००० एकड भूमि अधिक बोयी गई। इसके बाद पाटकी खेती बराबर गिरती गई। १९२३में ५ हजार एकड़ भूमि कममें पाट बोया गया। इसका कारण यह था कि चावलसे लाभ अधिक दिखाई देने लगा। पाटकी माग दिन दिन बढती गई। १८५१ में पाटका दर १४।|) रु० गाठ था। वही दर १९०६ में ५७॥)रु० गाठ हो गया। इसके बादसे मूल्य कुछ न कुछ घटता गया। १९१२ में ५४॥)रु० हो गया। १९१३ में ८६॥

रु० तक दर बढ गया था। १९१४ में युद्ध आरम्भ हुआ। मांग एक दम घट गई, क्योंकि जर्मनी इसका प्रधान ग्राहक था। १९१३में जो मुनाफा हुआ था उससे १९१४में फसल भी अधिक बोयी गई। मांगके न रहनेसे तथा फसलके अधिक होनेसे मूल्य एकदम गिरकर ३१)रु० हो गया, खेती कम हो गई। १९१६में दर फिर उठकर ५७) रु० हुआ पर इससे फसलपर कोई प्रभाव नहीं पडा। तबसे मूल्यमें बराबर घटाबढी होती रही। १९२५ में पाटका जो मूल्य रहा है उससे आशा की जाती है, किसान अधिक पाट बोवेंगे।

पाटके निर्यातका इतिहास—पहले पहल १७९५ में पाट बाहर गया पर १८२८ तक बहुत कम माल गया। १८२८ में ३६४ हण्डर (४९९ मन) पाट बाहर चालान गया था। उस समयसे यह व्यापार धीरे धीरे उन्नति करता गया। १८३२-३३ में ११८०० हण्डर (१५९३० मन) पाटका चालान बाहर गया था। १८३८ में डण्डीके कुछ व्यापारियोंने रस्सी बटनेका कारखाना पहले पहल खोला और पाटको बटकर (सुतरी) बेचना आरम्भ किया। चरखेपर पाटकी बटाई इतने जोरोंमें चली कि १८५० तक पाटसे अधिक सुतरी (बटा हुआ पाट) बाहर जाती थी। इसी समय क्रीमियासे युद्ध छिड गया। अभी-तक रूससे सनका चालान आता था। क्रीमिया युद्धके छिड जानेसे सनका चालान रूससे रुक गया। लाचार भारतके पाट पर दृष्टि डालनी पड़ी और तभीसे पाटका चालान अधिकाधिक

होने लगा। १८८२-८३ में ५१७४१० टन पाट बाहर गया था। १९०८-९ में यह संख्या बढ़कर ९००,००० हो गई। डण्डीमें जितनी पाटकी खपत थी उसमें किसी तरहकी कमी नहीं हुई। १९१३ में प्राय १२००,००० गाठ की अर्थात् २२०,०० टन की खपत थी (एक गाठमें ४०० पौण्ड होता है।) १९१४ में ७५८,००० टन माल बाहर गया था। इसमेंसे आधा केवल डण्डी गया था। नीचेकी तालिकासे पाटकी गाँठोंके निर्यातके अकका पता चल जाता है।

देश		१९१२-१४	१९१८-१९	१९१९-२०	१९२०-२१	१९२१-२२	१९२२-१९२३
ब्रिटन		१,६२६,०६७,	१,२५५,०७५	१,७३९,७५२	७६१,७२९	५०८,६७६	८७४,५१७
जर्मनी		८८६,९२८	——	२०,२१०	४०३,५८१	८०६,४७३	७९२,२३२
अमरीका		६५९,३६६	३४२,८८२	४३४,८३४	६१६,०२८	३७१,९६३	५०१,९१०
फ्रांस		४०७,२६५	२४०,५९३	४५२,०९४	२८०,२४६	३१२,६८७	३२०,८०७
आ० हंगरी		२५६,०७२	——	१००२	८२१०	——	——
इटाली		२११,५१२	१४९,१४४	१५७,२२६	१२८,०६६	१४१,८२०	१९५,२८३
स्पेन		११८,६१३	७३,११३	१०७,१७३	१३३,५९९	१२३,८७२	१५६,५४२
अन्य देश		१२७,६०३	१९८,९०७	४०१,८६७	३१४,०५९	३१३,५४५	३१५,२७७
कुल जोड	गाठ	४३०३,३२६	२२२९,७१४	३३१४,१५८	२६४५,५१८	२६१९,०३६	३२३६,५४८
	टन	७६८,२५१	३९८,१४६	५९१,८१४	४७२,५१४	४६७,६८५	५७७,९५५
	मू पौं	२०,५१०,९२९	८,४८०,०५२	१६,६६६,३०१	२०,९०७,२४३	९,३६६,१०६	१५,०१८,९७६

१९१३-१४ में पाटकी खपत जर्मनी और आस्ट्रियामें ब्रिटनके बाद सबसे अधिक थी। जर्मनी इस पाटसे कम्बल और सस्ती दरियां तैयार करता था। सालमें प्राय: ८००,००० गांठ जर्मनी और २५०,०००गांठ पाट आस्ट्रिया हंगरी जाता था। यही कारण था कि लडाई छिड जानेके बाद इन देशोंके साथ व्यापार बंद हो जानेसे एक बार पाटका दर एक दमसे नीचे गिर गया था। पर बाद ही इटाली, स्पेन, अमरीका आदि देशोंने इसे मंगाना शुरू किया और भाव फिर चढ गया। १९१७ में पाटकी नाकाबन्दी कर दी गई जो १९१९ के अक्टूबर तक रही। १९२० से पाटका व्यापार फिर ठिकाने आ गया। जर्मनी इतने ही दिनोंमें फिर पहलेकी तरह माल मगाने लगा है। १९२३ में प्राय उतना ही माल गया जितना १९१४ में गया था।

यह तो हुआ पाटके निर्यातका संक्षिप्त इतिहास। यहाँ अब यह भी दिखला देना चाहते हैं कि व्यापारी महाजन पाट किस तरह बटोरते हैं। बडे बडे महाजन या व्यापारी किसानोंको रुपया पेशगी दे देते हैं और यह शर्त कर लेते हैं कि जो माल (पाटका) तैयार होगा सब हमारे हाथ बेचना पडेगा। इसका असर व्यापारपर अवश्य पडता है। पर यह अनिवार्य है क्योंकि प्रत्येक छोटा छोटा किसान अपना माल बाजारमें नहीं ला सकता। ये महाजन माल इकट्ठा कर बडे बडे दलालों या व्यापारियोंके हाथ बेचते हैं। इसकी कच्ची गाँठें बांधकर कलकत्ता या चटगांव भेजी जाती हैं। इसमें छिजन बहुत कम जाती है।

कलकत्तेका पाटका बाजार दलालोंके हाथमें है। इन्हींसे सब लोग माल खरीदते हैं। पाटकी गांठें प्रेसोंमें भेज दी जाती हैं जहां झाड़कर साफ करनेके बाद इनकी पक्की गाठें बनती हैं। यही गाठें बाहर भेजी जाती हैं। एक गाठमें प्रायः ४०० पौंड पाट रहता है। अच्छे पाटकी पहचान यह है कि पहले तो वह खूब लम्बा हो, दूसरे चिकना हो और तीसरे चमकीला हो। कितनी मिलें मुलायम पाटको पसन्द करती हैं और कितनी कड़ी। पाटकी कई किस्में हैं, जैसे उत्तरिया, देशवाल, देशी, देवरा। पर इनमें सिराजगंजी और नारायणगंजी सबसे अच्छा होता है। ये दोनों पाटके व्यापारके प्रधान क्षेत्र हैं।

पाटसे सुतली तैयार करनेके लिये पहला कारखाना सिरामपुरके पास रिसरामें १८५५ में खोला गया। उसके ४ वर्ष बाद बारानगरमें बुननेकी कल बैठाई गई। इसी बीचमें हाथसे बुनाईका काम इतने जोरपर हुआ कि बारानगरके कारखानेको १८७१ में गहरा धक्का लगा। पर तबसे काम बराबर उन्नति करता गया और हाथसे बुनाईका काम बन्द होता गया यद्यपि कताईका काम जहाँ जहां पहले हाथसे होता है सभी जगह जारी है।

पाटका प्रयोग कई तरहसे किया जाता है। अन्न आदि हर तरहका सामान भेजनेके लिये इससे बोरे बनाये जाते हैं, टाट इसका बनता है। युद्धमें इसके बोरे बनाकर इनमें बालू भरकर रख दिये जाते हैं और इन्हींकी आड़से सिपाही गोली चलाते हैं और शत्रुके वारसे अपनी रक्षा करते हैं। इससे

तिरपाल भी बनते हैं। रूसकी क्रान्तिके बादसे इसका प्रयोग तीसीके रेशेके स्थानपर भी होने लगा है।

हार्म्स्वर्थ बिजिनेस लायब्रेरी जिल्द तीनके लेखकने लिखा है —"भारत पाटका ठेकेदार है। जिस तरहका जलवायु और मिट्टी पाट उपजानेके लिये चाहिये वह बंगालकी भूमिमें वर्तमान है। और देशोंने भी यथाशक्ति पाटकी खेती करनेका यत्न किया है पर किसीको अभीतक सफलता नहीं मिल सकी है।"

आगे चलकर उन्होंने लिखा है —"पाटका काम पहले पहल डण्डीमें आरम्भ हुआ था। कुछ समय तक इसके हाथमें इसका एकाधिपत्य था। यह व्यापार इतना अधिक चला कि सब देशोंने इसे अपनाया। भारतवर्षमें इसकी खेती सबसे अधिक हुई। इस समय पाटसे माल तैयार करनेमें भी भारतका अच्छा हाथ है और बहुतसा कच्चा माल यहीं रह जाता है। भाग्यवश इसकी खपत बढते ही पैदावारमें भी बढती हो गई। नहीं तो आज संघर्ष न जाने क्या रूप धारण करता और न जाने क्या परिणाम निकलता। इङ्गलैण्डमें इस समय बहुतसा तैयार माल भारतसे ही जाता है। डण्डीके व्यापारियोंको तीव्र प्रतियोगिताका सामना करना पडता है।"

डण्डी स्काटलैण्डमें है। यहाके लोग पाटके काममें बहुत ही चतुर होते आये हैं। आज भी भारतके बाजारमें (डण्डी) स्काटलैण्डके लोग ही दक्षताका काम करते हैं।

ऊपर हमने जो अवतरण दिया है उससे साफ प्रगट है कि

भारतके लिये पाटके व्यापारका भविष्य अवश्य उज्ज्वल है। कच्चा माल भेजनेमें हमें जो हानियाँ उठानी पड़ती हैं उनका वर्णन हम कहीं आगे करेंगे। यहांपर केवल यही कहना है कि हमें पाटके व्यापारको पूरी तौरसे अपने हाथमें कर लेना चाहिये। थोड़ी सावधानी और प्रयत्नसे यह काम साध्य है। इसके साथही यह भी जान लेना चाहिये कि अभीतक पाटसे चट और बोरा बनानेका काम केवल दो ही भारतीय कारखाने करते हैं, नहीं तो सभी यूरोपियनोंके हाथमें हैं।

इण्डस्ट्रियल कमीशनने इस सबधमें अपनी रिपोर्टमें जो कुछ लिखा है उसे उद्धृत कर देना अप्रासंगिक नहीं होगा। पाटके व्यापारपर प्रकाश डालते हुए उसने लिखा है—"इस समयतक कलकत्ताके आसपास प्रायः ५३ मिलें पाटसे माल तैयार करनेका काम कर रही हैं। ३ मिलें मद्रासमें हैं। इसके अतिरिक्त ३६, ३०० चरखे और करघे चल रहे हैं। मिलोंमें काम करनेवाले मजूर सब बाहरसे आते हैं। बगालके बहुत कम कुली इनमें काम करते हैं। इनका मेंठ या मुखिया सरदार होता है यही इन्हें लाता है,रहनेकी जगह देता है। इससे हर तरहकी क्षति और असुविधाकी सम्भावना रहती है। पर मिलोंके मालिक इस दुरवस्थामें परिवर्तन लानेका यत्न नहीं कर रहे हैं। जिन झोपड़ियोंमें कुली रहते हैं, सरदारकी सम्पत्ति समझी जाती हैं अर्थात मजूरोंपर उसका अनन्य प्रभुत्व होता है। कितनी बुरी बात है। क्या मिलके मालिक लोग अपनी ओरसे झोपड़िया या मकान नहीं

तैयार करवा सकते ? ये मकानात इतने गन्दे और खराब रहते हैं कि इन्हें बीमारोंका अड्डा समझना चाहिये। मजूरोंको कामके लिहाजसे ६ से लेकर ३० रुपया मासिकतक तनखाह मिलती है।"

"मिलवालोंने हम लोगोंसे शिकायत की कि मजदूर नियत समयसे अधिक काम करना नहीं चाहते। सप्ताहभर पूरा काम भी नहीं करते। चार या पांच महीना काम करनेके बाद अपने घरोंको चले जाते हैं और चार चार महीना तक लौटनेका नाम भी नहीं लेते। इससे चतुर मजदूरोंका सदा अभाव रहता है और हमलोग अधिक माल तैयार नहीं कर सकते।"

"हम लोगोंने इसके कारणका पता लगाया। मजदूर देहाती हैं। अधिक समयतक देहातोंकी साफ सुथरी और स्वच्छ हवाका आनन्द लेते आये हैं। इन मिलोंमें आकर उन्हें नर्कमें दिनभर काम करना पड़ता है। दिनभर कड़ा परिश्रम कर रातको वे थके मांदे उन गन्दी झोपड़ियोंमें आश्रय लेते हैं। बगलमें कलालकी कलवरियामें जाकर दो चुक्कड़ दारू चढ़ाकर बेहोश पड़ रहते हैं। पैदा करनेके लोभसे घरोंसे भाग भागकर यहां आते हैं। रुपयेके लालचसे यहां पड़े रहते हैं। जहां अधिक तबीयत घबराई कि घर चल देते हैं। इनके बाल बच्चोंकी शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं है। यद्यपि उनके गावोंमेंभी उनकी सन्ततिकी शिक्षाके लिये कोई उचित प्रबंध नहीं है पर यहां मिलोंमें तो उसका सर्वथा अभाव है। इस अवस्थामें ये मजदूर जितने घंटे काम कर देते हैं, और अपने घरोंको छोड़ कर जितने समयतक यहां रह जाते हैं उसीको गनीमत सम-

झना चाहिये। यदि मिलोंके मालिक अधिक काम औरउमदा
दूर चाहते हैं तो उन्हें उचित है कि मजदूरोंके लिये रहनेका
उनकेबाल-बच्चोंके लिये स्कूल आदि खुलवानेका यत्न करें।
एक उपाय है जिससे अच्छे और टिकाऊ मजदूर मिल सकते

एक बात और है। पाटका व्यापार इतना उन्नति क
जा रहा है पर पाटसे माल तैयार करनेका काम हिन्दुस्तानि
हाथमें बहुत कम है। पाटकी खेती करना, साफ करके बे
और इकट्ठा कर दलालोंके हवाले करना, इतना काम तो ज्याद
हिन्दुस्थानियोंके हाथमें है। पहले बंगालियोंके हाथमें,
अब धीरे धीरे मारवाड़ियोंके हाथमें आ रहा है। पर पाटसे म
तैयार करनेका काम अधिकांश अंग्रेजोंके ही हाथमें है। यहा म
तैयार कराकर इङ्गलेण्ड भेजनेमें इतनी सुविधा है कि कित
अग्रेज कम्पनिया केवल इसी गरजसे यहा खोली गई हैं।
मिलें हिन्दुस्तानियोंकी ओरसे भी खुली हैं जिनमें अच्छा का
हो रहा है, जैसे बिड़ला जूट मिलस और सर सरूपचन्द हुकु
चन्द जूट मिलस। आशा है इनकी सफलतासे अन्य भारत
योंको भी उत्साह मिलेगा और वे जूट मिलें खोलनेका य
करेंगे, जिससे पाटकी रपतनी एक दम रुक जाय और सा
पाट यहीं मिलोंमें खर्च हो जाय। पाट तथा पाटसे तैयार मा
जिस कदर बाहर जाता है उसे देखकर अन्य व्यवसायोंके मुका
बिले सन्तोष अवश्य होता है पर माल तैयार करनेका काम हमा
हाथमें न होनेसे हम अधिक लाभके भागी नहीं रहते।

मार्च १९१६ में भारत सरकारने पाटके कच्चे मालपर—जो बाहर जाता है—महसूल बैठाना तै किया। निदान सवा दो रुपया गांठ महसूल बैठाया गया और दस आना गाठ कटिंगपर कर बैठाया गया। साथ ही सोलह रुपया टन टाटपर और दस रुपया टन बोरेपर महसूल बैठाया गया। एक वर्ष बाद १९१७ में महसूलका यह दर दूना कर दिया गया। तबसे वही निर्ख चली आ रही है। बिम्लीपट्टमके मालपर यह कर नहीं लगता। बिम्लीपट्टमका माल बंगालके मालसे घटिया नहीं होता, उतना ही दमदार होता है, उसी तरहके रेशे रहते हैं। बम्बईके दक्खन और करनाटक जिलोंमें तथा मद्रासके नलोर और विजगापट्टम जिलोंमें इसकी उपज अच्छी होती है। प्रतिवर्ष ७००।८०० गाठें तैयार होती हैं। बिम्लीपट्टम, विजगापट्टम तथा कोकोनाडाके बन्दरगाहोंसे लदकर ये माल कलकत्ताके बन्दरगाहमें आते हैं और यहांसे बाहर भेजे जाते हैं।

इसके साथ ही हम यहाँपर संक्षेपमें यह भी दिखला देना चाहते हैं कि और किस किस देशमें पाट या सनकी खेती होती है। सनकी खेती अधिकतर रूस और इटालीमें होती है। इससे रस्सी, कन्वस और बोरे बनाये जाते हैं। ब्रिटनमें इसकी सबसे अधिक खपत है। स्पेन और उत्तरी अफ्रीकामें भी इसकी खेती होती है। स्पेनमें इससे टोकरियां और रस्से बनाये जाते हैं। इसकी चटाइयां भी बनती हैं। उत्तरी अफ्रीकामें इसका प्रयोग कागज बनानेमें भी किया जाता है।

मानिला सन-यह पत्तेसे पैदा होता है। यह रस्सी, दरी व बोरा बनानेके काममें आता है। भीतरके मुलायम रेशोंको छ कर अलग कर लेते हैं और उससे मलमलकी तरहका कप तैयार करते हैं जो मुलायम और मजबूत होता है। यह फि पाइन द्वीपमें बहुतायतसे होता है। थोनियों और भारतमें इस खेती करनेका यत्न किया गया पर सफलता नहीं मिली।

पाटकी खेती-अधिकाश भारतमें ही होती है। यही कच्चा और तैयार माल प्राय सभी देशोंमे जाता है। अमरीक ब्रेजिल और अर्जेण्टाइनमें इसके बोरे बनते हैं और गाठ बाध नेके काममें आता है। कलिफोनियामें जो कच्चा माल होता उससे बोरे बनाये जाते हैं। भारतके अलावा पाटकी खेती जर्मन वेस्टइण्डीज, चीन, जापान और न्यूजीलैण्डमें होती है।

गनी या बोरा

यहातक तो हमने पाटका हाल लिखा। अब इसके आगे हम यह बतला देना चाहते हैं कि पाटका प्रयोग यहा किस तरह होत है। हम ऊपर लिख आये है कि पाटकी एकमात्र उपज भारतमें होती है। पाटका अधिकतर प्रयोग बोरा बनानेमें किया जाता है पर खेदके साथ लिखना पड़ता है कि १८५४ तक बोरेकी उपज बढ़ानेके लिए कोई प्रयास नहीं किया गया था। १८५५ में पहले पहल बोरा बनानेकी मिल श्रीरामपुरके पास रिसड़ामें बैठाई गई। चार वर्षके बाद बारानगरकी मिल खड़ी की गई और १८६२ में

गौरीपुर मिल खुली। इन मिलोंने जो लाभ कमाया उससे लोगों-की आखें खुल गई और थोड़े ही दिनोंमें कलकत्ताके आसपास बोरा बनानेकी अनेक मिलें हो गईं, पर सभी विदेशी पूंजीसे खड़ी की गई थीं। अभी हालमें केवल दो मिलें भारतीय पूंजीसे खड़ी की गई हैं और उनका सचालन भी भारतीयोंद्वारा ही होता है। इस समय (२८-१२-२४) तक कलकत्ताके आसपास बोरा बनानेकी ५८ मिलें हैं जिनमें १००२ हजार चरखे और ४९३११करघे चलते हैं तथा ३२१ हजार मजदूर काम करते हैं। इन मिलोंमें प्रति वर्ष १२५४३५२००० गज बोरेका कपडा और ३४४२३२००० बोरेके थैले (बैग) तैयार होते हैं जो अधिकाश विदेश चालान जाते हैं।

चट बनानेकी जितनी मिलें हैं, वे चार भागोंमें विभक्त हैं (१) ए ग्रूप (२) बी ग्रूप (३) सी ग्रूप (४) डी ग्रूप। हैसियनका सौदा ज्यादातर ए, बी, ग्रूपपर होता है। बाजारका भाव भी ए, बी, ग्रूपके अनुसार चलता है। आमदनी सौदा प्राय नौ महीनेतकका होता है। कभी कभी इससे अधिक दिनतकका भी हो जाता है।

विस्तृत विवरण देनेके लिये हम यहासे बोरेको दो भागोंमें बाट देते हैं --(१) बोरा (२) चट या बोरेका कपडा (हैसियन)।

चटके दो मुख्य भेद हैं—(क) नाइन पोर्टर (ख) इलेविन पोर्टर। अंग्रेजी शब्द पोर्टरके अर्थ होते हैं ताना। "नाइन पोर्टर" और "इलेविन पोर्टर" का अर्थ है कि एक इञ्च चटमें तानीमें ९ या ११ धागे होते हैं। नाइन पोर्टरकी स्टैंडर्ड साइज ४० इ च,८ औंस है

६

(अर्थात् ४० इंच चौडा और एक गजमें ८ औंस वजन) जिसके ताने ६ और वाने १० होते हैं। हरएक गाठ २००० गजकी पक्की लोहेकी होती है। बाजारका भाव उपरोक्त साइज और पेकिंगपर होता है। इसमें आपसन ४०-६॥, ४० ७, ४०-७॥, ४०-८, ४० ८।, ४०-६, औंसतकका होता है। चौडाईमें ३२॥ से ४८ तक अधिकाश होता है। इसके अलावा ३२ इञ्चसे नीचे और ४८से ऊपरका साइज भी मिल सकता है। हरएक ८ औंससे नीचे भावमें आधा औंसका ।) घटता है और ऊपर ।≠) बढता है। चौडाईमें चालीस इंचसे छोटा लेनेसे इसी छोटाई बडाईके अनुसार कम या अधिक मूल्य देना पडता है। केवल ―) आना इञ्च पेनलटी और जोड देना होता है। ४० इञ्चसे ऊपर लेनेसे उसी तरह प्रोपोरसनेट वजनपर प्रोपोरसनेट भाव लगता है। इसमें पेनलटी नहीं लगती। इसके सिवाय इसमें ५०-१० कपड़ा जोकि ४०-८ औंसके कपडेका ५० इञ्च १००० पेकिंगका होता है। जिन कन्ट्राक्टोंमें इनमें कोई भी आपसन हो उनको ४५ दिन पहले मिलको सूचना देनी होती है कि अमुक नाप और वजनका माल बनाओ।

इलेविन पोर्टरका स्टैंडर्ड साइज ४० इञ्च १०॥ औंस (अर्थात् ४० इंच चौडा एक गजमें १०॥ औंस वजन) है जिसके ताने ११ और वाने १२ हैं। हरएक गांठ २००० गजकी लोहेकी बंधी होती हैं। बाजारका भाव उपरोक्त साइजपर होता है। आपसन इस प्रकार है ४०-६॥, ४० १०,४०-११,४०-११॥,४०-१२। चौडाई-

में ३२६ चसे ४० इच तक अधिकाश होते हैं, इसमें कमती और वेशी साइजका माल भी तैयार किया जाता है। इसके अलावा इसमें ४५ ११, ४५ १२,४५ १४,४५-१६ भी होता है जिसका पेकिग १००० पकी गाठ है। हरेक १०॥ औंससे नीचे भावपर ।≠) आना घटाया जाता है और ऊपर ।≠)बढाया जाता है। आजकल अधिकाश मिलें जो कि १२ औंसका आपसन देती हैं, १२ औंस लेनेसे १॥)सैकडा पेनलटी लेती हैं। ४५-११आपसन भी कई मिलें समय समयपर दे देती हैं जो कि १॥) अधिक लेती हैं। चौडाईमें ४० इचसे कमती लेनेसे ≠) आना पेनलटी लगता है और ऊपर लेनेसे कुछ नहीं। आपसन ४५ दिन पहले सूचित करना चाहिये। बाजारमें प्रचलित वजन अरजके चट नीचे लिखे अनुसार पाये जाते हैं।

कपडा	अरज	वजन	पोटर	शाट	गाठ	
(१)	४०	७ औं	८।६	६।८	२०००	गज
(२)	„	७।„	६	६	„	„
(३)	„	८ „	६	१०	„	„
(४)	„	१०॥ „	११	१२	„	„
(५)	४५	११ „	११	१२	१०००	„
(६)	५०	१२ „	११	१२	१०००	„
(७)	५०	१० „	६	१०	१०००	„

इस तरहकी चट प्राय सभी मिलें बनाती हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे अरज और वजनके भी बोरे बनते हैं जो खास

खास मिलें ही बनाती हैं या खास आर्डर देनेसे ही बनाये जा सकते हैं।

चटका दाम १०० गजपर फैलाया जाता है। सौदा १०० गजके ही हिसाबसे होता है।

निर्धारित वजन और अरजके अतिरिक्त यदि माल लिया जाता है तो उसके मूल्यके लिये कुछ नियम बने हैं उनका भी जिक्र यहा कर देना उचित होगा।

निर्धारित वजन ८ औंसके माल लेनेवालेको नीचे ७ औंस और ऊपर ६ औंस वजनतकका माल मिल सकता है और इसी तरह १०॥ औंसका माल लेनेवालेको नीचे ६॥ औंस और ऊपर १२ औंसतकका माल मिल सकता है।

अरज नीचे ३६ इंच और ऊपर ४५ इन्चतक दोनों तरहके कपडोंमें मिल सकती है।

बोरा या थैलेके कई भेद हैं। इनका नाम अलग अलग नीचे दिया जाता है।

भारतवर्षमें जिस मालकी खपत है।

काली धारी पन २ जिसे विट्विल पौंड २ कहते हैं। इसमें सेटी साइज भी होता है।

„ पन २। „ „ „ २।

पक्का सी,नकली लालधारी जिसे हैवीसी ३८×२८ हेम्ड कहते हैं।

„ पलेन, लालधारी जिसे ४०×२८ हैवीसी कहते हैं।

लेट सी जिसे लाइट सी ४०×२८ हेम्ड कहते हैं।

सेटी प०ट्विल साइज ४० इचसे ४५ इञ्च तक चौडा और २२ इच
से २५ इञ्च तक चौडा

असली सी, लालधारी डीडवलू ३८×२८ हेम्ड हैल्टि ग स्ट्राइप
(लाल और नीला) इस स्ट्राइपको
अपकन्ट्री स्ट्राइप भी कहते हैं ।

असली सी पलेन, डोडबलू ४०×२८ हेम्ड पलेन

ई क्वालिटी जिसे ई वैग ४०×२८, १॥। पौंड

सुतली ट्वाइन इसमें ३ से ५ तार और ७२ से ६० १ च होते हैं ।

इतना लिखनेके बाद सक्षेपमें लेवावेचोको प्रणाली भी लिख देनी आवश्यक होगी। माल मिलोंमें तैयार होता है। इससे मालके वेचनेवाले मिलवाले होते हैं। माल चालान जाता है। देशमें बहुत कम खपता है। इसलिये खरीदार अधिकाश शिपर हैं। इनके बीचमें बाजारको पार्टियां हैं जो केवल लेवावेचीका काम करती हैं। मिलोंसे लेकर शिपरोंके हाथ वेचती हैं, आपसमें भी लेवावेची किया करती हैं। मिलवालों और शिपरोंके बीचमें दलाल हैं जो लेवावेचीका सौदा पटाते हैं।

प्राय आमदनी मालकी कुल वेची हो जाती है। मिलने किसी नियमित दरसे माल वेच दिया और लेऊने खरीद लिया। भुगतानकी मितीके ४५ दिन पहले खरीदार वेचूके पास सूचना भेज देगा कि अमुक तरहका माल तैयार करो। अगर ४५ दिनके दो चार दिन पहले सूचना नहीं मिल जाती है तो याद दिलानेके लिये वेचू खरीदारके पास तकाजा भेज देता है कि आप सूचना

फौरन भेजिये। अगर इतनेपर भी सूचना नहीं मिली तो निर्धारित वजन और अरजका माल मिल तैयार करेगी। इसी तरह कमसे कम सात दिन (ये सातों दिन मिलके खुले रहनेवाले दिन होने चाहिये) पहले खरीदार बेचूके पास सूचना भेजेगा कि माल कहा भेजना होगा। यदि रेलवेसे माल भेजना है तो रेलवे स्टेशन-का नाम और यदि जहाजसे माल भेजना है तो जहाजका नाम लिख भेजेगा। यह सूचना पाकर बेचू माल रवाना करके खरीदार-को माल उतरवानेका समाचार देगा। माल जहाज या गाडीपर लद जानेपर बेचूको रेलवे रसीद या मेट रसीद मिलेगी। उसीको भेजकर वह उस मालका दाम वसूल करेगा। यदि सात दिन या नियमित दिनके भीतर खरीदारने किसी तरहकी सूचना नहीं भेजी तो भुगतानके दिन उसे डिलेवरी आर्डर लेकर मालका मूल्य देना पड़ेगा।

रूई या कपास

भारतमें रूईका फसल यद्यपि खरीफ और रबी (भदई तथा कतिकई) दोनों समय होती है फिर भी प्रधान फसल खरीफ-की ही है।

भारतके अनेक प्रान्तोंमें रूईको खेती होती है। पर रूईकी खेतीके प्रधान क्षेत्र ;उत्तरी दखिखन, बरार, मध्य भारत तथा मध्यप्रातके पश्चिमी जिले, बम्बई, सयुक्त प्रात, हैदराबाद, पञ्जाब, सिन्ध और मद्रास प्रान्त [illegible] जिलों [illegible] प्राय

कपासकी खेती वर्षापर ही पूर्णतया निर्भर करती है, क्योंकि एक तो इस देशमें सिचाईकी व्यवस्था ही समुचित नहीं है, दूसरे जिन पहाड़ी प्रदेशोंमें रुईके उपयुक्त अच्छी भूमि है वहां सिचाईका सिलसिला नहीं जम सकता; क्योंकि पथरीली भूमिमें नहर खोदना कठिन है। इसलिये बरसातके पानीपर ही रुईकी खेती निर्भर करती है। अगर पानी ठीक तरहसे नहीं बरसता तो इसका परिणाम अकाल होता है। इस अभागे देशमें किसी न किसी प्रान्त या जिलेमें प्रतिवर्ष अकाल पड़ता ही रहता है। इस महान सङ्कटसे रक्षा करनेका एकमात्र उपाय नहरोंका निकालना है। जिन २ प्रान्तोंमें नहरोंकी व्यवस्था हो गई है वे सदा फलते फूलते दिखाई देते हैं। पंजाबको ही ले लीजिये। जबसे पंजाबमें नहरोंका प्रबन्ध हुआ है एकदमसे कायापलट हो गई है। अनेक ऐसी नदियां हैं जिनका जल व्यर्थ जाता है। अगर सरकार इन नदियोंकी नाकाबन्दी कर दे और इनके जलसे नहर निकालनेका यत्न करे तो भारतकी खेतीकी अवस्था एक दम बदल जाय। सरकारको इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करना चाहिये। सिचाईसे फसलमें जो उन्नति होती है वह प्रत्यक्ष है।

इस तरह केवल सिन्ध और पञ्जाबमें कपासकी खेती सिचाईसे होती है नहीं तो सब जगह वर्षापर ही निर्भर है। अमरीकन युद्धके समय कपासका व्यापार रुक गया। इसलिए इन जिलोंसे रुई बाहर ले जानेकी आवश्यकता पड़ी। रेलकी लाइनें बिछाई गई। उस समय कपासका काम करनेवाले सभी कारखाने अंग्रेजोंके थे पर आज

कम ही प्रेमें अंग्रेजोंके हाथमें हैं।जो एकाध हैं भी उनका निजका रफ्तनीका व्यापार होता है, नही तो प्रायः सभी मिलें हिन्दुस्तानियोंके हाथमें आ गई हैं। इन मिलोंमें काम करनेवाले कुलियोंकी दशा ठीक पाटकी मिलोंमें काम करनेवाले कुलियों की सी है। इससे मजूरोंकी सदा तङ्गी रहती है और आसपासके जिलोंपर इसका असर बहुत बुरा पडता है। यहांतक कि कपास बटोरनेके लिये बडी कडी मजदूरी देनी पडती है। इन स्थानोंके अतिरिक्त संयुक्तप्रात, गुजरात, पञ्जाब और मद्रासमें भी कपासकी थोडी बहुत खेती होती है। मद्रासके सिवा अन्य जिलोंकी भी यही अवस्था है। मद्रासमें कपासका व्यापार अंग्रेजोंकी पूंजीसे चलता है।

भारत कृषिप्रधान देश है। कच्चा माल यहां इतनी बहुतायतसे होता है कि माल तैयार करनेमें इसे उन अडचनोंका सामना नही करना पडेगा जो अन्य देशोंको करना पडता है। पर भारतमें कृषिका काम जिन तरीकोंसे किया जा रहा है उनमें सुधारके बिना पूरी सफलता नहीं मिल सकती। कपासकी खेतीके बढाने और कपासकी उपजकी उन्नति करनेकी सबसे अधिक आवश्यकता है। इस परिच्छेदके अन्तमें जो तालिका दी जायगी उससे पता लगेगा कि संसारके रुईके बाजारमें भारतका क्या स्थान है। छोटे रेशेवाली रुईकी उपज स्थानीय खपतसे अधिक होती है और चालान बाहर जाता है। पर कपडेके बाजारको अपने हाथमें करनेके लिये लम्बे रेशे-

वाली रूई उत्पन्न करना जरूरी है। बाहर जो माल जाता है उसमें तैयार मालका अंश बहुत कम रहता है, क्योंकि सभी देशोंने महसूल इस तरह बैठा दिया है कि कपास तो बड़ी सुविधासे जा सकता है पर तैयार माल प्रतियोगितामें नहीं ठहर सकता।

विगत पांच वर्षोंका औसत निकालकर देखनेसे विदित होता है कि भारतसे जो कुछ कच्चा माल विदेशोंमें जाता है उसमें तिहाई केवल रूई है। रूईकी खपत यहांकी मिलोंमें भी है। इसलिये कपासका बाहर जाना हरतरहसे फसलपर निर्भर है। पर साथ ही साथ अमरीका और मिस्र (इजिप्ट) में जो कपास पैदा होता है उसका प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है।

युद्धके पहले संसारमें प्रतिवर्ष प्रायः २६५ लाख गांठ कपास पैदा होता था। उसमेंसे केवलमात्र अमरीकामें १५० लाख गांठ पैदा होती है। इसमेंसे वह घरकी आवश्यकता पूरी कर प्रति-वर्ष ८,७८६,००० गांठ माल बाहर भेजता है। अमरीकन कपास लम्बे रेशेवाली होती है। इससे इसकी मांग भी अधिक रहती है। पर अनेक कारणोंसे समय समयपर अमरीकासे काफी माल न मिलनेके कारण लंकाशायरके कपड़ेके व्यापारियोंको बड़ी असुविधायें और घाटा उठाना पड़ा है। इससे उन लोगोंने यह प्रयत्न किया है कि कपासके लिये केवल अमरीकापर निर्भर न रहकर हमें अपनी आवश्यकता कहीं और जगहसे पूरी करनी चाहिये। कपासकी खेतीके लिये भारतको उन्होंने सबसे उपयुक्त स्थान

माना है। अपनी आवश्यकता इसी द्वारा वह पूरी करना चाहते हैं। पर यहाके कपासमें एक बड़ी भारी कमी इस बातकी है कि उसके रेशे छोटे होते हैं। छोटे रेशेवाली रूईकी खपत लकाशायरकी मिलोंमें नहीं हो सकती। लाचार होकर लकाशायरके व्यापारियोंको दूसरा ठाव तलाश करना पड़ रहा है। उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशोंमें कपासकी खेतीका प्रयत्न किया है। परिणाम भी आशाजनक दिखाई दे रहा है। इस सबधमें हार्सवर्थ बिजिनेस लायब्रेरी जिल्द ३ के लेखकने लिखा है :—

"उपनिवेशोंसे कपासकी आमद भविष्यमें कैसी होगी इसका अनुमान इसीसे किया जा सकता है कि सन् १६०० में ७४५ हडर रूई वहासे आई थी पर १० वर्ष बाद १६१० मे वही अङ्क बढ़कर ६४०० हो गया। वेस्टइंडीजसे सन् १६०० में ३८६२ हंडर कपास आयी थी। १६१०में वह अङ्क बढकर १६००० हो गया। अफ्रीकामें अमरीकन रूई उपजानेका प्रयास किया जा रहा है।"

ऊपरके आकडे साफ बतलाते हैं कि उपनिवेशोंमें रूईका भविष्य कैसा है। यद्यपि इस [illegible] उपनिवेशोंमें गुणतायोग्य रूईकी पैदाइश नही हुई पर कु[illegible]
तरह होनेकी आशा की जा[illegible]
इन्हींसे पूरी हो जायगी और [illegible]
लका[illegible] जरा भी [illegible]
मिर्[illegible]
यह प्रदे[illegible] हो

अगर यह काम सफल हुआ तो रूईकी आमदनी उपनिवेशोंसे और भी बढ जानेकी सभावना है। भारतके व्यवसायियोंको इससे सचेत हो जाना चाहिये। भारत रूईकी आमदनी बढा सकता है, अगर अभीसे हमलोग सचेत नहीं हो गये, कपासकी खेती बढाई नही गई तो उपनिवेशोंके साथ फिर प्रतियोगितामें खडा होना कठिन होगा, क्योंकि उपनिवेशोंकी रूईमें एक गुण और है। भारतकी रूई छोटे रेशेवाली होती है जो लकाशायरकी मिलोंमें सुभीतेके साथ काममें नही लायी जा सकती, पर उपनिवेशोंकी रूईके रेशे काफी लम्बे होते हैं और सुभीतेके साथ मिलोंमें काममें लाये जाते हैं।

भारतमें जो कपास पैदा होता है उसके रेशे छोटे होते हैं। इससे यह प्रश्न जोरोंमें उठ रहा है कि अगर यहा कपासकी खेती बढाई जाय तो क्या इससे ससारकी आवश्यकता पूरी तरहसे पूर्ण हो सकती है, क्योंकि कपासकी माग जिस तरह बढती जा रही है पैदावारमें उस तरहकी बढती नहीं हो रही है। भारतीय काटन-कमेटीके सामने भी यही प्रश्न था। उसने अपने रिपोर्टमें इस सम्बधमें जो कुछ लिखा है उसका साराश हम यहापर दे देते हैं।

कमेटीने लिखा है —"कपासकी खेती यहा इस तरह फैली हुई है कि फसल बोनेका समय यहाँ नियत नहीं किया जा सकता। कहीपर सिंचाईसे खेती होती है और कहीं बरसातके पानीपर निर्भर करती है।"

"औसत निकालनेसे मालूम हुआ कि एक एकड भूमिमें यहाँ

माना है। अपनी आवश्यकता इसी द्वारा वह पूरी करना चाह
हैं। पर यहाके कपासमें एक बड़ी भारी कमी इस बातकी है कि
उसके रेशे छोटे होते हैं। छोटे रेशेवाली रूईकी खपत लंका
शायरकी मिलोंमें नहीं हो सकती। लाचार होकर लंकाशायरके
व्यापारियोंको दूसरा ठाव तलाश करना पड़ रहा है। उन्हों
ब्रिटिश उपनिवेशोंमें कपासकी खेतीका प्रयत्न किया है। परि
णाम भी आशाजनक दिखाई दे रहा है। इस सबंधमें हार्म्सव
बिजिनेस लायब्रेरी जिल्द ३ के लेखकने लिखा है :—

"उपनिवेशोंसे कपासकी आमद भविष्यमें कैसी होगी इसका
अनुमान इसीसे किया जा सकता है कि सन् १६०० में ७४५ हड
रूई वहासे आई थी पर १० वर्ष बाद १६१० मे वही अङ्क बढ़क
६४०० हो गया। वेस्टइंडीज़से सन् १६०० में ३८६२ हडर कपास
आयी थी। १६१०में वह अङ्क बढ़कर १६००० हो गया। अफ्री
कामें अमरीकन रूई उपजानेका प्रयास किया जा रहा है।"

ऊपरके आकड़े साफ बतलाते हैं कि उपनिवेशोंमे रूईका
भविष्य कैसा है। यद्यपि इस समयतक उपनिवेशोंमें *गणनायोग्य*
रूईकी पैदाइश नही हुई पर कुछ दिनोंमें रूईकी खेती यहा इस
तरह होनेकी आशा की जाती है कि लंकाशायरकी कुल माग
इन्हींसे पूरी हो जायगी और अमरीका आदि देशोंकी रूईकी फस
लका प्रभाव इनपर जरा भी नहीं पड़ेगा।

मिसीसिपी नदीकी प्रान्तभूमिकी जाच हो रही है। अगर
यह प्रदेश उपयोगी प्रतीत हो तो वहा कपासकी खेती की जाय

अगर यह काम सफल हुआ तो रूईकी आमदनी उपनिवेशोंसे और भी बढ जानेकी सभावना है। भारतके व्यवसायियोंको इससे सचेत हो जाना चाहिये। भारत रूईकी आमदनी बढा सकता है, अगर अभीसे हमलोग सचेत नहीं हो गये, कपासकी खेती बढाई नही गई तो उपनिवेशोंके साथ फिर प्रतियोगितामें खडा होना कठिन होगा, क्योंकि उपनिवेशोंकी रुईमें एक गुण और है। भारतकी रूई छोटे रेशेवाली होती है जो लकाशायरकी मिलोंमें सुभीतेके साथ काममें नहीं लायी जा सकती, पर उपनिवेशोंकी रूईके रेशे काफी लम्बे होते हैं और सुभीतेके साथ मिलोंमें काममें लाये जाते हैं।

भारतमें जो कपास पैदा होता है उसके रेशे छोटे होते हैं। इससे यह प्रश्न जोरोंमें उठ रहा है कि अगर यहा कपासकी खेती बढाई जाय तो क्या इससे ससारकी आवश्यकता पूरी तरहसे पूर्ण हो सकती है, क्योंकि कपासकी माग जिस तरह बढती जा रही है पैदावारमें उस तरहकी बढती नहीं हो रही है। भारतीय काटन-कमेटीके सामने भी यही प्रश्न था। उसने अपने रिपोर्टमें इस सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है उसका साराश हम यहापर दे देते हैं।

कमेटीने लिखा है —"कपासकी खेती यहा इस तरह फैली हुई है कि फसल बोनेका समय यहाँ नियत नहीं किया जा सकता। कहींपर सिचाईसे खेती होती है और कहीं बरसातके पानीपर निर्भर करती है।"

"औसत निकालनेसे मालूम हुआ कि एक एकड भूमिमें यहाँ

केवल ७५ से १०० पौण्डतक कपास उत्पन्न होता है पर अमरीकामें इतनी ही भूमिमें १८० पौण्ड और मिस्रमें तो ३६० से ४०० पौण्डतक रूई उतनी ही भूमिमें पैदा होती है।

यूरोपीय महायुद्धके एक वर्ष पहले कपासकी फसलसे ४६५ लाख पौण्डकी आमदनी हुई थी। यह संसारके कपासकी फसलको आमदनीका ६८ वां हिस्सा था। १९२१ २२ में पानी ठीक समयपर बरसा। गुजरात और राजपूतानाको छोड़कर सभी प्रान्तोंमें पानी बरस गया था। बादमें यहां भी रूईके कामभर पानी बरस गया और रूईकी फसल अच्छी उतरी। इस साल मद्रासके अतिरिक्त समस्त भारतमें कुल मिलाकर १८,४८५,००० एकड़ भूमिमे कपासकी खेती हुई थी और ४, ४८०,००० गांठ रूई उत्पन्न हुई थी। एक गाठमें ४००पौण्ड रूई होती है। १९२०-२१ से १३ प्रति सैकड़े कम खेती हुई थी फिर भी "फसलमें २४ प्रति सैकड़ेकी बढती रही। फाटकेबाजीके कारण शुरू शुरूमें रूईका ,बाजार गर्म रहा, भाव ऊपर चढता गया, पर पीछे जाकर बुरी तरह गिरा। भड़ोचके जिस कपासकी खण्डीका भाव १९२१ के अक्तूबरमें ६२२ रु० था उसीका भाव मार्च १९२२ में ३९२ रु० हो गया।

१९१६-२२ के पहलेके चार वर्षोंका औसत निकालनेसे विदित होता है कि बम्बई सूबामें सिन्ध और बम्बईकी देशी रियासतोंको मिलाकर प्राय ६,०२८,००० एकड़ भूमिमें कपासकी खेती की गई थी। इसमें बम्बईमे ५१२१२५०, बड़ोदामें ७५०,२५०

और सिन्धमें २५६,५०० एकड भूमिमें कपासकी खेती की गई थी।

बम्बईकी भूमि जहा कपासकी खेती हो सकती है पाच प्रकारकी है —

(१) उत्तरी गुजरात, बडौदा राज्यकी प्रान्तभूमि और काठियावाड। यहा "दोलरा" जाति ज्यादा उत्पन्न होती है।

(२) दक्षिणी गुजरात, भडोच, बडौदा राज्यके कुछ जिले और सूरतमें भडोचवाला कपास पैदा होता है।

(३) बम्बई दक्खिन अर्थात् खान्देश, नासिक, अहमदनगर और शोलापुर तथा बीजापुर और हैदराबादके उत्तरी जिलोंमें खान्देशी कपास पैदा होता है।

(४) करनाटक, धारवाड, बेलगाव, बीजापुरके देश तथा कोल्हापुर सांगलीमें कमटा धारवार कपास पैदा होता है।

(५) इण्डस नदीके पूर्वी प्रान्त, सिन्धकी भूमि तथा हैदराबाद, धार, परकर तथा नवाबशाहमें सिन्धी कपास पैदा होता है।

१९२२ २३ के आकडेको देखनेसे विदित होता है कि बम्बई प्रान्तसे जो माल बाहर भेजा गया था उसमें ६४ प्रति सेकडे कपासका हिस्सा था। प्राय. २,७३५००० गाठ कपासका चालान गया था।

अगर बनी कपासमें मेल न दिया जाय तो २०००गाठ उसकी और प्राय ५०० गाठें बरी कपासकी तो लम्बी रेशेवाली होती हैं

जिसका प्रयोग लङ्काशायरकी मिलोंमें हो सकता है। बाकी सब छोटी रेशेवाली होती हैं। बाजारमें सबका एक नाम कपास है। अच्छे कपासकी खेती निम्नलिखित जिलोंमें होती है :—

बरार, निमर, वर्द्धा और नागपुर।

हैदराबादकी रूईके रेशे काफी लम्बे होते हैं। हैदराबादमें दो तरहके कपास उपजाये जाते हैं —बानी और बड़ी। बड़ी कपास अदीलाबाद, निज़ामाबाद, करीमनगर जिलोंमें होता है। पश्चिमी प्रदेशमें विशेषकर परभानी और नन्दर जिलोंमें बानी कपासकी खेती होती है। रैचर और गुलबर्गाके दक्षिणी जिलोंमें मद्रासकी जातिका कपास पैदा होता है। वारंगल जिलेमें कोकोनाडा और खान्देशी कपास पैदा होता है। १९१९-२२ के पिछले चार वर्षों की औसत निकालनेसे विदित हुआ कि यहा २६५७२५० एकड़ भूमिमें कपासकी खेती हुई और ५७७५५० गाठ कपास पैदा हुआ। इसमेंसे अधिकाश लम्बे रेशेवाली रूई थी।

मद्रासके (१) अनन्तपुर, बेलारी, करनूल, तथा कुदापा जिलोंमें उत्तरी और पश्चिमी जातिकी रूई पैदा होती है।

(२) कारमण्डल कोस्टके गण्टूर, कृष्णा, नीलोर, और गोदावरी जिलेमें कोकोनाडा कपास पैदा होता है।

(३) तिनपली, रामनद, मदुरा, त्रिचनापली तथा कोयम्बटूर जिलोंमें कम्बोडिया जातिकी रूई पैदा होती है। यह कपास अमरीकन कपासकी समता रखती है। १९०५ में कम्बोडिया

मिट्टीमें होती है और काली मिट्टीमें तिनपली जातिकी रूई होती है। इनमें करूनगनी जातिको कृषि विभागने उत्तम ठहराया है।

१९२२ २३ के पिछले पाच वर्षों का औसत निकालनेसे विदित होता है कि यहा २,३६४००० एकड भूमिमें कपासकी खेती की गई थी। १,०००,००० गाठ रूई प्रति वर्ष उत्पन्न होती है। उसमेंसे ५००,००० गाठ तो लम्बे रेशेवाली होती है।

मद्रास प्रान्तसे जितना माल बाहर जाता है उसमेंसे १६ प्रति सैकडे रुई है। घरकी आवश्यकता पूरी कर प्राय ३६०,००० गाठ रूई हर साल बाहर भेजी जाती है।

पञ्जाब—(१) अम्बाला और हिसार जिलोंमें सिन्ध पञ्जाबी कपास उत्पन्न होता है।

(२) लायलपुर, माण्टगोमरी, झग, शाहपुर, गुजरानवाला तथा मुलतान जिलोंमें पञ्जाब अमरीका जातिकी रूई उत्पन्न होती है।

(३) हिसार और अम्बालासे दक्षिणकी ओर बङ्गाल जातिकी रूई पैदा होती है। १९२२ २३ के पिछले पाच वर्षों के औसतसे मालूम होता है कि पञ्जाब प्रान्तमें १,७२३,०००—इसमें १४५००० एकड भूमि देशी रियासतोंकी है—एकड भूमिमें कपासकी खेती की गई थी। १९१४में युद्ध छिड जानेसे कपासकी माग घट गई, १९१५ १६ में केवल ९०२,००० एकड भूमिमें कपास बोयी गई थी। पर १९१७ में पहलेसे

भी अधिक भूमिमें कपास बोई जाने लगी। पञ्जाबकी खेती अधिकाश सिंचाईपर निर्भर है। पैदावारकी चौथाई लम्बे रेशेवाली होती है॥

संयुक्त प्रान्तमें प्राय १६१७,००० एकड़ भूमिमें कपासकी खेती होती है। देशी राज्योंमें भी १७,००० एकड़ भूमिमें कपास बोया जाता है। रामपुरके राज्यकी भूमिको मिलाकर १६२३ में ६५६,००० एकड़ भूमिमें कपास बोया गया था।

संयुक्तप्रान्तमें अधिकाश छोटे रेशेवाली रूई होती है। केवल ५०० गाठ लम्बे रेशेवाली रूई होती है।

संयुक्त प्रांतके प्राय सभी जिलोंमें कुछ न कुछ कपासकी खेती होती है पर बुलन्दशहर, मथुरा, आगरा और अलीगढ़के जिले कपासकी खेतीके केन्द्र हैं। तिहाई खेती सिंचाईपर निर्भर है।

मध्यभारत—इन्दौर राज्यमें ४७७,०००, ग्वालियरमें ४९१०००, भूपालमें १४५,००० एकड़ भूमिमें कपासकी खेती होती है। करीब ३२०,००० गाठ रूई प्रतिवर्ष पैदा होती है।

राजपूतानामें ३३४,००० और अजमेर और मारवाड़में ४८,००० एकड़ भूमिमें रूईकी खेती होती है। यहा लम्बे रेशेवाली रूई पैदा होती है नहीं।

मैसूरमें १२१,००० एकड़ भूमिमें कपासकी खेती होती है। छोटे रेशेवाली रूई पैदा होती है।

वर्मामें २५९, एकड़ भूमिमें कपासकी खेती होती है। छोटे रेशेवाली रूई पैदा होती है।

बंगालमें ५६,००० विहार और उडीसामें ७०,००० तथा आसाममें ३३,००० एकड भूमिमें कपासकी खेती होती है। बंगालमें चटगाव, बांकुडा और मिदनापुरके जिलोंमें, आसाममें गारो और लुसाई पहाड़ी प्रदेशमें कपासकी खेती होती है। विहार प्रान्तमें सारन और सन्थाल परगना तथा रांचो जिलेमें कपास-के योग्य भूमि है।

सीमाप्रान्त—उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्तमें केवल सिचाईसे कपासकी खेती होती है। रुई छोटे रेशेवाली ही पैदा होती है। प्राय ३८,००० एकड भूमिमें कपास बोयी जाती है।

भारतकी पैदावारमें कपासका स्थान तीसरा है। केवल चावल और गेहू'की पैदावार ही इससे अधिक होती है। कितने एकड़ भूमिमें कपास बोई जाती है और कितनी पैदावार होती है, इसका ठीक ठीक अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता क्योंकि सरकारी रिपोर्टके अतिरिक्त कोई दूसरा सहायक साधन नहीं है और सरकारी रिपोर्ट सर्वथा सही नहीं कही जा सकती।

नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया गया है कि सन् १६१६-२० से १६२३ तक किस प्रान्तमें कितनी कपासकी खेती हुई और कितनी पैदावार हुई।

प्रान्त	१९२०-२१		१९२१-२२		१९२३-२३	
	एकड़भूमि	पैदावार	एकड़भूमि	पैदावार	एकड़भूमि	पैदावार
मध्यप्रदेश बरार	६७५५०००	१०९६०००	५२७६०००	१२२२०००	५८४७०००	१३५१७००
बम्बई	४४७७०००	५१४०००	४.४१४०००	११२७०००	४७०३०००	१२०००००
हैदराबाद	२२१४०००	३४१०००	२९१४०००	८७००००	३८१३०००	१११६०००
मद्रास	२१५,०००	३५८०००	१८०३०००	३४१०००	२३२३०००	४२८०००
मध्यभारत	१३३२०००	१६२०००	१०६९०००	२०४०००	१४१३०००	२९००००
पंजाब	२१४२०००	५८८०००	१२३९०००	२९६०००	१४१७०००	४०९०००
संयुक्तप्रदेश	११६१०००	३३७०००	८२८०००	२४४०००	६५९०००	१७८०००
राजपूताना अजमेर मारवाड	४१७०००	६६०००	३२३०००	८००००	३३८०००	६१०००
बर्मा	३६६०००	४२०००	३२५०००	४००००	२७२०००	४५०००
बंगाल	१८८०००	५००००	१८४०००	४३०००	१९२०००	४५०००
मैसूर	१११०००	११०००	५९०००	१५:००	८३०००	२४०००
उत्तर या पश्चिमी	२७०००	५०००	१५०००	३०००	१५०००	३०००
दिल्ली	..	. .	२०००	.	२०००	१०००
जोड़	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१६१३ १४ के बादसे आजतक भारतसे कितनी रूई बाहर गई और क्या मूल्य मिला —

सन्	वजन हण्डरमें	मूल्य पौंडमें
१६१३ १४	१०६२६३१२	२७३६१६५५
१६१४-१५	१०३४६०४१	२२३२५६३१
१६१५ १६	८८१३६६७	१६६१६२४७
१६१६-१७	८६१२३०२	२४०६७५०६
१६१७-१८	७३०८१०५	२८४३८२७२
१६१८ १६	३६७६००१	२०६५५७०६
१६१६-२०	८५६६६००	३६१०१६०१
१६२० २१	७४११७००	२७७५२५०६
१६२१ २२	१०६७६०४०	३५६७८८५३
१६२२-२३	१२००७६४०	४७३१६२२५

यूरोपीय महायुद्धके पहले भारतकी समस्त रूई सुदूर पूर्वीय देशोंमें ही जाती थी। भारतीय रूई लंकाशायरमें बहुत ही कम गई। १६१८ में ब्रिटनमें अमरीकासे ७,००००० गाठ, मिस्रसे ५२८,००० गाठ और भारतसे केवल १००,००० गाठ कपास गई। चीनने भी कपासकी खेती आरम्भ कर दी है। कितनेही खेत जिनमें पहले पोस्ता (अफीमका पौधा) बोया जाता था, कपासकी खेतीके लिये तैयार किये गये हैं। पर जापान अपनी रूईकी सारी आवश्यकता भारतवर्षसे ही पूरी करता है।

नीचेकी तालिकासे विदित होगा कि यहासे किन २ देशोंमे कितनी कपास जाती हैं —

देश	१९१३-१४	१९१९-२०	१९२०-२१	१९२१-२२	१९२२-२३
जापान	४८१७५६०	५९१८९८०	३३५३६२०	६२८६६६०	५७८९३००
जर्मनी	१६८८०७०	१७३६००	७११९१८०	८३८३६०	९३९६६०
वेल्जियम	११३३०८३	४९०८४०	८६७५६०	७०८२२०	९००२२०
इटाली	८४८५७६	५५४२६०	७६०३२०	५५१४००	८६१८८०
आस्ट्रिया हंगरी	७४७०४१	३१४४०	१२१९६०	११९५६०	१५१९०००
फ्रांस	५२४२६४	२०४२८०	१३७३४०	२०२४४०	४५११४०
ब्रिटन	३८४९१४	५३२२८०	३४२८८०	१२७८००	६८२६२०
स्पेन	१६६९३३	१५४६४०	२७३५००	१०७७४०	२३४५२०
हागकाग	१०९५८१	४६२६०	४९५८०	२६८२०	१०१६०
चीन	८४७०७	२७५१८०	६३५३६०	१५२८३४०	१७६५९००
हालैण्ड	२८९२२	५४०००	४२२००	१९१६०	३४३४०
अमरीका	२६४८२	६३३८०	३३५००	३२७८०	७७९६०
रूस	२६३२७	... .	.	.. ..	.. ..
अन्य देश	३९८५२	६६६६०	९४७००	१२६७६०	२०८४००
	१०९२६३२२	८५६६६००	७४११७००	१०६७६०४०	१२००७९४०

यहाँतक तो हमने यह दिखलाया कि भारतमें रूईकी खेती कहा कहा होती है तथा कितना माल पैदा होता है और विदेशों-में कितना जाता है। यहाँपर हम यह भी दिखला देना चाहते ह कि भारतीय मिलोंमें कितनी रूई खपती है और विदेशोंसे कितनी रूई यहा आती है। यहा कितनी रूईकी खपत है यह ठीक तरहसे नही बतलाया जा सकता पर अन्दाजन प्रतिवर्ष ७५०,००० गाठ रूईकी खपत है। करघेमें भी मिलोंके सूतका अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है। इससे चरखोंके लिये जितनी कपासकी आवश्यकता पड़ती थी वह धीरे धीरे घट रही है।

हिन्दुस्तानमें अनेक तरहकी कपास पैदा होती है। छोटेसे छोटे रेशेवाली कपाससे लेकर बडेसे बडे रेशेवाली कपास तक यहा पैदा होती है। इन कारणोंसे भारतीय कपासकी किस्मोंका पूरा पूरा ब्योरा देना बहुत कठिन है। इसके अतिरिक्त स्थान विशेषके कारण कपासकी किस्मोंमें भेद पड जाता है। इसलिये यहाकी कपास जहा पैदा होती है वहींके नामसे प्रचलित है। बाजारमें नीचे लिखी किस्मकी कपास चलती है।

किस्म	प्रान्त	खास स्थान
बगाल	सयुक्तप्रान्त	अलीगढ, कानपुर, चन्दौसी, दिबाई, इटावा, हरदोई, हाथरस तथा काशीपुर।
	राजपूताना	बालेवार, किशनगढ,

		नसीराबाद तथा निम्बहरा (निमेरा)
	पंजाब / सिन्ध	अमृतसर, गोभ्रा, कसूर, फज्ना, लायलपुर, मुलतान, मोण्टगोमरी, ओकारा, सरहिन्द
कोमिला	पूर्वी बंगाल	चटगाँवका पहाडी प्रदेश तथा आसाम
पंजाब अमेरिकन	पंजाब	गोभ्रा, कसूर, लायलपुर, मुलतान, ओकार, सरगोडा, तोबतकसिंह,
उमरा	बरार	अकोला, अकोटा, अमरावती, इलिचपुर, करञ्जा, खमगाव
उमरा	मध्य भारत	भोपाल, बुरहानपुर, हार्डा, इन्दोर, खण्डवा, सनवाद, उज्जैन
"	मध्य प्रान्त	अरवी, धामनगाव, हीँगनघाट, नागपुर, सिंधी वार्धा, वरोरा, वन, योतमाल
"	खान्देश	अमालनगर, बोदवाद

		चोपरा,धरनगाव, धुलिया, फेजपुर, जलगाव
मुगलाई	हैदराबाद	औरङ्गाबाद, बार्सी, हिंगोली, जालना, लतूर, नन्दद, नगर, परभानी, उमरी
भडोच	गुजरात	अङ्कलेश्वर, बारडोली, भडोच, दभोली छसोटे, मियागांव, नवसारी, पलेज, सूरत
धोलेरा	काठियावार	कादी, लिम्बडी, मुन्द्रा, पोरबन्दर, विरामगाव, वधवा
मठिया	काठियावार	जूनागढ, भावनगर,वेरावाल
कोमटा	बम्बई सूबा	बगलकोट, चेलटोंगल, गदाग, हुब्ली
धारवार	"	धावनगिरि, गदाग, हुब्ली, सावनूर
वेस्टर्नस	मद्रास सूबा	अदोनी,बलारी,बीजापुर, गन्तकल,रेचर, यादगिरि
नार्दनस	"	कर्नूल, नन्दयाल,नदपत्री

रेड(लाल) कोकोनाडा	मद्रास सूबा	वेजवाडा, कोकोनाडा, गन्तूर
ह्वाइट(सफेद)कोकोनाडा	हैदराबाद	निजामाबाद, सिराम, वरंगल
टेनिवली	मद्रास सूबा	सन्दर, टूटिकोरिन, विरुदपट्टो
कम्बोडिया	"	कोइम्बतूर, डिण्डीगल, तीरूपुर
रगून	बर्मा	मिंगियन, थेइटमियो, महालेंग

किसानोंके यहांसे खरीदनेके बाद रूई मिलोंमें साफ की जाती है। बिनोला या बीज अलग कर लिया जाता है और रूई अलग। इस तरह साफ होकर रूई प्रेसोंमें गाठ बन्धनेके लिये जाती है। गाठ बंध जानेपर रूई बेचनेके लिये तैयार हो जाती है।

भारतमें जितनी रूई पैदा होती है उसका अधिकांश भाग बम्बई भेजा जाता है। कोलाबाके खुले मैदानमें गांठे इकट्ठी की जाती हैं। १९१८ जुलाई तक एक भी ऐसी संस्था नहीं थी जो कपासके व्यापारकी निगरानी करती। कपासका सारा व्यापार बंबई काटन ट्रेड एसोसियेशन अथवा बम्बई काटन इक्सचेंजके नियमानुसार चलता था। पर इनके नियमोंका पालन करना भी प्रत्येककी इच्छापर निर्भर था। १९१८ की जुलाईके बादसे कपासका सारा व्यापार काटन कन्ट्राक्ट बोर्डकी देख रेखमें होता है। इस

बोर्डका अध्यक्ष सरकारी आदमी है। इसमें ६ सरकारी नाम सदस्य और ५ चुने सदस्य हैं। इन ५मेंसे दो तो मिल-मालिक प्रतिनिधि हैं और ३ फ़िश्रिग हाउसके प्रतिनिधि हैं। इन नियम बाहर जो सट्टे किये जाते हैं उनपर कोई भी क़ानूनी कार नहीं हो सकती। पहले दो वर्षके लिये यह बोर्ड बनाया गया पर अब यह स्थायी रूपसे काम देखता है।

सूती माल—हम आरम्भमें लिख आये हैं कि अंग्रेज आगमनके पहले भारतका सूती व्यापार अतिशय समृद्ध अ स्थामें था। यह व्यापार इतना बढा बढा था कि अपने घरो रक्षा करनेके लिये यूरोपीय राष्ट्रको इसके विरुद्ध कड़े कड़े नि बनाने पड़े थे। इसी समय मशीनों द्वारा कपड़ा तैयार करने युक्ति भी यूरोपियनोंने निकाली। इन सबका परिणाम यह हु कि जो भारत कुछ दिन पहले समस्त ससारका तन ढाकता अब अपना तन ढाकनेके लिये दूसरोंका मोहताज हो गया। य अवस्था अबतक चली आ रही है। १८३८ में यहा पहले पह कपड़ेकी मिल बैठानेकी व्यवस्था की गई और १८५८ में बम्ब कपड़ेकी पहली मिल बैठाई गई। तबसे धीरे धीरे मिलोंकी सर बढ़ने लगी।

आरम्भमें मिलके मालिकोंका ध्यान सूत कातनेकी ही ओ था। भारतीय मिलोंके सूतकी खपत देशी करघों और चीन बाजारोंमें थी। पर यह अवस्था भी अधिक काल तक नहीं र सकी। एक ओर जापान, चीनके बाजारमें प्रतियोगिताके लि

उठ खड़ा हुआ और दूसरी ओर स्वयं चीनवाले सूत कातनेके लिये मिल खोल बैठे। इससे लाचार होकर मिलवालोंको दूसरा मार्ग देखना पड़ा और वे महीन धागा (अधिक नम्बरका) तैयार करने लगे। इसलिये उन्हें अमेरिकाको कपास मगानी और काममें लानी पड़ी। भारतके सूती व्यापारका भविष्य उज्ज्वल है। सभी साधन यहां मौजूद हैं। केवल देशप्रेमका ऊफान आना चाहिये। अगर भारतीय जनता आज ही यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह स्वदेशी कपड़ा पहनेगी, विदेशी कपड़ा छूना पाप समझेगी तो कल ही देशी मिलोंका भाग्य उदय हो जाय। यही एक उपाय है जिसके अवलम्बनसे यह भारत धीरे धीरे अपना गला विदेशी वस्त्रसे छुडा सकता है।

भारतमें जितनी कपास पैदा होती है उसका आधा हिस्सा बाहर चालान चला जाता है। चौथाई सूत या धागा बनकर चालान हो जाता है। इससे जो बचता है उसका प्रयोग भारतीय मिलोंमें कपड़ा तैयार करनेमें होता है।

कपासके व्यापार और सूती माल तैयार करनेका प्रधान क्षेत्र बम्बई है। भारतसे जितना तैयार माल विदेशोंको जाता है इसका २१ प्रति सैकड़ा सूती माल है। यह २१ प्रति सैकड़ा भारतका सम्पूर्ण निर्यातका ५ प्रति सैकड़ा होता है अर्थात् भारतसे जितना माल विदेश जाता है उसमें ५ प्रति सैकड़ा सूती माल है। १९१८ में भारतमें मिलोंकी संख्या २८९ थी, जिनमें ६९१४,२६६ चरखे और ११४,२०५ करघे थे। कपड़ा बिननेकी

मिल कलकत्ताके पास घुसरीमें १८३६ में खुली थी। बम्बईमें पहली मिल १८५३ में खुली थी।

गत बीस वर्षोंमें भारतीय मिलोंने आशातीत सफलता प्राप्त की है। पर नई मिलें खोलनेकी चेष्टा बहुत कम की गई है। केवल पुरानी मिलोंके कामको अधिकाधिक बढ़ानेकी चेष्टा की गई है। यूरोपीय महायुद्धके ठीक पहले सूती माल तैयार करनेमें भारतका चौथा स्थान था। ब्रिटन, अमेरिका और जर्मनी इसके ऊपर थे।

देशी मिलोंमें जितना कपड़ा तैयार होता है तथा सूत काता जाता है उसमें क्रमश ८७ और ७५ प्रति सैकड़े बम्बई और अहमदाबादकी मिलोंका हाथ है। असहयोग आन्दोलनने चरखे और करघेको काफी उत्तेजना दी। चरखोंसे कितना सूत निकलता है तथा करघोंपर कितना सूत बीना जाता है इसका ठीक ठीक पता नहीं लगाया जा सकता।

नीचे लिखी तालिकासे पता चलता है कि करघा चलानेवालोंको कितना सूत देशी मिलोंका तथा कितना विदेशोंसे आया हुआ मिलता है। यह अंक हजार पौंडमें हैं।

विवरण		१८९६—९७ से १९०१-०२ का औ०	१९०८—०९ से १३ १४का औसत	१९१७—१८ से २२—२३काओसत
बाहरसे आया सूत	जल	४४९५६	४१७४९	३९३८८
	स्थल	१	८०	२१
देशी मिलोंमें तैयार सूत		४७३०००	६४८५५९	६६१७८६
		५१७९५७	६९०३८८	७०११९५
सूत जो बाहर चला जाता है	जल	२०९३९८	२००८३१	९४२४३
	स्थल	७६१०	१४६३२	११७९३
		२१७००८	२१५४६३	१०६०३६
जो भारतमें रह जाता है		३००९४९	४७४९२५	५९५१५९
भारतीय मिलोंमें तैयार कपड़े		९८७२९	२४८९१८	३८१८४०
इतना कपड़ा तैयार करनेमें सूत लगा		८८१५१	२२२२४८	३४०९३७
करघोंके लिये जो सूत बचा		२१२७९८	२५२६७७	२५४२२२

"घरेलू धन्धोंकी चर्चा करते हुए इण्डस्ट्रियल कमीशनने नी रिपोर्टमें लिखा है कि घरेलू धन्धोंमें करघोंका स्थान ससे ऊंचा है। जहांतक मालूम हुआ है इस समय इस देशमें ३० लाख करघे चलते हैं। इससे कमसे कम ५० करोड येकी आमदनी होती होगी। चरखेका प्रयोग एकदमसे कम गया है। भारतीय मिलोंमें जितना सूत तैयार होता है, उसमें जितना बाहर जाता है तथा विदेशोंसे जितना चालान आता उसके आकडे मिल सकते हैं। सब आकडोंका हिसाब कर यह ा लगाया जा सकता है कि करघोंमें कितने सूतकी खपत । इस गणनासे पता लगता है कि करघोंमें खपत किसी भी ल स्थिर नहीं रही पर इनकी गति ऊपरकी ही ओर रही। कडोंके देखनेसे यह भी मालूम होता है कि मोटे सूतका प्रयोग ट रहा है और पतले सूतका प्रयोग बढ़ रहा है।"

इण्डस्ट्रियल कमीशनकी यह रिपोर्ट १६१८ में प्रकाशित हुई । तबसे असहयोग आन्दोलनके प्रभावसे करघोंकी संख्या ही है, सूतके प्रयोगमें फर्क पड़ा है। चरखोंको अधिक उत्ते-ना मिली है, जिन चरखोंका प्रयोग मरासा समझ लिया गया उनका पुनरुद्धार हो रहा है। तबसे करघों और चरखोंके योग तथा संख्यामें बहुत परिवर्तन हो गया है। कहा जाता कि प्राय २० लाख चरखे इस समय देशमें काम कर रहे हैं। र कोई विश्वसनीय अंक प्राप्त नहीं है जिसके आधारपर यह हा जा सके कि कितने चरखे तथा करघे इस समय चल रहे हैं ौर उनमेंसे कितना सूत निकलता है।

यहीपर हम भारतीय सूती कपडेके व्यापारकी गत तं
वर्षकी (१६१८-१६, १६१६ २०, १६२०-२१) अवस्थाका दिग
र्शन करा देना चाहते हैं। इससे स्वय विदित हो जायगा
भारतीय सूती कपडेका भविष्य क्या है।

१६१८-१६—

१६१८ युद्धका जमाना था। इससे कपडेका दर ऊंचा थ
यह अवस्था इस सालके अन्त तक रही, पर १६१८ के नवम्बर
युद्ध समाप्त हो चुका था। इसका असर १६१६ के आरम्
ही होने लगा और कपडेका बाजार मन्दा रहा। १६१६ के अ
रम्भमें किसी भी दरपर खरीदार नहीं थे। पौंडके दरसे मा
मगानेवालोंको जो लाभ था उसका बदला मालकी खपत बाह
न होनेसे निकल जाता था, क्योंकि विदेशोंसे माग बहु
कम थी।

१६१६ २०—

इस वर्ष सूत और कपडेकी तैयारीमें बढ़ती हुई। माल
पारसालकी अपेक्षा अधिक बाहर गया। फिर भी बाजारकं
अवस्था सुधरी नहीं। जापानके बाजारमें गडबड तो थी ह
मैंचेस्टरकी दशा सबसे खराब थी। कोयलेकी खानोंमें हडता
हो जानेसे कारखानोंका मुंह अधिक काल तक बन्द रहा।

१६२०-२१—

यह वर्ष भी भारतीय मिलोंके हकमें अच्छा रहा। यद्यपि
१६२१ के आरम्भमें मिल मजूरोंकी हडताल आदिके कारण मिल

वालोंको भारी नुकसानका सामना करना पडा था। पर अन्तके ६ मासमें स्वदेशी आन्दोलनके कारण देशी मालकी जो माग बढी उसने इनका सारा घाटा पूरा कर दिया। करघोंकी सख्या वेपरिमाण बढी और सूतकी माग इतनी अधिक बढ गई कि मिलवाले मागको पूरी नहीं कर सके। कपडेकी भी माग इतनी अधिक बढी कि कई मासका आमदनी माल बेच दिया गया। यह वर्ष मिलवालोंके हकमें अच्छा रहा। लाभ भी अधिक हुआ और गोदाममें माल भी अधिक नहीं रह गया था। पर १९२२ से अवस्था वही नहीं रही है। गोदाममें माल भर गया है। माग कम हो गई है। बाहरके चालानमें भी बहुत कमी है। पर इसका दोष मिल मालिकोंपर ही है। अगर स्वदेशी आन्दोलनके समय उन्होंने जनताका साथ दिया होता और कम लाभपर माल देना स्वीकार किया होता तो इस समय विदेशी माल भारतीय बाजारसे उठ गया होता और देशी मालकी तूती बोलती होती।

गत तीन वर्षोंकी तालिकासे भारतीय व्यापारकी हलका पता स्पष्ट लग जायगा। गत तीन वर्षोंमें यहा कितना सूत मिलोंमें काता गया —

१९१८-१९	६१५,०४०,४६४	पौंड
१९१९ २०	६३५,७६०,२४५	„
१९२० २१	६६०,००२,५१७	„

१९१९ तथा १९२० की अवस्था असाधारण रही है। पर

१६२१ की अवस्था साधारण रही है। इससे प्रत्यक्ष है कि स्वदेशीका प्रभाव भारतीय मिलोंपर अपरिमित पड़ा है।

नीचे कपड़ेकी तालिका दी जाती है —

१६१८-१६	१,४५०,७२६,१६०	गज
१६१६ २०	१,६३६,३७६२२७	”
१६२० २१	१,५८०,८४६,७४८	”

१६२० २१ में जो कमी दिखाई दे रही है उसके दो कारण हैं। एक तो करघोंका अधिक प्रचार और दूसरे विदेशोंमें भारतीय कपड़ोंके चालानका रुक जाना। अफ्रीका और जंजीबारमें जो माल जाता था वह बन्द हो गया क्योंकि यूरोपीय देशोंसे वहा माल आने लगा।

शुरू शुरूमें भारतीय मिलें चीनके बाजारोंमें बेचने तथा देहाती करघोंमें बिननेके लिये केवल मोटा सूत तैयार करती थीं। पर इधर थोड़े दिनोंसे महीन सूत कातनेकी ओर भी प्रवृत्ति दिखलाई गई है। इसके लिये विदेशोंसे रूई मगाई जाने लगी है।

नीचे लिखी तालिकासे विदित होगा कि हर एक नम्बरका सूत भारतमें किस सख्यामें तैयार होता है और बाहरसे कितना चालान आता है।

सूत	१९१३—१४	१९२२—२३
१ से २५ नम्बर तक		
भारतीय	६१६६६८८,०००	६३२६६९१,०००
विदेशी	२१५०,०००	१३८७०,०००
२६ से ४० नंबर तक—		
भारतीय	६२७११,०००	६६८०३,०००
विदेशी	२०३४४,०००	३१३६५,०००
४० नंबर से ऊपर—		
भारतीय	२६९८,०००	२१६५,०००
विदेशी	७८५६,०००	६७२७,०००
	७२९२६६,०००	७६४९३४,०००

युद्धके दिनोंमें भारतीय मिलोंमें मोटे सूत कम तैयार होते थे। १९१३ १४ में १० नम्बरका करीब १४०० लाख पौंड सूत काता गया था पर १९१८ १९ में वह घटकर ८७० लाख पौंड हो गई। २० नम्बरके सूतकी कताई घटकर ४७० लाख पौण्ड हो गई। दूसरी तरफ २० नम्बरसे ऊपरके सूतकी कताई बढ़ती गई। ४० नम्बरके सूतकी कताई अधिक हुई। इसका एक प्रधान कारण यह मालूम होता है कि विदेशोंसे महीन पोतकी धोतियोंका आना रुक गया था और करघा चलानेवाले जुलाहे महीन पोतकी धोतियां तैयार करने लगे। आशा की जाती है कि

हालमें ही उगण्डासे लम्बे रेशेवाली रुई भारतको मिलने लगेगी और भारतीय मिलें महीन सूत अधिकाधिक कातेंगी।

नीचेकी तालिकामे भारतीय मिलोंमें तैयार कपडेके आंकडे दिये गये हैं। करघोंसे कितना माल तैयार होता है इसका ठीक अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। पर अनुमानसे मालूम होता है कि करीब २५०,०००,००० पौंड कपडा तैयार होता है।

तैयार माल	१९१९—२० पौण्डमें	१९२१—२२ पौण्डमें	१९२२—२३ पौण्डमें
धोआई धोतिया	२७६७११२२५	३०००३६३४३	३००३४२१६५
रगीन धोतिया	१०२१४६३१८	९८४३२९६१	९८६३४८४२
धोआ व रगीन थान	३३२०४१८	३०५२९८६	३४२२९६७
मोजा गञ्जी वगैरह	२९३७३८	३६३०९९	४३८९३२
अन्य सब	१२५०२२१	१४३२९५८	२२०१२९०
रेशमीके साथ मिला हुआ	२०३८३०	१७७७५०	१६४७२६

१९१७के पहले सूती कपडेसे धागा या सूतका चालान अधिक था। पर इसके बादसे कपड़ेका चालान अधिक होने लगा है। चीन, एशियाई तुर्की, प्रायः द्वीप (मलाया आदि) तथा अदनमें भारतका माल अधिक खपता है।

भारतीय सूती कपडेकी अधिकाश खपत उन देशों और उपनिवेशोंमें है जहा भारतीय प्रवासी अधिक हैं। चादरा,

धोती, सिटन और मारकीन थान बम्बईके बन्दरगाहसे सबसे अधिक रवाना होता है। यह माल अदन, पूर्वी अफ्रिका, फारस, उजीबार, प्राय द्वीप (मलाया आदि) तथा बलूचिस्तान जाता है। रगीन लुगी और साड़ीका चालान अधिकतर मद्रासले होता है। इसका बाज़ार प्राय द्वीप (मलाया आदि) लङ्का और सुमात्रा है।

करघेके मालका भी बाहर चालान जाता है। मद्रासकी रुमाले ब्रिटन होकर अफ्रिका जाती हैं। ये करघोंपर ही बिनी जाती हैं।

दरिया—भारतमें दो तरहकी दरिया बनती हैं। एक तो ऊनी गलीचेकी तरह होती हैं और दूसरी सादी। सादी दरिया तीन तरहकी होती हैं—दरी, शतरजी और आसनी (जरनिमाज) इसमें रगबिरगे सूत लगाये जाते हैं, पर प्रधान रग नीला और सफेद है। तरह तरहके फूल, बेलबूटे और पौधे काढे रहते हैं। इन दरियोंके बिननेवाले गरीब मुसलमान और नीच जातिके हिन्दू होते हैं जो महाजनोंके बोझसे सदा दबे रहते हैं।

बरेली, अलीगढ़, आगरा, कानपुर, फर्रुखाबाद, मोरादाबाद और एटावाकी दरिया मशहूर होती हैं। इनमें आगराकी दरियोंका पोत बारीक होता है। बरेलीकी दरिया सस्ती और मजबूत होती हैं तथा अलीगढकी दरियोंकी बिनावट घनी होती है। कानपुरमें दरियोंका व्यापार बढ रहा है। कई कारखाने हिन्दुस्तानी और अग्रेजोंके खुल गये हैं जो बहुतसा सामान

तैयार कर यूरोप तथा अमरीका भेजनेकी तैयारीमें हैं। पञ्जाबके मुलतान, अम्बाला और होशियारपुरके जिलोंमें तथा दिल्ली तथा बहावलपुरकी रियासतमें, पटनाके चम्पारन तथा शाहाबादमें, मद्रासके ऐयमवत, भवानी, अदोनी और कर्नूल जिलोंमें दरिया बनती हैं। प्राय. सभी प्रान्तोंकी जेलोंमें दरिया बिननेका काम कैदियोंसे कराया जाता है।

मिर्जापुर जिलेके माधोसिंग घुसियामें गलीचेका अच्छा काम होता है। वहाके प्राय· सभी गलीचे विदेशोंमें चालान जाते हैं।

१६०० के बाद अर्थात् बीस वर्षोंमें भारतीय सूती मिलोंका जो विकास हुआ है उसके आकडोंके देखने तथा इस तालिकाके अध्ययनसे विदित हो जायगा कि भारतके भावी उत्थानमें इन मिलोंका कितना हाथ है। करीब ७० वर्ष पहले बम्बईके तारदेव नामक स्थानमें पहली मिल बैठाई गई। परिणाम सन्तोषजनक हुआ और तबसे मिलें बराबर खुलती चली जा रही हैं। इस समय केवल बम्बई शहर और बम्बईद्वीपमें ८६ मिलें काम कर रही हैं।

बम्बईके बाद अहमदाबादका स्थान है। अहमदाबादमें ५० मिलें हैं। इन मिलोंमें करोड़ों रुपये लगे हैं और इनका कारबार उन्नतिशील है। इनके अलावा बम्बई प्रान्तमें और भी अनेक मिलें हैं। बम्बई शहरकी मिलोंको छोड़कर बम्बई प्रान्तमें प्राय ६० मिलें हैं। १७ मिलें संयुक्तप्रान्तमें १५ बंगालमें १३

मद्रास प्रान्तमें और ७ मध्यप्रान्तमें हैं। इस समय भारतकी मिलोंमें प्राय २६ करोड़ पूंजी लगी है जो हर तरहका भला बुरा समय देखते १९१४ से सन्तोषजनक काम कर रही है।

यूरोपीय महायुद्धका काल तो भारतीय मिलोंके लिये सोना था। इस युगमें इन्होंने अपरिमित लाभ उठाया। पर वह असाधारण अवस्था थी। अगर भारतीय मिलके मालिक मित्रोंसे अधिकाधिक लाभ उठाना चाहते हैं और मिलोंको उन्नतिशील बनाना चाहते हैं तो उन्हें दूसरी प्रणालीपर काम करना होगा। मिलोंमें सुप्रबन्ध, मजूरोंका सगठन, भारतीय मांगकी पूर्ति, प्रतियोगिताका मुकाबिला, ग्राहकोंका सद्भाव आदि बातोंपर उन्हे विशेष ध्यान देना होगा ताकि वे लङ्काशायर अमरीका और जापानके मुकाबिलेमें ठहर सकें।

इन मिलोंके विकासका इतिहास देखनेसे स्पष्ट विदित हो जाता है कि १९०८ में ५७ लाख चरखे और ६८ हजार करघे काम करते रहे। १९२० में उनकी संख्या बढ़कर क्रमश ६८ लाख और एक लाख बीस हजार हो गई। मिलमें काम करनेवाले मजूरोंकी संख्या भी २ लाख २१ हजारसे बढ़कर ३ लाख ११ हजार १९२० में हो गई। मिलके मजूरोंके सबधमें एक बात हमें कहनी है। इण्डस्ट्रियल कमीशनकी रिपोर्टमें भी इसका उल्लेख है। इनके मजूरे स्थानीय नहीं हैं। दूसरे दूसरे प्रान्तोंसे आ आकर मिलोंमें काम करते हैं। इनके रहनेकी व्यवस्था ठीक नहीं है। इनकी सन्तति तथा बाल

बच्चोंकी शिक्षा आदिकी कोई व्यवस्था नहीं है। इससे ये स्थायी रूपसे टिक कर नहीं रहते। इसका प्रभाव कामपर बुरा पडता है क्योंकि चतुर और जानकार मजूरोंका सदा अभाव रहता है। मिलवालोंको सदा नये नये मजूरोंको ट्रेनिङ्ग देकर तैयार करना पडता है। कभी कभी तो कम मजूरोंसे ही काम कराना पडता है। इससे मिलोंकी समृद्धि मारी जाती है। जब-तक इस अवस्थाका सुधार नहीं किया जाता मिलोंको इन असु-विधाओंका सदा सामना करना पडेगा। इस सम्बन्धमें इण्ड-स्ट्रियल कमिशनकी सिफारिशोंपर मिल-मालिकोंको ध्यान देना चाहिये।

इस दुरवस्थाको दूर करनेके लिये निम्न लिखित बातोंका प्रबन्ध कर देना अत्यन्त आवश्यक है —(१) मिल मालिकोंको उचित है कि वे मजूरोंके लिये प्रारम्भिक शिक्षाका प्रबन्ध कर दें। (२) मजूरीकी व्यवस्था ठीक कर दें। (३) रहनेके मकानोंकी अवस्था सुधार दें। बीमारोंको देखनेके लिये तथा दवादारूके लिये अस्पताल आदिका प्रबन्ध कर दें। शिक्षित होकर मजूर अपने कामको समझने लगेंगे। जबतक यह अवस्था नहीं उपस्थित होती मिलोंकी वास्तविक उन्नति नहीं हो सकती। सभी साधनोंके रहते हुए भी भारतीय मिलें बेतरह बिगड़ी हुई हैं। अमरीका और ब्रिटनकी मिलोंकी अवस्थाको प्राप्त करनेके लिये इन्हें अभी बहुत आगे बढना है। १९२० में जहां ब्रिटनमें ६००७६३६४ और अमरीकामें ३४६५६७२१ टकुये चलते थे,

भारतीय मिलोंमें केवल ६७६३०७६ टकुये चलते थे। यही हालत करघोंकी भी थी। उसी सन्‌में ब्रिटनमें ७६८०८३ और अमरीका में ७०८०७६ पर भारतीय मिलोंमें केवल ११६०१२ करघे चलते थे। इन उदाहरणोंसे साफ है कि भारतको अभी कितना आगे दौडना है। यहां जितने प्रकारकी कपास उगती है तथा भारतके सामने जितनी सुविधाएं मौजूद हैं उनका प्रयोग कर अगर भारतीय मिलें अपना पैर अटल जमाना चाहती हैं तो उन्हें तत्परतासे काम करना चाहिये। भविष्य इनके पक्षमें है।

सेमल

इसका पेड बहुत ही बडा होता है और भारतके सभी प्रदेशों-में पाया जाता है। बर्मा और लंका इसके प्रधान क्षेत्र हैं। आसाममें नदियोंके किनारेपर यह बहुत देखनेमें आता है। पहाडोंपर भी यह बहुत उगता है। हिमालयकी पहाडियों और देहरादूनकी तराईमें यह बहुत होता है।

बीज छींटकर अथवा कलम लगाकर भी इसकी खेती की जाती है। २ या ३ वर्षके पेड बडी आसानीसे लग जाते हैं। आसाममें इस तरहकी खेती बहुत अधिक होती है। १८७६ में इस तरह सेमलके पेड लगाये जाने लगे थे और आजतक प्राय ४०० एकड भूमिमें सेमलके लगाये हुए पेड देखनेमें आते हैं।

सेमलकी लकडी भी अनेक तरहके कामोंमें आती है और इसकी रूई भी कपडा तैयार करनेके काममें आती है। ताजी

लकडीका रग पीला या हलका गुलाबी होता है, पर ज्यों ज्यों यह सूखता जाता है यह मैला होता जाता है। सेमलकी लकडी बडी मुलायम और आरर होती है। इसमें हीर नहीं होती। पानीमें रखनेसे यह कुछ दिन ठहर सकती हैं। अगर पानीमें निमक मिला दिया जाय तो इसकी उम्र और भी बढ जाती है।

साधारणत सेमलकी लकडी दो ही रंगकी होती है—पीली या हलकी गुलाबी। पर कभी कभी लाल रंगकी लकडी भी देखनेमें आती है। यह सेमल आसाम और पश्चिमी किनारोंपर अधिक देखनेमे आती है। यह साधारण सेमलसे कहीं अधिक मजबूत होती है।

लकडी—सेमलकी लकडीसे चायके सन्दूक, खिलौने, स्कैब बोर्ड, पैकिंग बाक्स आदि बनते हैं। दियासलाईकी पेटिया बनानेके काममें भी यह बहुत आती है।

लकडीके अलावा इसकी जड, छिलके, पत्तिया, फूल और बीज भी काममें आते हैं। इसके छिलके घाव धोने वा बफारा देनेके काममें आते हैं।

पजाबमें पत्तिया चौपायोंके चारेके काममें आती हैं।

सेमलकी रूई—सेमलकी रूई पहले पैकिंग आदिके काममें ही अधिक आती थी अथवा तकियेमें भरी जाती थी। पर अभी थोडे दिनोंसे यह कपडा बिननेके काममें भी आने लगी है और इसका प्रयोग बढता जा रहा है।

अच्छी तरह पकनेके पहले ही फल तोड लिये जाते हैं और

धूपमें सुखाये जाते हैं। अगर पकनेके समय तक वे पेड़में ही मौजूद रहें तो पककर फट जायं और फूल उड़ जाय।

कच्ची रुई हाटोंसे खरीदी जाती है और मिलोंमें साफ की जाती है। साफ करके उसकी गाठें बांधी जाती हैं और वह बिकनेके लिये तैयार हो जाती है। सेमलके व्यवसायका प्रधान क्षेत्र कलकत्ता है। कलकत्ता और बम्बईसे सेमलकी रूईका चालान होता है।

१६१४—१५में १६००० हण्डर सेमलकी रुई विदेश गई। १६१८-१६ में रपतनी घटकर केवल ३२०० हण्डर रह गई। पर तबसे रपतनी फिर बढ़ने लगी है।

अन्न या अनाज

चावल

अन्न या अनाजके मदमें भारतसे चावल और गेहूं विदेशों को सबसे अधिक जाता है। जितना अन्न या अनाज बाहर चालान जाता है उसमें ६० प्रति सैकड़े केवल चावल और गेहूंका अश है। संसारमें प्रति वर्ष ६०,०००,००० टन चावल पैदा होता है। इतने चावलमेंसे अकेले भारतवर्षमें ४० प्रति सैकड़ेके हिसाबसे पैदा होता है। भारतमें प्रतिवर्ष जितना चावल पैदा होता है उसका केवल ७ प्रति सैकड़े बाहर चालान जाता है। पर यह सात प्रति सैकड़ा भी संसारके बाहर भेजनेवाले राष्ट्रोंमें सबसे अधिक है। और जो कोई अन्न भारतसे बाहर चालान

जाता है उसपर पानी और वर्षाका असर पडता है अर्थात् अगर वर्षा ठीकसे हुई तो फसल अच्छी उतरी और चालान अधिक गया और अगर वर्षा अच्छी नहीं हुई तो फसल भी अच्छी नहीं उतरी। निदान चालान भी कम होगा। पर चावलके सबंधमें यह बात नहीं है। चावलकी खेती सबसे अधिक वर्षामें होती है और वहांके लोग अनावृष्टि जानते ही नहीं। हां, अन्य प्रान्तोंमें अगर धानकी फसल नहीं हुई या कम हुई तो चावलकी रफ्तनीपर थोडा असर पहुचता है।

१९१०-११ के पहले भारतसे २० लाख टनसे अधिक चावल कभी नहीं गया था। पर १९१२-१३ में २७॥ लाख टन चावल बाहर गया। युद्धके समय चावलकी रफ्तनीमें बडी कमी आ गई थी। इसका प्रधान कारण यह था कि एक तो, बाहरकी माग रुक गई थी और दूसरे जहाजोंकी सख्या कम हो गई थी।

युद्धके पहले यहासे धान जर्मनी और हालैण्ड जाता था। वहा कूटा जाता था और साफ कर ब्रिटन भेजा जाता था। (प्राय सभी प्रधान नगरोंमें यहासे चावल जाता है।) विगत यूरोपीय महायुद्धके पहले ४ प्रति सैकडे तो यूरोपीय देशोंमें जाता था ४२ प्रति सैकडे एशियाई देशोंमें जाता था, जैसे जापान, मलाया-द्वीप और लकाद्वीप आदि। शेष ११ प्रति सैकडे अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका और वेष्ट इण्डीज आदि प्रदेशोंमें जाता था। विदेशोंमें चावलका प्रयोग दो तरहसे होता है। एक तो भोजनके लिये और दूसरे शराब आदि मादक वस्तुओंके बनानेमें। भारतसे जो

चावल विदेश चालान जाता है उसका आधा हिस्सा तो भोजन आदिके काममें आता है पर आधेका प्रयोग शराब आदिके बनानेमें ही होता है। १९१२-१३ तक तो भारतका सबसे बड़ा ग्राहक जर्मनी था। यूरोपमें जितना चावल चालान जाता था उसका आधेके करीब केवल जर्मनी लेता था। उसके बाद हालैण्ड, लंका और जापानका नम्बर था। युद्धके समयसे वेस्ट इण्डीजकेसाथ सीधा व्यापार होने लगा है।

क्यूबाकी चावलकी आवश्यकता पहले लीवरपूल पूरी करता था। बर्मासे चावल लीवरपूल जाता था और लीवरपूलसे क्यूबा चालान जाता था। जर्मनीके कारखानेवाले भी धान 'बर्मासे लेते थे और कूट कूटकर क्यूबा भेजते थे। पर अब धीरे धीरे सीधा चालान कलकत्ता और बर्मासे होने लगा है। फिर भी अभी क्यूबाकी पूरी आवश्यकता यहाँसे पूरी नहीं हो पाती। उसका एक कारण जहाजोंकी कमी है। अगर क्यूबा माल लेजानेके लिये काफी जहाज मिल जाय तो क्यूबाके साथ चावल-के व्यापारकी बहुत कुछ उन्नति हो सकती है।

बंगालसे क्यूबा जो चावल जाता है वह कलकत्ताके आसपासके जिलोंमें पैदा होता है और यहां उसकी बिलकुल खपत नहीं है।

भारतके चावलके व्यापारका एकाधिकार बर्माके हाथमें है। वहाकी जन संख्या इतनी कम है और धानकी खेती इतनी अधिक होती है कि अपनी आवश्यकता पूरी करके भी बाहर

चालान भेजनेके लिये अपरिमित धान रह जाता है। बङ्गाल, मद्रास तथा संयुक्तप्रान्तमें जो धान पैदा होता है उसकी खपत स्थानीय आवश्यकताको पूरी करनेमें इतनी अधिक हो जाती है कि बाहर चालान भेजनेके लिये बहुत कम बचता है। कभी कभी तो अनावृष्टिके कारण इन प्रान्तोंमें धानकी फसल एक दम मारी जाती है। उस समय बर्मा ही इनकी लाज रखता है। भारतके चावलके विदेशी व्यापारका ७५ प्रति सैकडे बर्माके हाथमें है। मद्रासके चावलका चालान अधिकतर मारिशस द्वीप और क्यूबा होता है।

यह स्मरण रखनेकी बात है कि भारतसे चावलका जितना चालान विदेशोंमें जाता है उसमें धान भी रहता है अर्थात् कुटा चावल न जाकर धान ही बेच दिया जाता है और विदेशी व्यापारी अपने देशमें लेजाकर कूटते और साफ करते हैं और बेचते हैं। नीचे लिखी तालिकामें यह दिखलाया गया है कि १९१३-१४ से आजतक कितनी एकड भूमिमें धानकी खेती हुई, कितनी पैदावार हुई और कितना चावल बाहर भेजा गया।

वर्ष	एकड भूमि	पैदावार	चालान सिर्फ चावलका	मूल्य जो इससे मिला (पौंडमें)
१९१३ १४	७८६०८०००	३०१३८०००	२३६८०००	१५१०७०००
१९१८ १९	७७६१३०००	२४३१८०००	१६८४०००	१२५८८०००
१९१९-२०	३८७०६०००	७१७१९०००	६१८०००	६६०८०००
१९२१-२२	७९७०००००	३२६०५०००	१३६६०००	१६३७५०००
१९२२-२३	८०५७७०००	३२९४७०००	२०८८०००	२३१३३०००

ऊपर जो तालिका दी गई है उसके अतिरिक्त देशी राज्योंमें प्राय १,०००,००० टन धान पैदा होता है। ब्रिटिश भारतमें प्रति एकड ११॥ मनके करीब होता है। जापान और मिश्रके मुकाबिले यह बहुत कम है। जापानमें २८ मन और मिस्रमें ३० मन धान उतने ही खेतमें उत्पन्न होता है।

पहले धान कूटकर उसकी भूसी अलग कर ली जाती है। फिर धानको छाटकर साफ किया जाता है उसके बाद उसमें चमक लाई जाती है। फिर पछोरकर साफ कर लिया जाता है। यह चावल जहाजोंपर लदकर बाहर जाता है। जिन जहाजोंमें चावल लद लदकर जाता है उनमें २० प्रतिसैकडे धान भी लदकर जाता है। यह धान चालान गये देशोंमें साफ होता है और तब बिकने जाता है। चावल दो तरहका होता है, अरवा और भु जिया। भुंजिया चावल धान उबालकर बनाया जाता है। भु जिया चावलकी खपत विदेशोंमें नहीं है। इससे स्थानीय आवश्यकता पूरी की जाती है और जिन उपनिवेशोंमें भारतवासी बसे हैं वहा इसका चालान जाता है। भु जिया चावल तैयार करनेके लिये रगूनमें वैज्ञानिक ढगसे काम लेनेका प्रयत्न किया जारहा है पर अभीतक सफलता नहीं मिली है।

सरकारी खर्चके लिये जितने चावलकी आवश्यकता पडती है बर्मासे जाता है। बर्माका चावल सबसे अधिक ब्रिटनमें जाता है और पशुओंके चारेके काममें लाया जाता है। यूरोपीय महायुद्धके पूर्व जर्मनी और प्राय द्वीप (मलाया आदि) ने भी बर्मासे चावल खरीदना आरम्भ किया है।

चावल और धानपर तीन आना मन सरकारी महसूल निर्यातके हिसावसे लगता है।

भारतसे विदेशोंमें चावल और धान दोनों भेजे जाते हैं। धानका चालान कम होता जा रहा है। अधिकतर धान लंकाद्वीप जाता है। चावलका चालान यहासे जावा जाता है। पर जावा पहले इण्डोचीन और श्यामसे चावल खरीदकर तब अपनी-अपूर्ण आवश्यकताको पूरी करनेके लिये भारतसे खरीदता है। जापान अपनी खेती इस तरह बढा रहा है कि आशा की जाती है कि जल्द ही वह अपनी अन्नकी आवश्यकता पूरी कर लेगा। पर अभी तक सफलताके लक्षण नहीं दिखाई देते।

नीचे लिखी तालिकासे विदित होता है कि किस देशमें कितना चावल भारतसे गया।

देश	१९१३ १४ (टनमें)	१९२२ २३ (टनमें)
लंकाद्वीप	३३५०५१	३६२१७७
स्ट्रेट सेटलमेंट	२८४५८८	१७३६४८
ब्रिटन	१६१४०६	७८०३७
मिस्र	५३८८४	६५१३२
मारीशस	५१३४५	६६०६४
अन्य ब्रिटिश उपनिवेश	१४४८७८	२८३४३२
हालेण्ड	३३३०३२	६३६०२
जर्मनी	३१५८०५	३४०१५०
आस्ट्रिया हंगरी	२११४४२	६४००
जापान	१६०६४६	७६५२६
एशियाई टर्की	८१०५७	१००५
जावा	३६४१२	७१७६५
फ्रांस	२३६७९	२८४२
इटाली	६००	३६५०
अन्य प्रदेश	२२१६३७	४५४७५६
कुल जोड़	१३८८७००	१०२७६६७

धानकी फसल नवम्बरमें कटने लगती है और जनवरी आते आते धान तैयार हो जाता है। कटायी दवाई और ओसायी, का सारा काम हाथसे ही होता है। कलपुर्जोंका यहाँ नाम नहीं है। महाजन लोग या मिलवाले फसल देखकर किसानोंको
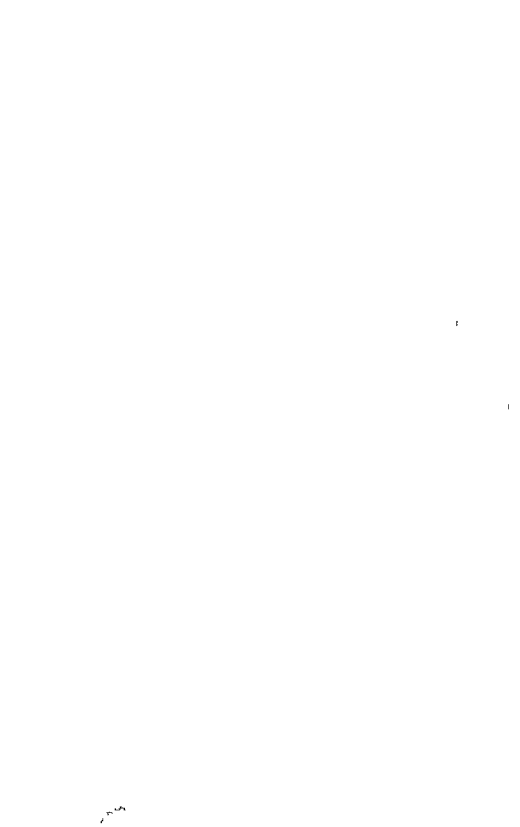
भारत — बोरेके हिसाबसे बिकता है। एक बोरा प्राय दो मनका होता है। पर ठीक वजन नहीं हो सकता।

चावलका बाजार जनवरीसे अप्रेल तक गरम रहता है। अधिकांश माल इसी तीन महीनेमें बिक जाता है। जो कुछ बचा रह जाता है धीरे धीरे दिसम्बर तक बिकता है। इससे किसानोंको बडा घाटा उठाना पडता है क्योंकि मालकी अधिकताके कारण दर गिर जाता है। इसलिये अब माल रोककर बेचनेका प्रयत्न होरहा है। इस काममें सहयोग समितियां बडी सहायता पहुचा रही हैं।

बर्मामें धान कूटनेकी मिलोंकी सख्या प्राप्त नहीं है पर इतना निश्चयपूर्वक बतलाया जा सकता है कि इन मिलोंमें काम करनेके लिये बहुत ही कम आदमियोंकी आवश्यकता पडती है। एक अच्छी मिल जिसमें प्रतिदिन १५० टन चावल तैयार किया जा सकता है २५ या ३० आदमियोंसे मजेमें चलाई जा सकती है।

बर्माका चावल ब्रिटनमें अधिकतर जाता है। इसके अतिरिक्त फ्रास, मारिशश, जापान और आस्ट्रेलिया जाता है। हालैण्ड, क्यूबा तथा डच ईस्ट इण्डीजमें बहुत ही कम चावल जाता है।

बगालका चावल बर्माके चावलका मुकाबला नहीं कर सकता। बगालका चावल अधिकाश मारिशश और लका द्वीप जाता है। १६१३ १४ से नेटाल और क्यूबाने भी बगालसे चावल खरीदना आरम्भ किया है।

धानकी फसल अच्छी होनेके लिये आवश्यक है कि गर्मीमें जमीन खूब तपे और फिर इतना पानी बरसे कि खेत भर जाय। इसलिये धानकी फसलके साथ कोई अन्य फसल नहीं उपजाई जा सकती। भारतमें धानकी खेती इसलिये सस्ती है कि प्रकृतिने कुछ स्थान उसके लिये हर तरहसे अनुकूल बनाये हैं। चीनमें धानकी खेतीके लिये कठिन परिश्रम करना पड़ता है। पहले तो जमीनको सम करना पड़ता है, दूसरे पानी काफी न मिलनेसे सिंचाई करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त जापान, फिलिपाइन्स, जावा, कोचीन, चीन, श्याम, लंका, मिस्र, उत्तरी इटाली, वेलेशिया (स्पेन) तथा मेक्सिकोकी खाड़ीके पास भी धानकी खेती होती है।

वर्षमें धानकी दो फसलें तैयार होती हैं। कहीं कहीं तीन फसलें भी हो जाती हैं। चावलमें पौष्टिक पदार्थकी मात्रा अधिक नहीं है। इसमें चर्बी और नाइट्रोजन नहीं रहता। कर्बोज-की मात्रा अधिक होती है। इससे शकर अधिक तैयार होती है। जापान, फिलिपाइन, सण्डाद्वीप, इण्डो चाइना, तथा दक्षिणी चीनमें चावलकी खपत अधिक है। चावलसे शराब भी तैयार की जाती है।

गेहूं

गेहूंका खर्च इस देशमें अधिक है। पञ्जाबमें सिवा गेहूंके दूसरा अन्न शायद ही खाया जाता है। संसारभरमें जितना गेहूं पैदा होता है उसका दसवां हिस्सा केवल इस देशमें होता

है। पञ्जाबके अतिरिक्त और प्रांतोंमें गेहूंकी खेती अधिकतर बेचनेकी गरजसे ही होती है। यूरोपीय महायुद्धके पूर्व गेहूंका चालान क्रमशः नीचे लिखे देशोंसे जाता था —संयुक्त राष्ट्र अमरीका, रूस, कनाडा, अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र तथा भारतवर्ष। पैदावारकी हैसियतसे भारतका तीसरा स्थान है। कनाडासे दूना गेहूं भारतमें पैदा होता है।

नीचे लिखी तालिकासे विदित होगा कि किन किन देशोंमें कितना गेहूं पैदा होता है और कितना बाहर जाता है।

देश	पैदावार (टनमें)	चालान (टनमें)
संयुक्तराष्ट्र अमरीका	२३८१६८८५	४६४७३००
रूस	१५३२४०४७	२३६८५००
भारत	८३३६४८४	६९४६८०
अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र	४४९८२१५	९६३०००
कनाडा	४३११०१५	१८७९२००

हिन्दुस्तान भरमें प्रायः एक ही तरहका गेहूं पैदा होता है। पञ्जाबमें गेहूंकी खेती सिंचाईसे होती है। कटाई आदिका सारा काम हाथसे होता है। मशीनोंका प्रयोग बिलकुल नहीं किया जाता। अच्छी तरहसे खाद देनेपर तथा सिंचाई आदि भलीभांति करनेसे २० मन प्रति एकड़ तक पैदावार हो जाती है। अगर जनवरी और फरवरी मासके बीचमें पानी बरस गया तो गेरुई और हरदा लगकर फसल खराब होनेका बहुत कुछ डर रहता है।

कुआर अर्थात् अक्तूबर मासमें खेत तैयार कर फसल बो दी जाती है। मार्च आते आते फसल काटनेके लिये तैयार हो जाती है। अप्रेलमें कटाई आरम्भ होती है। मई आते आते गेहूं बेचनेके लिये तैयार होजाता है। जिस साल फसल अच्छी होती है गेहूं सस्ता होजाता है। इसलिये बाहर भेजने-वाले व्यापारी तुरन्त माल रवाना करनेकी फिकर करने लगते हैं। ऐसा करनेसे उन्हें अधिक लाभकी सम्भावना रहती है। क्योंकि इस समय गेहूं उपजानेवाले अन्य देशोंका स्टाक समाप्त हुआ रहता है। इसलिये दाम अच्छा मिलता है। जिस साल फसल अच्छी होती है उस साल उपजमेंसे १० प्रति सैकड़े तक माल बाहर चालान जाता है पर जिस साल फसल अच्छी नहीं होती उस साल चालान कम जाता है। कहनेके साल तो चालान २ प्रति सैकड़े तक हो जाता है। गत पांच वर्षों का औसत निकालनेसे प्रगट होता है कि भारतमें प्रति वर्ष लगभग २७० लाख एकड़ भूमिमें गेहूंकी खेती हुई और ८० लाख टन गेहूं पैदा हुआ।

स्वेज नहरके खुलनेके पहले गेहूंका चालान कलकत्ता बन्दरसे होता था। रेलके विस्तारसे बम्बई बन्दरगाहसे सुवि-धा होने लगी। इस समय तक गेहूंको खेती अधिकतर संयुक्त प्रान्तमें होती थी। नहरोंके बन जानेसे पञ्जाबकी भूमि गेहूंकी खेतीके लिये सबसे उत्तम ठहरी। पंजाबसे कराची बन्दरगाह नजदीक पड़ता है। साथ ही मजूरी भी कम पड़ती है। इससे

गेहूका चालान अब करांचीसे होता है। इस समय लायलपुर आदि केन्द्र हैं जहा गेहूकी खरीदारी होती है। वहासे रेल द्वारा माल कराची जाता है और ८ मनके खण्डोमें बिकता है। ब्रिटनमें माल बोरोंमें जाता है। प्रत्येक बोरे २ मन २८ सेरके होते हैं। बम्बईमें ६ मनके थोकके बिक्रीके हिसाबसे बेचा जाता है और बोरोंमें भर भरकर बाहर जाता है जिनका वजन २ मन ६ सेर तक होता है। कराची बन्दरगाहसे सफेद या चन्दौसी गेहू रवाना होता है। सौ मन गेहूमें ५ मन जव, २ मन मिट्टी और धूर रहती है। लाल या दौदियामें ५ मन सैकडे जव और ३ मन गर्द या मिट्टी। लाल और सफेद मिले हुएमें २ मन सैकडे जव और १॥ मन सैकडे धूर या गर्द रहती है। यहासे अधिक तर चन्दौसीका गेहू चालान जाता है। दौदिया गेहू मध्य भारतमें पैदा होता है और मार्शलोज तथा इटालीमें जाता है। कराची बन्दरगाह माल रखनेके लिये भी अच्छा है।

हिन्दुस्तानसे अधिकतर गेहू ब्रिटन जाता है। थोडा माल फ्रास और बेलजियम भी जाता है।

हार्म्सवर्थ बिजिनेस लायब्रेरीकी तीसरी जिल्दके लेखकने गेहूके सबधमें जो कुछ लिखा है उसका साराश नीचे दिया जाता है —

गेहूकी अनेक जातिया देखनेमें आती हैं पर सफेद या चन्दौसीका गेहू सब गेहूसे बढिया होता है। इसका आटा बहुत ही महीन और साफ होता है। पर कमजोर खेतोंमें लाल या दौ

दिया गेहू ही अधिक पैदा होता है। जितना अच्छा गेहू होगा उतनाही कम चोकर उसमेंसे निकलेगा।

कीचड़में गेहू अधिक पैदा होता है। जितनी ही ठंढक पड़े गेहूकी फसल उतनी ही अच्छी होगी अगर पालासे इनकी रक्षा होती रहे। भूमध्यसागरके आस-पासकी भूमि गेहूकी खेतीके लिये सबसे उत्तम है।

संसारमें जितना गेहू पैदा होता है उसका आधा केवल यूरोपमें पैदा होता है पर खर्च अधिक है। हंगरी, रूस और रोमानिया यूरोपके प्रधान क्षेत्र हैं जहां गेहूंकी खेती होती है। फ्रांस अपनी आवश्यकता भर गेहू पैदा कर लेता है। इसके अतिरिक्त साइबेरिया और न्यूजीलैण्डमें भी गेहूकी खेती होती है। आस्ट्रेलियाका गेहूं सबसे बढ़िया होता है। अमरीकामें मिसिसिपी और रेड नदीकी घाटियोंमें गेहूंकी खेती होती है।

जो देश आटा न भेजकर गेहूं बेच देता है वह नुकसानमें रहता है। गेहू पीसकर बेचनेसे चोकर अपने पास बच जाता है। इससे एक तो जहाजोंका भाड़ा कम लगता है, घरमें एक व्यवसाय हो जाता है और चोकरसे चौपायोंका पालन होता है।

गेहूकी खेती दिनपर दिन बढ़ती जा रही है पर साथ ही साथ मांग भी उतनी ही तेजीसे बढ़ती जा रही है। भाग्यकी बात है कि गेहूकी खेती थोड़ी बहुत सभी देशोंमें होती है; इससे हर महीनेमें किसी न किसी देशमें फसल तैयार ही रहती है जिससे आमदनी कभी बन्द नहीं होती।

प्रति एकड़ भूमिमें भिन्न भिन्न देशोंमें जो पैदावार होती है उसे देखकर यही अनुमान निकलता है कि अभी गेहूंकी पैदावारमें बहुत कुछ बढ़ती हो सकती है, क्योंकि खेतोंमेंसे अभी पूरी पैदावार नहीं निकाली गई है।

जव

जवकी खेती अधिकतर संयुक्त प्रान्त और बिहारमें होती है। ब्रिटिश भारतमें ७० लाख एकड़ भूमिमें जवकी खेती होती है। इसके अतिरिक्त देशी राज्योंमें ४०००००० एकड़ भूमिमें जवकी खेती होती है। देशी राज्योंमें जैपुर, अलवर, भरतपुर और ग्वालियरमें जवकी खेती अधिक होती है। ब्रिटिश भारतमें जो ७० लाख एकड़ भूमिमें जवकी खेती होती है उसमें ४० लाख एकड़ केवल संयुक्त प्रान्तके गोरखपुर, बनारस, लखनऊ और अलाहाबाद परगनेमें बोये जाते हैं।

देशके भीतर ही जवकी खपत इतनी अधिक है कि बहुत कम माल बाहर चालान होता है। जो कुछ चालान जाता है उसका अधिक भाग ब्रिटेन जाता है। इधर दो वर्षोंसे मिस्र भी चालान जाने लगा है। जव शराब बनानेके काममें आता है।

इन देशके अतिरिक्त नार्वे, स्काटलैण्ड और कालीफोर्नियामें भी जवकी खेती होती थी। कुछ दिन पहिले जव खानेके काममें भी लाया जाता था पर अब अधिकांश गेहूंका प्रयोग उसकी जगहपर होता है। अब जव अधिकतर शराब बनानेके काममें आता है।

दाल

अरहर, मसूर मूंग, उर्द, मोठ, मोथी, मटर, केराय सभी-की गणना दालमें की गई है। केवल चनेकी तालिका अलग दी जायगी। मसूरकी खेती रबीके साथ की जाती है। फरवरीके अन्तमें मसूरकी फसल तैयार हो जाती है। मध्य प्रदेश, मद्रास और संयुक्तप्रान्तमें मसूरकी खेती अच्छी होती है। मसूरकी खेती अधिकतर माल बाहर भेजनेके लिये ही होती है। बंगालके अतिरिक्त अन्य प्रान्तमें मसूरकी खपत बहुत ही कम है। अरहरकी खेती अलग नहीं होती। अधिकाश बाजरा, जोन्हरी, रेंड, अरहर और उर्द साथ बोयी जाती है। अरहरकी फसल देरमें तैयार होती है। खरीफके साथ बोयी जाकर रबीके साथ यह काटी जाती है। बड आदमियोंमें इसीका दालका अधिकतर प्रयोग होता है। इसलिये इसका महत्व अधिक है यद्यपि विदेशोंमें चालान बहुत कम जाता है। अरहर आदिके दल देनेपर उनके जो टुकडे हो जाते हैं उन्हें दाल कहते हैं। मटर कई तरहकी होती है। सफेद या बडी मटर, भूरी या छोटी मटर, केराय या हरी मटर, ये सब मटरकी जात हैं।

सफेद मटरका चालान अधिक होता है। यह मटर रबीके साथ बोयी जाती है। जनवरी और फरवरीमें फसल समाप्त हो जाती है। नदियोंके किनारे जो मटर बोयी जाती है वह बढिया होती है। किसान लोग इसका प्रयोग चौपायोंके चारामें बहुत करते हैं। गरीब लोग इसे खाते भी हैं। किसान इसको

मजूरोंको पनी और दाना देनेके काममें लाते हैं। इससे जो कुछ बचता है चालान कर दिया जाता है।

दालकी खेती कितनी भूमिमें होती है इसका अनुमान नहीं किया जा सकता क्योंकि यह फसल अकेला कभी नहीं बोया जाता। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इसकी खेती अधिक होती है क्योंकि इसका खर्च सब जगह है, दूसरे सभी बाजारोंमें यह पाया जाता है।

दालका चालान कलकत्ता बन्दरगाहसे अधिक होता था। जितनी दाल १९१३-१४ में विदेश चालान गई उसमेंसे ५० प्रति सैकड़े केवल कलकत्ताके बन्दरगाहसे गई। पर इसके बाद ही रंगून, बम्बई, कराची और मद्रासके बन्दरगाहोंने इस व्यापारको हथियाना आरम्भ किया। दालका चालान अधिकतर ब्रिटन, टकाद्वीप, मारिशस, प्राय द्वीप और जापान जाता है। युद्धके पहले जमनी, वेल्जियम और हालेण्ड भी दाल जाती थी। भारतवर्षके अतिरिक्त डेनमार्क, मिस्र, अमरीका, स्पेन, चीन, जापान, जर्मनी, साइप्रस और पुर्तगालमें दालकी खेती होती है।

चना

प्राय १३,०००,००० एकड़ भूमिमें चनेकी खेती होती है। इसका सबसे बड़ा क्षेत्र संयुक्त प्रान्त है। इसके अलावा बंगाल, बम्बई और मध्यप्रान्तमें भी चनेकी खेती होती है। यह रबीके साथ तैयार होता है और अप्रेलमें बाजारोंमें आजाता है।

चनेका स्थानीय खर्च अनेक प्रकारसे होता है। भोजन और

इसका प्रधान कारण यही मालूम होता है कि अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्रमें मक्केकी खेती अच्छी होने लगी है और यहाका मक्का उसके मुकाबले नहीं ठहर सकता। मक्के कई तरहके होते हैं। इनमें जौनपूरी मक्का सबसे अच्छा होता है। इसके दाने सफेद पोंढ और मीठे होते हैं। बाली भी मोटी और बडी होती है।

मक्केका चालान कराची, रगून और कलकत्ताके बन्दरगाहोंसे होता है। पर रपतनीके बन्द होनेके कारण कलकत्ता बन्दरगाहसे चालान एकदम बन्द हो गया है। मक्के के प्रधान ग्राहक ब्रिटन और जापान हैं।

इस देशके अतिरिक्त मक्केकी खेती हङ्गरी, उत्तरी इटाली, तुर्की, दक्षिणी रूस, रूमानिया, उत्तरी तथा दक्षिणी अफ्रीका, अष्ट्रेलिया तथा मैक्सिको, मेसिसिपीकी घाटीमें बहुतायतसे होती है। अमरीकामें जानवरोंके चारेके काममें लाया जाता है और डण्ठलसे खाद तैयार की जाती है। अनुसंधानसे मालूम हुआ है कि चर्बीके बढानेके लिये मक्का सब अन्नोंसे मुफीद है। ब्रिटनमें घोडों और चौपायोंके चारेके काममें लाया जाता है। मक्केसे एक तरहका सिरका तैयार किया जाता है जो अचारमें डाला जाता है। इसकी शराब भी बनती है।

जई

जईकी खेती अधिकतर दिल्ली, हिसार तथा मेरट जिलेमें होती है। इसके अलावा पूना, अहमदनगर, सतारा और अहमदाबाद जिलेमें भी इसकी खेती होती है।

इसका चालान अधिकतर कलकत्ता और बम्बईके बन्दरगाहोंसे होता है। इसकी खपत अधिकतर मारिशस और लंकाद्वीपमें है। १९१५—१६ से अस्ट्रेलियामें भी जाने लगा है।

इस देशके अतिरिक्त आयर्लैण्ड, स्काटलैण्ड, डेनमार्क, स्केण्डिनेविया आदि देशोंमें भी जईकी खेती होती है। कनाडा और न्यूजीलैण्डकी यह प्रधान फसल है। रूसमें भी इसकी खपत अधिक है। पर वहां स्काटलैण्डसे अधिक चालान जाता है। इसका प्रयोग अधिकतर घोड़ेके दानाके लिये होता है।

तेलहन

तेलहनका स्थान पैदावार तथा निर्यात दोनों हैसियतसे बहुत ऊंचा है। नीचे दिये हुए अर्कों द्वारा यह दिखलाया गया है कि युद्धके पहले भारतमें कितनी एकड़ भूमिमें तेलहनकी खेती होती थी और कौन कौन प्रधान तेलहन पैदा होता था तथा कितने रुपयेका माल विदेशोंको जाता था।

सन् १९१३—१४

प्रधान २ तेलहनोंके नाम	एकड़ भूमि	रु०का माल गया
रेंडी		२,०५,००,०००
बेनउल	१५८४४०००	२,१२,५१,०००
मूंगफली	४६३,०००	४,८८,१४,०००
तीसी	२२६८,०००	६,६८,७१,०००
सरसों	४०८३,०००	४,४७,३७,०००
तिल्ली	४२७८,०००	२,७०,४३,०००

है पर रेंडीका तेल ५० प्रति सैकड़े आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गया। नारियलका तेल ४४ प्रति सैकडे अमरीका गया।

जो कुछ तेल पेरा जाता है उसका अधिकाश घरमें ही खर्च हो जाता है। तेलहनसे तेल पेरनेका साधन अभी इस देशमें सन्तोषजनक नहीं है। इस प्रसगपर विचार करते हुए इण्ड स्ट्रियल कमीशनके सदस्योंने अपनी रिपोर्टमें लिखा है —

"तेलहनकी पैदावारका अधिक अश चालान कर दिया जाता है। जो कुछ बचता है कोल्हूमें बैलों द्वारा पेरते हैं। ये कले तेल पेरनेके लिये नितान्त अनुपयुक्त हैं। जो दो चार मिलें हैं भो उनको बडी कठिनाईका सामना करना पडता है क्योंकि मिलोंकी खलीको यहा पूछ नहीं। तेल पेरनेकी कलोंमें अभी तक किसी तरहका सन्तोषजनक सुधार नहीं किया गया है।" यह देखकर सन्तोष होता है कि लोगोंका ध्यान इस ओर धीरे धीरे जा रहा है और तेल पेरनेकी मिले धीरे धीरे बैठायी जा रही हैं। इस व्यवसायकी उन्नति और गुंजायशकी बहुत कुछ सम्भावना है क्योंकि कल कारखाने जितने अधिक बढते जायगे, तेलकी आवश्यकता भी उतनीही बढती जायगी। तेलहन विदेश भेजकर हमलोग डबल हानि उठाते हैं। जहाजोंका भाडा अधिक देते हैं। खलीसे हाथ धो बैठते हैं और साथ ही विदेशोंसे तेल मगाते हैं। यदि देशमें ही काफी मिलें खुल जायं तो सम्पूर्ण तेलहनका प्रयोग उन्हींमें होने लगे और तेलहन बाहर न भेजकर तेल भेजा जाय तो बहुत लाभ हो सकता है। अभी हालमें बर्मामें नारि-

यलके तेलके पेरनेका कारखाना खुला है। अनेक कलें बैठाई गई हैं जिनमें तेलकी पेराईका काम होता है। पर खेद इस बातका है कि एक भी कारखाना भारतीय पूंजीसे नहीं बैठाया गया है। सबोंमें यूरोपियनोंकी ही पूंजी लगी है।

खली—युद्धके पहिले हिन्दुस्तानसे प्राय १०००० पौंडकी खली विदेशोंमें जाती थी। हिन्दुस्तानी खलीके प्रधान ग्राहक ब्रिटन, लंका द्वीप तथा जापान थे। ब्रिटनमें कुल ६२००० टन खली गई थी जिसमें ३३००० टन केवल नारियलकी खली चौपायोंके खिलानेके लिये मगाई गयी थी। जापानमें ४१००० टन सरसोंकी खली खेतोंमें खाद देनेके लिये मगायी गयी थी।

तीसी

हिन्दुस्तानमें तीसीकी खेती सबसे अधिक होती है। तेलहनमें तीसीका स्थान सबसे ऊपर है। तीसीकी खेतीके सम्बन्धमें दो बातें स्मरण रखने योग्य हैं —(१) तीसीकी खेतीसे केवल फल ले लिया जाता है और तिसकुटके रेशेसे लाभ नहीं उठाया जाता। रूसमें तीसीकी खेती अधिकतर इसी उद्देश्यसे होती है। तीसीके रेशेसे रेशमी कपडा तैयार किया जाता है और पाट तथा सनकी तरह भी इसका प्रयोग होता है। पर यहाके लोग केवल दानेसे सम्बन्ध रखते हैं और तिसकुटको योंहीं फेंक देते हैं या ईधनके काममें लाते हैं, (२) जितनी तीसी हिन्दुस्तानमें पैदा होती है उसका अधिकाश तेलहन या तेलके रूपमें विदेश भेजा जाता है।

तीसीकी फसल रबीके साथ होती है। इसकी खेती अलग भी होती है और प्रायः सभी अनाजोंके साथ यह बोयी जाती है। मसूर और तीसीकी खेती अधिकांश एक साथ होती है। १९१२, १९१३, और १९१४ का औसत निकालनेसे यह मालूम होता है कि प्राय: ५ लाख टन तीसी यहां हर साल पैदा होती है जिसमेंसे ८० प्रति सैकड़े बाहर भेज दी जाती है। १९०५ में ५६०,००० टन तीसी बाहर भेजी गई थी। इस समयतक हिन्दुस्तानके हाथमें तीसीका एकाधिपत्य था, पर उसके बाद अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र, अमरीका, कनाडा तथा रूसकी प्रतियोगिताके कारण भारतका तीसीका व्यापार गिरता गया और युद्धके समय तो यह व्यापार भारतके हाथमें केवल ३० प्रति सैकड़े रह गया था। प्रधानतया संयुक्त प्रान्त, बिहार, बंगाल और मध्य प्रदेशमें तीसीकी खेती होती है। मद्रासकी भूमि तीसीकी खेतीके सर्वथा अयोग्य है। कुल मिलाकर ३५०००० एकड़ भूमिमें तीसीकी खेती होती है। इसके अतिरिक्त संयुक्त प्रदेशमें ६००,-००० एकड़ भूमिमें रबीके साथ तीसी बोई जाती है। इन प्रान्तोंके अतिरिक्त छिटफुट खेती और भी कई जगह होती है।

नोट—१९१८—१९ में तीसीकी खेती कम हुई थी। इसका प्रधान कारण यह था कि बोअनीके समय खेतोंकी जो दशा थी उसे देखकर यही अनुमान हो रहा था कि तीसीकी फसल इस साल अच्छी नहीं होगी। इसलिये थोड़े ही खेतोंमें तीसी बोई गई।

हम ऊपर लिख आये हैं कि तीसीकी खेती दो तरहसे का
ाती है। कितने खेतोंमें निखालिस तोसो बोई जाती है और
कितनेमें अन्य अनाजोंके साथ भी तीसी बो दी जाती है। औसत
निकालनेसे विदित होता है कि एक एकड़ भूमिमें करीब ४ मन
ीसी पैदा होती है। तीसी दो रंगकी होती है—भूरी और
पीली। भूरी तीसीका चालान अधिक होता है। लम्बाई और
मोटाईके हिसाबसे तीन तरहकी तीसी होती है। मोटी, मध्यम
और छोटी। बम्बईके बन्दरगाहसे अधिकतर मोटी और पतली
तीसीका चालान होता है, पर कलकत्ताके बन्दरगाहसे केवल
मध्यम दर्जेकी तीसी जाती है। थोड़ा बहुत चालान कराचीसे भी
होता है। कराचीकी तीसी कलकत्ताकी जातिकी होती है। पीली
तीसी केवल बम्बईके बन्दरगाहसे रवाना होती है। इसमें बड़ी
तीसीका ८० प्रति सैकड़े मेल रहता है। पीली तीसीका चालान
मार्सेलीज सबसे अधिक होता है। इसका प्रधान कारण यह
है कि इसकी खली मोटी तीसीकी खलीसे चमकीली और सुन्दर
होती है और अधिक बिकती है। पीली तीसी ४,००० से ५,०००
टनतक प्रति वर्ष होती है।

हमने ऊपर लिखा है कि हिन्दुस्तानमें तीसीकी खेती केवल
बाहर भेजनेके लिये होती है। तीसीका विदेशी व्यापार धीरे २
किस तरह बढ़ता जा रहा है इसका अनुमान केवल इतनेसे ही
किया जा सकता है कि पहले पहल तीसीका चालान १८३२ ई० में
२ हण्डर हुआ था। सात वर्षके बाद १८३९ई०में ६०००० टन तीसी

बाहर गई, १८८० ८१ में ३००००० टन तीसी भेजी गई। इस तरह हम देखते हैं कि तीसीका व्यापार दिन-दिन बढता गया और १६११ से तो यह व्यापारका प्रधान अंग हो गया। नीचेकी तालिकासे यह स्पष्ट हो जाता है।

सन्	चालानी माल (टनोंमें)	मूल्य (पौंडमें)
१६११	३७०५५२	५५६३४६२
१६१४	४१३८७३	४४५७६६८
१६१६	२६२४५३	४३६१४०२
१६२०	२५२४१५	६६७७६६२
१६२३	२७४२८०	४६०२३६८

इस तालिकासे विदित हो जाता है कि तीसीकी माग दिन-दिन बढती गई। १६१८ के बाद चालानमें जो कमी देखते हैं उसका कारण पैदावार है, नहीं तो विदेशोंकी माग उसी तरह बनी रही। युद्धसे पहले जर्मनी यहाकी तीसीका एक प्रधान ग्राहक था। युद्धके समयसे चालान एकदम गिर गया।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि युद्धके पहले किन किन देशोंमें कितनी तीसी जाती थी और युद्धके बाद कितनी जाती है —

देश	१९१३-१४ (टनोंमें)	१९२२-२३ (टनोंमें)
ब्रिटन	१५७३१५	१४१२९६
फ्रान्स	११५४५९	४९६१६
जर्मनी	४८३२६	२८४०
बेलजियम	३८४५९	२२२२३
इटाली	३०६५७	३०४५४
हालैण्ड	९५७५	७९४१
आस्ट्रिया हंगरी	६५००	—
आस्ट्रेलिया	३३६०	११९९८
अन्य देश	४२२२	७८२२
कुल जोड़ ४१३८७३		२७४२८०

तीसीका चालान बारहों मास हुआ करता है। मईसे जुलाई-तक चालान अधिक होता है।

तीसीका चालान अधिकतर बम्बई और कलकत्ताके बन्दर-गाहोंसे जाता है। बम्बई बन्दरगाहसे अधिक चालान जाता है।

तीसीमेंसे ३७ से ४३ प्रति सैकड़ातक तेल निकलता है। चालान भेजनेके बाद जो तीसी बच जाती है उसके अधिकांश भागसे देहाती कोल्हुओंमें पेरकर तेल निकाला जाता है। अब कुछ दिनोंसे मिलें भी खुली हैं और उनकी संख्या दिन दिन बढ़ती जा रही है, पर अभीतक जितने कारखाने तेल पेरनेके

खुले हैं प्राय. सभी यूरोपियनोंके हाथमें हैं। ३०-४० हजार टन प्रति वर्षकी खपत इन कारखानोंमें है।

तेलका चालान अधिकतर आस्ट्रेलिया, हागकाग और न्यूजीलैण्डमें होता है। १९१० में मेलबोर्नमें तेल पेरनेकी मिल खुल जानेसे आस्ट्रेलियामें माल जाना रुक गया। इससे रफतनीमें कमी हो गई। सन् १९१७ १८ और १९१८-१९ में भारत-सरकारने तेलहनकी नाकाबन्दी कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि तेलकी माग चारों ओरसे बढ़ गई।

तीसीके तेलके व्यापारके सबधमें यह बात बड़े ही मार्केकी है कि इङ्गलैंडसे तेलकी आमद धीरे धीरे बढ रही है। इङ्गलैंड हिन्दुस्तानसे तीसी ले जाकर भी यहाके बाजारमें सस्ता तेल बेचता है। पर इस तेलकी खपत केवल कल-कारखानोंमें है; क्योंकि यह तेल पतला होता है। प्रति वर्ष प्राय ३३०,००० गैलन तेल इङ्गलैंडसे आता है।

खली—तीसी, सरसों और तिल्लीकी खलीका चालान १९१८ तक एक ही मदमें शामिल था। इससे १९१८ के पहले किस चीजकी खली कितनी गई इसका पता नहीं चल सकता। १९१९में तीसीकी खलीका अलग अक लिया गया जिससे विदित होता है कि तीसीकी खलीका चालान ४०००,००० पौंड प्रति वर्ष होता है। खलीका व्यापार अधिकतर ब्रिटन, लेकाद्वीप जापानसे होता है। वहापर खलीका प्रयोग खादके रूपमें किया जाता है। सरसोंकी खली जापान सबसे अधिक

खरीदता है। प्रधान बन्दरगाह खलीके चालानके लिये कलकत्ता है। इसका प्रधान कारण यह है कि तीसीका तेल पेरनेकी तीन प्रधान मिलें कलकत्ताके आसपास हैं।

प्रयोग—तीसीके तेलका प्रयोग वार्निशमें किया जाता है, जिससे वार्निश जल्दी सूख जाय। इसमें गन्धक मिलाकर कपडेपर पोतकर आयल क्लाथ (मोमजामा) बनाया जाता है। छपाईकी रोशनाईमें भी तीसीका तेल डाला जाता है। साबुन बनानेके काममें भी यह आता है।

हिन्दुस्तानके अतिरिक्त रूस, अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र तथा अमरीकामें इसकी खेती होती है।

मूंगफली

मूंगफलीकी खेती हिन्दुस्तानमें बहुत प्राचीन कालसे होती चली आ रही है। १८४० में पहले पहल मूंगफलीका चालान यूरोप हुआ था, पर इस व्यवसायकी बहुत दिनोंतक उन्नति नहीं हुई। १८८० तक इसका व्यापार बहुत ही साधारण रहा। इस वर्ष ११२,००० एकड भूमिमें मूंगफलीकी खेती हुई थी। इसमें बम्बईमें ७०,००० एकड और मद्रासमें ३४,००० एकड भूमिमें मूंगफली बोई गई थी। १८९५-९६ में बम्बईमें १६४,००० एकड और मद्रासमें २४३,००० एकड भूमिमें मूंगफलीकी खेती हुई थी। पर इसके बाद ही इस व्यवसायको प्रबल धक्का लगा। इसका प्रधान कारण खराब बीज बतलाया जाता है। इसका परिणाम यह हुआ कि मूंगफलीकी खेती एक दमसे घटकर

३०००,०० और १००,००० एकड भूमिमें होने लगी। बीसवीं सदीके आरम्भमें सेनेगल और मोजाम्बिकमें बढ़िया बीज लाकर खेतीमें उन्नति की गई। १९१३—१४में २१,०००,०० एकड भूमिमें मूंगफली बोई गई और ७४६,००० टन मूंगफली पैदा हुई।

युद्धके समयमें मूंगफलीके व्यवसायमें जो बहुत घटा बढ़ी हुई इसके अनेक कारण थे। मूंगफलीका दर गिर गया। मार्सलीज-में मजूरोंकी गड़बड़ीके कारण तथा फ्रान्समें पेरनेवाली अनेक मिलोंके बन्द हो जानेके कारण १९१५-१६ में मूंगफलीकी खेती बहुत कम कर दी गई। १९१६-१७में कुछ बाजार सुधरा तो जहा-जोंका अधिक भाड़ा तथा मद्रासके बन्दरगाहोंकी नाकाबन्दीने दूसरा धक्का दिया, पर उस साल भाग्यवश फसल बहुत अच्छी हुई। १९१७-१८ में १९३३,००० एकड भूमिमें मूंगफली की खेती की गई थी। उसमें मद्रासमें १,४१२,००० एकड भूमि और बर्मामें २४६,६०० एकड और बम्बईमें २७२,००० एकड-भूमिमें मूंगफली बोयी गई थी। १९१८-१९ में ठीक फसल बोनेके समय पानी बरस गया। निदान उस साल भी खेती बहुत कम हुई। उधर फसल तैयार भी नहीं होने पाई थी कि मद्रास और बम्बईमें इतना पानी बरसा कि मूंगफली जमीनके भीतर ही सड़ गई।

नीचे जो तालिका दी जाती है उससे विदित होगा कि औसतमें कितनी मूंगफली तथा कितना मूंगफलीका तेल प्रति वर्ष चालान होता है।

सन्	कुल पैदावार (टनमें)	चालान (टनमें)	
		दाना	तेल
१९१३-१४	७४६,०००	२७८,०००	४,००३
१९२२-२३	१,१७५,०००	२६७,०००	७३४

औसत मिलाकर देखनेसे मालूम होता है कि १० हण्डर मूंगफलीमें ३ हण्डर तेल निकलता है।

मूंगफलीकी खेती जितनी अधिक होती है उसके मुकाबिलेमें विदेशी व्यापार कुछ नहीं है। १९१३ १४ में प्राय ७४६,००० टन मूंगफली पैदा हुई थी। उसमेंसे केवल २७४,०००टन चालान हुआ था। मूंगफलीका सबसे अधिक चालान फ्रांस होता है।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि हिन्दुस्तानसे कितने परिमाणमें मूंगफली किन किन राष्ट्रोंमें जाती है। इस तालिकामें पाण्डीचेरीकी पैदावार नहीं शामिल है।

देश	१९१३-१४	१९१८-१९	१९१९-२०	१९२०-२१	१९२१-२२	१९२२-२३
फ्रान्स	२,२३,८२०	२,५५३	७५,४२५	३६,२१०	१,४६,२००	१,७८,७१८९
बेलजियम	१६,६०८	„	६,७५५	२०,१५६	२३,२६०	१०,४०९
आस्ट्रिया हंगरी	१०,७०६	„	२८७	१,८७०	१,३००	१,२६६
जर्मनी	९,४३६	„	„	२,००२	२३,७०२	२४,६५६
इटाली	१,२२५	२,०३०	१२,०६४	११,२०७	१७,४०७	२३,५१३
ब्रिटन	४८०	४०२	७,९२०	२३,५९६	७८९१	११०७८
अन्य देश	१७,०३२	१२,२१४	६,३४४	५,९७४	१३,१०१	१७,७४३
कुल जोड़	२७७,९०७	१७१९९	१११७३५	१०४०१५	२३५८९१	२६७३८४

पहले केवल मद्रासले मूंगफलीका तेल विदेश जाता था। वह भी केवल मारिशस और लङ्काद्वीपमें। अभीतक जितना तेल पेरा जाता है उसका अधिक भाग घरके ही खर्चमें लग जाता है, विदेश बहुत कम भेजा जाता है।

खली—मूंगफलीको हिन्दुस्तानमें ही पेरकर तेल निकालनेके सामने एक विकट कठिनाई उपस्थित हो गई है। खलीके लिये जबतक बाजार न ठीक कर लिया जाय तेल पेरनेका काम नही बढाया जा सकता। मशीनोंमें पेरनेसे जो खली निकलती है उसमें तेल कम होता है। इससे चौपायोंके चाराके लिये भारतीय किसान उसे बहुत ही उत्तम समझते हैं। पर भारतमें जितनी खली रह जाती है उसका तीन चौथाई हिस्सा खादके काममें लाया जाता है। भारतीय खलीका प्रधान ग्राहक इङ्गलैण्ड है। लङ्काद्वीपमें भी कुछ खली जाती है। लङ्काद्वीपमें खलीका प्रयोग चायके बगीचोंमें खाद देनेके काममें होता है। खलीका बम्बई और मद्रासले चालान जाता है। इधर हालमें जावाने भी खली मंगाना आरम्भ किया है।

मूंगफलीकी खेती मद्रासमें सबसे अधिक होती है। अन्दाजन १,४००,००० एकड़ भूमिमें मूंगफली बोयी जाती है। कुल पैदावार ५००,००० टन होती है। दक्षिणी प्रदेशसे जो माल बाहर जाता है उसका नाम पाण्डीचेरी रखा गया है। अच्छी वर्षा हो जानेके बाद मूंगफलीकी खेती आरम्भ की जाती है। जनवरीतक फसल तैयार हो जाती है। युद्धके पहले मद्रासका

प्रधान। ग्राहक फ्रांस था युद्धके दिनोंमें जहाजोंकी कमीके कारण माल जानेमें अड़चन पड़ने लगी। इससे फ्रांस और ब्रिटन दोनोंको सिनगलकी सहायता लेनी पड़ी। १९१८–१९ में फ्रांसने पश्चिमी अफ्रीकासे माल मंगाया। इसका परिणाम यह हुआ कि यहांसे चालान एकदम रुक गया, केवल ८,४२१ टन माल गया। इसमेंसे ५,३४६ टन पांडीचेरीसे गया था।

१९१३—१४ में २८०,००० गैलन (१ गैलन=४॥ सेर) तेल मद्रासले बाहर गया। इसमेंसे ४८ प्रति सैकड़े लङ्काद्वीप और ५० प्रति सैकड़े मारिशस गया। १९१७ में ६२६,२४२ गैलन माल गया। इसके बाद ही ब्रिटन और फ्रान्सने तेल मंगाना बन्द कर दिया। इससे तेलका चालान घटकर उतना हो गया जितना युद्धके पहले था। १९२३ में ३६००० गैलन तेल चालान गया। उसमेंसे भी ८६ प्रति सैकड़े अरब और लङ्कामें गया। मूंगफली-को पेरकर तेल निकाल लेनेके लिये देहाती कोल्हू सबसे उत्तम प्रतीत हुए हैं। मिलोंसे जो तेल निकलता है वह उतना उम्दा नहीं होता। मद्रासका तेल किनारेके शहरोंमें अधिक जाता है और घीमें मिलाकर बेचा जाता है। यह तेल बर्माके तेलसे कहीं घटिया होता है। १९१३–१४ में ७७२००० हण्डर खली मद्रासले बाहर गई थी, पर १९२२—२३ में केवल ३३२००० हण्डर माल चालान गया।

बर्मा—प्राय पन्द्रह वर्ष हुए बर्माने भी मूंगफलीकी खेतीकी ओर ध्यान दिया। मोंगयान बर्माकी मूंगफलीकी खेतीका प्रधान

केन्द्र है। १९१३–१४ में २५८,००० एकड भूमिमें वहा मूंग फलीकी खेती की गई थी जिसमें ६०,००० टन पैदावार हुई थी। १९१३–१४ में ५३८,२२५४ टन, १९१४—१५ में ३७,९६३ हण्डर १९१५—१६ में कुछ नहीं, फिर १९१६—१७ में ४३,१६० हण्डर माल बाहर गया था। युद्धके पहले बर्मासे फ्रास, हागकाग तथा आस्ट्रिया हगरीमें माल जाता था। १९१७—१८ में २० ५३७ और १९१८–१९ में ५,२२२ हण्डर माल बाहर गया।

तेल—बर्माका तेल मद्रासके तेलसे कहीं अच्छा होता है। १९१५—१६ में ७७,००० गैलन तेल बाहर गया। १९१६—१७में ४९५,००० गैलन तेल गया। १९१७—१८ में २८७,९६० गैलन गया। इसमेंसे २११,२३६ गैलन केवल ब्रिटनमें गया। १९१८ १९ में ब्रिटनने तेल लेना बन्द कर दिया। परिणाम यह हुआ कि तेलकी रफ्तनी घटकर ७६,८३६ गैलन रह गई।

बम्बई—मूंगफलीका व्यापार धीरे धीरे बम्बईसे उठ रहा है अथवा यों कहना चाहिये कि इस रोजगारमें इधर जो बढती हुई है उससे बबईने कुछ भी नहीं या बहुत थोडा लाभ उठाया है। उन्नीसवीं सदीके अन्तमें हिन्दुस्तानकी मूंगफलीका व्यापार ७५ प्रति सैकडे बबईके हाथमे था। पर बीसवीं सदीके आरम्भमें अर्थात् कुल २५ वर्षके भीतर वह व्यवसाय ३८ प्रति सैकडे रह गया।

खेती—बम्बई प्रान्तके शोलापुर और सतारा जिलोंमें मूंगफलीकी खेती होती है। इसके अलावा कोल्हापुरके देशी राज्य-

में २१००० एकड़ भूमिमें मूंगफली बोई जाती है। औसत पैदावार प्रति वर्ष २६०,००० टन होती है। बम्बईकी फसल प्राय १॥ मास पूर्व अर्थात् मई और जूनके बीच बोई जाती है और नवम्बरमें काट ली जाती है। दाने दो प्रकारके होते हैं— मोटे और पतले ये छिलके सहित भी बेच दिये जाते हैं और छिलका उतार कर भी बेचे जाते हैं।

युद्धसे पहले ८० प्रति सैकड़े माल केवल फ्रांस गया। २० प्रति सैकड़ेमें बेल्जियम और जर्मनीका हिस्सा था। ब्रिटनमें केवल ४० टन माल जाता था। १९१६—१७ में ब्रिटनने ७० प्रति सैकड़े खरीदा। अभीतक प्रधान ग्राहक फ्रांस था। जहाजोंकी कमीका इसी सनमें मद्रास या रंगूनके बन्दरगाहों-पर जितना असर पड़ा बम्बईके बन्दरगाहोंपर उतना असर नहीं पड़ा। इस साल उसने युद्धके पहलेके सालोंसे अधिक माल भेजा।

तेल—१९१४—१५ से तेलका व्यापार प्रधानत लंका द्वीप और मारिशसके साथ रहा। दोनोंने मिलकर प्राय ६० प्रति सैकड़े तेल खरीदा।

खली—१९१३—१४ में बम्बईके बन्दरगाहसे खलीका चालान केवल जर्मनी और ब्रिटन गया था। जर्मनीमें माल जाना जबसे रुका लंकाद्वीप ८५ प्रति सैकड़े खली मंगाने लगा।

हिन्दुस्तानके अतिरिक्त मलायाद्वीप, अफ्रीका और अमरीका में मूंगफलीकी खेती होती है। इसे भूनकर खाते भी हैं।

दिमागमें यह अच्छी ताकत लाती है। पेरनेके पहले इसका छिलका उतार लेते हैं। तब इसकी भूमी साफ करते हैं और इसे पेरते हैं। खलीको पीस कर गरम मशीनमें दबाते हैं। इससे जो तेल निकलता है वह घटिया होता है। कितने लोग जैतूनके तेलकी जगह इनका इस्तेमाल करते हैं।

सरसों

सरसोंकी खेती दक्षिण प्रदेशमें बहुत कम होती है। इसका प्रधान क्षेत्र उत्तरी प्रदेश है। अन्य अनाजोंके साथ जो सरसों उत्पन्न होती है उसके अतिरिक्त ६,०००,००० एकड भूमिमें सरसोंकी खेती होती है। इसमें सयुक्त प्रान्तका ४० प्रति सैकडे, बङ्गालका २२ प्रति सैकडे, पञ्जाबका १६ प्रति सैकडे और बिहार तथा उडीसाका १० प्रति सैकडे अंश है। सरसोंकी खेती रबी-की फसलके साथ होती है। अक्टूबर और नवम्बरमें फसल बोयी जाती है। औसत निकालनेसे मालूम होता है कि सालभरमें १,२६०,००० टन सरसों पैदा होती है। जितने खेतोंमें सरसों बोई जाती हैं उसका पैदावारके साथ मिलान करनेसे प्रगट होता है कि सरसोंकी पैदावार ६ मन प्रति एकडसे अधिक नहीं होती। पर निखालिस खेती करनेपर फसल अच्छी होती है। सरसोंका प्रधान बाजार सयुक्तप्रान्तमें कानपुर और पञ्जाबमें फिरोजपुर हैं। यहांके व्यापारी देहातोंसे माल खरीदकर बम्बई और कराचीके बन्दरगाहोंसे चालान करते हैं।

इस व्यवसायपर भी लडाईका असर बहुत पडा है। १९१३-

मनतक तेल निकलता है। तेलका औसत चालान ४०,०० गैलन है। प्रायः कुल माल ब्रिटिश उपनिवेशोंमें जाता है। मारि शस (नेटाल) के भारतीय कुलियोंके लिये तेलका चालान यहींसे जाता है। १६१५-१६में ४६५,७३५ गैलन सरसोंके तेलका चाला हुआ था। उसमेंसे ३५२,६६६ केवल इन दोनों उपनिवेशोंमें गया फीजी और ब्रिटिश गाइनाके भारतीय कुलियोंके लिये भी तेलक चालान यहीसे जाता है।

तेलका चालान प्रधानतया कराची और कलकत्तासे होता है

खली—सरसोंको खली चौपायोंको खिलाई जाती है। इस का अधिक प्रयोग खादमें ही होता है। खलीके प्रधान ग्राहक ब्रिटन, जापान और प्राय द्वीप हैं।

इस देशके अतिरिक्त रूस, रोमानिया, फ्रास, चीन, जापान अर्जेण्टाइन प्रजातन्त्र तथा डच ईस्ट इण्डीजमें सरसोंकी खेती होती है।

बर्रे या कुसुम

बर्रेके फूलसे कुसुम रङ्ग निकाला जाता है। जर्मनोसे रग आनेके पहले कुसुम रग इसीके फूलसे तैयार किया जाता था। दाक्खनमें दो तरहकी बर्रे होती है। एक तो केवल फूलके लिये बोई जाती है और दूसरी तेलहनके लिये। फूलवाली बर्रेको कुसुम कहते हैं। बम्बई प्रान्तमें इसकी अधिक खेती होती है। अहमदनगर, पूना, सितारा और बीजापुर दक्खिन बर्रेकी खेतीके प्रधान खेत हैं। मध्य प्रान्तमें भी कुसुमकी खेती अच्छी होती है।

जर्मनीसे रगके चालानमे कुसुमकी खेतीपर धक्का पहुचा और बोआई घट गई।

बर्रेसे दो तरहसे तेल तैयार किया जाता है। पहले, बीजको दरते हैं तब भूसी अलग करके बीजीको कोल्हूमें पेरते हैं। दूसरे बीजको साफ किये बिना ही पेर देते हैं और फिर तेलको निथारते हैं। ३५ प्रति सैकडे तेल निकलता है। कोल्हूसे बीजीका तेल साफ होता है। घीके स्थानपर अथवा घीमें मेलकर इसका प्रयोग होता है। चिराग जलानेके काममें भी यह आता है। खडे बीजका तेल रोगन बनानेके काममें आता है। चमडेको मुलायम करनेमें यह बडा काम देता है। बर्रेकी खली चिडियोंके खिलानेके काममें आती है।

तिल या तिल्ली

तिलकी खेती भारतमें बहुतायतसे होती है। दक्षिण प्रदेशमें तिलकी खेती सबसे अधिक होती है। उत्तरी प्रदेशोंमें सयुक्तप्रान्तके अतिरिक्त सभी जगह तिलकी निराालिस खेती होती है। थोडी बहुत खेती भारतके प्रत्येक जिलेमें होती है, पर इसका प्रधान क्षेत्र बम्बई, बर्मा, मद्रास और मध्यप्रान्त है। बम्बई और बर्मा मिलाकर १,०००,००० एकड तथा मद्रास और मध्यप्रान्त मिलाकर ८०००० एकड भूमिमें खेती होतो है।

नीचे जो तालिका दी जाती है उससे प्रगट होगा कि भारतमें कितनी एकड भूमिमें तिलकी खेती होती है।

प्रदेश	१९१३-१४	१९१८-१९	१९२०-२१	१९२१-२२	१९२२-२३
बर्मा	(क)	(क)	(क)	१,०३४,०००	८६५,०००
मध्य प्रदेश तथा बरार	८६५,७००	४१७०००	७०९०००	७७३,०००	५८०,०००
बम्बई	८५१२००	२१७०००	६४६०००	६४३०००	५४७,०००
मद्रास	८०९३००	६८१०००	७५३०००	७७८,०००	७२७,०००
हैदराबाद (दक्खिन)	६१२,०००	५१२,०००	५२००००	५५४०००	५३०,०००
संयुक्तप्रान्त	३७८४०० ८५००००	२०७०० ९२५०००	२७६००० ८७५०००	२५०,००० ९७५०००	१९८,००० ८७५,०००
बंगाल	२४१,०००	२१८०००	१९९०००	२०८०००	१५६,०००
बिहार-उड़ीसा	२११७००	१९४०००	१६७०००	१९३०००	१९२,०००
पंजाब	१४४१००	५१०००	१०८०००	१५६०००	१४७०००
बड़ोदा	(ख)	२६०००	७७०००	७१,०००	७६०००
राजपूताना	(क)	४२०००	५६०००	५४,०००	५४,०००
अन्य प्रान्त	१०४६००	१५०००	४६०००	५३,०००	४६०००

१९१८-१९ में ३,५० १,००० एकड भूमिमें तिल बोया गया था और २,५८,००० टन तिल पैदा हुआ था। जिन प्रान्तोंके नाम ऊपरकी तालिकामें दिये गये हैं उनके अतिरिक्त अन्य प्रान्तोंमें कुल मिलाकर १२३२,००० भूमिमें तिल बोया जाता है और ६०,००० टन पैदावार होती है।

तिलकी खेती खरीफकी फसलके साथ होती है। जुलाईमें फसल बोई जाती है और सितम्बरमें काटनेके लिये तैयार हो जाती है। १९१३-१४ में यहासे ११०,२०० टन तिलका चालान विदेशोंमे हुआ। इससे अधिक भेजनेवाला देश केवल चीन था। चीनने उसी साल १२१,००० टन तिलका चालान किया था।

ससारमें जितनी तिलकी खपत है उसका आधा केवल ब्रिटन लेता है। अपनी आवश्यकताकी आधी पूर्त्ति ब्रिटन भारतसे करता है। १८७० से १८८५ तक भारतसे तिलका ७१ से ८० फीसदी तक चालान फ्रास जाता था, पर जबसे मार्सलीजके बाजारमें मूगफलीकी खपत होने लगी तिलका व्यापार घटने लगा।

नोचेकी तालिकासे प्रगट होता है कि किस सन्में किस देशमे कितना माल यहासे गया।

देश	१९१३–१४ में	१९१८–१९	१९२०–२१	१९२१–२२	१९२२–२३
	टन्स	टन्स	टन्स	टन्स	टन्स
बेलजियम	३३८००		१५५०	१९७५	२४२५
फ्रांस	२२२००	१५०	७०३	२७९१	९४१२
आस्ट्रिया	१९,०००	.	७३८	८५५०	४६६०
जर्मनी	१६०००	.	.	२२८	३४१६
इटली	१४०००		५६५२	१०६८७	११०८३
लंकाद्वीप	१५१७	६१३	८२९	१४२२	१६७२
मिस्र	१०४२	६७	.	५३	१९८
अदन	८७९	२५६	६११	३१५	११४
ब्रिटन		. . ..	६	७६	४९
अन्य देश	३५६३	१३०८	१७४३	५००१	३३८७

बम्बई, कराची, कोकोनाड्डा, त्रिम्लीपट्टम और विजगापट्टमके बन्दरगाहोंसे माल रवाना किया जाता है। बम्बई बन्दरगाहसे माल सबसे अधिक जाता है। बर्मामें जितनी पैदावार होती है सब घरमे खप जाती है। इससे वर्मासे कुछ भी माल बाहर नहीं जाता।

तिलका तेल—जहांतक मालूम हुआ है १०० मन तिलमें ४० मन तेल निकलता है। तिलसे तेल कोल्हूमें पेरकर निकाला जाता है, पर तेल साफ निकलता है। शरीरमें लगानेके लिये तेलका अधिक भाग देशमें ही रह जाता है। साधारणत २००, ००० गेलन तेल प्रति वर्ष विदेश भेजा जाता है। पर इस रकममें घटती बढती भी हुआ करती है।

बम्बईसे चालान अदन, मास्कट, मारिशस और पूर्वीय अफ्रीकामे जाता है। इससे युद्धका यहाके व्यापारपर कुछ असर नहीं पडता। कराचीसे अदन और मास्कट माल जाता है।

मद्रासके कोरिन बन्दरगाहसे लङ्काद्वीप माल जाता है। नेगापट्टम और कुद्दालोरसे प्राय द्वीपोंको जाता है।

खली—लङ्का द्वीपके अतिरिक्त खलीकी खपत और किसी भी विदेशी बाजारमें नहीं है। लङ्काद्वीपमें तिलकी खली खादके काममें लायी जाती है। भारतमें इसका प्रयोग गिरीकी खलीमें मिलाकर पशुओंके खिलानेमें किया जाता है। इस देशके लोग खलीका प्रयोग खादके लिये जानते ही नहीं।

काला तिल

काले तिलकी खेती बहुत कम होती है। इसका प्रधान कारण यह है कि इसकी पैदावार प्रति एकड सफेद तिलसे कहीं कम होती है। छोटा नागपुर, मध्यप्रान्त, दक्खिन तथा उत्तर-पश्चिमी मद्रास इसके प्रधान क्षेत्र हैं। एक एकड भूमिमें ३ से ४ मनतक तिल पैदा होता है। ३५ प्रति सैकडे तैल इसमेंसे निकलता है। काले तिलका खर्च देशमें ही अधिक है। इसे खाते भी हैं और तेल भी निकालते हैं।

काला तिलकी रफ्तनी दिन प्रति दिन घटती जा रही है। १९११-१२ में १०,००० टन माल बाहर भेजा गया था। १९१२-१३ में यह घटकर ७,००० हो गया। १९१३-१४ में भी चालान घटा। १९१५-१६ में तो कुल रफ्तनी ५८६ रह गई। काला तिलका सबसे बडा ग्राहक किसी जमानेमें ब्रिटन रहा, पर यूरोपीय युद्धके ठीक पहले जर्मनी और आस्ट्रिया हंगरीने अधिक माल खरीदना आरम्भ कर दिया था। फ्रांसमें भी काफी माल जाता था, पर १९१५ से फ्रांसने काला तिल खरीदना एकदम बंद कर दिया।

काला तिलका चालान प्राय बम्बई, बिम्बलीपट्टम और विजगापट्टमके बन्दरगाहोंसे होता है।

बिनौल

भारतमें बिनौल सबसे अधिक पैदा होता है। संसारभरमें कुल ११,०००,००० टन बिनौल पैदा होता है। उसमें

२,०००,०००केवल भारतवर्षमें पैदा होता है। पर अभीतक इसके प्रयोगका कोई उत्तम वैज्ञानिक तरीका नहीं निकाला गया है।

चालान—बिनौलका चालान अस्थिर है। कभी कम होता है—कभी अधिक। अगर अकाल पड़ गया तो इसका प्रयोग चौपायोंके चारामें करते हैं। सबसे अच्छे सालमें भी अभीतक पैदावारके १५ सैकड़ासे अधिक चालान नहीं हुआ है। २००,००० टन प्रतिवर्ष बेहन या बीजके लिये चाहिये। प्राय उतना ही पञ्जाबमें चौपायोंको खिला दिया जाता है। इससे जो कुछ बचता है उसका बहुतसा अंश तेल तथा खलीके लिये पेर दिया जाता है। फिर भी ३००,००० टनसे कमका चालान नहीं होना चाहिये। युद्धके पूर्व तीन वर्षोंकी औसत निकालनेसे यही रकम आती है। बिनौलका व्यापार उन्नतिशील व्यापार है। १६०० के पहले बिनौलका चालान एकदम नहीं होता था। उस सन्में मिस्रमें जमनोकी प्रतियोगिता तथा ज़ैतून और तीसीके तेलकी कमीके कारण बिनौलके प्रयोगकी जांच होने लगी। उसी समयसे बिनौलका व्यापार बढ़ा और १६१० ११ में ३००,००० टन माल बाहर गया। इसका प्रधान ग्राहक ब्रिटन है।

बिनौलके निर्यातके आंकड़ेसे विदित होता है कि १६१४ से बिनौलका व्यापार मन्दा रहा। इसके दो कारण हैं—एक तो जहाजोंकी कमी और दूसरे मालकी सस्ताई। बम्बई बन्दरगाहसे ६२ प्रति सैकड़े, कराचीसे ६ और मद्राससे डेढ़ प्रति सैकड़े माल बाहर जाता है।

विनौले कई प्रकारके होते हैं। बम्बई, दिल्ली, कानपूर और अमरीकन तो बम्बईके बन्दरगाहसे जाता है। कोमिला कलकत्ताके बन्दरगाहसे जाता है। रंगून बर्माके बन्दरगाहसे जाता है। दिल्ली, कानपूर, कोमिला और रंगून जातिका बिनौल-मध्यम समझा जाता है, क्योंकि इसमें खराब माल अधिक रहता है। बम्बईकी जातिके बिनौले और अमरीकन जातिके बिनौलेमें अधिक अन्तर नहीं है। अधिकतर चालान बम्बई जातिका होता है। करांचीसे दिल्ली, कानपूर अमरीकन जातिका बिनौला भेजा जाता है। हिन्दुस्तानके बिनौलेके ऊपर कपासके रेशोंके अतिरिक्त छिलका भी चढा रहता है। इस छिलकेके सहित बिनौला बेच दिया जाता है। इसीसे इसे सफेद जातिका बिनौल भी कहते हैं। भारतमें पेरनेसे केवल १० प्रति सैकडे तेल निकलता है पर विलायतमें उसी मालमेंसे १८ प्रति सैकडे तेल निकालते हैं।

तेल—अन्य तेलोंके मुकाबिले बिनौलके तेलका चालान बहुत ही कम होता है। १९१३-१४ में केवल २,५०७ गेलन तेल बाहर भेजा गया था। उस समयतक केवल बम्बई प्रान्त यह काम करता था। उसके बादसे बर्माने भी तेल पेरनेका काम आरम्भ किया है और बहुत माल बाहर भेजता है। अभीतक सारा तेल केवल ब्रिटन जाता था। हालमें ही आस्ट्रेलियाने भी खरीदना आरम्भ किया है।

खली—बिनौलेकी खलीकी मांग या खपत इस देशमें बिलकुल नहीं है। यहांके लोग इसे चारेके काममें लाना नहीं जानते, पर

बाहरकी माग दिनोंदिन बढ़ती जाती है। इससे आशा है कि यहां तेल पेरनेकी मिलें अधिकाधिक बैठाई जाकर खलीका उत्पादन बढ़ाया जायगा। बर्मामें बिनौल केवल एक प्रतिसैकड़े पैदा होता है, पर १९१३ १४ में १०,०००टन खली बाहर भेजी गई थी। उसमें केवल बर्माने ५०००टन दिया था। बिनौलेकी खलीका ग्राहक भी ब्रिटन है। प्राय. ९९ प्रति सैकड़े खली ब्रिटन चालान जाती है। बम्बई और बर्माके अतिरिक्त बिनौलेकी खलीका व्यापार अन्यत्र कहीं नहीं होता।

रेंडी

हिन्दुस्तानमें रेंडीकी खेती पुराने जमानेसे होती चली आ रही है, पर उन्नीसवी सदीके आरम्भतक दवाके लिये भी रेंडीके बीजको विदेशोंसे चालान मगाना पड़ता था। रेंडीका चालान हालमें ही होने लगा है। रेंडीकी खेती अलग नहीं होती। इसे कई फसलोंको साथ मिला कर बोते हैं। इससे यह लिखना कठिन है कि कितनी एकड़ भूमिमें इसकी खेती बोई जाती है। मद्रास, हैदराबाद, बम्बई और मध्य प्रदेशमें रेंडीकी खेती होती है।

रेंडी खरीफके साथ बोई जाती है। पर फसल मार्चसे तैयार होने लगती है। सूर्यकी तापसे जब फल चिनकने लगते हैं तब रेंडी तोड़कर धूपमें सुखाकर पीटी जाती है। पीटनेसे दाने और छिलके अलग अलग हो जाते हैं। सालमें २५०,०००से३००,००० टनतक रेंडी पैदा होती है। दो तरहकी रेंडी होती है छोटी और

बडी। दवाओंके काममें छोटी रेंडी आती है। बडी रेंडीका तेल जलानेके काममें आता है। छोटी रेंडीमेंसे सबसे अधिक तेल निकलता है।

हिन्दुस्तानके हाथमें रेंडीके व्यापारका अबतक एकाधिपत्य है, पर हालमें जावा, इण्डोचीन और मारिशसमें रेंडीकी खेतीकी तैयारी की जाने लगी है। १८७७ ७८ में २५०टन रेंडी बाहर भेजी गई थी, पर दूसरे ही वर्ष ११, ८८० टन रेंडी बाहर गई। १९१३-१४ में १३४,८८८ टन रेंडी भेजी गई। युद्धके समयमें जहाजोंकी कमी और तेल निकालकर बेचनेके लाभने लोगोंका ध्यान रेंडीके तेल पेरनेकी ओर आकृष्ट किया है। इससे रेंडीका चालान धीरे धीरे कम होता जा रहा है। युद्ध के पहले भारतका सबसे बड़ा ग्राहक ब्रिटन था। प्राय आधा माल ब्रिटन जाता है। इसमेंसे ८० प्रति सैकडे तो पेरनेके लिये चला जाता है और शेष रूस और अमेरिकाके हाथ बेच दिया जाता है।

नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया गया है कि रेंडीका चालान किन किन देशोंमें कितनी रुपयामें गया।

देश	१९१३-१४ टनमें	१९१८-१९	१९१९-२०	१९२०-२१	१९२१-२२	१९२२-२३
ब्रिटन	५५६७५	६२८३८	२८४०	७०४२	११६२८	१६१४९
फ्रान्स	२०९८९	१६७३५	१०२१	११७८	७५९६	१५६३९
अमरीका	२०२७९		८९०	३७९०	२०६१५	३३०२४
बेलजियम	१४८२२		४१०	७०१	४४०१	८२१४
इटली	११७८८	११२७	३२०३	१९६८	२६५०	८०१०
जर्मनी	९६७१				५०	४००
स्पेन	९७१			२००	१४००	१७१६
आस्ट्रेलिया	५८९	१२७८		५९०	३०२	३२१
अन्य देश	१	११	८७	६२	१५६	१००
कुल जोड	३४४७८९	८१९८९	८४६४	१५५३१	४८७९८	८३६१३

८० प्रति सैकड़ा तेल कलकत्तेसे, ५ कोकोनादासे और १
बम्बईसे चालान किया जाता है।

ब्रिटनमें १९११-१३ तक ३५०,००० गैलन रेंडीका तेल गया।
१९१४ में १९६००० और १९१५ में १७७,००० गै० तेल गया। इस
बाद ही हवाई जहाजोंमें प्रयोग करनेके लिये रेंडीके तेलकी मा
बढ़ गई और १९१६ में २२०,०००गैलन तेल भेजा गया। रेंडी
४० प्रति सैकड़ा तेल निकलता है।

खली—खलीका उपयोग खादके तौरपर अधिक होता है
चाय और ईख या गन्नेके खेतोंमें इसकी खाद बहुत ही उपयोगी
और लाभदायक होती है। रेंडीकी खलीमें एक तरहका जह
होता है इससे इसका प्रयोग चाराके लिये नहीं हो सकता
युद्धके पहले ६००० टन खली बाहर भेजी जाती थी। खलीक
चालान अधिकतर मद्रास, टूटीकोरिन और कोकोनादा बन्दर
गाहोंसे होता है। बाहर जो खली भेजी जाती है इसका ९५ प्रति
सैकड़े भाग केवल लङ्काद्वीपमें जाता है।

नारियलकी गिरी

विगत यूरोपीय महायुद्धके एक वर्ष पहले ७ लाख पौंडक
नारियलका सामान संसारके हाटमें बिका था। नारियलके फलसे
चार तरहका सामान व्यवसायके लिये मिलता है (१) गिरी (२
गिरीका तेल (३) खोपड़ीका तेल (४) नारियलके जटाकी रस्सी
नारियलका पेड़ उसी भूमिमें लग सकता है जहां जमीनकी मिट्टी ब
हो,पानी खूब बरसता हो,पानी इकट्ठा न हो जाता हो और तूफान

न उठती हो। न अधिक गर्मी पड़ती हो और न अति ठण्ढक। समुद्रके निकटकी भूमि नारियलके लिये सबसे उपयुक्त होती है। भारतमें काठियावाड, कनार, रत्नागिरि, दक्षिणी मलावार, दक्षिणी कनारा, गोदावरीका डेल्टा, ट्रावनकोर, कोचीन, गङ्गा और ब्रह्मपुत्रकी तराई,इरावदी नदीका डेल्टा नारियलकी खेतीके लिये उत्तम भूमि है। यह निश्चय रूपसे नहीं कहा जा सकता कि नारियलकी खेती कितनी एकड़ भूमिमें होती है,पर पैदावारसे अनुमान किया जा सकता है कि इस काममें अधिक खेत लगे हैं।

एक पेडसे साधारणत ५० से ७५ तक फल निकलता है। मलावारमें एक एकड भूमिमें ४ से ५ हजारतक फल निकलता है। इतने नारियलमेंसे एक टन गिरी निकलती है। मद्रास प्रान्तमें ८००,००० एकड़ भूमिमें नारियलकी खेतीका अनुमान किया जाता है। इसमेंसे ४००,००० एकड भूमि केवल मलावारमें है,जिसमेंसे ८,०००लाख नारियल प्रति वर्ष निकलता है। युद्धके एक वर्ष पूर्व इतने नारियलका मूल्य ३० लाख पौंड था। नारियलकी खेती किसी एक व्यक्तिके हाथमें नहीं है। हर एक किसानके खेतमें दस पाच पेड होंगे। कारमण्डल किनारा तथा बगाल और बम्बईमें जो नारियल पैदा होता है वह तो देशमें खच हो जाता है। अनुमान किया जाता है कि ४,००० लाख नारियलकी खपत प्रति वर्ष भारतमें है। कच्चे नारियलका जल पीया जाता है। यह बड़ा ही ठण्डा और शीतल होता है।

थकावट दूर कर तबीयतको ताजा कर देता है। ' हैजेकी बीमा रोमें पिशाब उतारनेके लिए यह रामबाण दवा है। गिरीका प्र योग बतौर मेवाके होता है।

नारियलसे गिरी निकलती है। युद्धके पहले इसका जो मूल्य था वह इस समय बढकर दूना हो गया है यद्यपि गिरी उतार ने और तैयार करनेका तरीका अब सुविधाजनक हो गया है। नये आविष्कारोंके प्रभावसे खर्च भी कम हो गया है मलाबार प्रदेशमें बालू या फर्शपर सुखाकर गिरी तैयार क जाती है।

गिरीका व्यापार ससारभरका बड़ा बढा है। भारतसे ज गिरी जाती है उसे कम नहीं कह सकते, फिर भी ससारके गिरी का यह सातवा हिस्सा है। लकाद्वीपसे कहीं अधिक गिरीक चालान जाता है।

१९०८-०९ से मलाबारसे गिरीका चालान बढने लगा १९१३-१४में ७८२,००० हण्डर माल बाहर गया। पर इससे तेलके व्यापारपर कडा धक्का पहुचा। तेलका व्यापार घट गया इससे इस बढ़तीसे भारतको लेशमात्रभी लाभ नहीं हुआ है।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि १९०८—९ के बादसे नारियलकी गिरी और नारियलके तेलका व्यापार कैसा रहा।

सन्	(गिरी टनमें)	(तेल गैलनमें)
१९१३—१४	३६११९	१०६१४७७
१९१४—१५	३१८४६	१८२५५३६
१९१५—१६	१५६७८	२०४७८६४
१९१६—१७	२६६०६	२०५१३१४
१९१७—१८	५८७३	३१७३६०१
१९१८—१९	४५१	७१६८४०७
१९१९—२०	१०६४१	४७५३७८०
१९२०—२१	२७३६	१८४६०४१
१९२१—२२	२६७३	६०२१३६
१९२२—२३	१३६४६	७३४२४३

युद्धके पाच वर्ष पहले जर्मनीमें ७५ प्रति सैकडे गिरी और ३३ प्रति सैकडे तेल जाता था। जर्मनी गिरीसे तेल निकाल कर बाहर भेजता था। केवल १९१३ में उसने ३०,२३६ टन तेल ब्रिटनके हाथ बेचा था। युद्ध आरम्भ होते ही जर्मनीसे व्यापार रुक गया। इसका परिणाम यह हुआ कि व्यापार मन्दा पड गया, पर फ्रांसके साथ व्यापार होनेसे नुकसान जाता रहा। मलाबारकी गिरीका ब्रिटन सबसे बडा ग्राहक है।

गिरीके व्यापारके सम्बन्धमें दो तीन बातें जान लेना अत्यन्त आवश्यक है —

(१) जहाजका भाडा माल उतरनेके समय जो वजन रहता है उसपर लगता है। (२) प्राय कुल माल आमदनी बेच दिया

जाता है और कन्ट्राकृका लेवा वेचो हुआ करती है। कण्ट्रा-कृकी लेवा वेचीका बाजार लण्डन है। इससे हम्बर्गके व्यापारियोंको इतना अधिक माल लेनेपर भी लण्डनका मुंह जोहना पडता है।

मलावार गिरीकी माग सबसे अधिक है। इसके कई कारण हैं। (१) इसमेंसे तेल सबसे अधिक निकलता है। (२) यह पूरी तरहसे धूपमें सुखाया रहता है, नहीं तो और जगहोंकी गिरी अप्राकृतिक साधनों द्वारा सुखाई जाती है। इससे गिरीका रंग बदल जाता है।

तेल—गिरीमें सबसे ज्यादा तेल निकलता है। यह बदनमें लगानेके और खानेके काममें तो आता ही है,साबुन बनानेके काममें भी बहुतायतसे आता है। मलाबारकी गिरोसे जो तेल निकलता है वह लङ्का, फिलिपाइन और पश्चिमी अफ्रीकाकी गिरीसे कहीं अच्छा होता है। मिट्टीके तेलके प्रचारके पहले गिरीके तेलसे रोशनी भी की जाती थी। युद्धके पहले भारतमें गिरीका तेल अधिकतर मलावारमें ही तैयार किया जाता था और चालान जाता था। देहाती तरीकेसे कोल्हूमें पेरकर तेल उतारे जानेपर भी ससारके बाजारमें लङ्का आदि प्रदेशोंके तेलसे अधिक माग थी और १५ से २० रुपया सैकडे तक अधिक दाम मिलता था। इसका प्रधान कारण यही था कि मलावारकी गिरी सूर्यकी रोशनीमें प्राकृतिक तरीकेसे सुखाई जाती है। इससे इसके तेलका रङ्ग नहीं बदलता। इधर कोचीन, कालीकट और अलप्पीमें तेल पेरनेकी

मिलें खुली हैं। गिरीको गरम करनेसे तेल अधिक निकलता है। पर इसका रङ्ग अच्छा नहीं होता। कोचीनमें जो तेल पैदा होता है उसे साफ कर देनेसे पानीकासा हो जाता है। फिर उसे पहचानना कठिन हो जाता है।

१९१८-१९में ब्रिटनमें बहुत ज्यादा माल गया। इसका प्रधान कारण नाकाबन्दी है।

जर्मनी सदासे गिरीका व्यापारी रहा है। तेल वह हमेशा कम लेता था। इसका प्रधान कारण यह है कि जर्मनीको जहाजका भाड़ा अधिक मिल जाता था और खली मिल जाती थी। साबुनके कारखानोंकी बढ़तीके कारण पाण्डीचरीमें तेल पेरनेका काम अधिक होने लगा है।

१९१३-१४ तक तेलके चालानका अधिक कारबार कोचीनके बन्दरगाहसे होता रहा। उस साल वहांसे १,०६१४७७ गैलन तेल गया था। उसमेंसे १,०५६,५२२ गैलन केरल कोचीनसे गया था। युद्धसे एक फल यह हुआ कि कलकत्तासे भी चालान होने लगा। इसका प्रधान कारण कलकत्ताके आसपास तेल पेरनेकी मिलोंका खुलना है। कलकत्ताकी मिलोंमें लङ्काकी गिरी पेरी जाती है। १९१५, १६, १९१६ १७में कलकत्तासे २३,००० गैलन तेल चालान, गया,पर १९१७ १८में यह बढ़कर ४७०,००० गैलन हो गया। तथा १९१८ १९में २,५००,००० गैलन। यह निश्चयरूपसे नहीं कहा जा सकता कि कलकत्ताके हाथमें तेलका यह व्यापार इसी रूपमें रह जायगा। कोलम्बो बन्दरगाहमें जहाजोंकी कमीके कारण

लङ्काद्वीपको लाचार होकर कलकत्ता बन्दरगाहकी शरण लेनी पड़ती है। नारियलके तेलके व्यापारने कलकत्तेमें आशातीत उन्नति की है। युद्धके पहले बङ्गालमें निजी खर्चको पूरा करनेके लिये भी काफी तेल नहीं तैयार होता था। हर साल कुछ न कुछ तेल बाहरसे मगाना पड़ता था। १९०६-०७ का मद्य मिलता है। उससे पता लगता है कि बङ्गालने ७३१ २८१ गैलन तेल बाहरसे खरीदा।

युद्धके पूर्व पांच वर्षोंमें गिरीके तेलका व्यापार हिन्दुस्तानके सभी बन्दरगाहोंमें शिथिल हो गया पर साथ ही गिरीका व्यापार क्रमश• बढ़ता गया। १९१०-११ में २,०००,००० गैलन तेल बाहर गया था। पर १९१३-१४ में वह घटकर १०९१,००० गैलन हो गया। उन्हीं सनोंमें गिरीका चालान क्रमशः २२,५०० और ३२००० टन हुआ था। युद्ध छिड़ जानेके कारण १९१४ १५ से तेलका व्यापार फिर धीरे धीरे बढ़ने लगा।

खली—नारियलकी खलीमें थोड़ा गोंद मिलाकर उससे चौपायोंके लिये चारा खेतोंके लिये खाद तैयार किया जाता है। खली की खपत देशमें ही है, युद्धके पहले खलीका चालान जर्मनी जाता था। उस समयतक ब्रिटनके लोग नारियलकी खलीका प्रयोग चाराके लिये नहीं करना जानते थे। पर युद्धके समयसे खलीका चालान केवल ब्रिटन जाता है।

खलीका चालान मद्रास प्रान्तके कोचीन और कालीकट बन्दरगाहसे होता है।

कोयना

महुएके पेड़से जो फल निकलता है उसके बीज—गुठली—को कोयना कहते हैं। मई और जूनके महीनेमें कोयनेकी फसल तैयार होती है। १९०७-०८ और १९१२-१३ के बीचमें कोयनेका चालान २७,००० टनकी औसतमें होता रहा। १९१३-१४ में ३३,००० टन भेजा गया। इसमेंसे केवल जर्मनीमें ८५ प्रति सैकड़े गया था। शेष बेलजियम गया। कोयनेका तेल साबुन और मोम बत्ती बनानेके काममें आता है।

इसके बाद कोयनेका व्यापार बराबर घटता गया। १९१५-१६ और १९१६-१७ में ४,२००टनके हिसाबसे माल गया। इसके बाद चालान एकदम बन्द हो गया। चालान बम्बईसे जाता था। प्रधान ग्राहक हम्बर्ग और अण्टीवर्प थे। थोड़ा बहुत चालान मद्रास और कलकत्तासे भी जाता था।

इसके फूलको महुआ कहते हैं। महुआको सड़ाकर शराब बनाते हैं। देहातोंमें इसे खाते भी हैं। इसे सुखाकर रख लेते हैं और चौपायोंको—खासकर ब्यायी गौको खिलाते हैं।

कोयनेके तेलको घीमें मिलाकर बेचते हैं। घीके स्थानपर इसका अलग प्रयोग भी होता है।

पोस्ता दाना और अफीम

पोस्तेकी खेती केवलमात्र अफीमके लिये की जाती है। पोस्तेकी खेती अधिकांश संयुक्तप्रान्तमें होती है। अफीमके अतिरिक्त ५ से ६ मनतक प्रति एकड़ पोस्ता पैदा होता

है। अगर पोस्तेकी खेती कम न कर दी गयी होती
पहले जितनी एकड भूमिमें पोस्ता बोया जाता था उस
इस हिसाबसे ३७,८०० टन पोस्ता पैदा होना चाहिये
पोस्तेकी तीन जात होती हैं। सफेद पोस्ता, स्याह पोस्त
और लाल पोस्ता। स्याह और लाल पोस्ता बहुत ही क
देखनेमें आता है। रब्बी फसलके साथ पोस्तेकी खेती होती है
जाडेभर उसमेंसे अफीम (कच्ची) काछी जाती है और मार्च अ
आते ढोंढ (फल) पक कर दाना तैयार हो जाता है। पोस्ते
दाना खाया जाता है और उससे तेल भी निकाला जाता है
पोस्तेकी खली गरीबोंके भोजनका काम देती है।

१९११ १२ से पोस्तेकी रपतनी धीरे धीरे घटने लगी है
इस साल केवल ३४,६०० टन पोस्ता बाहर भेजा गया था
पहले वर्षोंमें जितना पोस्ता भेजा गया था उसका यह
प्रति सैकडा था। युद्धके पहले पोस्तेके दानेका प्रधान ग्राह
फ्रास था। फ्रासमें पोस्तेके दानेसे तेल निकाला जाता है
यह तेल रंगोंमें लगाया जाता है और वार्निशमें डाला जा
है। इससे चमक बढती है। फ्रांससे जो कुछ बचता था व
जर्मनी और बेलजियम भेजा जाता था। अन्य अन्नोंकी भांति यु
द्धका प्रभाव इस अन्नपर भी पडा और युद्धके दिनोंमें व्याप
मन्दा पड गया। दानेमेंसे ३० प्रति सैकडे तेल निकलता है
जिन ढोंढोंमेंसे अफीम काछ ली जाती है अथवा जो अफीम क
छनेके लिये छोड दिये जाते हैं उनमें कम दाने ठहरते हैं। यहा

पोस्तेके तेलका चालान कितना होता है इसके लिये कोई अङ्क प्राप्य नहीं है। पोस्तेके दानेका चालान बम्बई और कलकत्तेके बन्दरगाहोंसे होता है।

अफीम—पोस्तेके ढोंढसे अफीम निकलती है। इसे ढोंढका रस कहना चाहिये। कच्चे ढोंढको सूईकी तरह एक पतले औजा-रसे चारों ओर चीर देते हैं। इससे रस निकल २कर ढोढके चारों ओर जमने लगता है। तीसरे या चौथे दिन किसान छुरी या सुतुहीसे इसे काछकर बटोर लेता है। इसी तरह जाडेभर कछाई होती है। अधिकसे अधिक चार कछाईमें सारा रस निकल आता है। जब सब अफीम काछकर इकट्ठी कर ली जाती है तब इसे पकाकर साफ करते हैं। इसे सरकारी एजेण्ट किसानोंके यहासे लाकर खरीद ले जाता है। पोस्तेकी खेतीके लिये लाइसेन्स लेना पड-ता है। बिना इसके पोस्तेकी खेती कोई नहीं कर सकता। जितनी अफीम निकलती है उसे सरकारी खजानेमें जमा कर देना पडता है। उसमेंसे रत्तीभर भी किसीको रखनेका अधिकार नहीं है। खेतीके पहले ही किसानोंको पेशगी रकम सरकारी खज़ानेसे देकर उनसे पोस्तेकी खेती कराई जाती है।

पोस्तेकी खेतीके अनुसार पहले दो तरहकी अफीम बाजारमे चलती थी। सयुक्तप्रान्त और बिहारकी अफीमका चालान बङ्गालकी अफीमके नामसे होता था और देशी राज्योंकी विशेष कर इन्दोर, ग्वालियर, भोपाल, धार, रतलाम, मेवार और कोटाकी अफीमका चालान मालवाकी अफीमके नामसे होता था।

मालवाकी अफीम—मालवामें किसानोंसे महाजन और महाजनसे बड़े बड़े व्यापारी अफीम खरीदते हैं। १२—१२ औंसके गोले बनाकर सन्दूकोंमें बन्द किये जाते थे और चालान किये जाते थे। चालानका उत्तम मास सितम्बर समझा जाता था। कितनी एकड़ भूमिमें पोस्ता बोया जाता था इसका कोई अङ्क नहीं रखा गया है। सरकार किसी किस्मका अधिकारी भी नहीं रखती थी। मालवा अफीमका चालान अधिकतर चीनमें जाता है। बिना ब्रिटिश राज्यसे होकर निकले माल समुद्रके किनारे तक पहुच नहीं सकता। इसलिये बम्बई बन्दरगाहतक माल ले जानेके लिये ब्रिटिश सरकारसे पास लेना पड़ता था और महसूल देना पड़ता था। इसके लिये अफीमका मासिक नीलाम होता था और जिसकी बोली (डाक) सबसे ऊपर होती थी उसे महसूलका रुपया पेशगी जमा कर देना पड़ता था। चीनके अलावा कुछ पेटी अफीम जजीबार भी जाती थी। १९१२ तक यह महसूल प्रति पेटी ४० पौंड था। इसके बाद यह बढाकर ८० पौंड कर दिया गया। आखिरी नीलाम १९१२ की जनवरीमें हुआ था।

बङ्गाल अफीम—ब्रिटिश भारतमें बिना लाइसेंस लिये पोस्ते की खेती नहीं की जा सकती। किसान लोग सरकारी खजानेसे पेशगी रुपये (बिना सूद) लेकर खेती करते हैं और जितनी अफीम पैदा होती है सरकारी खजानेमें जमा कर देते हैं। बङ्गालकी अफीमका गोदाम गाजीपुरमें है। सयुक्तप्रान्त

भरकी अफीम वहीं जमा होती है। सरकारी निर्णके अनुसार किसानोंको दाम दिया जाता है। इस समय साढे सात रुपये सेरका निर्ख कटी हुई है। १७७३ में सरकारने अफीमके व्यवसायपर अपना एकाधिपत्य स्थापित किया और १८१७ में पोस्तेकी खेती रोक दी गई। सिवा कम्पनीके लिये और कोई पोस्तेकी खेती नहीं कर सकता था। बाहर चालान भेजनेकी शर्तपर जितनी अफीम पैदा होती थी सब नीलामपर चढा दी जाती थी।

सन्१९०७ई०में चीन सरकारसे समझौता हुआ और ब्रिटिश सरकारने धीरे धीरे अफीमकी रफ्तनी रोक देनेका वचन दिया। तबसे देशी राज्यों और ब्रिटिश भारतमें अफीमकी खेती कम कर दी गई और पटनाकी अफीमकी फैकृरी (कारखाना) बन्द कर दी गई। सन् १९०८में चीन सरकारसे फिर समझौता होकर निश्चय हुआ कि सालमें ५,१०० पेटीके हिसाबसे रफ्तनी कम की जाय। उस समय चीनमें ६७,००० पेटी माल जाता था। १९११ में फिर समझौता हुआ ,और रफ्तनीमें और भी कमी की जानेकी व्यवस्था हुई। १९१३ में चीनसे अफीमका व्यापार एकदम उठ गया, रफ्तनी बिलकुल बन्द कर दी गई। सम्प्रति ब्रिटिश भारतमें केवल संयुक्तप्रान्तमें थोड़ी बहुत पोस्तेकी खेती होती है और वहांसे जो अफीम पैदा होती है उसका नाम बनारसी अफीम है। १९०७ ८ में ४८८,७४८ एकड़ भूमिमें अफीमकी खेती हुई थी और ७१,३४० मन अफीम पैदा हुई थी। पर १९११ १२

में उसे घटाकर २००,६७२ कर दिया गया और अफीमकी पैदाइश केवल ३१,४७३ मन रह गई। १९१३-१४ में केवल १४५,००० एकड भूमिमें खेती हुई। १९२१—२२ में वह भी घटकर १३५,००० एकड हो गई।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि बनारसी अफीमके नीलाममें प्रति वर्ष सरकारको प्रति पेटी क्या औसत मिलता आया है और सरकारने दाम किस तरह बढाया है।

सन्	रुपया	आ०
१९०८	१३२२	०
१९०९	१३२८	०
१९१०	२०५३	८
१९११	२९२५	१२
१९१२	३२०८	८
१९१३	१९७३	१
१९१४	१५६२	०
१९१५	१५०२	८
१९१६	२३१७	२
१९१७	३२४९	६
१९१८	३२३४	
१९१९	४०२५	११
१९२०	५३४३	९
१९२१	४७८७	१५
१९२२	६५२६	११
१९२३	४७६२	१३

अफीम तैयार करनेमें ५००) रुपये प्रति पेटीके लगभग खर्च पड़ता है। सन् १६१४ की जुलाईमे १,५७८ रु० प्रति पेटी दाम वसूल हुआ था, पर युद्ध छिड़ जानेपर मूल्यमें बहुत घटा बढ़ी हुई। १६१४की अगस्तमें जो नीलाम हुआ उसमें केवल १२१२रु० पेटीके हिसाबसे मूल्य आया। इसके बाद यह तय हुआ कि १६००) रु० पेटीसे कमकी बोली न हो। इसका परिणाम यह हुआ कि सालके अन्तमें १३५२ पेटी अफीम बिना नीलाम हुई रह गई। इसके बाद मूल्य बढ़ा। १६१७ में १६१२ से भी अधिक पेटिया बिकीं। १६१८ में मूल्य साधारणत अच्छा रहा। १६१६ में मूल्य धीरे धीरे बढ़ने लगा।

इस समय प्राय ३०० पेटी बनारसकी अफीम प्रति मास नीलाम होती है। सरकारी बोली ४५००) की है, पर डाकपर चढ़नेसे फाटकिये कहीं ज्यादा दरपर नीलाम खरीदते हैं।

गाजीपुरके गोदाममें दो तरहकी अफीम बनाई जाती है।

(१) बाहर भेजनेके लिये और (२) देशके खर्चके लिये। बाहर भेजनेके लिये साढ़े तीन पौण्डकी टिकिया बनाई जाती है और एक पेटीमें ४० टिकिया आती है। देशमें खर्चके लिये अफीमकी एक एक सेरकी टिकिया बनाई जाती है और एक पेटीमें ६० टिकिया आती हैं।

हर महीनेमें अफीम नीलाम होती है। ३०० पेटिया प्रति नीलाममें बेची जाती हैं। इनमेंसे १५० जापान लेता है। शेष १५० पेटी फाटकेवाले लेकर सैईगन और सिगापुरके लिये

रखते हैं। इण्डोचीनमें ६ माही १५,०० पेटीका खर्च है। यह पेटियां सरकारी गोदामसे भेजी जाती हैं। डच ईस्टइण्डीज, प्रायद्वीप, हांगकांग तथा श्याममें भारत सरकार स्वयं अफीम भेजती है। इनसे स्थायी कण्ट्राक्ट है। इसके अलावा प्रतिमास १०० पेटीके करीब माल किसी लाइसंसवाले व्यापारीके नाम भी हांगकांग जाता है।

युद्धके समयसे भारत सरकारने ब्रिटनमें भी दवाके लिये अफीम भेजना आरम्भ कर दिया है। युद्धके पहले तुर्कीसे यह अफीम जाती थी। पर उसमें नशाकी मात्रा अधिक रहती थी। भारत सरकार चीनके साथ इस व्यापारको अपने हाथमें रखना चाहती है।

धनिया (Coriander)

धनिया भारतवर्षके प्राय सभी प्रान्तोंमें बोयी जाती है। इसकी खेतीका कोई निश्चित मौसिम नहीं है। प्राय सभी मौसिममें यह पैदा होती है, पर उसकी अधिकाश खेती रब्बीके साथ होती है। कहीं भी इसकी सिलसिलेवार खेती नही होती। इसलिये निश्चितरूपसे यह नही कहा जा सकता कि कितनी एकड भूमिमें धनियाकी खेती होती है। धनियासे तेल भी निकाला जाता है, पर इसकी अधिकाश खपत मसालेके रूपमें ही होती है।

यूरोपके पूर्वी देशोंमें जो धनिया पैदा होती है उसमे यहांकी

धनियासे अधिक तेल निकलता है । इससे यहाको धनियाकी माग बाहर बहुत ही कम है। अधिकतर माल केवल स्ट्रेटसे टिलमेंट और लङ्काद्वीपमें जाता है। कलकत्ता और बम्बईके बन्दरगाहोंसे भी माल चालान होता है, पर इसके व्यापारके प्रधान बन्दरगाह तूतीकोरिन और नेगापट्टम हैं। थोड़ा बहुत माल मारिशस द्वीप भी जाता है।

जीरा (Cummum Seed)

सफेद जीरा—जीरेकी खेती भारतके सभी प्रान्तोंमें होती है। पर अधिकतर यह संयुक्त प्रान्त और पंजाबमें पाया जाता है। जबलपुर, गुजरात और रतलाम इसके व्यवसायिक केन्द्र हैं। इसको दो जाति होती हैं—सफेद जीरा और स्याह जीरा। २०,००० हण्डर सफेद और २,००० हण्डर स्याह जीरा प्रतिवर्ष बाहर भेजा जाता है। लङ्काद्वीप, प्राय द्वीप, अरब, नया पूर्वी अफ्रिका इसके प्रधान ग्राहक हैं। कलकत्ता और बम्बईसे इसका चालान जाता है।

स्याह जीरा—इसकी खेती अधिकतर उत्तर पश्चिमी जिलोंमें काश्मीरसे संयुक्त प्रान्ततक होती है। सफेद जीरेसे इसकी महक और स्वाद अच्छा होता है।

अजवाइन

अजवाइनकी खेती भारतके सभी प्रान्तोंमें होती है। इसे रब्बी फसल कहते हैं। इसकी भी दो जाति होती है इन्दौर और कर्नूल। कर्नूलकी अजवाइन बढ़िया होती है। अजवाइनका

खच घरमें ही बहुत अधिक है। अजवाइनका अर्क और इसकी सत्त दवाके काममें आते हैं।

अजवाइनकी रफ्तनी अधिक नहीं है। रफ्तनीका अधिक अंश ६७ प्रति सैकडे बम्बईसे जाता है और शेष कलकत्तासे। मद्रासमे चालान गणनाके योग्य नहीं है। युद्धके पूर्व अजवाइनका चालान जर्मनी जाता था। इसके अतिरिक्त अमरीका, लङ्का और प्रायद्वीपमें भी माल जाता था। ब्रिटनमें माल बहुत थोडा जाता था, पर युद्धके बाद चौथाई माल ब्रिटन जाने लगा है।

अजवाइनके तेल बनानेमें तरछट नीचे जाकर जम जाती है। इसे थिमल कहते हैं। मध्यभारतमें यह बहुत बनता है। इसे अजवाइनका फूल कहते हैं। अजवाइनमें तेल बहुत कम रहता है। पर थिमल २०।३० प्रति सैकडे निकलता है। युद्धके पहले थिमल जर्मनीसे तैयार होकर आता था। वही इस समय यहा अच्छा तैयार हो रहा है। १९१८ और १९१९के जूनतक प्राय १०,५०० पौण्ड थिमल बाहर भेजा गया था। अमरीका और ब्रिटन इसके प्रधान ग्राहक हैं।

अर्क और तेल निकालनेके बाद जो बीज बच जाता है वह चाराके काममें आता है। पर यहा इसका प्रयोग अभी अच्छी तरह नहीं हो सका है।

चाय

हिन्दुस्तानमें चायकी खेती आसाम और उत्तरी बङ्गालके कुछ जिलोंमें होती है। यहा चायके योग्य भूमि बहुत ही कम है।

पैदावार और खेतके हिसाबसे आमदनी सदा अधिक होती है। पर इसका उतना महत्व नहीं है जितना कपास या पाटका है। जहांतक मालूम हो सका है चायके पेड आसाममें अनादि कालसे उगते चले आ रहे हैं, जंगली घासकी भांति ये उगते थे और सूखते थे, कोई इनकी परवा नहीं करता था।

चायकी खेती—चीनकी भूमि चायका प्रधान क्षेत्र है। १८ वीं सदीके अवसानकालमें चीनसे चायका व्यापारकर ईस्टइंडिया कम्पनीने अतिशय लाभ उठाया। सन् १७८७ ई०में २०,०००,००० पौंड चाय चीनसे कम्पनीके जहाजोंमें लदकर विदेशोंको गयी थी।

कम्पनीके कर्मचारियोंको सदा इस बातका भय रहता था कि किसी दिन चीन सरकारसे अनबन न हो जाय। चायका व्यापार सुरक्षित रखनेके लिये उन्होंने अपनी भूमिमें चायकी खेती कर लेनी चाही। आसामकी जंगली चायके पौधोंका उन्हें कुछ भी पता नहीं था। निदान हिन्दुस्तानमें चायकी खेतीका प्रयत्न किया गया। सन्१८३४ तक तो कुछ नहीं हो सका। इसी समय लार्ड विलियम बेन्टिक भारतके बड़े लाट होकर आये। उन्होंने यहां चायकी खेती करनेका विशेष रूपसे प्रयास किया, पर उन्होंने भी आसामकी चायकी उपेक्षा की और कुछ लोगोंको भेजकर चीनसे चाय और कुली यहां म गाया। इस तरह तीन बार कमीशन भेजा गया और बहुत सा रुपया बरबाद किया गया। सन् १८३८ में इस प्रयासका प्रथम फल लण्डन भेजा गया। तीन वर्ष बाद अर्थात् १८४१ ई०में कलकत्ते में पहले पहल चाय बेची

गई। सन् १८५२ तक चायका साधारण व्यापार होता रहा पर १८५२में लोगोंने देखा कि भारतकी चाय चीनकी चायसे अच्छी होती है। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय चायकी माग बेहद बढ़ी। १८८८ई०में कोई८०,०००००० पौंड चाय इङ्गलैंड गई। चायकी खेतीके लिये प्राइवेट कम्पनियां खुलने लगीं। आसाम चाय कम्पनीकी स्थापना सन् १८३६ में ही हो चुकी थी। सन्१८४०में उसने सिबसागरका कम्पनीका चायबागीचा खरीद लिया। सन् १८४० में दार्जिलिङ्गमें चाय बोई गई। उसी साल चिटगावमें भी परीक्षा की गई। सन् १८५५ में कचारमें चायकी खेती आरम्भ हुई। सन् १८६२ में तराईमें खेती की गई। आरम्भमें तो असफलता अवश्य मिली पर सन् १८५३ में इतनी चाय पैदा हुई कि सब बातें उलट गई। उत्तरी भारतमें भी चायकी खेतीका प्रयास किया गया पर विशेष लाभ नहीं हुआ। सयुक्तप्रान्तके देहरादुन, अलमोडा, कमाऊं और गढवाल जिलोंमें, विहारके छोटानागपुर जिलेमें तथा पञ्जाबके कागड़ावेली, मन्डी और सरमूर राज्य तथा शिमलाकी पहाड़ीमें थोडी बहुत चायकी खेती होती है।

हिन्दुस्तानकी विशेषता—(१) हिन्दुस्तानकी चाय चीनसे सस्ती पडती थी। (२) इङ्गलैण्डवालोंका ख्याल था कि चीनमें चायपत्ती हाथसे काटकर तैयार करते हैं, मशीनोंसे नहीं। (३) चीनकी चायको भारतीय तरीकेसे तैयार करनेपर उसमे स्वाद नहीं रह जाता।

पर इधर कुछ दिनोंसे चीनकी चायकी ओर लोगोंका फिर एक बार झुकाव हुआ है। लोगोंका कहना है कि इसमें जायका अच्छा होता है। इससे सम्भावना है कि चीनकी चायकी माग फिर एक बार बढ़े। हिन्दुस्तानकी चायकी माग बढ़नेका एक विशेष कारण यह भी था कि यह तेज होती है यद्यपि स्वास्थ्यके ख्यालसे इसमें हानिकर पदार्थ अनेक पाये जाते हैं।

इसके अतिरिक्त दक्षिणी भारतके विनाड और नीलगिरि, अनामती तथा ट्रावनकोरके पहाड़ोंपर चायकी खेती होती है। काफीकी माग घट जानेके कारण जिन खेतोंमें पहले कहवेकी खेती होती थी उनमें भी अब चायकी खेती होने लगी है।

बर्मामें चायकी खेती बहुत साधारण है। बर्माके पास ही करान स्टेट नामकी रियासत है। यहा भी थोड़ी बहुत चायकी खेती होती है। पर यह चाय पीनेके काममें नहीं आती। इससे खानेका एक तरहका मसाला बनाते हैं।

चायकी खेती—जिस भूमिमें कुहरा वा पाला अधिक पड़ता हो वहां चायकी खेती नहीं हो सकती। गर्म और नम जलवायु तथा तर भूमिमें चायकी उपज अच्छी होती है। हिन्दुस्तानमें चायकी खेती बहुधा पहाड़ोंपर होती है। जलके बहावका जहा अच्छा प्रबन्ध रहता है वहा चाय अच्छी होती है। दार्जिलिङ्गमें सात हजार फुटकी ऊँचाईपर चायकी खेती होती है। नीची जमीनपर पौधे बड़े होते हैं पर ऊंची जमीनकी चायमें स्वाद

अधिक होता है। आसाममें चायके पौधे ५०.५० फुटतक ऊंचे होते हैं। इनके पत्ते बहुत लम्बे होते हैं।

नीचे जो तालिका दी जाती है उससे पता लगेगा कि हिन्दुस्तानके किन किन प्रान्तोंमें कितने एकड भूमिमें चायकी खेती होती है और कितनी चाय पैदा होती है।

प्रांत	चायके खेत (एकडमें)	पैदावार (पौंडमें)
आसाम	४१२४६६	१९८९२४८२४
बङ्गाल	१८०३७८	७१७२०७४०
ट्रावनकोर	४८३०८	२२३०७४३१
मद्रास	४३६०२	१४२४०३२२
पञ्जाब	९७६२	१५४८४१८
संयुक्तप्रान्त	६०१५	१५४२३५१
त्रिपुरा राज्य (बङ्गाल)	५०५३	११४१९३
विहार उडीसा	२११६	२००१९३
	७०७७३३	३१०५९८४४२

काली चाय—चायकी पत्तो जिस समय पेडोंसे तोडी जाती है, हरी रहती है, इसे काली करनेमें पांच तरीकोंसे काम लेना पडता है। पांच अवस्थाओंमें जानेके बाद चाय बिकनेके लिये तैयार होती है। चायके बागीचोंमें कलकारखाने सदा यही काम किया करते हैं। बागीचोंसे चाय चुनकर इन कारखानोंमें लायी जाती है और वहां तैयार की जाती है। चायकी हरी पत्तो सुखाकर

बटोरी जाती है। उसे उबालकर गरम किया जाता है। इसके बाद उत्तम, मध्यमके हिसाबसे चायकी पत्तियोंको छाटा जाता है। अगर पतियोंको हरा रखना होता है तो उसे उबालते नहीं।

हरी चाय—१९१७में २२३लाख पौंड चाय यहा तैयार की गई थी। हरी चाय कांगड़ावेली, छोटानागपुर और नीलगिरिसे आती है।

तिब्बत और भूटानके बाजारमें एक विशेष तरहकी चाय चलती है जो गर्द या पत्तियोंके टुकड़ोंसे बनती है। इसका चालान बहुत ही कम है। पर इसका परिणाम यह हुआ है कि गर्दकी माग चीनके बाजार—हागकाग और शघाईमें बढ गई है। वहा इससे विशेष तरहकी चाय तैयार की जाती है और इसके बाजारमें भेजी जाती है।

कुली या मजूर—चाय बागीचोंमें काम करनेके लिये कुलियोंकी कठिनाई सदा पडती रहती है। इसके दो कारण हैं। एक तो चायके बागीचे ऐसी जगहोंमें हैं जहा स्थानीय कुली या मजूर नहीं मिल सकते। दूर दूरके प्रान्तोंसे कुली मगाने पडते हैं। दूसरे, चायके बागीचोंमें सफेद गोरे कुलियोंपर इस तरहका पाशविक अत्याचार करते हैं कि जो एक बार उस दासतासे मुक्त हुआ उसे इसमें फसनेका पुन साहस नहीं होता। चाय बागीचोंमें मजूर भेजनेके लिये भारतसरकारने एक विशेष विधान बनाकर वहा जानेवाले कुलियोंको नियत अवधितकके लिये बाध दिया था, पर सन् १९१६ में यह विधान रद्द कर दिया गया। तबसे कुलियोंको कठिनाई और भी अधिक बढ गई है।

चायका चालान—सन्१८६६ तक दार्जिलिंगतक कोई पक्की सडक नहीं गई थी। इससे चायके चालानमें बडी कठिनाई पडती थी। बन्दरगाहतक चाय बैलगाडीमें ढोयी जाती थी और लम्बा रास्ता तै करना पडता था। सन्१८७८ में गंगाके किनारेसे सिलिगुरीतक रेलकी सडक बिछ गई। तबसे चायके चालानमें किसी तरहकी अडचन नहीं रही। कारखानोंसे चाय कलकत्ता रेलवे स्टेशनपर लाई जाती है और रेलकी गाड़ियां कलकत्ताके बदरगाहपर उसे लाकर गिरा देती हैं। आसामके बागीचेकी कुछ चाय तो रेलद्वारा और कुछ स्टीमरों द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी होकर कलकत्ता पहुचती है। खिदिरपुर डाकपर चाय नीलाम होती है।

दक्षिणी प्रदेशोंके बागीचोंकी दशा भी अब अच्छी हो गई है। विनाडसे समुद्रके किनारेतक रेलकी लाइनें जिस दिन बिछ जायगी वहाकी चायकी दशा भी सुधर जायगी।

चायके बीज—कई वर्षोंसे चायके बीज भारतसे विदेशों जा रहे हैं और इधर हालमें तो उसने कलम (पौधोंसे) देना भी आरभ कर दिया है। १८६५ ई६ तकके अंक मिलते हैं जिनसे विदित होता है कि बीजके व्यवसायमे अपरिमित उतार-चढ़ाव रहा है।

युद्धके दो वर्ष पहले जावामें चायका बीज बहुत गया था। विगत दश वर्षोंसे डच ईस्ट इण्डीजमें भी चायकी खेती ब्रिटिश पूंजीसे होने लगी है।

चायका चालान अधिकतर जुलाईसे आरम्भ होकर दिसम्बर-

तक रहता है। जनवरी और फरवरीमें भी बहुतसा माल आता है।

१६१७ १८ में सबसे अधिक अर्थात् ३५६१ ७ लाख पौंड चाय बाहर भेजी गई थी। पर इससे जो मूल्य मिला वह १६१५ १६ से कहीं कम था। १६१५-१६ में १३,३२०,००० पौंड चायके व्यापारसे आया था, पर १६१६-१७ में केवल ११,७८२,००० पौंड आया। १६१६-१७में २६१४ लाख पौंड चाय बाहर भेजी गई और ११,१८१,००० पौंड आय हुई। इस कमीके दो कारण थे। एक तो पैदावार ही कम हुई और दूसरे जहाजोंकी भी कमी थी। १६१७ में जहाजकी और भी कमी हो गई। १६१६ १७ की चाय भी पड़ी थी। इससे आशा थी कि चायकी खेती और रोजगारपर धक्का पहुंचेगा। निदान नवम्बर और मईके महीनेमे चायके चालानका विशेष प्रबन्ध किया गया। इस साल अमरीकाने बहुतसा चाय यहासे खरीदा। अगर जावाकी चाय यहा रुक गई तो यहाकी चायकी खपत बहा और अधिक होने लगेगी। युद्धके पहले भारतका सबसे बड़ा ग्राहक रूस था पर १६१७ से उसने यहासे चायका मगाना एकदम बन्द कर दिया। चीन और जावाकी चायपर कड़ा महसूल बैठा देनेसे आस्ट्रेलियामें अब यहासे चाय जाने लगी है। फारसमें भी यहासे चालान जाने लगा है।

नीचेकी तालिकामें दिखाया गया है कि यहास चाय प्रधान तया किन किन देशोंमे जाती है।

	सम्पूर्ण निर्यात		जो माल ब्रिटन गया	
सन्	वजन	मूल्य	वजन	मूल्य
१६००-०१	१६०३०५४६०	६३६७२८६	१६६१७१५५६	१७६८५२४
१६१३-१४	२८६४७३५६१	६६८३३७२	२०६०५०७७१	७२३२०४६
१६१६-१७	२६१४०२६०८	१११८०६४६	२२४६२७८६४	८६७१२६६
१६१८-१६	३२३६५६७१०	११८५०४०४	२८२२०५१६६	६८५६०५०
१६२० २१	२८५७५१८४६	८०६६८४३	२४६१११४४०	६६५२००६
१६२१-२२	३१३८७८१४६	१२१४६७६४	२६८७१६७०५	१०७४४२८६
१६२२-२३	२८८२६६२००	१४६६३३५६	२४८२६३१६०	१२७६०२०३

जो चाय यहासे ब्रिटन जाती है वह वहासे फिर अन्य देशोंमें बिकनेके लिये चली जाती है। ब्रिटनमें जो चाय जाती है उसके प्रधान ग्राहक ये हैं—रूस, डेनमार्क, जर्मनी, हालैंड, वेलजियम, फ्रास, आस्ट्रिया हंगरी, रूम, पुर्तगालीय पूर्वीय अफ्रिका, अमरीका, कनाडा, चाइल, अर्जेंटाइन प्रजातन्त्र, चैनल द्वीप, दक्षिण अफ्रिकाके सयुक्त राष्ट्र, न्यूफौण्डलैंड। इसके अतिरिक्त अन्य छोटे २ देशोंमें भी फुटकर चाय जाती है।

चायका चालान प्राय सभी वन्दरगाहोंसे होता है, पर ६० सैकडे चाय केवल कलकत्ता और चटगावके बन्दरगाहोंसे जाती है। टूटीकोरिन, कोचीन और कालिकटसे ७ प्रति सैकडे जाती है। यहाकी चायकी खपत दक्षिणी अमरीकामें भी अधिक है। १६१७

तथा १९१८ में २०२१,००० पौंड और १९१८-१९ में ४,०००,-००० पौंड चाय गई।

स्थलमार्गसे भी चायका चालान होता है। स्थलमार्गके चार ग्राहक हैं ? नेपाल, भूटान, तिब्बत और अफगानिस्तान। नीचेकी तालिकामें थलमार्ग द्वारा चायके व्यापारका व्योरा दिया गया है।

सन्	जो माल बाहरसे आया (स्थल मार्गसे)		निर्यात
१९१४—१५	४३१९३१२	पौण्ड	२४३१२९६
१९१६—१७	६१०२६६८	,,	१८३९९३६
१९१७—१८	५४६३२४८	,,	२१०२४६४
१९१९—२०	५८१५७१२	,,	३२३८२५६
१९२२—२३	७१८६४८०	,,	६२८९२४८

महसूल—चायके व्यापारपर दो तरहका महसूल लगता है। एक महसूल तो सरकारी खजानेमें जाता है। इसका दर १०० पौंड चायपर १॥) रुपया है। दूसरा कर चाय प्रचारके लिये लगाया जाता है। यह कर इण्डियन टी एसोसियेशनकी प्रार्थनापर लगाया गया है। इसका दर $\frac{1}{4}$ पाई प्रति पौंड है। पहला कर तो सरकारी खजानेमें जाता है, पर इस दूसरे करसे सरकारको किसी तरहका लाभ नहीं है।

भारतमें चायकी खपत अधिक है। वर्षामें प्राय १८० लाख पौंड चाय प्रति वर्ष खर्च होती है।

चायकी आमद—दूसरे देशोंसे भी चाय भारतमें आती है, पर

यह यहा तैयार कर फिर चालान कर दी जाती है। सन्१९१९में ११० लाख पौंड चाय आई थी। इसमेंसे ७२५,००० कलकत्तामें तैयार करके बाहर भेजी गई। १,७५०,०००.पौंड सीधे बम्बईसे फारसकी खाडी, अरब तथा पूर्वी अफ्रिका भेजी गई। ७५०,००० लाख स्थलमार्गसे भेजी गई। इस तरह ७७,५०,००० चाय आमदके रूपमें यहा रह गई। इसमें ४० लाख पौंडके करीब पत्ती रहती है, क्योंकि उत्तरी भारतके लोग हरी पत्ती अधिक पसन्द करते हैं। काली पत्तीकी आमद दक्षिणसे है। दक्षिणके चायबागीचेवालोंको इस बातपर ध्यान देना चाहिये। जिन कारणोंसे काली पत्ती बाहरसे मगानेकी आवश्यकता पडती है उन्हें दूरकर घरकी चायका प्रचार इनमें करना चाहिये।

खिद्रिरपुरकी डाकपर चाय नीलाम होती है। शिपिङ्ग डाकुमेंट (रसीद) मिलनेपर उसे रुपया चुकता करना पडता है। दस दिनकी अवधिपर नगद बिक्री भी होती है। कितने चायबागीचेवाले आमदनी माल बेच देते हैं।

चाय बनानेके बाद (अक उतार लेनेपर) जो पत्ती रह जाती है उसका भी चालान होता है। अमरीका इसका प्रधान ग्राहक है।

चायकी पेटी—चायकी पेटी तैयार करनेके लिये पहले हिमालयकी लकडिया काममें आती थीं। सेमलकी लकडी सबसे अधिक उपयोगी थी। बर्माका कराल इसके लिये बहुत उपयोगी था। सन्१९०८से टिनके डब्बेका इस्तेमाल होने लगा और लकडी-

का यह सहायक व्यवसाय मर गया। पर टिनके डब्बेमें खर्च अधिक पड़ता है।

पूंजी—चायके बागीचे अधिकांश यूरोपियनोंके हाथमें हैं और उन्हींकी पूंजीसे चलते हैं, भारतीयोंकी बहुत कम पूँजी लगी है। इससे चायके व्यापारसे इतनी आमदनी होकर भी हम भारतीयोंके हाथमें लाभका कुछ भी अंश नहीं रह जाता। यह बात विशेष जानने और याद रखनेके योग्य है।

चीन, लङ्काद्वीप, जापान, जावा, ब्रेजिल, ट्रान्सकाकेशिया, अमरीकाके दक्षिणी पूर्वी प्रांत, जेका, नेटाल और मडगास्करमें भी चायकी खेती होती है।

काफी या कहवा

कहवेकी खेतीका इतिहास विचित्र है। बाबा बूदन नामक एक यात्री मक्कासे लौट रहे थे। अरबसे दस पांच बीज लाकर उन्होंने मैसूरके कुदार जिलेमें छींट दिये, इसीसे कहवेकी खेती होने लगी। पर कहवेकी खेती ठीक तरहसे १८३० के बादसे आरम्भ हुई। पहले पहल केनन नामके किसी अंग्रेजने चिकमूनगरके आसपास कहवाके पेड़ लगाये। तीस वर्ष बाद कुर्ग, नीलगिरि, मैसूर, सेवराय पहाड़ और विनाडमें भी कहवेकी खेती होने लगी। १८६९ में हिन्दुस्तानके दक्षिण भागमें कहवेकी खेती उन्नतिकी चरम सीमातक पहुच गई थी। तीन वर्ष बाद कहवेकी पत्तियोंमें कीड़े लगने लगे। टिड्डो और पतिंगोंने जिस तरह लङ्काकी कहवेकी खेती उजाड डाली थी उसीतरह यहांकी खेतीपर भी पानी फेर

दिया। १८७७ १८८७ इ० दस वर्षों के भीतर कमसे कम विनाडके २६३ खेतिहरोंने कहवेकी खेती बन्द कर दी। लङ्काद्वीपका कहवेका व्यापार नष्ट हो गया। इधर गत तीस वर्षों में यदि इस व्यापारने उन्नति नहीं की है तो बहुत नुकसान भी नहीं उठाया है, यद्यपि ब्रेजिल, ग्वाटामाला, कोस्टारीकाके बढ़िया कहवेके साथ प्रतियोगिता करनी पडी है और मूल्यमें बहुत कुछ हेरफेर रहा है। मैसूरका कहवा सबसे अच्छा होता है।

नीचे लिखी तालिकासे विदित होगा कि १६२२-२३ में किन किन प्रान्तोंमें कितनी भूमिमें कहवाकी खेती की गई थी।

प्रांत	एकड भूमि
मैसूर राज्य	६८१३८
कुर्ग	३१६२८
मद्रास प्रान्त	३८७५२
कोचीन	२२२७
ट्रावनकोर	६१०
बर्मा	७५
बम्बई प्रांत	४८
	१३१७७८

कहवाकी उपज बहुत कुछ ऋतु और जमीनपर निर्भर करती है। औसत पैदावार ४०० पौंड प्रति एकडसे अधिक नहीं होती पर अगर ऋतु अच्छी रही और खेत भी अच्छा मिल गया तो एक एकडमें १२ हण्डरवेट कहवा पैदा हो सकता है।

कहवेकी पैदावारका अधिक भाग चालान कर दिया जाता है। ब्रिटन और फ्रांस कहवेके दो बड़े बड़े ग्राहक हैं। कहवेके खेतोंमें ३५००० स्थायी और ४६००० अस्थायी मजूरोंकी गुजर होती है। अक्टूबरमें दाने पककर चुननेके लिये तैयार हो जाते हैं और चुनाई आरम्भ हो जाती है। जनवरीतक चुनाई जारी रहती है। जो दाने जमीनपर झड़ जाते हैं वे जनवरीके बाद फसल खतम होनेपर बटोरे जाते हैं। कहवेके ढोंढमें दो दाने सटे रहते हैं। कितनोंमें एक ही दाने होते हैं। दाने सुखाकर ओखलमें कूटे जाते हैं अथवा पानीमें भिगोकर मथ दिये जाते हैं। इसके बाद सुखाये जाते हैं और बोरोंमें भर चालान किये जाते हैं।

कहवेका कुछ हिस्सा तो योंही भेज दिया जाता है पर मैसूर, कुर्ग, नीलगिरि और विनाडमें जो कहवा पैदा होता है वह तैयार करके ही चालान किया जाता है। मंगलोर, टेलिचरी, कालिकट और कोइम्बतूरमें उसके कारखाने हैं। चारों जगहोंको मिलाकर प्राय १६ कारखाने हैं।

जो कहवा बिना तैयार किये ही चालान किया जाता है वह खेतोंमेंसे गाड़ियोंपर लद लदकर आता है और बन्दरगाहके पास मैदानमें—जो इसके लिये बने रहते हैं—फैला दिया जाता है। सूख जानेपर इसकी ढेर लगाई जाती है, फिर साफ किया जाता है। साफ करनेके दो तरीके हैं—मशीन और हाथसे। साफ करनेके बाद यह बारबार बनाया

जाता है। इसके बाद स्त्रिया उसे झाडती हैं और छोटे या टूटे दानेको अलग करती जाती हैं। इस तरह साफ करके तब यह कहवा बोरोंमें कसा जाता है। इस तरह कहवेकी दो जाति होती है—एक साफ की हुई अर्थात् सुखाकर कुटी हुई और दूसरी वन्दरगाहपर इस तरह साफ की हुई। पहले किस्मका कहवा फ्रांस जाता है और दूसरे किस्मका ब्रिटन। १८२ पौंडका बोरा चालानके लिये तैयार किया जाता है। दिसम्बरसे चालान आरम्भ होता है और मार्चतक रहता है। कभी कभी मईमें भी चालान होता है। नीचे लिखी तालिकामें कहवेके चालानका विवरण दिया गया है।

सन्	वजन (हण्डरमें)	मूल्य (पौंडमें)
१९१३—१४	३२९९००	१०२४४०२
१९१८—१९	२१८५०४	७९५८५६
१९१९—२०	२७२५६१	११४२६३०
१९२०—२१	२३३४३०	९५३१२०
१९२१—२२	२३५०६४	९२७२०२
१९२२—२३	१६६१३४	८२४०५७

यहाके अतिरिक्त अरब, दक्षिण अमरीका, कोस्टारीका, कोलम्बिया, गोटामाला, मैक्सिको, वेस्टइण्डीज आदि देशोंमें कहवेकी अच्छी खेती होती है।

खाल और चमडा

इस देशमें पशुओंकी सख्या बहुत है। इण्डस्ट्रियल कमीशन

की रिपोर्टसे विदित होता है कि इस देशमें १८०० लाख गो बैल तथा ८७० लाख भेड बकरे हैं। चमडेका देशी व्यापार ऋतु और समयपर बहुत कुछ निर्भर करता है। अगर फसल अच्छी हुई और चारेकी तकलीफ नहीं पडी तो चमडेकी आमदनी कम होगी, बाजार तेज रहेगा। अगर चारेकी कमी पडी तो चमडा अधिक होगा,रोजगार अच्छा होगा। आँकडोंको देखनेसे विदित होता है कि युद्धके पहले यहासे सिझाये चमडेके बनिस्बत कच्चा चमडा और खाल अधिक जाता था। हिसाब लगानेसे मालूम होता है कि जितना चमडा बाहर भेजा जाता है उतने ही सिझाये हुए चमडेकी यहा खपत है। सिझाईका काम यहा बहुत ही कम होता है। १०० खालमेंसे २० और १०० चमडेमेंसे केवल १७ सिझाकर बाहर भेजे जाते हैं, नहीं तो अधिकाश योंही भेज दिये जाते हैं।

खाल और चमड़ामें अन्तर बता देना अनुचित नहीं होगा। गो और भैंसके चमडेको तो खाल कहते हैं। शेष जानवरोंके चमडेको चमडा कहते हैं।

युद्धके दो वर्ष पहले ससारमें चमडेकी आमद कम हो गई और माग अधिक बढ गई। इससे यहाके सूखे चमडेकी कम माग बहुत अधिक बढ गई। भैंसके चमडेकी माग सबसे अधिक थी। जर्मनी और आस्ट्रिया चमडेका सबसे बडा व्यापारी था। युद्धके पहले अधिकाश माल जर्मनी जाता था। कलकत्तेकी रपतनीका बाजार एकदम जर्मन व्यापारियोंके

हाथमें था। यहासे माल जर्मनी जाता था और हम्बर्ग तथा ब्रीमन होकर अन्य देशोंमे जाता था।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि भारतका चमडेका व्यापार किन किन देशोंके साथ है तथा युद्धके पहले इस व्यापारकी क्या दशा थी और युद्धके बाद क्या दशा रही। तौल हण्डरमे दिया गया है। एक हण्डरमें एक मन सोलह सेर होते हैं।

देश	१९१३—१४	१९१८—१९	१९२०—२१	१९२१—२२	१९२२—२३
जर्मनी	३८८,०००	—	७३४४०	२३१६४०	२११९८०
आस्ट्रिया हगरी	२३८,०००	—	२९६०	२४०	९४०
अमरीका	१५५,०००	४१,४६०	६३३६०	१२००	११४४०
इटली	१०७,०००	१००,७८०	६५०००	९७६६०	१०५४६०
स्पेन	४९,०००	३,५६०	३५९४०	६५०८०	४८१८०
ब्रिटन	४२,०००	२१७,७६०	६२८००	४११००	२९९००
हालेण्ड	४१,०००	—	४७०००	२०२०	१९००

१९१४में यूरोपीय युद्ध छिड गया। जर्मनी और आस्ट्रिया माल जाना बन्द हो गया। परिणाम यह हुआ कि कलकत्ता, आगरा, कानपुर, तथा चमडेकी अन्य मण्डियोंमें चमडा जमा हो गया। इससे मद्रासके चमडा सिझानेवालोंको अच्छा चमडा मिला जो पहले जर्मन व्यापारी खरीद ले जाते थे। मद्रासके व्यापारी चमडा सिझाकर ब्रिटन भेजते रहे। पर दो वर्षके बाद ही फिर धक्का लगा, क्योंकि चमडा सिझानेके यहा उपयुक्त साधन नहा थे। इससे बिना सिझा हुआ चमडा ही ब्रिटन जाने लगा। १९११ के बाद इटली और अमरीकाने भी कच्चा चमडा खरीदना आरम्भ किया। युद्धके बाद जर्मनीने फिर चमडेकी ओर हाथ बढाया और आशा की जाती है कि थोडे ही दिनोंमें यहाके चमडेका व्यापार एक बार फिर जर्मनीके हाथमें चला जायगा।

इसके बाद जो तालिका दी जा रही है उसमें यह दिखलाने का यत्न किया गया है कि किन किन जानवरोंको खाल किस परिमाणमें चालान जाती है।

(वज़न हण्डरमे दिया गया है)

सन्	गायकी खाल	भैंसकी खाल	बछडेकी खाल
१९१३ १४	७४३०३७	३४५८६४	२६११६
१९१८-१९	२८३९९४	७८९८४	१८९६६
१९१९-२०	७८८५४०	२३३१००	७२८००
१९२०-२१	२८१२६०	६६१४०	२१४४०
१९२१-२२	४४५१००	४६४८०	१६२२०
१९२२-२३	२९८०४०	७२८८०	[illegible]९२०

यह देश धार्मिक है। इस देशमें छोटेसे छोटे प्राणीको भी दयाकी दृष्टिसे देखते हैं। इसलिये इस देशमें चौपायोंका पालन व्यापारकी दृष्टिसे नहीं किया जाता। यही कारण है कि यहाका चमडा अन्य देशोंकी भाति लम्बा-चौडा नहीं होता। बूचडखानोंके अतिरिक्त चमडेके लोभसे जानवरोंकी अकाल हत्या भी नहीं की जाती। वे प्राकृतिक मृत्युसे प्राण त्याग करते हैं। इससे उमरकी तासीरसे चमडे सड गल भी जाते हैं। तीसरे किसान लोग सिनाख्त (पहचान) के लिये प्राय. उन्हें दाग देते हैं। इससे चमडे दगीले हो जाते हैं और उनकी कीमत घट जाती है।

जर्मनी हर तरहकी खाल बटोरकर ले जाता था और ससारके भिन्न भिन्न बाजारोंमें बेचता था। सडे-गले चमडेके लिये भी उसने आष्ट्रिया और इटलीके बाजार ढूंढ निकाले थे।

खाल—खालको तीन तरहसे तैयार करते हैं।

(क) पानीमें खारा नमक मिलाकर खाल उसमें भिगो देते हैं।

(ख) खालको भिगोते नहीं बल्कि उसमें नमक पोतकर सुखाते हैं।

(ग) नमक पोतकर हवामें सुखाते हैं।

सिझायी खाल—खाल सिझानेका काम अधिकतर बम्बई और मद्रासमें ही होता है। युद्धके पहले यह खाल अधिकतर ब्रिटन जाती थी। सैनिकोंके लिये इस चमडेका सबसे बढिया बूट

ता है। यही कारण था कि युद्धके दिनोंमें इसकी माग बहुत धिक बढ गई थी।

चमडा—इधर बीस वर्षों से चमडेका चालान बढता आ ा है। इसका प्रधान कारण यह है कि जबसे अमरीकाने ोम चमडा तेयार करनेका कारखाना खोला है तबसे कच्चे मडेकी माग बढ गई है और इधर ब्रिटनमें बकरेके कच्चे चम- ेकी खपत बहुत अधिक बढ गई है। हजारोंकी सख्यामें भेड ौर बकरे रोज मास खानेके लिये काटे जाते हैं। इनकी खालसे ामडा अच्छा होता है। नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया ाया है कि किन किन जानवरोंका कितना कच्चा चमडा किस ानमें बाहर गया।

(वजन हण्डरमें दिया गया है)

सन्	बकरेका चमडा	भेडका चमडा	अन्य
.९१३ १४	४५३३५६	३३०६७	१४०
.९१८-१९	४२६६०५	७२४५६	२६५
.९१९ २०	६२५०००	६३७४०	२८०
.९२० २१	२००६४०	२६३८०	५६०
.९२१ २२	४३३७८०	८२८०	६०
१९२२ २३	४१२६२०	२४८०	४८०

स सारमें चमडेकी जितनी खपत है उसका तिहाई हिस्सा (कच्चा और सिझा हुआ मिलाकर) केवल इस देशमें जाता है। कच्चा चमडा सबसे अधिक अमरीकामे जाता है। दूसरा नम्बर

ब्रिटनका है। इसके बाद फ्रांस, हालैण्ड, जर्मनी और बेलजियम का नम्बर है। कच्चे चमडेका चालान अधिकतर बम्बई और कलकत्ताके बन्दरगाहोंसे होता है।

खालकी तरह चमडा भी नमक लगाकर उन्हीं तीन उपायोंसे सुखाया जाता है। बकरेका चमडा भेड़के चमडेसे वजनदार और ठस होता है। ढाका, कुस्तिया, दिनाजपुर और मुजफ्फरपुरके चमडे बहुत अच्छे होते हैं। दरभङ्गा, पटना, देसी और चौरीचौराके चमडे साधारण होते हैं। चौरीचौराका चमडा सबसे निकम्मा होता है। मूल्य बहुत कम मिलता है। उत्तरी प्रान्तोंका केन्द्र कानपूर और दिल्ली है। यहाके चमडे पानीमें भिगोकर सुखाये जाते हैं। बङ्गाल और बिहारके चमडोंसे ये अधिक लम्बे और चौडे होते हैं। अमृतसरका चमडा फैलता खूब है। हैदराबाद और दक्खिन देशमें औसत कदके चमडे पाये जाते हैं। दक्षिण भारतमें चमडा सिझानेके कारखानोंमें ये भेज दिये जाते हैं। वहां कुछ तो सिझाये जाते हैं और कुछ बिना सिझाये ही चालान कर दिये जाते हैं। बकरेके चमडेका चालान भेड़के चमडेसे अधिक है। भेड़का चमडा केवल दरभङ्गा और राजपूतानासे आता है।

सिझाया चमडा—बम्बई और मद्रासमें चमडा सिझानेवाली छाल बहुतायतसे पायी जाती है। इससे चमड़ा सिझानेके कारखाने वहीं अधिक खुले हैं। ब्रिटन, अमरीका और फ्रान्सकी मण्डीमें सिझाये चमडेकी अधिक खपत है।

बकरेके सिझाये हुए चमड़ेका चालान भेड़के सिझाये चमडेसे अधिक होता है। पर दोनोंकी संख्यामें उतना फर्क नहीं पडता जितना दोनोंके कच्चे चमड़ेमे है। त्रिचनापल्ली, कोयम्बतूर और डिण्डीगलमें सबसे खूबसूरत चमडा सीझता है। वहाके सिझानेवाले इतने चतुर हैं कि रङ्ग, गठन और लचीलापन बहुत अधिक ला सकते है। मद्रास प्रात तथा हैदराबादमें अनेक सिझानेके कारखाने हैं पर उनमें उतना उम्दा माल तैयार नहीं होता। नीचे जो तालिका दी गई है उसमें सिझाये चमडेके चालानका ब्योरा दिया गया है।

(वजन हण्डर और मूल्य पौंडमें—दिया गया है)

सन्	कुल निर्यात	मूल्य
१९१८-१९	५९६७६	१७०१४२८
१९१९-२०	६७२४०	३११३०८५
१९२०-२१	५३२००	१३४६३६७
१९२१-२२	७६६९०	१६४१७०८
१९२२-२३	६३०६०	१८२८२१४

महसूल—१९१९ से चमडेके चालानपर मूल्यके हिसावसे १५ प्रति सैकडे चुगी वैठा दी गई हैं। यह चुङ्गी कच्चे चमडेपर ही लगाई गई है। ब्रिटन तथा ब्रिटिश उपनिवेशोंके लिये जो माल भेजा जाता है उसपर जो महसूल बैठाया जाता है उसका दो-तिहाई फिरती दे दिया जाता है, अगर यह साबित कर दिया जाय कि यह चमडे इन्हीं देशोंमें सिझाये गये।

चमडे और खालके सम्बन्धमें इएडस्ट्रियल कमीशनकी रिपोर्टका कुछ अंश उद्धृत कर देना अनुचित न होगा :—

"मद्राससे कच्ची खालका चालान नहींके बराबर है। पर सीझी खाल और चमडेका चालान अधिक है। युद्धके समय सिझायी खालका चालान बढानेके लिये जो प्रोत्साहन दिया गया उससे खालका व्यापार खूब उन्नति कर गया है। बम्बईमें भी कई एक कारखाने हैं जो खाल-सिझाईका काम करते हैं। कच्चे खालका चालान कलकत्तासे अधिक होता है। इसके अलावा कराची और रङ्गूनसे भी थोडा बहुत चालान होता है। कच्चे चमडेका चालान प्रायः सभी बन्दरगाहोंसे होता है, पर बम्बई, कराची और कलकत्ताके बन्दरगाहोंसे अधिक चालान होता है।

गावोंमें चमार भी खाल सिझाते है। पर खालका भाव इतना बढता जा रहा है कि उसे खालका मिलना मुश्किल हो रहा है और उसके सिझानेके तरीके इतने भद्दे हैं कि खालको वह सिझाता क्या है उसकी मिट्टी पलीद करता है। इसलिये इसकी रक्षाकी भी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। चमडे सिझानेके जितने कारखाने खुले हैं उनमें दक्ष सिझानेवालोंकी कमीके कारण काममें बाधा और कठिनाई पड रही है।

क्रोम चमडा तैयार करनेका काम यहा बहुत कम होता है। इसका कारण कल पुर्जोंका अभाव और रासायनिक

क्रियाओंकी अज्ञानता है। युद्धके समयसे कुछ सुधार हुआ है और तबसे कुछ उन्नति भी हुई है।

चमडा सिझानेमें जिन छालोंकी जरूरत पडती है वह यहा बहुतायतसे पाये जाते हैं। इनमें प्रधान बबूल और आंवलेकी छाल है।

चमडा सिझानेके अधिकाधिक कारखाने यहा खुलने चाहिये। इस देशमें इतना अधिक चमडा पैदा होता है कि सबको सिझाकर चालान भेजना कठिन काम है और यदि यहाके लोग यह प्रयास करे भी तो कई वर्ष लग जायंगे। इसके अलावा सिझाये चमडेपर मंगानेवाले राष्ट्रोंने चुङ्गी बैठा दी है और कच्चा चमडा बिना चुङ्गीका जाता है। फिर भी सिझानेका काम जोरोंमें खुलना चाहिये और उसके लिये बडी गुंजायश है।"

ऊन और ऊनी कपडा

इस देशमें अच्छा ऊन पैदा होता है। यहा जो ऊन पैदा होता है वह केवल कम्बल, दरी तथा फेल्ट टोपी बनानेके काममें आ सकता है। बीकानेरकी ओर कुछ बढिया ऊन भी पैदा होता है जो कपडा बनानेके काममें आ सकता है। कपासके मुकाबिले ऊनका खर्च यहा बहुत कम है, क्योंकि गर्म मुल्क होनेके कारण यहा गर्म कपडोंकी उतनी अधिक आवश्यकता नहीं पडती। शायद इसी कारण यहाके लोगोंने ऊनकी उन्नतिका यथेष्ट यत्न नहीं किया है। यहाका ऊन भी छोटा

होता है और यूरोप और आस्ट्रेलियाके ऊनसे कहीं निकम्मा होता है। यहा प्रति वर्ष ६०० लाख पौण्ड ऊन पैदा होता है। इस देशमें ऊनकी पैदाइश पजाबके हिसार जिलेमें, सयुक्तप्रातके गढवाल, अलमोडा और नैनीताल जिलेमें तथा सिन्ध, बेलूचिस्तान और बीकानेर राज्यमें होती है। ऊनका सबसे बडा बाजार फजिल्का और बेवार हैं। फजिल्कामें ऊनकी धुनाई भी होती है और अगर चालान भेजना होता है तो इसकी गाठ भी बाधी जाती है। बम्बई प्रातमें दक्खन और खान्देशका काला ऊन और सिन्ध, गुजरात और काठियावाडके सफेद ऊनकी माग अधिक रहती है। दक्षिण भारतमें ऊनवाली भेडें मैसूर राज्य, बेलारी, करनौल और कोयम्बतूर जिलोंमें पाई जाती हैं। अन्य अनेक प्रान्तोंमें भी ऊन होता है पर वह फेल्ट बनानेके लायक नही होता। बहुत सा ऊन तो मरी भेडोंका आता है अर्थात् मासके लिये जो भेडें काटी जाती हैं उनके चमडेपरकी उतारी हुई ऊन बिकनेके लिये आती है।

निर्यात—अफगानिस्तानसे बढिया ऊनका चालान यहां आता है, पर सफेद और काला ऊनको एकमें मिला देनेसे उसका मूल्य घट जाता है और वह मिला ऊन सस्ते दरमें बिकता है। तिब्बतसे साधारण 'ऊनके अलावा' एक तरहका बढिया ऊन आता है। इसे पश्मीना कहते हैं। इससे अच्छे अच्छे दुशाले बनाये जाते हैं, यहा इसके मुका-

बलेका ऊन कहीं भी नहीं पैदा होता। अफगानिस्तान या मध्य एशियासे स्थलमार्ग द्वारा जो ऊन आता है उसकी मण्डी फरेदा, शिकारपुर, अमृतसर और मुलतान है। तिब्बतसे जो ऊन आता है उसकी मण्डी हिमालयन दार्जिलिङ्ग रेलवेकी तिस्तावेली ब्राञ्चके कलीमपाङ्ग नगर और अवध रुहेलखण्ड रेलवेके तानकपूर नगर है। संयुक्तप्रांत तथा पंजाबकी मिलें ऊनी कपड़ा बुननेके लिये आस्ट्रेलियासे ऊन मगाती हैं; क्योंकि यहाका ऊन काम लायक नहीं होता। जलमार्गसे यहा जो ऊन आता है उसका ७० प्रति सैकड़े केवल फारस देशसे आता है। जल या थलमार्गसे जितना ऊन आता है, देशमें ही सबकी खपत हो जाती है। इसमेंसे बाहर जितना ऊन जाता है वह उसी तरहके कपासका केवल दसवा हिस्सा होगा। फिर भी यह व्यवसाय महत्वपूर्ण है। युद्धके पहले प्रति वर्ष यहाकी पैदा हुई और बाहरसे आई रुई मिलाकर तीन हंडरकी कुल ३२०,००० गाठे होती थीं। उनमेंसे १२०,००० गाठ बाहर चालान जाता था और शेष यहाँके मिलोंमें खपता था।

युद्धके पहलेका ऊनका सबसे बड़ा ग्राहक ब्रिटन था। तिब्बती ऊनका थोड़ा बहुत चालान अमरीका होता रहा। जर्मनी और फ्रास भी थोड़ा माल लेते रहे।

व्यापार सङ्गठन—यहा ऊनका व्यापार एकदम गडेरियोंके हाथमें है। वे ही भेड़ पालते हैं और रोवा काटकर ऊन

इकट्ठा करते हैं और महाजनोंके हाथ बेच देते हैं। ये महाजन कुछ महीना या वर्षभर पहलेसे ही गड़ेरियोंको कुछ रुपये पेशगी दिये रहते हैं। ये महाजन ऊन ले जाकर मंडियोंमें बेचते हैं। कितने बडे २ महाजन कराची और बम्बईके बन्दरगाहोंसे माल सीधे लिवरपूल भेजते हैं। बम्बई और कराचीमें माल बाहर भेजनेकी एजेंसियां हैं जो माल बाहर रवाना करती हैं। प्रत्येक लाट नीलामपर चढ़ाकर रवाना किया जाता है। ये एजेंसियां माल वजन कराती हैं और भाडा तथा बीमाका रुपया अपने पाससे देती हैं। इस तरह एक प्रकारसे माल इन्हीं भेजनेवाली एजेंसियोंके अधिकारमें रहता है। माल नीलामपर चढाये जानेपर अगर कोई खरीदार न मिला तो माल अपने जिम्मेपर भेजा भी जाता है। लेवा बेचीका हिसाब ते हो जानेपर (शिपर) जो माल भेजनेका बन्दोबस्त करता है वह बम्बईमें २) और कराचीमें ३) रु० सैकडे कमीशन लेता है। इसमेंसे १) सैकडे दलालका होता है।

यहाके ऊन लिवरपूलमें बीकानेर, भरिया, कन्धार और मारवाडके नामसे बिकते हैं।

ऊनी माल—१९१८ तक यहा कुल ६ मिलें ऊनी कपडा बनाती थीं। इन छ:के अलावा एक मिल मैसूर राज्यमें भी है। इनमेंसे तीन मिलोंमें हर तरहका ऊनी माल तैयार होता है और बाकीमें केवल कम्बल बिना जाता है। इन मिलोंमें जितना ऊनी माल तैयार होता है यहीं खप जाता

है। इसके अतिरिक्त काश्मीर और उत्तरपश्चिमी सीमाप्रांतमें करघोंपर काम होता है। उनसे जो ऊन तैयार होता है उससे पट्टू और पशमीना तैयार होता है। हाथके करघोंमें चारमेंपर कना ऊन ही काममें लाया जाता है। बढ़िया गलीचा तैयार करनेके लिये मिलका ऊन भी काममें लाया जाता है। काश्मीरी दुशालोंके लिये मशीनके कते ऊनका चालान काश्मीर जिलेमें होता है। ऊनी धागा थलमार्ग द्वारा कुछ बाहर जाता है। सन् १९१४ १५ में ४५, ७ ७२ पौंडका माल बाहर गया था। पर सन् १९१८ १६ में युद्धके सैनिकोंके लिये इसकी आवश्यकता यहां इतनी अधिक बढ़ गई कि चालान घटकर २२,३५० पौंड मूल्यका हो गया। ऊनके कपड़ेका चालान कभी भी उल्लेखयोग्य नहीं हुआ। १०,००० गजसे अधिक ऊनी कपड़ा कभी नहीं गया। दुशालेका चालान भी बहुत अच्छा नहीं हुआ। १९०८ ०६ में ८०४५० जोड़ा और १९१८-१६ में केवल १,७६६ और १९२२ २३ में ७६७ जोड़े दुशाले बाहर भेजे गये थे।

गलीचे—सन् १८५१ में लण्डन नगरमें प्रदर्शनी हुई थी। उस प्रदर्शनीमें यह यत्न किया गया था कि भारतीय गलीचेके व्यवसायको उत्साह प्रदान किया जाय। भारतीय गलीचे जमाये जाते हैं अर्थात् सूतके धागेपर ऊन जमाकर इन्हें तैयार किया जाता है। संयुक्तप्रान्त और पञ्जाबमें ये बहुतायतसे बनाये जाते हैं। इसका सबसे बड़ा कारबार अमृतसरमें है। यहां

प्राय २०० करघे यही काम करते हैं। इन करघोंमें बीकानेरी या पारसी ऊन काममें लाया जाता है। इसकी रगाई और कताई सब कुछ यहीं होती है। काश्मीर और अमृतसरके अलावा मुलतान, जैपुर, बीकानेर, आगरा, मिर्जापूर और इलौरमें गलीचेका काम होता है। उत्तरी भारतमें काम करनेवाले काश्मीरी मुसलमान हैं। फारस तथा अफगानिस्तानके बने कम्बल भारतमें चालान आते हैं। इनकी प्रधान मण्डिया पेशावर और क्वेटामें हैं। गलीचेका चालान अधिकतर ब्रिटन और अमरीकामें जाता है।

धातु पक्की और कच्ची

कच्चा लोहा (Manganese)

इस देशसे कच्चा लोहा १८९२ सेही विदेशोंमें भेजा जा रहा है। यह लोहा प्रधानतया तीन तरहका होता है और तीन भिन्न भिन्न स्थानोंमें पाया जाता है —

(१) मद्रासके विजगापट्टम जिलेकी आसपासकी पहाडियोंसे निकाला जाता है।

(२) धारवारके आसपासके पहाडोंसे निकाला जाता है और बालाघाट, कन्धार, छिन्दवाडा, नागपूर (मध्यप्रदेश), पञ्चमहाल जिला (बम्बई प्रान्त), झाबुआ (मध्यभारत) गगापुर रियासत (विहार) में इसकी मण्डिया हैं।

(३) विहारके सिंहभूम जिला, मध्यप्रदेशका जबलपूर जिला,

मद्रासका बेलारी जिला और सन्दुर रियासत,मैसूरराज्यके चिताल्द्रुम, कडूर, शिमोगा और तमकर जिले तथा गोआमें तीसरे प्रकारका लोहा पैदा होता है।

सन् १८६२ में पहले पहल विजगापट्टममें इस धातुकी खोज होने लगी और सन् १८६३ में ३,००० टन लोहा चालान गया। १६००—०१ में ६०,००० टन माल भेजा गया। पर उस सालके बाद यह व्यवसाय ढीला पड गया। इसका कारण यह था कि खोदाई ज्यों ज्यों नीचे होती गई कठिनाईपर कठिनाई पडने लगी। एक तो उम्दा चीज नहीं निकलती थी दूसरे खानोंमें पानी पड जानेसे तरद्दुद बढ जाती थी। इस समय मध्यप्रदेशमें सबसे अधिक लोहा पैदा होता है।

सन् १६०७ में ६०२,२६१ टन लोहा बाहर भेजा गया। इससे रूसके व्यवसायपर भीषण धक्का पहुचा, क्योंकि अभीतक रूस इस व्यवसायमें मण्डियोंका राजा था। पर भारतवर्षके लोहेने उसकी कदर और प्रतिष्ठा उठा दी। सन् १६०८में व्यवसाय फिर एक बार ढीला पड गया। १६१३ में ८१५,०४७ टन लोहा चालान गया। दिन पर दिन चालानमें कमी ही पडती गई। १६०६ के बाद सन् १६१३ तक प्राय ७१२,७६७ टन लोहा प्रतिवर्ष जाता रहा। युद्धके दिनोंमें लोहेका रोजगार खूब बढ़ गया था। चारों ओर लोहेकी खींच थी। इससे खराब लोहा भी खानोंसे निकाला जाने लगा था। पर १६१६ के बाद व्यापार फिर मन्दा पड गया है।

ब्रिटिश भारतमें अर्थात् सरकारी जमीन लेकर खोदनेमें मूल्य पर (जो खानपर बेचनेसे मिल सकता है) महसूल देना पड़ता है। पर इसमें असुविधा देखकर निम्न-लिखित कर बैठाया गया है। यह मद्रास प्रांतमें लागू नहीं है। अगर अव्वल लोहेका दर आठ पेंस (आठ आनाके बराबर) टन है तो आधा आना टन महसूल देना पड़ेगा। इसके बाद ग्यारह पेंसतक प्रत्येक पेनीपर आधा आनाके दरसे बढ़ता जायगा। अगर मूल्यका दर १२ पेंस हो जायगा तो महसूलका दर तीन आना टन हो जायगा और १४ पेंसतक प्रति पेंस एक आना बढ़ता जायगा। इसके बाद १८ पेंसतक दो-दो आना पेंसके हिसाबसे बढ़ता जायगा। देशी राज्योंमें यह महसूल कहीं अधिक है।

मैसूर रियासतमें मजूरोंकी कमी नहीं है पर मध्यप्रान्त, मध्य-भारत और सन्दर जिलोंमें मजूर बाहरसे मगाने पड़ते हैं। लोहा निकालनेका काम ठोकेपर कराया जाता है।

युद्धके पहले ब्रिटन, अमरीका, बेलजियम, हालेण्ड, फ्रांस, जर्मनी और जापान इसके प्रधान ग्राहक थे।

लोहा और फौलाद—यहां भी भूमिमें कच्चा लोहा बहुत है पर लोहा और कोयलाका संयोग बहुत कम है। लोहेको गला-कर और ढालकर हम तभी काममें ला सकते हैं जब उसके नजदीक ही कोयला हो। अगर लोहा बम्बईमें मिलता है और कोयला बङ्गालमें तो लोहेका कारखाना खोलकर बड़ा भारी लाभ

नहीं उठाया जा सकता, क्योंकि एक तो दोनों वस्तुए इतनी वजनदार हैं कि दोनोंके ढोनेमें खर्च बहुत पड जायगा। दूसरे रेल आदिकी कठिनाइयोंके कारण अगर ठीक समयपर माल न पहुचा तो कारखाना बन्द हो जायगा। एक दिन या घण्टेतक कारखाना बन्द रखनेमें जो हानि होगी इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। यों तो लोहा गलाकर ढालनेका व्यवसाय इस देशके प्रत्येक गावमें होता आया है और वसी तरीकेपर अर्थात् बढईकी माथीकी सहायतासे कुल्टीमें एक कारखाना भी चलता रहा है पर १६१४ में यहा आधुनिक तरीकेसे अर्थात मशीनकी सहायतासे लोहेकी ढलाईका काम आरम्भ हुआ। तैयार लोहा, लोहेके कल पुर्जे तथा मशीन और टीनके पनालीदार चद्दर सभी यहा अधिकाधिक स ख्यामें विदेशसे आते हैं। १६१३-१४ में १३० लाख पौंड मूल्यका लोहा और फौलाद तथा पनालीदार चद्दर आये थे और ५,०००,००० पौंड मूल्यकी मशीनें आई थीं। इन आकडोंसे साफ है कि यहा लोहा ढालनेका कारखाना खोलनेकी कितनी अधिक गुञ्जायश है और उससे कितना अधिक लाभ हो सकता है। इस समय केवल दो कम्पनिया यहा यूरोपके ढगसे लोहा ढालनेका काम कर रही हैं। एक बङ्गाल आइरन एण्ड स्टील कम्पनी कुल्टी है और दूसरी ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी जमशेदपुर है। कुल्टीकी कम्पनी १८७५ में खुली थी, पर हालतक उससे लाभ नहीं हो रहा था। युद्धके समय लोहेकी माग बढ जानेके कारण इसमें काम बहुत बढ गया और

इन्होंने अच्छा लाभ कमाया। युद्धके बादसे इनकी अवस्था धीरे धीरे नीचेकी ओर खिसक रही है और यदि सरकार बाहरसे या लान आनेवाले मालपर महसूल बैठाकर इनकी आयात रोकनेका यत्न नहीं करती तो इनका भविष्य आशाप्रद तथा उत्साह दिलानेवाला नहीं दीखता। ताता कम्पनी १९०७ में खुली। मयूरभञ्ज राज्यमें इसकी लोहेकी खाने हैं, मध्यप्रान्तके रायपुर जिलेमे भी खाने हैं। मैसूरमें इसकी मेगनाइट और क्रोमाइटकी खाने हैं तथा झरियामें कोयलेकी खाने हैं। १९११ में ढलाईका काम आरम्भ हुआ। पहले पहल फौलादकी ढलाईमें अनेक तरहकी कठिनाइया पडीं पर धीरे धीरे ढलाई होने लगी। आरम्भसे ही भारत सरकारके साथ २०,००० टन रेलके सामानके लेनेका ठेका है पर युद्धके दिनोंमें इससे कहीं अधिक माल सरकार लेती रही। इधर तीन वर्षसे ताताका काम भी ढीला पड गया है। १९२२ २३ मे जो लाभ दिखलाया गया है वह कुछ भी नहीं है। तीन वर्षके भीतर ही लाभकी रकम १८ लाखसे घटकर डेढ लाख हो गई। बोर्ड आफ डायरेक्टर्सने सरकारसे अपील की है कि यदि विदेशसे आनेवाले लोहेपर चूगी बैठाकर हमारी रक्षा नहीं की जायगी तो कम्पनीको अपना कारबार चलाना कठिन हो जायगा। सरकारने जाचकमीशन भी बैठाया और बडी छानबीनके बाद रक्षाका कुछ प्रबन्ध किया है।

आसनसोलमें एक तीसरी कम्पनी अभी हालमें ही खोली

गई है। यह स्थान कलकत्तासे केवल १३० मीलकी दूरीपर है। रेलवेका बड़ा भारी जंकशन है। साथ ही रानीगञ्ज, झरिया तथा बोकर तीन प्रधान कोयलाके क्षेत्रोंके बीचमें है।

नीचेकी तालिकासे प्रकट होता है कि १९१३-१४ के बादसे कितना तैयार चलान माल गया —

वस्तु	१९१३ १४		१९१८ १९		१९२० २१		१९२२ २१	
	वजन (टन)	मूल्य पौंड	वजन (टन)	मूल्य पौंड	वजन (टन)	मूल्य पौंड	वजन (टन)	मूल्य पौंड
कच्चा लोहा	८२५९२	२८२४१८	६५९६,	७४६७	४८४२४	३७६५५२	११८०५५	६०६७२०
लोहा			१०८१८	२२०३५	३८३७	४७१०२	१६०२१	६४१०
लोहा और फौलादके सामान	८२८	१२७९५	८१२	१७९६८	१३४१	२१७०८	२६७७	२२३१५

लोहेका चालान अधिकांश कलकत्ता बन्दरगाहसे होता है। कच्चा लोहेकी प्रधान मण्डी जापान और आस्ट्रेलिया है। तैयार माल अधिकतर अदन, मलायद्वीप, बेहरिन द्वीप, तथा पूर्वी अफ्रिका जाता है। लोहाका चालान अमरीका और फ्रांस जाता है।

सोना

संसारमें जितना सोना पैदा होता है उसमें केवल २ प्रति सैकडे हिन्दुस्तानका सोना है। सोना पैदा करनेवाले देशोंमें इसका स्थान सातवा है। इस २ प्रति सैकडे सोनेकी प्रधान खान कोलारफील्ड है। यह मैसूर राज्यमें मंगलोरसे ४० मीलकी दूरीपर है। भारतके सोनेका ९८ प्रति सैकडा इसी खानसे निकलता है। करीब डेढ प्रति सैकडे सोना हैदराबादमें निकलता है और शेष मद्रासप्रांतके अनन्तपुरकी खानसे निकलता है। सन् १८८५ से ही कोलारफील्डसे अच्छा लाभ होने लगा था। सन् १९०५ में सबसे अधिक सोना निकला अर्थात् ६३१,११६ औंस सोना निकला था, जिसका मूल्य २,३७३,४५७ पौंड मिला था। खर्च आदि बाद देकर १,०६६,६१५ पौंड हिस्सेदारोंमें नफा बांटा गया था। पांच कम्पनियां सोना बटोरनेका काम कर रही हैं। सन् १९०५ के बाद इसमें बराबर घटती-बढती होती रही। सन् १९१३ में २,१५०,१९४ पौंड और १९१७ में २,०६७,५४१ पौंडतक सोना निकला था।

सन् १९०२ में कावेरीके जलप्रपातसे बिजलीकी शक्ति लाकर इस खानमें लगानेका प्रयत्न किया गया। कावेरीका जलप्रपात कोलारसे ९२ मीलकी दूरीपर शिवसमुद्रम स्थानपर है। आकस्मिक घटनासे रक्षा करनेके लिये वहां स्टीम इञ्जिन भी बैठाया गया है। खानोंमें काम पूरी योग्यताके साथ होता है और उनमें सभी साधन मौजूद हैं। अभीतक ५,००० फुटसे अधिक गहराई-तक खोदाई नहीं हुई है।

मैसूर सरकारको प्रति वर्ष ७०,००० पौंड महसूल देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त बिजलीकी शक्तिके लिये १२ पौंड प्रति किलोमीटरके हिसाबसे खर्च पड़ता है। १९१४ १५ तक कुल आमदनी साफ करनेके लिये चालान कर दी जाती थी पर इधर भारत सरकारने सिक्का बनानेके लिये कुछ सोना खरीदना आरम्भ किया है। सन् १९१८ में २,१०६,६६० मुहर और १९१९ में १,२९५,६४४ मुहर इस सोनेसे बनाइ गई थीं। १९१४ १५—१९१८ १९ के बीचमें २५,००,००० औंस सोना दक्षिण भारतकी खानोंसे भारत सरकारने लिया है।

कोलारके बाद हैदराबादकी लिंगसागर खान है। सन् १९१४ में इस खानसे ८०,००० पौंडका सोना निकला था। अनन्तपूर खान तथा छोटानागपुरकी मालभूम खानसे अभी लाभकी सभावना कम है। बराकरकी भूमिमें सोनेकी खान निकलनेकी सम्भावना थी। बहुत सा रुपया लगाकर खोदाईका काम आरम्भ भी किया गया। पर जो सोना निकला वह बहुत हो

साधारण और निकम्मा था। इससे १० वर्ष बाद १९११में काम बन्द कर दिया गया।

इसी तरह इरावदी नदी (बर्मा) के किनारेपर सोना छाननेका काम आरम्भ किया गया पर उसमें भी लाभ नहीं दिखाई दिया। निदान यह कम्पनी भी उठा दी गई।

चांदी

संसारमें चांदीका जितना खर्च है उसका सबसे अधिक भाग भारतमें खपता है। यहां जो चांदी पैदा होती है वह खर्चके मुकाबिले किसी तरहकी गणनाके योग्य नहीं। भारतकी चांदीका खेत उत्तरी बर्माका शान राज्य है।

यहां जितनी चांदी पैदा होती है सब भारत सरकारके टकसाल घरके लिये खरीद ली जाती है।

टंगस्टेन (Tungsten.)

आम फौलाद तैयार करनेके लिये Tungsten धातु बड़ी ही जरूरी है। बिजलीकी बत्तीका तार जो लट्टूके भीतर रहता है इसीका बनता है। इसके अतिरिक्त रंगाई और फायर-प्रूफिङ्गके काममें भी यह आता है। १० वर्ष पहले यह केवल अमरीकामें पैदा होता था। सन् १९१७ में १०,००० टन Tungsten मेंसे केवल बर्मामें तिहाई पैदा हुआ था। वर्तमान समयमें भारतका प्रतियोगी चीन हो रहा है। चीनमें प्रति वर्ष ७,००० टन Tungsten पैदा होता है।

सन् १९०९में टवाय और मर्गुई जिलोंमेंTungstenनिकालने-

का कार्य आरम्भ हुआ। सन् १९१० में कुल पैदावार ३६२ टन हुई, पर आनेजाने और माल ले जानेके साधनोंके अभावमें कुछ समयतक इस रोजगारमें बाधा पड़ी। दूसरी बाधा मजूरोंकी थी। चीनी और तेलिगू मजूरे काम करते थे। जिस तरीकेसे उनसे काम कराया जाता था उससे बड़ा नुकसान हो रहा था।

युद्धके पहले यहां जो कुछ Tungsten पैदा होता था सब जर्मनी भेज दिया जाता था और वहीं छानकर साफ किया जाता था। सन् १९१४ से भारत सरकारने सारी पैदावार खरीदना आरम्भ किया है और इसके उत्पादन बढ़ानेमें जो प्रयास किया है उससे सन्तोषजनक सफलता मिली है। आनेजानेका रास्ता ठीक कर दिया गया है और खानोंमें काम करनेकी हर तरहकी सुविधा कर दी गई है। मजूरोंकी दिक्कत सरकारी देख रेखमें चीनसे तथा तिब्बतसे कुली मगाकर हटाई गयी। वैज्ञानिक ढगसे खोदाई तथा ऊपरकी धिनाईका काम किया जाता है। बिजलीकी शक्ति बैठानेका बन्दोबस्त भी किया जा रहा है।

बर्माके कई जिलोंमें पूर्ण लाभके साथ काम हो रहा है। और भी भूमिका पता लगाया गया है जहां इस धातुकी सभावना है,पर वहांतक पहुचनेकी कठिनाइयोंके कारण अभीतक काम जारी नहीं हो सका है। बर्माके अतिरिक्त राजपूतानामें डेगवानाके स्थानपर तथा बिहारके सिंहभूमिमें यह धातु मिलती है। इसके अलावा

नागपुर, मध्यप्रांत, तथा त्रिचनापलीमें थोडो बहुत यह धातु मिलती है। पर यह गणनाके योग्य नहीं है।

सन् १९१७में ४५,४२ टन माल निकला था। सन् १९१८में ४७८२ टन और १९१९मे ४८७० टन माल निकला था। प्राय कुल माल ब्रिटन जाता है।

नाकाबन्दी उठा देनेसे तथा चीनकी प्रतियोगिताके कारण इस व्यापारपर भीषण धक्का पहुचा है। इस व्यापारका भविष्य अधकारमय है। अगर चीन इसी तरह प्रतियोगिता करता गया तो इस व्यवसायको भीषण हानि पहुचनेकी सभावना है।

टिन

बर्मामें टिनकी सबसे अधिक खाने हैं। इसके सबसे बडे क्षेत्र मर्गुई और टवाय हैं।

मर्गुईमें जो टिन पैदा होता है वहीं उसे चीनी व्यापारी गलाते हैं। इसे ढाल कर कुन्दा तैयार करते हैं और यह स्थानीय बाजारोंमें बिकनेके लिये जाता है। और अन्य स्थानोंमें जो टिन पैदा होता है वह बाहर चालान जाता है। जिस टिनमें मेल रहता है वह पहले प्रायद्वीपोंमें साफ होनेके लिये भेजा जाता था, इधर टवायमें साफ करने और अलग करनेका कारखाना खोला गया है फिर भी बहुतसा माल बिना साफ किया हुआ और छाना हुआ इङ्गलैंड जाता है और वहा साफ होता है। शानराज्यमें जो टिन खानोंसे निकलता है उसमें ५७ प्रति सैकडे टिन रहता है। शेष मिलावट रहता है।

बर्माके टिनके व्यापारका ब्योरा

प्रान्त	वजन (टनमें)	मूल्य बन्दरगाहोंपर (पौंडमें)
मध्यप्रान्त	३७५९५०	७३६२३६
बम्बई प्रान्त	५६८९६	१११४२२
बिहार उड़ीसा	१६३७२	३२०६२
मैसूर	१५८६८	२२८७६
मद्रास प्रान्त	९३१५	१२४६७
	४७४४०१	९१५०६३

सीसा

हिन्दुस्तानमें केवल बर्मामें सीसा पैदा होता है। शानराज्यके बावडिन जिलेमें सीसेकी एक खान है। सन् १९१८में इस खानसे ४३,००,००० टन सीसा निकला जिसमें २४.७ सैकड़े चांदी, २६.८ सीसा और १८.७२ प्रति सैकड़े रांगा और ०७ प्रति सैकड़े तांबा था। ५० वर्ष पहलेतक इस खानकी बात किसी को मालूम नहीं थी। चीनके लोग इसमेंसे चांदी निकालकर सीसा फेंक देते थे। ५० वर्ष पहलेकी बात है जब इस-पर कब्जा किया गया तो बहुतसा सीसा इधर उधर पड़ा मिला।

सन् १९०८तक सीसा गलानेका काम यहां नहीं होता था। सन् १९०६में बर्मा रेलवेकी एक शाखा खानकी ओर खोली गयी। उसी साल १२,००० टन सीसा और ४८५ टन छड़ मडाले भेजो

गयी। इसे गलाकर ५,०३० टन सीसा और २७,००० औंस चांदी निकाली गयी।

सन् १९११में गलानेका यह कारखाना मण्डालेसे हटाकर नामतू लाया गया। यह नगर खानसे केवल ११ मीलकी दूरीपर है। यहीं साफ करनेका भी एक कारखाना खोला गया। बिजलीकी शक्ति लगानेका यत्न किया जा रहा है और गलाईका काम बढाया जा रहा है।

सन् १९०८—०९ मे १४०,००० पौंड मूल्यका सीसा बाहरसे आया था। इसमें अधिकाश चद्दर थे, जो चायके डिब्बे या पाइप बनानेके काममें आये थे।

सन् १९१८में बावडिनकी खानसे ५०,६७८ टन कच्चा सीसा निकला।

जस्ता

जस्तेकी प्रधान पैदावार बावडिन शानस्टेटके सीसेकी खानमें है। सीसेके प्रकरणमें हम लिख आये हैं कि सीसेमें १८.७२ प्रति सैकडे जस्ता मिला रहता है। इसीको छानकर अलग करते हैं और जस्तेकी तरह बेचते हैं। यह जस्ता युद्धके पहले अण्टीवर्प और हम्बर्ग जाता था। इससे गन्धक तैयार होती थी। युद्धके कारण चालान कुछ कालके लिये बन्द हो गया तो रंगूनमें जस्तेकी ढेर लग गई। नामतूमें जस्तेसे गन्धक अलग करनेके लिये एक कारखाना खोला गया। इस कारखानेमें काम अच्छा होता है। सीसा गलानेवाले कारखानामें जस्ते

का नुकसान हो रहा है ;क्योंकि तलछटमें प्राय अंश जस्तेका रह जाता है। पर उसे अलग कर निकालना अभीतक असम्भव प्रतीत होता है। वास्तविक मूल्यके अतिरिक्त गन्धकके लिये जस्ता बड़े कामकी चीज समझी जाती है। इसलिये भारत सरकार जमशेदपुरमें जस्ता गलानेका कारखाना खोलना चाहती है। इस कारखानेमें जस्तासे गन्धक छानकर अलग किया जायगा तो ताता आयरन और स्टील कम्पनी अपने काममें लावेगी तथा अन्य काममें लाया जायगा।

सन् १९१८ तक तो जस्तेका चालान जापान और अमरीका गया पर उसके बाद नामतूमें कारखाना खोला गया और तभीसे चालान बन्द हो गया।

ताम्बा

ताम्बेकी पैदावार इस देशमें जितनी है उसके मुकाबिले २,०००००० पौंडके मूल्यकी अधिक खपत है। ताम्बेकी खानोंसे ताम्बा निकालनेका जो कुछ यत्न किया गया है उसमें किसी तरहका सफलता नहीं मिली। सीसेके प्रकरणमें हमने लिखा है कि ·०७ अंश ताम्बा जस्तेमें पाया जाता है। पता लगा है कि सिकिममें ताम्बेकी खानें हैं पर अभीतक उनमेंसे ताम्बा निकालनेका काम जारी नहीं किया गया है। सिंहभूम जिलेमें ताम्बा निकालनेके लिये बहुत उद्योग किया गया। रुपया भी पर्याप्त लगाया गया पर फल कुछ नहीं हुआ, इससे काम बन्द कर देना पड़ा। इधर राखाकी खानोंसे अच्छा ताम्बा निकलने लगा

है। इससे सफलताकी आशापर ताम्बा साफ करनेका एक कारखाना खोला गया है।

क्रोमाइट Chromate

बलूचिस्तान, मैसूर, मैसूरके शिमोगा और हसान जिले और सिंहभूममें इसकी खानें हैं। अन्डमन द्वीप तथा मद्रासके सलीम जिलेमें भी इसकी थोड़ी बहुत पैदाइश है। फौलाद बनानेमे यह लोहेमें मिलाया जाता है। इससे जो निमक निकलता है उसका इस्तेमाल चमड़ा सिझाने और रंग चढ़ानेमें होता है। १९१६, १९१७ और १९१८ की पैदावार देखनेसे विदित होता है कि १९१८ में पैदावार एकाएक बढ़ गई। इसके प्रधान कारण भैरापुर खानका खुल जाना है जिसमेंसे बहुत माल निकला।

युद्धके पहले केवल ६,००० टन पैदावार थी और सब हम्बर्ग (जर्मनी) चालान चला जाता था। हम्बर्गसे ईसन जाता था। १९१६-१७ में ६ हजार टन माल बाहर गया। १९१७ १८में १५ हजार टन गया और अगर जहाजकी कमी न पड़ी होती तो शायद और भी माल बाहर गया होता। ब्रिटन, इटली और जापान यही तीन प्रधान ग्राहक थे। १९१८-१९में यहासे कुल ३६,३८१ टन गया था। इसमें १२,७४० केवल मैसूरका था। इसका मूल्य २३,०२० पौंड था।

कलाडोनिया और रोडेसियामें भी यह धातु पैदा होती है और यही भारतके प्रधान प्रतियोगी हैं।

कोरण्डम Corundum

भारतमें यह धातु बहुतायतसे पायी जाती है, पर अभीतक खान खोदकर इसके निकालनेका प्रयत्न नहीं किया गया है। इससे पैदावार बहुत ही कम होती है। मैसूरमें इसकी पैदावार बहुतायतसे होती है। इसके बाद खासिया और जयन्तियाकी पहाड़ी (आसाम) में यह पायी जाती है। मद्रासका त्रिचनापली जिला तथा रीवा राज्यमें भी यह थोडी बहुत पायी जाती है।

कोरण्डम सफाईके काममें अधिक आता है। इसका व्यापार सभी नगरोंमें थोडा बहुत होता है। किसान लोग और ग्वाले इसे बटोर बटोर कर इकट्ठा करते हैं और बनियोंके यहा ला लाकर इसे बेंच जाते हैं। बाहरसे इसकी आमद रुक जानेके कारण माग बढ गई और इसके उत्पादनकी चिन्ता पडी। निदान आसाममें खान खोली गई। इस खानसे सन् १९१८ में १८६६ टन माल पैदा हुआ। अमरीकामें यह तैयार किया जाता है और कनाडामें फेल्सपरसे निकाला जाता है। इससे भारतका विदेशी व्यापार इसमें नहीं बढ सकता, क्योंकि भारत इनसे प्रतियोगिता नहीं कर सकता।

मोनेजाइट

मोनेजाइटकी पैदाइश अधिकतर ट्रावनकोरमें होती है। इसकी उपयोगिता इसलिये है कि इसमें थोरिया (Thorn) नामकी धातु पाई जाती है। यह धातु गैसबत्तीके मेण्टल बना-

नेके काममे आतो है। सन् १९११ में अनुसन्धानसे मालूम हुआ कि कन्याकुमारी अन्तरीपके पासकी भूमिमें यह धातु है। निदान एक जर्मन कम्पनीने वहा कारवार शुरू किया और दो वर्षमे बहुतसा माल निकालकर हम्बर्ग भेजा। मोनेजाइटसे थोरिया निकालनेका काम अभीतक इस देशमें नहीं होता। इसके पहले ब्रेजिलके हाथमें इस व्यापारका एकाधिपत्य था। खोजसे मालूम हुआ है कि मद्रास प्रान्तके टेनिवली जिलेमें, विजगापट्टममें वाल्टेयरके पास तथा कोचीन स्टेटमें भी मोनेजाइट है।

ट्रावनकोरसे इतने दिनोंमें ७,७०८ टन माल गया जिससे २२०,०० पौंड मिला। जर्मन कम्पनीके अन्त हो जानेसे आजकल ब्रिटिश कम्पनीके हाथमें कारोबार है। टूटीकोरिन बन्दरगाहसे १९१७ १८ में ६०४ टन और १९१८-१९ में ८८२ टन माल गया जिससे २७,००० तथा ४०,००० पौंडकी आमदनी हुई। अमरीका, ब्रिटन और जापानमें ही माल जाता है।

मैगनिसाइट

मैगनिसाइटसे कार्बोनिक एसिड गैस तैयार होती है। सलेमके पास चाक पहाडोंमें प्राय ३॥ मील भूमिमें यह धातु पाई जाती है। थोडा बहुत माल मैसूरसे भी निकलता है। कुमारधोबीमें "फायरब्रिक" बनानेके काममें यह आता है। जमशेदपुरके भट्ठोंमें इससे ईंटे लगाई जाती हैं। सीमेंट और भट्टेके लिये ईंट बनानेके काममें आनेके अतिरिक्त इससे गन्धक बनाये जानेकी भी सम्भावना है।

इस धातुका सबसे बड़ा खरीदार ब्रिटन है। युद्धके पहले थोड़ा बहुत माल जर्मनी और बेल्जियम भी जाता था।

लाह

लाहकी पैदाइश कीड़ोंसे होती है। अनेक पेड़ ऐसे हैं--पीपल, बैर आदि-- जिसमें लाहके कीड़े बैठ जाते हैं तो उसकी टहनियोंमें लाल लाल दाने निकल आते हैं। कुसुमके पेड़की लाह सबसे अच्छी होती है। पर लाहकी अधिकांश पैदावार पलास, पीपल, बबूल, अरहर, बैर, सिरीस और सालके पेड़ोंमें होती है। लाहकी खेती यहाका पुराना व्यवसाय है। १६ वीं सदीसे ही लाह वानिंशके काममें आती थी।

पूसा कृषि कालेजमें लाहकी खेती करना सिखाया जाता है। यहा पालतू कीड़े मिलते हैं। ये कीड़े पेड़ोंपर बैठा दिये जाते हैं और थोड़े ही दिनोंके बाद पेड़ लाहसे भर जाता है और लाल हो जाता है।

लाहकी खेती निम्नलिखित जिलोंमें बहुतायतसे होती है। (१) मध्यभारत—इसमें छोटा नागपुर, तथा बगाल, बिहार और उड़ीसा तथा सयुक्त प्रान्तके जिले, हैदराबाद राज्यके उत्तर पूर्वी जिले, मध्यप्रान्त (विशेषकर छत्तीसगढ और नागपुर परगना) यहा पलास और कुसुमसे लाह निकाली जाती है। (२) सिन्ध देशमें बबूलकी लाह मिलती है। (३) मध्य आसाममें पीपल और अरहरके पेड़ोंमें लाह होती है। (४) उत्तरी बर्मा और शानराज्यमें पीपल तथा पलासके पेड़ोंमें लाह

होती है। इसके अतिरिक्त पञ्जाब वगैरहमें भी थोडा बहुत लाह होती है। मिर्ज़ापुर, बलरामपुर और विहारमें लाहके अधिक कारखाने हैं। इधर कई वर्षों से मिरजापुरके कारखाने ढीले पड गये है। कलकत्तामें दो कारखाने हैं जिनमें विशेष तरीकेसे लाहसे चपडा तैयार किया जाता है।

लाहकी खेती सदा अनिश्चित रहती है। कभी भी नहीं कहा जा सकता कि इस वर्ष इतनी लाह पैदा होगी। यही कारण है कि बाज़ार-दरमें घोर अन्तर पड़ा करता है। उदाहरणके लिये १६०३—४ में २६० शिलिंग प्रति हडर दाम चढ गया और १६०८—६ में यह मूल्य गिरकर ६० शिलिंग रह गया। युद्धके एक वर्ष पहले तथा एक वर्ष बादके मूल्यमें इतना अन्तर पड गया कि लाहकी खेती करना ही कितनोंने छोड दिया। १६१५ में बार्निश वगैरहके खचमें आ जानेसे लाहका रोजगार फिर पनपा। नहीं तो इस समय यही सन्देह हो रहा था कि यह व्यापार सदाके लिये उड जायगा।

चपडेकी फसलकी चार ऋतुए हैं—बैसाखी, कुसमी, कतिकी, जेठुआ। कतकीकी फसल जेठुआसे अधिक होती है पर व्यापारिक दृष्टिसे जेठुआका स्थान ऊचा है। सालभरमें लाहकी पैदावार ७३०,००० हण्डर होती है। इसके अलावा २०,००० हण्डर लाह श्याम और इण्डोचीनमे पैदा होती है। एक मन लाहमें करीब १० सेर चपडा तैय्यार होता है। इस तरह सालमें प्राय ३५०,००० हण्डर चपडा इस देशमें तैय्यार होता है।

हम ऊपर बतला आये हैं कि लाह कीड़ेसे पैदा होती है। जिस पेड़में ये कीड़े लग जाते हैं उसे लाहसे भर देते हैं। लाह पेड़ोंमें एक तरहका रोग है। डालिया, पत्ते तथा टहनिया सारी लाहसे भर जाती हैं। इस लाहमें प्रधानतः तीन पदार्थ शामिल रहते हैं—सबसे ऊपर लाह, रेजिन और उसके नीचे लासा। यह चिपचिपासा पदार्थ होता है। और लाहके कीड़ेके चारों ओर लिपटा रहता है। लाहका रंग कीड़ेके बदनसे आता है।

हिन्दुस्तानमें लाहकी चूड़ी पहननेका रिवाज बहुत अधिक है। इस देशकी स्त्रिया चाहे किसी प्रान्तकी रहनेवाली हो और किसी भी जातिकी क्यों न हों—हिन्दू हों चाहे मुसलमान—सभी चूड़ी पहनती हैं। हिन्दुओंमें तो यह सौभाग्यसूत्र मानी जाती है। लाहकी किरी चूड़ी बनानेके काममें आती है। किरीकी खपत बहुत अधिक है। इसके अलावा लाहके बर्तन भी बनते हैं। धातुओंके बर्तनपर इसकी कलई भी की जाती है। किरीका प्रयोग इस काममें भी होता है।

लाहके व्यापारका एकाधिपत्य भारतके हाथमें है। केवल ढाई फी सदी लाह श्याम और इण्डोचीनमें पैदा होती है। जापान फौर्मोशा, और जर्मन पूर्वी अफ्रीकामें लाहकी खेतीके लिये निरन्तर उद्योग किया गया पर सफलता नहीं मिली।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि भारतसे विदेशोंमें कितनी लाह तथा कितना चपड़ा गया।

सन्	चपड़ा	वटनलाह	अन्य तरहकी	Sticklac	Seedlac
१९१३-१४	२७५३५७ हण्डर	२१८६५ हण्डर	२३६४६ हण्डर	११६६ हण्डर	१७०६७ हण्डर
१९१८-१९	२२२८८९ ,,	३५२० ,,	६५७५ ,,	४ ,,	६१११ ,,
१९१९ २०	३३८९६० ,,	१३५३९ ,,	११९३२ ,,	१९९५ ,,	२४८० ,,
१९२० २१	२८०२५९ ,,	१०११८ ,,	१६४४६ ,,	६२७ ,,	६८७ ,,
१९२१ २२	३७९९४४ ,,	१०७२४ ,,	४१५६० ,,	८८२ ,,	१८२४ ,,
१९२२ २३	३८३३७७ ,,	१८३८७ ,,	६६६१६ ,,	२८९७ ,,	४७३४ ,,

अमरीकामें लाहकी खपत बहुत अधिक है। इससे ग्रामोफोनके सामान—चूड़िया विशेषकर—वार्निश, लिथोकी रोशनाई तथा बिजलीके कारखानोंमें जोड़नेके सामान बनाये जाते हैं। इसके प्रधान ग्राहक अमेरीका, ब्रिटेन, जर्मनी तथा फ्रांस हैं। इनके अतिरिक्त अन्य देशोंमें भी थोड़ा बहुत माल जाता है।

लाहका रङ्ग—लाहके रंगका चालान एक दमसे बन्द हो गया। रेशम और ऊनकी रंगाईमें लाहका प्रयोग किया जाता है। इससे लाल रंगमें शोखी आ जाती है। अगर लाहका सच्चा रंग तैयार किया जाय तो उसकी अच्छी खपत हो सकती है।

लाहका लासा—लाहका लासा जूतेकी वार्निशमें मिलाया जाता है। पर व्यापारी लोग लाहसे लासेको अलग नहीं करते, क्योंकि उनको भ्रम है कि इससे चपड़ा खराब हो जाता है।

आयात—श्याम और इण्डोचीनमें जो लाह पैदा होती है उसका चालान सीधे भारत होता है और यहां उसे गलाकर चपड़ा तैयार किया जाता है।

यहांसे जो लाह विदेशोंमें चालान की जाती है वह चपड़ेके रूपमें जाती है। उसका रंग काला और नारंगिया होता है। उसका टी० एन० मार्का है। यह लाह पलासके पेड़की होती है। टी० एन० मार्का व्यापारमें प्रचलित है और इसीके आधारपर सौदा यहां और लण्डनके बाजारोंमें भी होता है।

अमरीकामें भी टी० एन०मार्काके आधारपर ही व्यापार होता है। फर्क केवल इतना ही है कि इसमें ३ प्रति सैकड़े बाद दिया जाता है। इसके अतिरिक्त "सुपरफाइन" मार्का भी अमरीकामें चलता है। शर्त यह है कि दोनों मार्कामें असल लाहका चपड़ा होना चाहिये। अगर ५ प्रति सैकड़ेसे अधिक रेज़िन निकली तो शेलाक इम्पार्टर्स एसोसियेशनकी ओरसे क्षति पूर्ति की जाती है।

१९०४ से लण्डनमें भी यही नियम बना दिया गया। उस समयसे तीन प्रति सैकडेके दर रेजिन चपडेमें और १०प्रति सैकडेतक गार्नेट लाहमें बाद दिया गया। यह नियम केवल उन्हीं लोगोंके लिये था जो निर्धारित मार्काकी लाह (चपडा) चालान करते रहे। प्राइवेट व्यापारियोंके लिये कोई मनाही नहीं थी। कितने कारबार ऐसे हैं जिनमें सच्चे चपडेकी जरूरत नहीं पडती। लाहके जल्दी पिघल जानेके लिये लाह और चपडेमें रेजिन मिला देते हैं। चपडेका रङ्ग बदलनेके लिये उसमें रङ्ग बदल देते हैं।

रेशमी टोपिया (अङ्गरेजोंकी हैट) बनानेके लिये चपडा खर्चमें आता है। उसमें १० प्रति सैकडेतक रेजिन चल सकता है। अगर इससे अधिक रेजिन मिला रहता है तो उसे मेल कहते हैं। कलकत्ताके चपडेके व्यापारी नियत अंशमें रेजिनकी गारटी देते हैं। अगर उससे अधिक रेजिनकी मेल पायी जाय तो ४ प्रति सैकडेतक आठ आना प्रति मनके हिसाबसे हर्जाना देना पडता है। इससे अधिकपर १) मनके हिसाबसे देना पडता है।

व्यापार—लाहका व्यापार भी उसी तरह होता है जिस तरह अन्य व्यापार अर्थात् पैदावारसे लेकर चालानतक इतने दलाल इसमें नफा उठा लेते हैं कि मूल्य बहुत कुछ बढ जाता है। लाह बटोरनेवाले अथवा पेडोंसे छुडानेवाले बनियोंसे पेशगी लेकर उनके हाथ लाह बेचते हैं। दूसरेके हाथ ये लाह नहीं बेच सकते। यूरोपके लिये तीन महीनेकी मियादपर और अमरीकाके लिये चार महीनेकी मियादपर लाहकी बेची होती है।

लकड़ी

हमारी सरकारको जगलकी आमदनीका बड़ा भारी सहारा है। १९१७ १८ में १५ लाख पौंडकी आमदनी जगलोंसे हुई थी। जङ्गल विभागकी गणनाके अनुसार २५ लाख वर्गमील भूमि जङ्गलोंसे छाई है। उसमेंसे प्राय १००,००० वर्गमील भूमि तो जङ्गल विभागके पूर्ण सगठनमें आ गई है और उसमें काम हो रहा है।

सरकारी जगलोंसे सालाना लकड़ी और जलानेके काठ प्राय ५० लाख टन निकलते हैं। उसमेंसे ३६६,००० टन साखूकी लकड़ी केवल वर्मासे आती है। इसके अलावा प्रधान प्रधान लकड़ियोंके नाम जो अधिक सख्यामें कटती हैं, यह हैं :— देवदार, साल, सीसम। इसके अलावा करीब १००,००० एकड़ भूमिमें पेड़ लगाये गये हैं, जिनमेंसे प्राय जलानेकी लकड़िया निकलती हैं। मद्रासको निलाम्बरम् भूमि इसके लिये प्रख्यात है।

साखू

साखूका चालान बाहर अधिक जाता है। चालान सीधे बर्मासे जाता है। युद्धके पहले ब्रिटेन और जर्मनी दो प्रधान ग्राहक थे। माग पूरी करने भरकी लकड़ी न निकलनेके कारण मूल्य दिनपर दिन बढ़ता जा रहा है।

श्यामसे भी साखूका चालान नदीमें बहाकर बर्मा आता है और मौलमीनके बन्दरगाहसे विदेश भेजा जाता है। सन् १९१६मे

यह चालान १७,५४६ टन था । सालूके अतिरिक्त अन्य लकडिया भी बाहर जाती हैं पर उनका चालान बहुत कम है।

इतनी लकडी होनेपर भी विदेशोंसे यहां बहुत लकडी आती है जो अनेक तरहके सस्ते कामोंमें लगती है। सलाईकी लकडीका चालान यहा अधिक होता है। यह लकडी अमरीकासे अधिक आती है। आस्ट्रेलियासे 'जरा' नामकी लकडी युद्धके पहले आती थी। इसके अलावा रेलवे कम्पनिया पटरीके नीचे देनेके लिये लकडी विदेशोंसे ही मगाती हैं।

वर्मामें प्राय. १०० लकडी चीरनेके कारखाने हैं—आठ आसाममे हैं, दो बम्बईमें हैं, एक मध्यप्रान्तमें है, ३ मद्रासमें हैं। सबसे वडा कारखाना कालीकटके निकट कलाईमें है। इसके अतिरिक्त एक एक कारखाने पञ्जाब, सयुक्तप्रान्त तथा मैसूरमें हैं।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि यहासे कितना माल बाहर जाता है तथा बाहरसे कितना माल यहा आता है।

सन्	निर्यात (क्यूबिक टनमें)	आयात लकडी		आयात रेलवेकी पटरी
१९१३-१४	५८६७२	९६१४८	क्यू०टन	१०९००६३ हडर
१९१८-१९	३२३१३	३६७८०	,,	——
१९१९ २०	५९५१२	६८०३६	,,	१५४२० ,,
१९२०-२१	४५४४६	६२३८२	,,	४५८१६० ;
१९२१-२२	१९१९४	५४४४४	,,	२८०५[illegible] ,,
१९२२-२३	३२४२६	३६१४६	,,	३२६७४० ,,

चन्दन

चन्दनके पेड़में एक विशेषता यह है कि वह कभी भी नहीं सूखता। चन्दनका पेड़ दक्षिण भारतमें ही होता है। विशेषकर मैसूर राज्यमें ही चन्दनके पेड़ पाये जाते हैं। मैसूरके अतिरिक्त कुर्ग, कोयम्बटूर तथा सलेम जिलेमें भी चन्दनके पेड़ मिलते हैं।

चन्दनका व्यापार बहुत पुराना व्यापार है। चन्दनकी हीर तश्तरिया, तस्वीरके चौखटे तथा अनेक तरहके नकाशीके काम बनानेमें आती हैं। हिन्दू लोग चन्दनको परम पवित्र मानते हैं और उसे घिसकर लगाते भी हैं। अमीर उमरा हिन्दू मृतकोंका अन्तिम संस्कार भी चन्दनकी लकड़ीसे करते हैं। पारसी लोग अग्निके उपासक हैं। उनके मन्दिरमें अग्नि कभी भी बुझने नहीं पाती। चन्दनकी लकड़ी जलाकर ही वे उस अग्निको प्रज्वलित रखते हैं। चन्दनकी हीरसे तेल भी निकाला जाता है। ५ से ७ प्रति सैकड़ेतक तेल निकलता है। चन्दनका तेल बहुत ठंढा होता है। दवाके काममें आता है। खुशबूदार तेल बनानेमें भी लोग इसका प्रयोग करते हैं। इत्रकी तरह इसे सूंघते भी हैं। चन्दन-के साबुन भी बनने लगे हैं। युद्धके पहले २,७५० टन चन्दनकी लकड़ी प्रति वर्ष कटती थी। उसमेंसे प्राय ६००टन यहीं जलाने, घिस कर लगाने तथा तेल निकालनेके काममें लग जाती थी। युद्धके जमानेमें यह घटकर २,०५० टन हो गयी थी। सामुद्रिक व्यापारके गणना-विभागने केवल मूल्यका अंक दिया है, वज-

नका नहीं। नीलामसे जो रुपया आता है उससे इस रकमको मिलान नहीं की जा सकती, क्योंकि उसमें राह खर्च, उठाने चढानेका भाडा और दलालोंका लाभ है।

मैसूर और कुर्गमें चन्दनके जगल हैं। उनपर देशी राजाओंका अधिकार है। मद्रास प्रान्तमें जो पेड हैं वह व्यक्तिगत होते हुए भी सरकारके एकाधिपत्यमें हैं। चन्दनकी विक्री नीलाम द्वारा होती रही। सन् १९१६में मैसूर राज्यमें नीलाम बद कर दिया गया। अब चन्दनकी लकडी नियत दरपर बेची जाती है। सन् १९१२तक जर्मनी सबसे बडा ग्राहक था। युद्धके आरम्भ होनेसे जर्मनीके लिये द्वार बन्द हो गया। इससे सन् १९१४में विक्री बहुत कम हुई। सन् १९१५ में अमरीकाने अधिक माल खरीदा। १९१६ में मैसूर राज्यकी ओरसे बगलौरमें चन्दनसे तेल निकालनेके लिये कारखाना खोला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि मैसूर राज्यने चन्दनकी लकडी बेचना कम कर दिया। इससे मद्रास और कुर्गके चन्दनका भी मूल्य बढ गया। अगर मद्रास प्रान्तके सरकारी अफसर और कुर्ग दरबार चन्दनकी लकडी नीलाम करना बन्द कर दे और मैसूर दरबारसे ते करके चन्दनका तेल निकलवाना आरम्भ कर दें तो चन्दनके व्यापारपर एकाधिपत्य स्थापित हो जाय, क्योंकि पश्चिमी आस्ट्रेलिया और मलाय द्वीप पुजमें जो चन्दन पैदा होता है उसकी हीरमें तेल बहुत कम निकलता है।

चन्दनका तेल—चन्दनसे तेल निकालनेका व्यापार भारतमें

बहुत पुराना है । अभीतक कन्नौजमें उसी पुराने तरीकेसे चन्द
का अतर निकालते हैं, पर उस तरीकेसे नुकसानी बहुत हो
है। मद्रास प्रान्तमें चन्दनसे तेल निकालनेके छोटे-मोटे का
खाने बहुत दिनोंसे हैं, पर मैसूर राज्यमें चन्दनसे तेल निकाल
कानूनन नाजायज था। युद्धके दिनोंमें लकडीकी माग कम
जानेपर मैसूर दरबारको विवश होकर इसकी खपतका जरि
निकालना पडा। निदान १९१६ में बगलौरमें तेल निकालने
एक कारखाना खोला गया। इसमें ६००० पौण्ड प्रति म
तेल निकलता है । मैसूर राज्यको इससे बहुत लाभ हुआ, क्यों
उसी समय तेलकी माग ब्रिटनमें बढ गई ।

तेल निकालनेसे सबसे बडा लाभ महसूलमें घटती होना
अगर तेल निकालनेका काम तेजीसे चलाया जाय तो इस म
भी बहुत बचत हो। एक टन चन्दनकी लकडीमें १०० पौंड ते
निकलता है। चालान करनेमें लकडीका दसवा हिस्सा अ
इसके लिये चाहिये। इधर मैसूरमें दूसरा कारखाना भी खो
गया है।दोनों कारखानोंमें प्राय २,११२ टन लकडीकी खपत

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि यहासे च
नकी लकडी तथा तेलका चालान किस परिमा
होता है ।

सन्	चन्दनकी लकडी पौण्ड	तेल पौण्ड
१९१३-१४	१२८६२६	——
९१८-१९	१०५२६	२२७५६३
१९१९-२०	६२१३७	२७८८४५
१९२०-२१	२९२२४	२०१९८५
१९२१ २२	४७५२?	९८३३७
१९२२-२३	५६२७	१५७७०२

युद्धके पहिले जर्मनी, ब्रिटन, अमरीका, फ्रास, हालेण्ड, लङ्का द्वीप, मिस्र तथा जापानमें चन्दनकी लकडीका चालान जाता था। युद्धके बाद केवल इतना अन्तर पडा है कि जर्मनीमें मालका जाना बंद हो गया और ब्रिटन, अमरीका और जापानमें अधिक माल जाने लगा है।

मैसूर राज्यके तेलका प्रधान ग्राहक केवल ब्रिटन था। पर इधर चार वर्षो से जापान भी बहुतसा माल मगाने लगा है। यहाके प्रधान ग्राहक हैं ब्रिटन, जापान, फ्रास, हागकाग, मिस्र, आस्ट्रेलिया, स्ट्रेट सेटलमेंट और मलाय राज्य। इनके अलावा अन्य देशोंमें भी थोडा थोड माल जाता है।

आयात—यहा जो चन्दन उत्पन्न होता है उसके अलावा आस्ट्रेलियासे थोडा बहुत चालान धूप और दसाग बनानेके लिये आता है।

चन्दनका चालान अधिकतर मगलोर, टेलीचरी, कालीकट

और कोचीनके बन्दरगाहोंसे होता है। तेलका चालान मद्रास, मंगलोर, कलकत्ता और बम्बईके बन्दरगाहोंसे होता है।

रंगाई और चमड़ा सिझाईके सामान।

बहेड़ा या बहेरा

बहेरेकी दो जाति होती है। एक जाति तो अण्डेकी शकलकी नुकीली और ठोस होती है और दूसरी जाति गोली और पिलपिली होती है। पहली जाति उत्तम समझी जाती है और उसकी खपत भी बहुत है। यों तो बहेरा अनेक कामोंमें आता है, पर इसका प्रधान प्रयोग चमड़ा सिझानेके काममें होता है। बहेरेके पेड़ भारतके सभी प्रान्तोंमें पाये जाते हैं। यूरोपके बाजारमें पांच किस्मके बहेरे चलते हैं। जिन जिन बाजारोंसे उनका चालान होता है उन्हींके नामपर वे मशहूर हैं। जैसे त्रिम्बलीपट्टमसे जानेवाले बहेरेका नाम त्रिम्बली है। बम्बईसे चालान जानेवाले बहेरेका नाम राजापुरी और बेंगलूरा है। मध्य प्रान्तसे जानेवाले बहेरेका नाम जबलपुरी है। लन्दनके बाजारमें मद्रासका नं० १ समूचा दाना सबसे अधिक चलता है। त्रिम्बली और जबलपुरीके सम्बन्धमें भिन्न भिन्न मत हैं।

अभीतक बहेरेका चालान दानेके रूपमें होता है। इससे भाड़ा अधिक लगता है। और बहेरेको पीसकर चालान किया जाय तो भाड़ेकी रकममें बहुत कुछ बचत हो सकती है। कल

कत्तेमें पिसाईका काम थोड़ा बहुत होता है। सन् १९१६ में १,९०० टन बुकनी बाहर भेजी गयी थी।

युद्धके पहले बहेरेका चालान अधिकतर ब्रिटन, जर्मनी, अमरीका, बेल्जियम, फ्रांस और आस्ट्रियाहंगरीको होता था। तबसे ब्रिटनका चालान धीरे धीरे घट रहा है तथा अन्य देशोंका बढ़ रहा है।

बम्बई, बङ्गाल और मद्रासके बन्दरगाहोंसे अधिकतर माल जाता है।

नील

नीलसे जो रङ्ग पैदा होता है उसका नाम भी नील है। १९०७—०८ तक रंगाई तथा चमड़ेकी सिफाईके मदमें जितना सामान बाहर जाता था उसमें ५० प्रति सैकड़ेसे भी अधिक नीलका भाग था। १९१३—१४ में यह घटकर पांचवा हिस्सा हो गया था, पर तबसे धीरे धीरे माग बढ़ रही है। नीलका व्यापार यहाका प्राचीन व्यापार है। स्थान स्थानपर नीलकी उजड़ी हुई कोठिया और गोदाम इस बातको बतला रहे हैं कि किसी समय भारतके हाथमें नीलका एकाधिपत्य था। उत्तरी हिन्दुस्तान और विहारके किसी जिलेमें भ्रमण कीजिये। प्रत्येक ४ या ६ गावके बीचमें आपको बड़े बड़े उजड़े अहाते मिलेंगे। आसपासके गाववालोंसे पूछिये। वे उदास होकर उत्तर देंगे—"इनमें नीलकी कोठिया थीं।" यह व्यवसाय पुर्तगालवालोंके

हाथमें था। भारतके पश्चिमी किनारेपर इनका सिक्का था। इससे इसी तरफ इन्होंने नीलकी खेती अति विस्तृत रूपसे करवाई थी। १६७८ में ईष्ट इन्डिया कम्पनीके हाथमें यह व्यवसाय आया। उसने बङ्गालमें इसका प्रचार किया और २०० वर्ष तक इस रोजगारको खूब बढाया। १८३७में इस व्यवसायका प्रचार तिरहुत और संयुक्त प्रान्तमें हुआ। इस समय भारतने नीलके व्यवसायमें इतनी अधिक उन्नति की कि उसका स्थान संसारमें सबसे ऊंचा हो गया। संसारमें उसका कोई भी प्रतिद्वन्द्वी नहीं रह गया। वेस्ट इण्डीजकी नीलने भारतकी नीलसे प्रतियोगिता की, जावाने भी नील पैदा करना आरम्भ किया, पर इससे भारतके रोजगारपर किसी तरहका असर नहीं पड़ा। भारतके दुर्भाग्यसे १८६७ में जर्मनीने रासायनिक क्रिया द्वारा नीलका रङ्ग निकालना आरम्भ किया। इसका प्रभाव भारतीय नीलके रोजगारपर पड़ा। सन १६१० आते आते जावाकी खेती तो एकदम बन्द हो गयी और भारतकी खेती भी पांचवे हिस्सेसे कम रह गई।

युद्धके आरम्भ होनेसे जर्मनीसे नीलका आना बन्द हुआ। रङ्गकी मांग बढ़ी और दाम चढ़ गया। इससे नीलके खेतिहरोंको पुन प्रलोभन मिला और अधिक खेती होने लगी। पर इस नयी खेतीका इतना अच्छा फल नहीं हुआ जितना होना चाहिये। इसका प्रधान कारण यह था कि नीलकी खेती इस बार संयुक्तप्रांत और मद्रासमें आरम्भ की गयी। यहांके

लोग नीलसे रङ्ग निकालना एकदम भूल गये थे। इससे विहारमें जितना रङ्ग निकलता था उतना मद्रास और संयुक्त-प्रातमें नहीं।

नीचेकी तालिकामें नीलकी खेती, पैदावार और निर्यातका ब्योरा दिया गया है।

सन्	भूमि	पैदावार	निर्यात
	(एकड)	(हण्डर)	(हण्डर)
१८९६ ९७	१६८८९०१	१६८६७३	१६८५२२
१९१२-१३	२२०१००	२९१००	११९५७
१९१३-१४	१७२६००	२६८००	१०८३९
१९१४-१५	१४८४००	२५२००	१७१४२
१९१५-१६	३५३१००	५५१००	४१९३२
१९१६-१७	७७००००	९५७००	३४२३०
१९१७-१८	७१०६००	१२७०००	३१०६२
१९१८ १९	२९२०००	४८६००	३७७०७
१९१९-२०	२४८३००	४३३००	३२६८७
१९२०-२१	२४५८००	४३७००	१०२५०
१९२१-२२	३३४८००	६७३००	१२३६२
१९२२-२३	२८५३००	५२४००	४५३५

नीचेकी तालिकामें दिखाया गया है कि सन् १९१४-१६ तथा १९२२-२३ में प्रत्येक प्रातमें कितने एकड भूमिमें नीलकी खेती हुई और कितनी पैदावार हुई।

	१९१४-१५		१९२१-२२	
प्रांत	एकड भूमि	पैदावार (हंडरमें)	एकड भूमि	पैदावार (हंडरमें)
मद्रास	७१७००	१३६००	१४८३००	३२५००
विहार और उडीसा	३८५००	५५००	३५४००	४८००
पञ्जाब	२०४००	३४००	५०३००	६३००
संयुक्त प्रांत	१२३००	१५००	३६१००	४०००
बम्बई तथा सिंध	४२००	१०००	११९००	७२००
बंगाल	१३००	२००	७३००	३००
जोड	१४८४००	२५२००	२८५३००	५२४००

ऊपरकी तालिकासे विदित होता है कि सबसे ज्यादा खेती मद्रासमें होती है यद्यपि यह फुटकर है। पर यहाकी नीलसे खराब रंग निकलता है। इस रंगकी खपत इस देशमें ही अधिक होती है। इसस जो रंग अच्छा निकलता है उसकी खपत लेवेण्टमें है। अभी मालूम हुआ है कि ट्रावनकोरकी जमीनमें सबसे उत्तम नील होती है।

विहारमें नीलकी फसल दिसम्बरमें तैयार हो जाती है और मार्च आते आते नीलका सौदा खतम हो जाता है। मद्रासकी

फसल जुलाईमें तैयार होती है और फरवरीतक सौदा होता रहता है। नील तीन नामसे बाजारमें बिकती है। बिहारी, अवधी और बनारसी तथा कुर्पा।

बिहारकी खेती निलहे साहबोंके हाथमें है। इसलिये बिहारकी नीलका रंग अच्छा होता है। चालान भी बिहारको नीलका ही अधिक होता है।

नीलका चालान प्रधानत कलकत्ता, मद्रास और बम्बईके बन्दरगाहोंसे है। बिहारकी नीलका चालान ब्रिटन, मिस्र, फारस और अमरीकाको होता है।

रासायनिक क्रियासे जो नील तय्यार होती है उसकी अधिकतर खपत चीन और जापानमें है। सन् १९१३में दोनों देशोंने मिलकर २७,००० टन नील ली थी। उसी सन्‌में ब्रिटन, ब्रिटिश उपनिवेश तथा अमरीकाने मिलकर प्राय ६०००टन नीलका रङ्ग लिया था। विदेशी प्रतियोगिताके कारण भारतका माल इन देशोंमें नहीं पहुचता। युद्धके दिनोंमें भी भारतने उस रोजगारको अपने हाथमें कर लेनेका यत्न नहीं किया। भारतकी नीलके व्यवसायका भविष्य चीन और जापानकी प्रतियोगिताके अन्त कर देनेपर ही निर्भर करता है। युद्धके बादसे जर्मनी फिर स्वतन्त्र हो गया है। इससे आशंका की जाती है कि वह फिर नील तय्यार करके संसारके बाजारको पाटना आरम्भ करेगा और नीलकी खेतीपर धक्का पहुचेगा।

सन् १९१८ के विधानसे नीलके चालानपर मनपर १ रु०महं

सूल बैठा दिया गया है। इस मदसे जो आमदनी होगी उससे नीलकी खेती तथा व्यवसायके लिये वैज्ञानिक अन्वेषण किये जायगे। ट्रावनकोर राज्यसे जो नील ब्रिटिश भारतसे बाहर जाती है या अदन जाती है उसपर भी इसी हिसाबसे महसूल चढाया गया है। इस मदसे पूसा कृषि-कालेजमें नीलके सम्बन्धमें अनुसन्धान हो रहा है। सन् १९२३ के बादसे यह कर उठा दिया गया।

हल्दी

हल्दीका प्रयोग दो तरहसे होता है। एक तो यह खायी जाती है और दूसरे इससे एक तरहका रंग निकाला जाता है। फार्मोसाकी हल्दी सबसे अच्छी होती है। इसके बाद भारतका नम्बर है। कोचीन मार्काकी भारतीय हल्दी विदेशी बाजारमें प्रसिद्ध है। यह ट्रावनकोर राज्यमें पैदा होती है। इसके बाद देशी, मछलीपट्टम, मद्रास और गोपालपुरकी हल्दीका स्थान है। कलकत्ताके बाजारमें पवना और देशी हल्दी चलती है।

हल्दीका चालान जर्मनी, फ्रांस, लंकाद्वीप, ब्रिटन और रूस जाता था। बम्बई, मद्रास, टूटीकोरिन, कोचिन, कलकत्ता और रंगूनके बन्दरगाहसे हल्दीका चालान होता है।

खैर या कत्था

खैरकी पैदावार हिमालय तथा बर्मामें सबसे अधिक होती है। संयुक्तप्रान्तमें भी खैर बहुतायतसे पैदा होती है। अहरौरा

(मिर्जापुर जिला) का बाजार खैरके व्यवसायके लिये प्रख्यात है। पेड काटकर उसकी हीर निकाल ली जाती है। उस हीरको पानीमें खूब उबालते हैं। रंग उतर आनेपर पानीको छान कर जमाते हैं। ठंडा होनेपर पानी जम जाता है। यही खैर या कत्था है। कत्थेका रोजगार छोटे छोटे बनियोंके हाथमें है,इससे पैदावारका निश्चित अङ्क नहीं मालूम हो सकता। खैरका चालान अधिकतर ब्रिटन जाता है। जर्मनी, फ्रांस और हालैण्ड भी माल मंगाते हैं। कलकत्ता और रंगूनके बाजारसे माल बाहर भेजा जाता है। यदि किसी वैज्ञानिक ढङ्गसे खैरका रंग दूर कर दिया जाय तो इसकी खपत और भी बढ़ सकती है।

डिवी डिवी

यह अमरीकाका पेड़ है। प्राय. ८० वर्षके होते हैं कि यह पेड पहले पहल इस देशमें लगाया गया। चमडा रंगने और सिझानेके लिये जिस वस्तुकी आवश्यकता पडती है वह इसमें बहुतायतसे पाई जाती है। यह पेड मद्रास और बम्बई प्रान्तमें ही अधिक पाया जाता है। किसी समय देशमें ही इसकी खपत अधिक रही, पर अब प्राय कुलका कुल विदेश भेज दिया जाता है।

इस लकडीका एकमात्र ग्राहक ब्रिटन है। कोकोनादा और मद्रास बन्दरगाहसे इसका चालान होता है।

सन

सन दो प्रकारका होता है। एक रेशेके लिये बोया जाता है

और दूसरी नशीली वस्तुओंके लिये सनकी खेती यहां रेशेके लिये उतनी नहीं की जाती जितनी उससे उत्पन्न होनेवाली नशीली वस्तुओं—भांग,गांजा और चरस—के लिये की जाती है। रेशेके लिये हालमें ही इसकी खेती होने लगी है। इसके दो प्रधान क्षेत्र हैं (१) उत्तर-पश्चिमी हिमालयके गढवाल, कमाऊ, नैपाल, शिमला, कांगडा और काश्मीरके जिले (२) सिंध। सिन्धमें अभी भी कम ही खेती होती है।

वनस्पति शास्त्र तथा इतिहासकी पुस्तकोंका अवलोकन करनेसे विदित होता है कि रेशेवाले सनकी खेती इस देशमें प्राचीन कालसे होती चली आयी है। इसकी खेती इस देशमें उस समय भी होती थी जब लोग पाटका नामतक नहीं जानते थे। ईस्ट-इण्डिया-कम्पनीने सबसे पहले इस व्यवसायको अपने हाथमें उठाया और रूसके सनके मुकाबिलेमें लण्डनके बाजारोंमें बेचना आरम्भ किया। ईस्ट-इण्डिया-कम्पनीने इसकी खेती आरम्भ करवायी। इस समय सनकी खेती बम्बई, संयुक्तप्रान्त और मध्य प्रदेशमें बहुतायतसे होती है। दक्षिण भारतमें प्राय २००,००० एकड भूमिमें सनकी खेती होती है। गोदावरी, कृष्णा और टिनेवली जिले तथा हैदराबाद-राज्य प्रधान स्थान हैं। सनकी खेती रेशेके लिये भी की जाती है और चौपायोंके चारेके लिये भी। ऊपरका आधा भाग छांटकर चौपायोंको खिला देते हैं और नीचेका भाग पानीमें गाडकर सडाते हैं। सड जानेपर उसे निकालकर धोते हैं और फिर सूखनेके लिये धूपमें डाल

देते हैं। सूख जानेपर उसे छुडाते हैं। सनकी फसल खरीफ है। जुलाईमें फसल बोयी जाती है और सितम्बरमें काट ली जाती है। औसत-पैदावार प्रति एकड ५०० से ८०० पौंड तक है।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि किस प्रान्तमें कितनी एकड भूमिमें सनकी फसल बोयी जाती है और कितना माल पैदा होता है

प्रान्त	एकड भूमि	पैदावार (हण्डरमें)
मद्रास	१६७६००	२३३०६८०
बम्बई और सिन्ध	१५०६००	६६७०६७
मध्यप्रात और बरार	१६११००	१०६४६४८
संयुक्तप्रात	१७६६००	६४७४७५
बंगाल	३२३००	१८६३७२
पञ्जाब	४६२००	१८१०७८
बिहार, उडीसा	१५२००	६३६६०
बर्मा	६००	१४६७
उत्तरपश्चिमी सीमाप्रात	७००	१३१६
दिल्ली	५००	१५८६
जोड	७८५३००	४६७८६७६

कलकत्तेके बन्दरगाहसे जो सन चालान किया जाता है उसके तीन खास नाम हैं —(१) बनारसी, रायपुरी और बंगाली।

चालानका समय प्रधानतः अक्टूबरसे मईतक रहता है। बम्बई से जो माल जाता है उसका नाम है पीलीभीती, इटार्सी, जबलपुरी, देवगढ़ी, गुलबारगी। बम्बईसे जो सन बाहर भेजा जाता है वह पहले बम्बईमें साफ किया जाता है, तब खास मार्का लगाकर चालान किया जाता है। मद्राससे जो सन चालान किया जाता है उसे कोकोनाडी, गोपालपुरी, वरनाङ्गली और गोदावरी कहते हैं। गोपालपुरीका रङ्ग सबसे भिन्न होता है।

सीसल

यह सनकी दूसरी जाति है। यह झाड़ियोंकी तरह उगती है। इसे रामबास कहते हैं। रेलकी लाइनोंके दोनों तरफ इसके पेड़ देखनेमें आते हैं। व्यवसायके लिये इसकी खेती पहलेपहल सिलहटमें की गयी। इसके बाद तिरहुत,बम्बई और दक्षिणीप्रातमें भी प्रयत्न किया गया, पर सफलता नहीं मिली। इसका कारण यही मालूम होता है कि असली बीज नहीं मिल सका। मैसूरमें कुछ भूमि इसके लिये अत्यन्त उपयोगी प्रतीत हुई हैं। उनमें असली बीज मगाकर बोये गये हैं। अगर सफलता मिल गयी तो सन और पाटमें रामबासका भी शुमार हो जायगा। अभीतक जो कुछ पैदावार होती है, देशी जेलोंमें ही खप जाती है— बाहर चालान भेजनेकी नौबत नहीं आती। इसलिये अभीतक केवल सनका ही चालान जा सकता है।

सनका प्रधान खरीदार सदासे ब्रिटन रहा है। इसके अलावा अमरीका और नार्वेमें भी माल जाता है।

नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया गया है कि किन देशोंमें यहासे सनका चालान जाता है।

स्थान	१९१३ १४ (हण्डरमें)	१९२२-२३ (हण्डरमें)
ब्रिटन	२९७४४४	१०१४४४
बेलजियम	१४०२२१	१५८१९६
इटली	६०३३३३	५७०
फ्रास	६६९४२	३३०८२
जर्मनी	६८३४१	५८८४१
ग्रीस (यूनान)	७८८७	११२७
डेनमार्क	७६३६	३६६०
अन्यदेश	१७४४१	५५४६०

यद्यपि सन साफ करके ही चालान किया जाता है पर अभीतक साफ करनेके लिये कोई उत्तम साधन नहीं ठीक किया गया है, इससे सन हाथसे ही नोछा और साफ किया जाता है। इसमें समय अधिक लगता है, पर बिना साफ किये तथा साफ किये हुए सनके मूल्यमें इतना अन्तर है कि साफ करनेका काम जोरोंसे चलता है।

आयात—पैदावारके अतिरिक्त यहा सन बाहरसे भी आता है। मनिला सनकी यहां माग रहती है और फिलीपाइन द्वीपसे यह सन आता है। कलकत्तामें इस समय दो कारखाने हैं, जिनमें सनको कातकर रस्से बनाये जाते हैं। इनमें एक मिल विदेशी सन काममें लाती है। सनके अतिरिक्त ब्रिटन और द्वीपपुञ्जोंसे बटा हुआ रस्सा और बुना हुआ टाट भी आता है।

मिट्टीका तेल

मिट्टीके तेलकी खानें अधिकांश बर्मामें ही हैं। बर्माकी भूमि ही इसके लिये उर्वरा प्रतीत हुई। जबसे मिट्टीका तेल यहां पैदा होने लगा है 'मीठा तेल' (अर्थात् जो तेल तेलहनसे निकलता है) का चिरागमें जलाया जाना एकदम बन्द हो गया और अब यही तेल चिराग जलानेके काममें लाया जाता है। इसका फल यह हुआ है कि जितना तेल पैदा होता है सब खप जाता है। बाहर चालान भेजनेकी नौबत नहीं आती, बल्कि इतनेसे घरकी मांग पूरी नहीं पडती तो विदेशोंसे भी तेल मगाना पडता है। अमरीकाका मिट्टीका तेल सबसे बढ़िया होता है पर सबसे महंगा भी मिलता है।

पेट्रोल, लुब्रिकेटिङ्ग तेल, (मशीनका तेल) तथा स्पिरिटका खर्च यहां उतना अधिक नहीं है। इससे इन वस्तुओंका थोड़ा-बहुत चालान होता है। चालान सब, बर्मासे ही होता है। ब्रिटन, मेसोपोटामिया और मिश्रमें इसका चालान अधिकतर जाता है। नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि सन् १९१३-१४ और १९२२-२३ में मिट्टीके तेलके व्यापारकी क्या अवस्था रही।

स्थान	१९२३-२४ (गेलनमें)	१९२२-२३ (गेलनों
ब्रिटन	१५२६८६४०	६२५४६८३
हालैण्ड	१३०६६६६३	५६१८५१४
अमरीका	२३०८७००	—
जर्मनी	६२२५८६	
आस्ट्रेलिया	४००८५	
लङ्काद्वीप	३६६४७	३३६२८
स्ट्रेट सेटिलमेंट	३२४०६	६३८२६

अमरीकामें लुब्रिकेटिंग तेलका चालान प्रशान्त-महासाग की प्रान्तभूमिमें होता है। मिट्टीके तेलका चालान प नहीं होता।

सन् १९१७ में मोटर-तेल और स्पिरिट आदिपर छ आ प्रति गेलनके हिसाबसे महसूल वैठा दिया गया और उतनी चुंगी बाहरसे आनेवाले मालपर भी वैठायी गई।

सन् १९२४ में भारत-सरकारने इसे घटाकर चार आ करना चाहा, पर व्यवस्थापिका सभाने इसे स्वीकार न किया। मिट्टीके तेलपर प्रति गेलन एक आना चुंगी है।

मछलीका तेल

मछलीसे तेल निकालनेका व्यापार अभी नया है। मद्रास 'फिशरी'विभागने इस व्यापारको आरम्भ किया। मद्रासके किना पर एक तरहकी मछली पायी जाती है, उसमें तेल इतना अधि होता है कि उसे खाया नहीं जा सकता। यहाके मछुए उन मछ

लियोंको सुखाकर उन्हें खादके काममें लाते थे। १९०६ में "फिशरी" विभागकी दृष्टि इसपर पड़ी। उसने तेल निकालनेका अति सहज उपाय ढूंढ निकाला और उसका प्रचार किया। तभीसे मछलीके तेल निकालनेका कारबार जारी हुआ। तेल निकालनेके बाद जो खीठी बच जाती है वह उत्तम खादका काम देती है। इसका चालान लङ्का-द्वीपमें बहुतायतसे होता है। मछलीके तेलकी खपत मोमबत्ती, साबुन और रग बनानेके काममें है। देहाती तरीकेसे तेल निकालनेमें तेलका रग काला आता है पर मशीनसे निकालनेसे शुद्ध पीले रगका तेल निकलता है।

युद्धके पहले जर्मनी और बेलजियममें भी चालान जाता था, पर युद्धके बाद केवल ब्रिटन, लङ्काद्वीप और फारस इस व्यवसायके केन्द्र रह गये हैं। सन् १९२३ के फरवरी माससे जर्मनीमें पुन चालान होने लगा है।

नींबूका तेल।

नीबूसे तेल निकालनेके अनेक कारखाने दक्षिणी भारतमें हैं। इस तेलसे साबुन और इत्र तैयार किया जाता है। नींबू एक तरहकी घास है। यह घास दक्षिण-भारतके ट्रावनकोर और कोचीन-राज्यमें तथा मालाबार जिलेमें अधिकतर उगती है। कितनी जगह इसकी खेती होती है और कितनी जगह यह आपसे-आप उगती है। जिन पहाड़ोंमें यह घास उगती है उनमें जनवरीमें आग लगाकर उसे जला देते हैं। जुलाईमें फसल तैयार हो जाती है और खेतोंके पासही बड़े बड़े भट्ठे तैयार कर दिये जाते हैं और

तेल निकालनेका काम आरम्भ हो जाता है। अक्टूबरतक काम जारी रहता है। देहाती तरीकेसे तेल निकाला जाता है और बहुत मेल मिलाकर तब बेचा जाता है। १६०३-४ तक इस व्यापारका बहुत महत्व नहीं था। इसके बाद माग बढी और दाम अधिक मिलने लगा तो लोगोंको बेईमानी सूझी और मेल मिलाने लगे। आमदनी इतनी बढ गयी कि माग पूरी करनेके बाद भी बहुतसा तेल बच जाता था। इससे दाममें जो गिरानी आयी उसके मुकाबिलेमें तेल निकालना कठिन हो गया। लोगोंने तेल निकालनेका कारोबार बन्द कर दिया। इसके बाद ट्रावनकोर-दरबारने शुद्ध तेल निकलवानेका प्रयत किया। तबसे यूरोप और अमरीकाकी मण्डियोंमें इस तेलकी माग धीरे धीरे बढ रही है।

युद्धके पहले अधिकतर माल फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटन और अमरीका जाता था। युद्धके कारण जर्मनी माल जाना बन्द होगया और उसके स्थानपर स्विटजरलैण्डकी मण्डी तैयार हुई। सन् १६२३ से जर्मनीने फिर माल मँगाना आरम्भ किया।

खाद

खादका प्रयोग इस देशमें बहुत ही कम होता है। जहातक खादसे सम्बन्ध है यहाके किसानोंने सबसे अधिक उदासीनता दिखलाई है। इसके दो प्रधान कारण हैं। पहले तो यहाके किसानोंमें शिक्षाका सर्वथा अभाव है। खादके महत्वको वे समझते नहीं और उसके उपयोगको वे जानते नहीं। दूसरे वे इतने गरीब हैं कि खादके लिये रुपया नहीं खर्च कर सकते, बल्कि जो खाद

उनके घरोंमें भी पैदा होती है उसका पूरी तरहसे प्रयोग नहीं कर सकते। उदाहरणके लिये गौका गोबर। यह अगर खादके काममें लाया जाय तो बड़ाही उपयोगी सिद्ध हो, पर किसान इसे जलानेके काममें लाते हैं। इसलिये यहां न तो खादकी वस्तुओंका उपयोग होता है, न उनकी खोज होती है, और न उनकी रक्षाका ही कोई उपाय किया जाता है। पौधोंकी हरी-भरी पत्तियोंके खेतोंमें गिर जानेसे जो खाद पैदा होती है उसके अतिरिक्त खाद बहुत ही कम स्थानोंपर दी जाती है। हां, चाय और कहवेके खेतिहर खादका उपयोग भले ही करते हैं। इसके लिये घरसे जो खाद मिल जाती है उसके अलावा ८००० टनके करीब खाद प्रतिवर्ष विदेशोंसे मँगानी पड़ती है।

जानवरोंके मांस और हड्डियोंकी खाद उत्तम होती है। यहां मछलीकी खाद और हड्डीकी खाद प्रधानतया पायी जाती है। मछलीकी खादके सम्बन्धमें तो हमने मछलीके तेलके प्रकरणमें लिखा है। यहांपर हम यह दिखला देना चाहते हैं कि मछलीकी खाद इस देशसे कितनी बाहर जाती है। इसमें चमगीदड़ तथा अन्य पक्षियोंकी बीट भी शामिल है, जो खादके काममें आती है।

इसका आधा अंश तो केवल मद्राससे आता है। दूसरा स्थान बर्माका है। यह खाद लंकाद्वीप, और प्रायद्वीपोंमें जाती है।

योरपमें हड्डीकी मांग फ्रांस और बेलजियममें प्रति वर्ष रहती

रमें इसका प्रयोग बहुत ज्यादा होता है। मद्रासके लोग हरे मिर्चकी तरकारी खाते हैं। यह उनकी सबसे प्रिय खाद्य वस्तु है। मिर्चाको कूटकर उसकी बुकनी बनाकर चालान करते हैं। मिर्चका व्यापार सोलहों आना हिन्दुस्तानियोंके हाथमें है। अगर किसी विशेष कारणसे फसल खराब नहीं हुई तो चालानके आकड़ोंमें किसी तरहका अन्तर नहीं पड़ता।

मिर्चके प्रधान ग्राहक हैं लंकाद्वीप, स्ट्रेट सेटलमेंट, अमरीका, इटलीका पूर्वी अमरीका, मारिशस द्वीप तथा अन्य अधीनस्थ द्वीप, अदन द्वीप तथा अधीनस्थ द्वीप, ब्रिटन तथा अन्य देश जहां बहुत ही कम चालान जाता है। इनमें लङ्काद्वीप और स्ट्रेट-सेटलमेंट सबसे बड़े ग्राहक हैं। इनकी माग सदा एकसी बनी है। युद्धके बादसे ब्रिटन भी अधिक माल मँगाने लगा है।

लाल मिर्चका चालान टूटिकोरिन, मद्रास, नेगापट्टम, कोकोनाडा, कलकत्ता, रंगून और बम्बईके बन्दरगाहोंसे होता है।

अदरख और सोंठ

अदरखको जिमीकन्द कह सकते हैं। अदरखकी खेती इस देशमें बहुत प्राचीन कालसे होती चली आ रही है। फिर भी खेतीका कोई भी ठीक आकड़ा नहीं मिलता है। मलाबार जिलेमें इसकी सबसे अधिक खेती होती है। मईमें पौधे रोप दिये जाते हैं और नवम्बरमें खोदकर अदरख निकाल लिया जाता है। बलुई जमीनमें यह अधिक पोस मानता है। मलाबारके अतिरिक्त सूरत और थाना जिला (बम्बई) रङ्गपुर (बङ्गाल) और

कमायू (संयुक्तप्रदेश) में अदरखकी खेती होती है। अगर अच्छी फसल हुई तो प्रति एकड़ २,००० पौंड सोंठ तैयार होता है। अढतिया लोग किसानोंसे अदरख खरीद लेते हैं और उसे योंही बेच देते हैं अथवा सुखाकर सोंठ तैयार करके बेचते हैं। सोंठ भी दो प्रकारकी होती है, छिलकेदार और बिना छिलकेकी। कोचीनकी बिना छिलकेकी सोंठकी बाजारमें अधिक माग रहती है।

अदरख बड़े कामकी चीज है। आयुर्वेदिक दवाओंमें इसका अधिक प्रयोग होता है। इसके अलावा चटनी और अचारमें भी इसका प्रयोग होता है। इससे चालान कम होता है। युद्धके पहले ब्रिटन, अमरीका, अरब, तुर्की, लङ्काद्वीप और जर्मनीमें अदरक या सोंठका चालान जाता था।

आयात—करीब २ लाख पौंड सोंठ विदेशोंसे आती है। जापान, चीन और हांगकांग आयातके प्रधान क्षेत्र हैं। यह सोंठ कलकत्ता और बम्बईके बाजारमें आती है।

इलायची

इलायचीकी खेती पश्चिम और दखिनमें होती है। मद्रास-प्रान्तके मलाबार, मदुरा जिले तथा मैसूर, कुर्ग, और ट्रावनकोर राज्यमें इलायचीकी खेती अधिक होती है। कुल मिलाकर प्रति वर्ष प्राय २०,००० एकड़ भूमिमें इलायचीकी खेती की जाती है। ५,००० एकड़ भूमि बम्बईमें भी है जिसमें इलायची बोयी जाती है।

इलायची दो तरहकी होती है—(१) छोटी और (२) बड़ी। छोटी इलायची मैसूरमें होती है और बड़ी इलायची मलाबारमें।

इलायचीका प्रधान ग्राहक ब्रिटन है। पर ब्रिटनमें इसकी खपत नहीं है। यह खरीदकर फिर दूसरे देशोंके हाथ बेच देता है। ब्रिटनके बाद अरब, अदन, जर्मनी, तुर्की और लंकाद्वीप तथा दूसरे प्रायद्वीप इसके ग्राहक हैं। हालमें मिश्रमें भी इसका चालान जाने लगा है। ये सब देश सीधे यहांसे इलायची मंगाते हैं।

इलायचीका प्रयोग कई तरहसे होता है। यहांके लोग इलायची (छोटी) खाते बहुत हैं। प्रत्येक कुटुम्बमें, चाहे नगर हो या गांव, थोड़ी बहुत इलायचीका खर्च अवश्य होगा। इसके बाद दवाके काममें भी इलायची आती है। शराब आदिमें खुशबू पैदा करनेके लिये इसका प्रयोग करते हैं। जर्मनीके लोग चटनीमें मिलाकर इसे खाते हैं। इलायचीका (बड़ी, यह बड़ी मैसूरसे न आकर नेपालकी तराईसे आती है) तेल भी निकालते हैं। अमरीका और फ्रांसमें इससे कई तरहके सुगन्धित द्रव्य तैयार करते हैं।

सितम्बर और अक्टूबरके महीनेमें इलायचीकी फसल तैयार हो जाती है। इसे हाथसे तोड़कर बटोरते हैं। कुछका तो उसी अवस्थामें चालान कर दिया जाता है, कुछ धूपमें सुखाया जाता है। अच्छी इलायची तैयार करनेके लिये सुखानेका काम बहुत सावधानीसे किया जाता है। छोटी इलायचीमें दो तरहके फल होते हैं। यह भेद सुखानेके तरीकेमें आ जाता है। जो बड़ी

और फूली हुई डोंडी दिखायी देती है, वह गन्धकमें सुखायी जाती है। उसकी खपत पहले अधिक थी, पर इधर हरी इलायचीकी खपत बढ़ गयी है। लोगोंका अनुमान है कि पहलीकी अपेक्षा इसमें स्वाद अधिक होता है।

इलायचीका चालान बम्बई, कलकत्ता, टूटीकोरिन, कालीकट और टेलीचरी तथा मंगलोरके बन्दरगाहोंमें होता है। बम्बई इस व्यवसायका केन्द्र है।

सुपारी

सुपारीकी खपत यहां इतनी अधिक है कि आयातके मुकाबिले निर्यात कुछ नहीं है। सुपारीकी इतनी अधिक खपतसे यह अनुमान किया जा सकता है कि सुपारीके पेड भी यहां बहुत होंगे। इस सम्बन्धमें आंकड़े प्राप्त नहीं हैं। सुपारीका पेड़ ठीक नारियलके पेड़की तरह होता है। अच्छे पेड़में करीब २५०तक सुपारी निकलती है। पर मद्रासके पेड़ोंसे कम सुपारी निकलती है। सुपारी कई तरहसे तैयार की जाती है, पर अधिकांश केवल सुखाकर बेचनेके लिये भेज दी जाती है। चिकनी सुपारी तैयार करनेके लिये कच्ची सुपारीको दूधमें पकाते हैं। सुपारीके व्यापारके जो आंकड़े प्राप्त हैं उनको देखनेसे मालूम हो जाता है कि जितनी सुपारी हम यहांसे बाहर भेजते हैं उससे कई गुनी अधिक हम बाहरसे मंगाते हैं। यहां जो सुपारी आती है वह लङ्काद्वीप स्ट्रेट सेटलमेण्ट और चीनसे आती है।

सुपारीका जो थोडा-बहुत चालान बाहर जाता है वह उन्हीं उपनिवेशोंमें जहा यहाके निवासी कुली प्रथामें बंधकर काम कर रहे हैं, जैसे नेटाल, मारिशश, फीजी, दक्षिणी अफ्रिका और अदन।

दालचीनी

दालचीनी पेडकी छालसे तैयारी की जाती है। पश्चिमी घाटोंकी पहाडीपर इसका पेड बहुतायतसे उगता है। पकनेपर इसका छिलका उतार लिया जाता है और बोझ बाधकर रख दिया जाता है। सडकर ऊपरका रेशा निकल जाता है और भीतरकी लकडी रह जाती है। तब इसे काटकर छोटे-छोटे टुकडे बनाते हैं और सुखानेके लिये उसे धूपमें डालते हैं। धूप लगनेसे यह ऐंठ जाती है। दालचीनीके पेडसे तीन तरहका तेल निकलता है। एक पत्तेसे, दूसरा जडसे और तीसरा छालसे। तीनों तरहके तेल दवाईके काममें आते हैं।

मद्रास और बंगालमें जो दालचीनी पैदा होती है, उसीका चालान जाता है। दालचीनीमें मेल भी डाल देते हैं, खासकर इसकी बुकनीमें। बंगालसे जो चालान जाता है वह खालिस बहुत कम रहता है। ब्रिटन, दक्षिणी अफ्रिका और मारीशस द्वीपमें माल अधिक जाता है।

लौंग

लौंग एक पेडका फूल है। यह कच्चा तोडकर सुखाया जाता है। इस देशमें लौंगकी खेती कहीं भी सुव्यवस्थित नहीं है।

मद्रास-प्रान्तके पश्चिमी घाटकी पहाड़ियोंपर इसके पेड़ पाये जाते हैं। लौंगका तेल भी निकाला जाता है जो सुगन्ध बनानेके काममें आता है। लौंगका चालान फीजी और नैटालसे आता है। जञ्जीबार और पेम्बासे प्राय ६,०००,००० पौंड लौंग प्रतिवर्ष आती है। लौंगका निर्यात बहुत ही कम होता है।

नारियलकी रस्सी

नारियलकी जटाकी रस्सीका व्यापार उतना ही बढ़ाचढ़ा था जितना गिरीके तेलका व्यापार बढ़ाचढ़ा था। युद्धके कारण इस व्यापारको बड़ा धक्का पहुंचा, फिर भी इसका व्यापार एकदम लुप्त नहीं हो गया है।

इस रस्सीका बटना घरेलू धन्धा है। मालाबारके किनारेके ग्रामोंमें घर घर इसकी बटाई होती है। घरकी स्त्रियां अपना फालतू समय इसीमें लगाती हैं। जटाको पानीमें भिगो देते हैं। आठ महीने या इससे भी अधिक समयतक वह पानीमें सड़ती है और उसके बाद उसे निकालकर पत्थरपर कूटते हैं। इस तरह उसके एक एक रेशे मुलायम होकर अलग हो जाते हैं और बटे जाते हैं। इसके अलावा रस्सा बनानेका दूसरा तरीका भी है। जटाको केवल बारह घण्टेतक भिगोते हैं और खूब कूटते हैं। इसकी रस्सी अच्छी नहीं होती। नीचेकी तालिकासे विदित होगा कि १९१३ के बाद जटा और रस्सीका चालान किस तरह हुआ।

सन्	जटा (टनमें)	रस्सी (टनमें)
१६१३-१४	७४६	३८६१०
१६१४-१५	२४६	२३७६०
१६१५ १६	३३३	२७१४०
१६१६-१७	२४८	२८४६०
१६१७-१८	१३३	१६६३०
१६१८-१६	३००	१३१६५
१६१६-२०	३५४	३८२६७
१६२०-२१	४१०	३००४१
१६२१-२२	४२४	२७७४२
१६२२-२३	४६०	३३११६

नारियलकी रस्सीके व्यापारका एकाधिपत्य कोचीनके हाथमें है। नारियलकी जटाका चालान कम होता है। जटासे रस्सी बनाकर ही चालान करते हैं। रस्सी बनानेकी कलें भी बैठायी गयी हैं। मालाबारमें हाथसे भी बटाई होती है। चालानके लिये जहाज-तक पहुचनेके पहले रस्सेका व्यापार कई हाथोंसे गुजरता है। कोचीन और कालीकट प्रधान बन्दरगाह हैं, जो इस व्यापारको करते हैं। युद्धके पहले जर्मनी, ब्रिटन, हालैण्ड, बेलजियम और फ्रांस प्रधान खरीदार थे। वर्षातके दिनोंमें मद्रासका किनारा एकदमसे बन्द हो जाता है। इसलिये वर्षातमें चालान नहीं होता। सितम्बरमें चालान शुरू होता है और अक्टोबर तथा नवम्बर भर तेज रहता है।

सबसे उत्तम रस्सा वही समझा जाता है जो रङ्गमें तो लाल हो, ऐंठन अधिक हो, लम्बाई भी अधिक हो और वजनमें हलका हो। मलाबारमें करीब बारह मेलके रस्से होते हैं, जिनके नाम नीचे दिये जाते हैं ।

अलापत सबसे बढ़िया और हाथका बटा हुआ होता है।

अञ्जंगो अरतोरी कस्वामदी कुर्वा	काता हुआ।
चेकम बीच काली कट (यह सूखी जटासे तैयार किया जाता है। पर बड़ा उमदा होता है।) बेपूर किल्की	यह रस्से हाथसे बटे जाते हैं। ये बहुत पतले होते हैं और इनसे बिनाई की जाती है।
कोचीन	इनसे मोटे मोटे रस्से तैयार किये जाते हैं जो जहाजोंके लङ्गरमें लगे रहते हैं।

ये रस्सियां दो परतकी होती हैं। काकोनाडासे कम पैठन-वाली रस्सी चलान की जाती है वह भी इसी तरहकी होती है। अलापत सबसे अच्छी रस्सी होती है। यूरोपके बाजारमें इसकी माग भी अच्छी है और माल भी अधिक मिलता है। दिवोकी रस्सी भी बनती है। प्राय ४।५ हजार हण्डर हर साल बिक नेके लिये आती है। इसका चालान लङ्काद्वीप और अभि ण्डीवी टापूसे होता है। साराका सारा माल सरकार फौंडीकी जगह ले लेती है। यह रस्सी मगलोरमें नीलाम की जाती है। यह भी कई तरहकी होती है पर इसकी सबसे उमदा रस्सी अन्गापत और अजेंगोसे घटकर होती है।

अलप्पी और कोचीनमें इससे टाट बनाये जाते हैं। १९१३-१४ में १०,००० पौंड टाट कोचीनके बन्दगाहसे बाहर गया था। युद्धके समय यह माग और भी बढ गई, यहातक कि १९१८ १९ में ११,००० पौंड माल गया।

इससे मोटे मोटे रस्से बनाकर भी बाहर भेजे जाते हैं, पर यह व्यापार जड नहीं जमा सकता, क्योंकि मनीलाके मुकाबिले यह नहीं ठहर सकता।

रबर

रबरके पेड यहां प्राचीन कालसे पाये जाते हैं। पर इनकी संख्या इतनी अधिक नहीं है कि इनकी गणना व्यापारके योग्य की जाय। आसामके अतिरिक्त सन् १॰ के पहले इसे व्यव-सायिक रुप देनेका नहीं [illegible] मलायाकी भूमि

रबरकी खेतीके लिये सबसे उत्तम है । हिन्दुस्तानमें भी दो ऐसे स्थान हैं जो इन हैसियतसे उतने ही उपयोगी और उत्तम हैं, जैसे बर्मामें टेनासरिम और मद्रासमें मलाबारकी भूमि, जो पश्चिमी घाटके नीचे मंगलोरसे कन्याकुमारी अन्तरीपतक फैली हुई है। बर्मासे दक्खिन हिन्दुस्तानमें एक सुविधा और है। एक तो यहां वर्षा अधिक होती है और ठीक रीतिसे होती है, दूसरे मालके चालानकी भी अधिक सुविधा है। सबसे बड़ी सुविधा कुलियोंकी है। बर्मामें कुली बाहरसे मंगाने पड़ते हैं इससे व्यय अधिक पड़ता है पर यहां तो स्थानीय कुली मिल जाते हैं इससे व्यय कम करना पड़ता है और उतनी कठिनाईका सामना नहीं करना पड़ता। ट्रावनकोर राज्यके सेनकोटा और मुन्दकयाम जिले तथा रावीकी घाटी रबरके प्रधान क्षेत्र हैं। १६०२ में टकाद राज्यने भी पारा रबरकी खेती आरम्भ कर दी। अनुसन्धानसे मालूम हुआ है कि दक्षिणमें यह रबर सबसे आसानी और सुविधाके साथ पैदा किया जा सकता है। विगत सात वर्षोंमें ट्रावनकोर, कोचीन, ब्रिटिश मलाबार, कुर्ग तथा सलेम जिलेकी शिवराय पहाड़ीपर इसकी अधिक खेती होने लगी है। अपर बर्मा सरकारने अनुसन्धान कर पता लगाया है कि बर्मामें पारा रबरकी अच्छी खेती हो सकती है। इसलिये रंगूनके आस पास भी खेती आरम्भ की गई है। प्राय १२५,००० एकड़ भूमिमें रबरकी खेती होती है।

बर्मामें प्राय. १०,००० एकड़ भूमि नई तैयार की गई है।

जिसमे खेती होती है और करीब २५ लाख पौंड रबर हर साल निकलता है। ट्रावनकोरमें पारा रबरकी खेती होती है। २६,००० एकड भूमि तो चकबन्दी की हुई हैं। शेष छोटे-छोटे टुकडे हैं जो हिन्दुस्तानियोंके हाथमें हैं। १९१६ में भारत-सरकारने रबरकी खेतीके लिये पट्टेपर जमीन देनेके लिये नया कायदा बनाया है। इससे आशा की जा सकती है कि रबरकी खेतीमे बढ़ती होगी, क्योंकि अभी बहुतसी भूमि ऐसी पडी है जिसमें रबरकी खेती हो सकती है। बर्मासे जो रबर चालान जाता है उसके मूल्यपर २) रु० सैकडे सरकारी महसूल बैठाया जाता है।

कलकत्तामें रबरके ठोस सामान जैसे टूब और टायर आदि तैयार करनेका एक कारखाना बनाया जा रहा है पर इससे जो माल तैयार होगा उसकी खपत वहीं हो जायगी। यहाके रबरके प्रधान ग्राहक ब्रिटन, लकाद्वीप, स्ट्रेट सेटलमेंट, लबून, फ्रास, इङ्गलैण्ड, अमरीका तथा जर्मनी हैं।

दक्षिणी प्रान्तमें जो रबर पैदा होता है उसका अधिकाश कोलम्बो जाता है। मर्गुईका रबर सिंगापुर जाता है। जापान और कनाडा अभी हालमें ही खरीदने लगे हैं।

कायला

१९०६ के वादसे कोयलेकी आमदनी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। पर अभीतक भी यहाकी कोयलेकी कुल खानोंका पता नहीं लगा है। रानीगज और झरिया यही दो प्रधान क्षेत्र

हैं, जहासे प्राय ८३ प्रति सैकडे कोयला पैदा होता है। इन दोनों क्षेत्रोंके बाद हैदराबाद राज्यकी सिगरेनीकी खानका नम्बर है। इनके अतिरिक्त मध्यप्रदेशमें वर्धा और पेंचकी खाने हैं। रीवा राज्यमें उमरियाकी खान है। आसाममें मकुमकी खान है और पजाबमें झेलम जिलेकी खान है।

यहाकी खानोंसे जो कोयला निकलता है उसके मूल्यकी सूचना खानके मालिकोंसे मिलती है। इससे यह मूल्य खानपर का समझा जाना चाहिये। कलकत्ताके बाजारमें "देशेरगढ और सेलेक्टेड झरिया" के नामके कोयलेकी सबसे अधिक माग है। खानोंपर कोयलेका जो मूल्य रहता है और बन्दरगाहपर रवाना होनेके समय जो मूल्य रहता है, उसके मिलान करनेसे साबित होता है कि दोनोंमें प्राय ढाई गुनेका अन्तर पडता है अर्थात् पहलेका यदि १) है तो दूसरेका २॥)।

१९१७ में कोयलेकी खानोंमें १६७, २७२, ६०, ३२४ और बाहर १०४, ९४८ मजूर काम करते थे। अधिकाश कुली किसान हैं। इसलिये अच्छी फसलका बडा असर पडता है, क्योंकि जबतक उनके हाथमें धन्धा रहेगा और पेट भरनेके लिये वे पैदा कर सकेंगे तबतक वे कभी भी खानोंमें काम करने नहीं जायँगे। यही कारण है कि यहाकी खानोंसे कोयलेकी निकासी उतनी अधिक नहीं है जितनी यूरोपकी खानोंसे है। जहा इङ्गलैण्डके मजूर ३२३ टन निकालते हैं वहा यहाके मजूर १६९ टन निकालते हैं। इधर हाल

में खानोंमें अनेक तरहकी सुविधायें कर दी गई हैं, जैसे बिजलीकी रोशनी, हवा आदिका प्रबन्ध । पर मशीनकी सहायतासे अभी कटाईका प्रयत्न नहीं किया गया है ।

कोयलेका रोजगार अधिकांश हिन्दुस्तानी पूंजीपतियोंके हाथमें है । कलकत्तासे प्राइवेट कम्पनियां कोयला ले जाती हैं । लङ्काद्वीप, मायद्वीप और सुमात्रामें यह कोयला जाता है । नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि यहांसे कितना कोयला किस देशमें गया ।

सन्	लङ्काद्वीप (टन)	स्ट्रेट सेटलमेण्ट लूवन (टन)	डच ईष्ट इण्डीज (टन)	अन्य देश (टन)
१९१३-१४	३९३८८९	१८३५०१	९७६५२	४६७१४
१९१४ १५	३९२६१०	१००६३६	७२८१०	२६४३६
१९१५ १६	५८७६९१	९७६७४	८४६८३	३३९१०
१९१६-१७	५३२४४३	१४४११६	१०६८०९	४५७७४
१९१७-१८	१५३९९१	६८५६५	८४७४	२४८४५
१९१८ १९	८१३१०	४५७६३	८७७१	७७८३
१९१९ २०	४२६४०४	१२०४९८	७८९२८	५३९३९
१९२०-२१	६७४००१	११४३८१	६७८५५	२०६३६७
१९२१-२२	१०४७२७			
१९२२ २३	९७१११			९६४२
				५२३

इस तालिकामें वह कोयला शामिल नहीं है जो सरकारी खर्चके लिये चालान किया जाता है। १९१७ में बाहर कोयलेका ४८६,००० टन कलकत्ताके बन्दरगाहसे, ६३१,००० बम्बई और कराचीसे, ५३,००० टन रंगूनसे और ५४,००० टन मद्राससे गया।

कोयलेके चालानके बढ़नेकी आशा नहीं करनी चाहिये, क्यों कि भारतका व्यवसायिक विकास अब धीरे धीरे हो रहा है। कारखाने अधिकाधिक खुलते हैं और खुलेंगे। उनके लिये कोयलेकी जितनी जरूरत पड़ेगी शायद यहां खानें उतना कोयला निकाल नहीं सकेंगी।

कोक—साधारण कोयला जो रसोई आदि बनानेके काममें आता है, बंगालकी खानोंसे निकलता है। इसका साधारण चालान होता है। लङ्काद्वीप, प्रायद्वीप और श्याम इसके प्रधान क्षेत्र हैं।

आयात—यहांकी पैदावारके अतिरिक्त विदेशोंसे यहां कोयलेका चालान भी आता है। त्रिटन, नैटाल, पुर्तगाल, पूर्वीय अफ्रिका, जापान, इङ्गलैण्ड और आस्ट्रेलियासे कोयलेका चालान आता है।

मोमबत्ती

पेट्रोलियमको साफ करके मोमबत्तीका मसाला तैयार किया जाता है। बर्मामें तेलकी खानें ज्यों-ज्यों अधिक खुलने लगी हैं, मोमबत्ती भी अधिकाधिक बनने लगी है। इसकी विदेशी मांग भी बढ़ने लगी है।

मोमके प्रधान ग्राहक ब्रिटन, अमरीका, जापान, दक्षिणी अफ्रिका, पुर्तगाल और पूर्वीय अफ्रिका हैं। मोम या मोमवत्तीकी खपत यहां बहुत ही कम है।

मोमका चालान ९५ प्रति सैकडे रंगूनके वन्दगाहसे और शेष कलकत्तासे होता है।

खानेकी चीजें

मक्खन—दूधसे मक्खन निकालनेके कई तरीके हैं। पहला तरीका यह है कि दूधको जमाकर दही बनाते हैं और उसे मथकर मक्खन निकालते हैं। दूसरा तरीका यह है कि दूधको खट्टा कर डालते हैं और उसे मथकर मक्खन निकालते हैं। तीसरा तरीका ताजे दूधको मथकर मक्खन निकालनेका है। यह मक्खन सबसे उमदा होता है। पर यहाका जलवायु इतना विपरीत है कि इस तीसरे तरीकेका प्रयोग नहीं हो सकता था। पर अब जबसे डेयरीका काम जारी हुआ है, इस तीसरे तरीकेसे भी मक्खन निकाला जाने लगा है।। मक्खनके रोजगारका केन्द्र बम्बई और अलीगढ है। मक्खनकी खपत यहा भी बहुत अधिक है; क्योंकि इस देशमें छोटे-बडे सभी मक्खनका प्रयोग करते हैं। आगेकी तालिकासे विदित होगा कि मक्खनका व्यापार दिन दिन उन्नति करता जा रहा है। भारतसे मक्खनके प्रधान खरीदार लकाद्वीप, जञ्जीवार और पूर्वी अफ्रिका हैं। इधर कुछ दिनोंसे पारस और ब्रिटन भी कुछ माल जाने लगा है। मक्खन टिनोंमें बन्द करके चालान किया जाता है।

घी—यहा घीकी खपत मक्खनसे कहीं अधिक है। मक्खको पिघलाकर घी बनाया जाता है। पिघलानेपर तीन-चौथाई रहता है। संयुक्तप्रांत, बंगाल, राजपूताना, मध्यभारत और ताबमें घी अधिकतर तैयार किया जाता है। अनेक तरहके तेल, से, कायना, मूंगफली, चर्बी तथा जानवरोंकी चर्बी मिलाकर घीका दोगला बना देतेहैं। घीकी खपत देशकी ही इतनी अधिक कि कारस, आदि देशोंसे घीका चालान मगाना पड़ता है। तरर भी घीका चालान बहुत होता है। घीका चालान यद्वीप, लकाद्वीप, मारिशस फीजी, नैपाल और पूर्वी अफ्रिका ता है। कलकत्ता, बम्बई, टूटीकोरन और कोकोनाडा, प्रधान न्दरगाह हैं जहासे घी रवाना होता है।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि प्रतिवर्ष कितना घी तथा कितना मक्खन इस देशसे बाहर जाता है।

सन्	मक्खन (पौंडमें)	घी (पौंडमें)
१९१३-१४	७०२३१८	५५६८८०१
१९१४ १५	५५१२८४	४९३९६६६
१९१५ १६	८१८३११	५२९०१९२
१९१६ १७	१४७२४७१	५४०३०१४
१९१७ १८	१५२२८८०	५५१३२००
१९१८ १९	६६०१४२	४३८१३५२
१९१९ २०	५२८४१६	३८६४८९६
१९२०-२१	३४८३२०	५९१४२७२
१९२१ २२	५४६७८४	५३८३१६८
१९२२-२३	४७८९१२	३८४६११२

सुरती या तम्बाकू

सुरतीकी खेती इस देशमें पुर्तगालवालोंके समयसे होने लगी है। उन्होंने इस देशमें सुरतीका प्रचार किया और खेती कराना आरम्भ किया। भारतमें दो तरहके पौधे सुरतीके पैदा होते हैं। दक्षिण प्रदेशका पौधा कुछ गोदुमी रंगका होता है और उत्तर प्रदेशका पौधा पीले रगका होता है। दक्षिणी वर्मा और आरकन प्रदेशमें हवाना टापूसे बीज लाकर बोया गया है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीके समयसे ही भारत सरकारने सुरती तैयार करने तथा उत्तम पत्ती उगानेका अनेक प्रयत्न किये हैं। इस समय सुरतीकी खेतीके तीन प्रधान केन्द्र हैं —

(१) पूर्वीय और उत्तरी बङ्गाल तथा विहार। इनका केन्द्र या मण्डी रगपुर और मु गेरमें है।

(२) दक्षिण भारत विशेष कर कोइम्यतूर, सलेम, ट्रिचनापली, मदुरा, कृष्णा, गोदावरी और गन्तूर जिले। इनकी मण्डियां मद्रास, ट्रिचनापली, डिण्डीगल, पालघाट और कोकोनाटामें हैं।

(३) दक्षिणी बर्मा। इसकी मण्डियां रगून, मौलमीन और अकयाबमें हैं।

सुरतीकी खेतीमें बड़े परिश्रमकी आवश्यकता है। इसे अगोरना अधिक पडता है और खादकी बडी आवश्यकता पडती है। इससे इसकी खेती थोडी थोडी की जाती है। जिस खेतमें एक बार सुरती बो दी जाती है उसकी पैदावारकी

योग्यता इस तरह मारी जाती है, कि कई वर्षतक उसमें दूसरा अन्न नहीं पैदा हो सकता। ब्रिटिश भारतमें प्रायः १,०००,००० एकड भूमिमें सुरतीकी खेती की जाती है और परिश्रम, खाद तथा देखरेखके अनुसार २०० से ३,००० पौंड तैयार पत्तिया प्रति एकड पैदा होती हैं। साधारणत अप्रैलमें फसल समाप्त हो जानी चाहिये पर कहीं कहीं जूनतक खेती होती चली जाती है। पत्तिया सुखाकर छाटी जाती हैं और तब उन्हें भाव आनेके लिये रख दिया जाता है। भावके अनुसार पत्तियोंका मूल्य होता है।

कलकत्तेके बाजारमें रगपूरी सुरती सबसे अच्छी समझी जाती है। यह सुरती रगपुरमें पैदा की जाती है। पूला और विस्वाथ रगपूरी सुरतीको जातिया हैं, पर ये मध्यम होती हैं। इसके अलावा गन्तूरकी पीली पत्तिया सिगरेट बनानेके काममें आती हैं और बर्मासे तेदूर तथा सिण्डाइन चुरुटके काममें आती हैं।

यहा जो सुरती पैदा होती है, उसका अधिकाश, यहीं खर्च हो जाता है। फिर भी रगून और मैसूरसे चालान भी काफी परिमाणमें जाता है। १९१३-१४ में ३१६,००० पौंडका माल बाहर भेजा गया था, उसमें तीन-चौथाई तो तैयारी माल था और एक हिस्सा बिना तैयारी था। नीचेकी तालिकामें सुरतीके निर्यात व्यापारका ब्यौरा दिया गया है।

सन्	कच्चा माल (पौंडमें)	तैयार माल (पौंडमें)
१९१३—१४	२७८१७०००	२२०६०००
१९१४—१५	१६४९००००	२१९२०००
१९१५—१६	२४२५००००	२०९५०००
१९१६—१७	२७७७२०००	१८७००००
१९१७—१८	२०२४४०००	१६२००००
१९१८—१९	३१५०६०००	१४७७०००
१९१९—२०	२८९५००००	१९२७०००
१९२०—२१	२३३०६०००	१३७९०००
१९२१—२२	२२९०३०००	१३२५०००
१९२२—२३	२१५९६०००	१४५३०००

१९१३-१४ में अदन और उसके अधीनस्थ देशोंमें माल गया था। हांगकांग, फ्रांस, प्रायद्वीप, हालैण्ड और जर्मनीने माल खरीदा था। १९१८-१९ में फ्रांस भारतीय सुरतीका सबसे बड़ा खरीदार था। इसके बाद अदन, प्रायद्वीप और ब्रिटनका नम्बर आता है।

पैदावारके हिसाबसे वर्माका स्थान सबसे आगे है। इसके बाद बम्बई और सिन्धका नम्बर है। बङ्गाल तथा मद्रास सूबा का स्थान सबसे बाद है।

तैयार माल—तैयार मालके व्यवसायमें आयातका हाथ बहुत अधिक रहा है। सैकड़ों विदेशी कम्पनियां यहांसे सुरती खरीद खरीदकर सिगरेट बनाकर भारतको भर देना चाहती हैं और बड़े बूढ़े, बच्चे सबको इसका शिकार बना देना चाहती हैं।

सिगरेट पीनेवालोंके मुहमें बीडीका स्वाद फीका लगता था पर इधर थोडे दिनसे बीडोकी ओर लोगोंका ध्यान फिर गया है। इससे आशा की जाती है कि सिगरेटकी आयातमें अवश्य घटती होगी। सिगरेटकी माँग बढी तो यहा भी सिगरेट बनानेके कई कारखाने खोले गये। इसमें मुंगेरकी पेनिन्सुलर टुबेको कम्पनी सबसे बढ बढकर है। फिलिफाइन और हवाना द्वीपसे बम्बई तथा कलकत्ताके बाजारमें सिगारका चालान आता है। बर्मा और ट्रिचीमें जो चुरुट तैयार होता है उसकी खपत सुदूर पूर्वीय देशोंमें अधिक है पर ब्रिटनमें भी इसकी थोडी बहुत माग रहती है। मेसोपोटामिया और पूर्वी अफ्रिकामें भी अभी हालमें ही इसकी माग होने लगी है। यहा दक्षिणका माल बम्बई होकर जाता है। यहाकी सुरती चूर बनाकर भरने लायक बढिया होती है पर उसे लपेटकर सिगार आदि नहीं बनाया जा सकता इसलिये लपेटनेके कामके लिये जावा और सुमात्रासे सुरती मगानी पडती है। कुछ वर्ष हुए सुरतीकी आमदपर चुगी बढा दी गई तो ट्रिची चुरुट तैयार करनेवाला कारखाना पाण्डिचेरी हटा दिया गया। इस समय ट्रिची चुरुटका कारखाना डिण्डिगलमें है और चुंगी विभागकी देखरेखमें है। मद्रासके पूर्वी किनारेके प्रदेशोंमें जो सुरती पैदा होती है वह बर्मा चालान जाती है और चुरुट बनानेके काममें आती है। कोकनाडामें भी कारखाना है जिसमें मद्रासकी सुरतीसे चुरुट तैयार किया जाता है, जो यहा भी खपता है और चालानमें भी जाता है। इधर

कई वर्षोंसे बंगाल और मद्रासले अधिक रंगून सुरतीका चालान जाने लगा है ।

नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि भारतमें तैयार किये हुए सिगारका चालान किन किन विदेशी प्रदेशोंमें जाता है और किस परिमाणमें चालान होता है —

देश	१९१३—१४	१९२२—२३
स्ट्रेटसेटमेंट तथा मलाय	१६०२०४१ पौंड	१५२८२२ पौंड
ब्रिटन ...	८६०३३ „	३८०१६ „
यूरोपीय टर्की .	३०६६३ „	१२६० „
श्याम	१४५८४ „	४४०३६ „
जिब्राल्टर	१३९५० „	. „
जर्मनी	६५०६ „	८०० „
अदन .	७८३० „	३८५० „
लङ्काद्वीप	५९९० „	२२२३६ „
सुमात्रा		१६९५० „
जावा		१०६२८ „

ऊपरकी तालिकासे विदित होता है कि मलायद्वीपपुञ्जोंमें सबसे अधिक चालान सिगारका जाता है। रङ्गढङ्गसे प्रगट होता है कि मलायमें चालान बढ़ता ही जायगा । युद्धके समयसे जिब्रा ल्टर और जर्मनीके साथका व्यापार एक दमसे बन्द हो गया।

सिगारका चालान निम्नलिखित बन्दरगाहोंसे होता है—नेगापट्टम, मौलमीन, कलकत्ता, रगून, मद्रास।

भारतमें जो सिगरेट तयार होता है उसका चालान युद्धके पहले जञ्जीबार और पूर्वी अफ्रीका जाता था। इधर फारसकी खाडीमें अधिक माल जाने लगा है।

अभ्रक (Mica)

आजसे पाँच सात वर्ष पहले ससारभरमें जितनी अभ्रककी खपत थी उसका तीन चौथाई भाग हिन्दुस्तानमें पैदा होता था। प्राय एक चौथाईकी पूर्ति अमरीका और कनाडा करते थे। जर्मन पूर्वी अफ्रीकाकी खानोंसे अभ्रक निकालनेकी तैयारी हो रही थी। विगत यूरोपीय महायुद्धका एक फल यह हुआ कि ब्रेजिलको अभ्रक निकालनेका अच्छा अवसर मिल गया है। ब्रेजिलसे इतना अधिक अभ्रक निकलने लगा है कि अमरीकाने भारतसे अभ्रक लेना एकदम वन्द कर दिया है। यहाँकी खानोंसे जितना अभ्रक निकलता है सब Muscovite (मस्कोवाइट) होता है यद्यपि थोडा बहुत Phlogopite mica (फ्लोजोपाइट माइका) भी ट्रावनकोरमें पाया जाता है।

Muscovite mica (मस्कोवाइट माइका) के दो प्रधान क्षेत्र हैं। (१) विहारकी भूमि। वारह मील चौडी और ७० से ८० मीलतक लम्बी यह भूमि विहार प्रातके हजारीबाग, मुगेर और गया जिलेके अतर्गत है। (२) मद्रास प्रातके नीलोर जिलेकी भूमि। इन दो प्रधान क्षेत्रोंके अतिरिक्त अजमेर, उदयपुर, मैसूर और उडीसामें भी

छोटी छोटी खानें हैं। पर इनके आंकड़े और किस्ममें इतना अन्तर है कि इनका ब्योरा नहीं दिया जा सकता। १६१७ में विहारसे तैयार १,७०० टन, नेलोरसे ३०० टन और राजपूतानासे ३६ टन निकाला गया था। पर ये आँकड़े ठीक नहीं हैं। विहारके अभ्रकका चालान कलकत्तासे होता है। यह रूबीके नामसे प्रचलित है। इसमें सबसे बढ़िया अभ्रक clear (क्लीयर) और slightly stained (स्लाइटली स्टेनड) की माग सभी मण्डियोंमें अधिक रहती है; क्योंकि बिजलीके कारखानोंमें इसकी माँग अधिक रहती है। नेलोरके अभ्रकका रंग हरा रहता है। उसका चालान मद्रासमे होता है। राजपूतानेका अभ्रक बम्बईसे चालान किया जाता है। यह बहुत ही मध्यम होता है।

नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया गया है कि यहाँसे जो अभ्रक ब्रिटेन जाता है उसका क्या मूल्य मिलता है और अमरीका तथा कनाडासे जो अभ्रक जाता है उसका क्या मूल्य मिलता है।

प्रदेश	१९१३ वजन हंडर	१९१३ मू० प्रति हं० पौ शि पें	१९१९ वजन हंडर	१९१९ मू० प्रति हं० पौ शि पें०	१९२१ वजन हंडर	१९२१ मू०प्रति हं० पौ शि पें०	१९२२ वजन हंडर	१९२२ मू०प्रति हं० पौ शि पें
ब्रि० भारत	४०१७८	३ ११ ७	५९०१३	९ १ ५	२११८०	११ ५ ११	१५६४०	१० १६ ३
कनाडा	१३८३	६ ९ ६	७८०	१५ ९ ०	—	—	—	—
अमरीका	८८९	१ ३ ०	२७५५	२ ९ ५	१६८०	४ ० ३	४०६०	२ २ १
ब्रेजिल	—	—	२१७	२१ १८ १०	१८०	२६ १५ ९	१००	९ १७ २

बिहार और नेलोर दोनों जगहोंकी खानोंमें काम करनेके तरीके एकसे नही हैं। नेलोरकी भूमि समतल है। इससे बड़ी बड़ी खुली खानें दिखलाई देंगी। पर बिहारकी भूमि समतल नहीं है, बल्कि ऊंची नीची है। इससे पहले सुरंग खोदे जाते हैं और अप्राकृतिक उपायों द्वारा खानोंमें हवा तथा प्रकाश भेजा जाता है। प्राय खुदाईका काम अव्यवस्थित और भद्दा रहा है पर इधर कई कारखानोंमें वैज्ञानिक ढगसे काम होने लगा है। मजूरोंका हाथ घटानेके लिये अनेक तरहकी मशीनोंका प्रयोग भी किया जाने

खानोंसे बाहर निकालनेके बाद अभ्रकको तैयार करना पड़ता है, तब कहीं वह बिकने लायक होता है। मद्रासमें अभ्रकको कैंचीसे काटकर चौकोण बना लेते हैं। बिहारका अभ्रक हँसुयें या पहसुलसे छाटा जाता है। इससे यह एक शकलका नहीं होता, पर इसमें एक लाभ है। चौकोण न होनेसे इसमें कोने नहीं रहते। इससे इसके रगड खाकर टूटने और बरबाद होनेका डर नहीं रहता। ढोंके बड़ी आसानीसे तोड़कर पतले पतले पत्तर बना लिये जाते हैं। सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि अमरीकामें चालान करनेपर इसपर चुंगी नहीं बैठायी जाती, क्योंकि यह तैयार माल नहीं समझा जाता।

काटछांट करनेके बाद इसे काट काटकर ठीक करते हैं। इस तरह काटनेमें इस बातपर सदा ध्यान रखा जाता है कि लम्बाई और चौड़ाईमें एक टुकड़ा जितना बड़ा हो जाय उतना ही अच्छा है। सबसे बड़ा नाप प्राय ४८ वर्ग इञ्चतक होता है। इसे Extra special (एक्स्ट्रा स्पेशल) कहते हैं। साधारणत एक इञ्चसे सात भिन्न भिन्न नापके काटे जाते हैं। ३६ से ४८ इञ्चके भीतर वालेका नाम special (स्पेशल) है। इस तरह काटनेके बाद रंगके अनुसार उनपर मार्का लगाया जाता है।

छोटे नापके अभ्रककी कदर बाजारमें नहीं है। इसलिये इन्हें और काटछाटके बाद जो कतरन निकलते हैं उन्हें कारखानोंके आसपास जमा कर देते हैं। अमरीकामें हरएक खानके साथ इन टुकड़ोंको पीसनेके लिये कारखाने हैं जो इन्हें पीस कर

इनसे boiler (ब्वायलर) और pipes (पाइप्स) के पुर्जे बनाते हैं। पर इस देशमें अभी इनके प्रयोगका कोई उपाय नहीं किया गया है। खानों और कारखानोंके पास जो अभ्रक कूड़ा करकटकी भांति जमा कर दिया जाता है उसे व्यापारके काममें लाया जा सकता है और अगर इनके प्रयोगका प्रबन्ध कर दिया गया तो इनका मूल्य बढ़ाया जा सकता है।

इन छोटे छोटे टुकड़ोंको काममें लानेके लिये अमरीका वालोंने मिकानाइट (micanite) नामका एक मसाला तैयार करना आरम्भ किया है। तेज चाकूसे इन टुकड़ोंको काटकर खूब बारीक कर लेते हैं। उसके बाद चपड़ा मिलाकर उन्हें गला डालते हैं। फिर उन्हें दबाकर चद्दर बनाया जाता है और फिर काटकर ठीक कर लिया जाता है। मिकनाइटपर भाप दिया जाता है, फिर रोलर फेरा जाता है और अंतमें काटा जाता है। अमरीकाकी खानोंमें इन छोटे छोटे टुकड़ोंको काट काटकर बारीक बनानेके लिये हज़ारों औरत और बच्चे काम करते हैं। यहां भी चोडर्यामें इसकी परीक्षा की गयी है और जमालपुर रेलवे कार-खानेमें भी परीक्षा की गयी है। इस देशमें हर तरहकी सुविधायें हैं। अभ्रक यहां बहुतायतसे होता है। चपड़ेका भारतके हाथमें एकाधिपत्य है, कुली और मजूरोंकी यहां कमी नहीं। फिर क्या कारण है कि "मिकानाइट" तथा अभ्रकसे तैयार होनेवाले अन्य सामानोंको तैयार करनेमें यह संसारके अन्य बाजारोंका प्रतिस्पर्धी न हो जाय और धीरे धीरे सबसे आगे न बढ़ जाय।

अभ्रककी खपत यहाँ बहुत ही कम है। वर्षभरमें ३०० टनसे अधिक नहीं लगता। कलकत्ता और मद्रास तथा बम्बई इन्हीं तीनों बन्दरगाहोंसे अभ्रकका चालान जाता है। कस्टम हाउसके अनुसार अभ्रकका प्रधान ग्राहक ब्रिटेन है। उसके बाद अमरीका और जर्मनीका नम्बर आता है। पर ब्रिटेन अपने यहाँ जो माल ले जाता है उसका आधा वह पुन. जर्मनीमें भेज देता है। पर युद्धके समयसे जर्मनीका द्वार बन्द हो गया। अमरीकामें सबसे अधिक अभ्रकका ही चालान जाता था।

युद्धका पहला फल यह हुआ कि नेलोरके अभ्रककी माग बन्द हो गई, क्योंकि जर्मनी ही इसका प्रधान ग्राहक था। पर शीघ्र ही सरकारी शस्त्र-विभागको अभ्रककी आवश्यकता पडी और उसने खरीदना आरम्भ किया। अभ्रककी आवश्यकता बढनेका फल यह हुआ कि भारतसरकारकी दृष्टि अभ्रकके व्यापारकी ओर गई। उसने खानोंको खोदनेके लिये उत्साहित किया।

सज्जी (Saltpetre.)

सज्जी कई काममें आती है। शीशा ढालनेके काममें, खाद्य-पदार्थोंको सडनेसे बचानेमें, खादके काममें तथा बारूद बनानेके काममें यह आती है। सज्जी बनानेका काम केवल तीन प्रांतोंमें होता है। बिहार, सयुक्तप्रांत और पंजाब। इसके लिये सरकार-

से लाइसेन्स लेना पडता है। संयुक्तप्रांतका फर्रुखाबाद जिला सज्जीकी सबसे भारी मण्डी है, यद्यपि पंजाबकी सज्जी सबसे उमदा होती है। इन तीनों प्रान्तोंके अतिरिक्त मद्रास प्रान्त और कई देशी राज्योंमें भी सज्जी बनाई जाती है, पर उससे केवल स्थानीय आवश्यकताकी पूर्ति हो सकती है। विगत यूरोपीय महायुद्धके समय सज्जीकी मांग बहुत अधिक बढ गई थी। इससे भारत सरकारने सज्जी बनानेके काममें उत्साह देनेके लिये लाइसेंसका दर घटा दिया और अनेक तरहसे सहायता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि सज्जीके कारबारमें बहुत बढती हुई। अनेक खेत जो इसके पहले ऊसर पडे थे सज्जी बनानेके काममें लाये गये। इसके बाद यह नियम बनाया गया कि जिस सज्जीमें दस प्रति-सैकडे से अधिक मेल हो उसका चालान न किया जाय। और खरात्र सज्जी नियत मूल्यपर ब्रिटेन जाने लगी। इसका परिणाम यह हुआ कि सज्जी बनानेवालोंकी संख्या ३१,१६१ से बढकर ५१,८३० हो गई और सज्जी साफ करनेवाले कारखानोंकी संख्या ३२७ से ४५२ हो गयी। इनमें सबसे अधिक संख्या बिहारकी है। नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि प्रत्येक प्रान्तके कारखानोंकी तौलके हिसाबसे प्रत्येक प्रान्तमें कितनी सज्जी उत्पन्न होती है।

सन्	विहार (मन)	संयुक्तप्रान्त (मन)	पञ्जाब (मन)
१९१३-१४	१८५३७३	१६९७५६	८७०१०
१९१४-१५	२२२१२३	१८८३९६	१०६१७६
१९१५-१६	२१९५६५	२३६६५८	१५२३०१
१९१६-१७	२४१०३८	३००५६६	२४५९७६
१९१७ १८	२३०४३१	२५८८३८	१५६०५८
१९१८-१९	२०४६८१	२८९४८५	२०६८८२
१९१९-२०	२०५६४१	१५८२८७	१४२१७४
१९२०-२१	१६५०६५	१३३४७३	१४८३४५
१९२१-२२	१५४०७६	१०४२६०	१३३९९६
१९२२ २३	४७८५९	५४५१७	१२७५६४

-ऊसर जमीनको सूखेके दिनोंमें खोदकर मिट्टी निकालते हैं। इसके अलावा मकानोंमें जो नोना आदि लग जाता है वह मिट्टी भी वटोर ले जाते हैं। इन्हें ले जाकर छिछले गड्ढोंमें भर देते हैं और ऊपरसे पानी डाल्ते हैं। जब मिट्टी नीचे जम जाती है तो पानीको निकाल लेते हैं और आगपर चढ़ाकर खौलाते हैं। धीरे धीरे जलकर पानी उड़ जाता है और सज्जी रह जाती है। इस सज्जीमें निमकका अंश अधिक रहता है। पंजाबमें सूरजकी धूपसे भी पानीको सुखा डालते हैं। इसके बाद नोनियाको और कुछ करनेका अधिकार नहीं है। यह

उसे साफ करते हैं ।
कारखानदारोंके हाथ सज्जी बेच देता है और वे बड़े बड़े कारखानोंमें उसे साफ करते हैं।

१८६० तक सज्जीके व्यापारका भारतके हाथमें एकाधिपत्य था। इसके बाद दक्षिणी अमरीका और जर्मनीवालोंने नकली सज्जी तैयार करना आरम्भ किया। सज्जीके प्रधान व्यापारी अमरीका, चीन, ब्रिटन, मारिशस और लंकाद्वीप थे। मारिशस और लङ्काद्वीपमें केवल खादके लिये चालान जाता है, इससे सबसे निकम्मी सज्जी जाती है, पर चीन फरुखाबादी सज्जी मगाता है। नीचेकी तालिकामें दिखलाया गया है कि किस देशमें कितनी सज्जी यहांसे जाती है।

(टनमें)

देश	१९१३-१४	१९१९ २०	१९२० २१	१९२१ २२	१९२२ २३
अमरीका	१३९०	१६७९	३८९१	४६६	१०२
चीन	४०३४	२२२१	२२५२	२५४०	२२७७
ब्रिटन	२४६४	५५२२	५५४०	४३४१	२११९
मारिशस	१४३७	२२०१	५३९१	१४६४	२०९६
लङ्का	२२२४	४९६०	१८३३	२२३६	२५४७
अन्य देश	१८५४	१८४६	५७७	६७०	१४५५

यह अवस्था १९१३-१४ तक रही। युद्धकालमें सारा व्यापार ब्रिटनने अपने हाथमें कर लिया, क्योंकि इसके पहले ब्रिटनको माल जर्मनी और बेलजियमसे मिलते रहे और युद्धके कारण वन्द हो गये। नाकाबन्दी करनेके बाद केवल आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेण्ड थोडा माल गोश्तको सडनेसे बचानेके लिये तथा मारिशस और लकाद्वीपमें खादके लिये भेजनेको आज्ञा दी गई थी।

सन् १९१६ में मूल्य एकाएक बढ़ गया और नकली माल बहुत तैयार होने लगा। इससे दलालोंकी सुविधाके लिये भारत सरकारने सज्जीका मूल्य निर्धारित कर दिया और १० प्रति सैकडे खराब मालके लिये बाद दिया। खराब मालका निर्णय कलकत्ता कस्टम हाउसके जिम्मे किया गया। युद्धके समाप्त होनेपर हर तरहकी नाकावन्दी उठा ली गयी।

माल अधिकांश बम्बईके बन्दरगाहसे रवाना होता है। थोडा बहुत रोजगार कलकत्तासे भी होता है।

बोराक्स (Borax)

बोराक्स ब्रिटिश भारतमें नहीं होता। यह प्रधानत दो स्थानोंमें पाया जाता है। एक तो तिब्बतकी नमकीन झीलोंके किनारे, दूसरे काश्मीरमें गन्धककी खानोंके आसपास पाया जाता है. लदाख झीलके आसपास जो बोराक्स पैदा होता है वह कुलू होकर सुलतानपुर आता है और वहीं साफ किया जाता है अथवा चम्बा होकर काश्मीर और लाहोर

आता है। तिब्बतमें जो बोराक्स मिलता है उसे भूटिया लोग संयुक्तप्रान्तमें लाते हैं और वह रामनगरमे साफ किया जाता है। इस तरह प्रतिवर्ष प्राय २५००० हण्डर बोराक्स सीमाप्रान्तसे आता है। ब्रिटनसे तैयार बोराक्स प्रतिवर्ष प्राय ५,००० हण्डर आता है।

अभी हालमें नवाडा और कालिफोर्नियामें बोराक्सकी पैदाइश होने लगी है। इससे यहासे चालानका जाना प्रतिवर्ष घटता जा रहा है पर स्थानीय खर्च बढ गया है। बोराक्स दवाके काममें आता है, रंगाईके काममें आता है और छींटकी छपाईके काममें आता है।

बोराक्सके प्रधान ग्राहक प्रायद्वीप और हागकाग हैं। अधिकाश माल कलकत्तासे रवाना होता है।

रेशम

इस देशमें अब भी तीन प्रदेश हैं जहाँ रेशमके कीडे पाले जाते हैं और व्यवसायके रूपमें रेशम निकालनेका काम होता है। (१) मैसूर प्रान्तका दक्षिणी हिस्सा और कोइम्बतूर जिलेका कोलिगल ताल्लुका। (२) बंगालमें मुर्शिदाबाद, मालदा, राजशाही और बीरभू जिले। (३) काश्मीर और जम्बू तथा पजाबके कुछ नगर और उत्तर पश्चिमी सीमाप्रान्तकी कुछ भूमि। पर यहा केवल मलवरी कीडे पाले जाते हैं। इसके अलावा छोटानागपुर, मध्यप्रदेश और उडीसामें टसरके कीडे तथा आसाममें मूगा और येडो रेशमके कीडे पाले जाते हैं। टसरका

कीड़ा जगली है और पोस नही मानता। मूगा आधा पालतू है। ऐडीं पालतू कीडा है। यह रेंडीकी पत्तीपर रहता है। पर इसके रेशमको नोछना और कातना पडता है। बंगाल और दक्षिणी भारतमें मलवरी कीडा होता है। उसे मलबरी इसलिये कहते हैं कि यह शहतूनकी पत्तियोंपर ही जीता है। कहा जाता है कि दक्खिनमें पहले पहल टीपू सुलतानने चोनसे रेशम-का कोडा मगाकर रेशमका कारबार मैसूरमें खोला। मैसूरसे कोइम्बतूरमें कीडे लाये गये और इस समय भारतका दो-तिहाई माल खाली दक्खिनमे तैयार होता है। इधर बंगाल और मैसूरमें जापानी और फरासीसी कारीगरोंने मलबरी कीडा पाल-नेकी परीक्षा की और खेतीमें बढती हुई। काश्मीरमें शहतूनके पेड बहुतायतसे पाये जाते हैं। यहाँ फ्रास और इटलीसे कीडे मगाकर पाले जाते हैं। रेशमका व्यापार काश्मीर महाराजके हाथमें है। सालमें प्राय ७०,००० पौंडकी आमदनी इस मदसे है। काश्मीरमें प्राय २००,००० पौंड रेशम हर साल पैदा होता है और सबका सब बाहर चालान भेज दिया जाता है। मुर्शिदाबादमें कई एक लुसी या किर्वी बनानेके कारखाने हैं। पर सबके सब अग्रे-जोंके हाथमें हैं। केवल दो कारखाने—एक बंगलोर और दूसरा श्रीनगर—हिन्दुस्तानियोंके हाथमे हैं। हिन्दुस्तानी तरीकेसे किर्वी या लुची बनानेके पाच कारखाने मुर्शिदाबादमें हैं और एक जम्बूमें है। नीचेकी तालिकामें यह दिखलाया गया है कि १६१६ में भारतके किस प्रान्तमें कितना मलबरी रेशम पैदा हुआ।

देश			पैदावर	
मैसूर			११५२,०००	पौंड
बगाल			६००,०००	,,
मद्रास			४००,०००	,,
काश्मीर		..	६६,०००	,,
वर्मा			१५,०००	,,
आसाम	...	...	१२,०००	,,
पजाब	.	..	१८,००	,,
	जोड	..	२२७६,८००	,,

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके आगमनके पहले रेशमका व्यवसाय प्रधान व्यवसायोंमें था। वारन हेस्टिंग्जके राजत्वकालमें केवल बगालसे किर्चा या लुत्तीका रेशम ५,००,००० पौंडके लगभग गया था। १८६६ तथा १८७४ के बीचमें प्राय प्रति वर्ष २० लाख पौंड माल विदेशोंको जाता था। लुत्तीके अलावा इसमें चसम और ककून भी शामिल थे। चसम सिल्क मुर्शिदाबादमें तथा ककून आसाममे पाया जाता है। इसके बाद धीरे धीरे यह व्यापार गिरता गया। नीचे लिखी तालिकामें दस दस वर्षोंके व्यापारका ब्यौरा दिया गया है

सन्	निर्यात कच्चा माल
१८६५—७४	२०६५२७२ पौ
१८७५—८४	१४०१०२५ ”
१८८५—९४	१७४४१०६ ”
१८९५—०४	१७१७६०१ ”
१९०५—१४	१७४००२३ ”
१९१५—२४	११७१०७४ ”

इस पतनका क्या कारण था इसका दिग्दर्शन हमने आरम्भमें ही करा दिया है। युद्धकालमें रेशमके व्यापारकी क्या अवस्थ रही इसका दिग्दर्शन नीचेकी तालिकामें कराया गया है।

वस्तु	१९१३—१४	१९१८—१९	१९१९—२०	१९२०—२१	१९२१—२२	१९२२—२३
कच्चा रेशम	१६०२२२ पौंड	२९०९८९ पौंड	१७९६७१ पौंड	१२६९९० पौंड	९६०३७ पौंड	१७३४९३ पौंड
चसम	९०९०७७ „	५५१२९९ „	११६६९९० „	९२१८५० „	९९४४५२ „	१०१०२३९ „
कफून	१३३७८९ „	११२६८० „	१०४४२९ „	१११८७९ „	६०२६४ „	६१२३४ „

इन छ वर्षोंमें प्रधान व्यापार फ्रांस और ब्रिटनके साथ होता रहा। अमरीका और इटली-की मांग थोडी और अनिश्चित थी। रेशमका चालान कराचीसे होता है। आसामका रेशम कलकत्ता-से और दक्षिणका मद्रासमे जाता है।

रेशमी कपड़ा

रेशमी कपडेका चालान और भी तेजीके साथ घटता जा रहा है। रेशमी मालका चालान बाहरसे इस तरह आ रहा है कि यहाका कारवार एकदम नष्ट होता जा रहा है। सम्प्रति केवल मुर्शिदाबाद, तञ्जोर, बनारस, सूरत, अमृतसर, चिंगलीपट, मदुरा और मण्डालेमें थोडा बहुत रेशमी माल तैयार किया जाता है। सवाईसे जो रेशम यहाँ मगाया जाता था उसमे किसी तरहका अन्तर नहीं पडा है। केवल मालमें फर्क कर दिया गया है। पहले सचीकारीके लिये मोटा रेशम आता था, अब

बुननेके लिये बारीक रेशम आने लगा है। बर्मामें रेशमी कपड़े पहननेका बड़ा रिवाज है। केवल गरीबोंको छोड़कर सभी रेशमी कपड़ा पहनते हैं। बर्माके हाटमें जापान अपने यहांका बना रेशमी माल इस तरह लाद रहा है कि वहाके कारखानोंका मुँह बन्द होता जा रहा है और बिनाई उठती जा रही है। युद्धके पहले जापानसे ३,००,००० पौंडका माल आता था। भारतके किसी किसी प्रान्तमें हाथके बिने रेशमी कपड़ोंकी मांग इतनी अधिक है कि मशीनके बने कपड़े उनका मुकाबिला नहीं कर सकते। किनखावकी बुनाई बनारस और मदुरामें होती है। इसके बुननेके लिये करघोंमें नकशा बनाकर बाधते हैं और रेशम तथा कलाबत्तूके सहारेसे बुनते हैं। इसकी मांग यूरोपीय बाजारोंमें भी रहती है। युद्धके दिनोंमें रेशम रगनेके रंगका बड़ा अकाल पड़ गया था। इस समयतक दो मिलें—एक बम्बई और एक कलकत्ता—रेशमका काम कर रही हैं और दो-एक अहमदाबाद और एक बगलोरकी—सूतीके साथ साथ रेशमका काम कर रही हैं। काशीमें भी एक मिल बैठ रही है जो सूतेके साथ रेशमका काम करेगी। बम्बई और कलकत्ताका व्यापार तो घटता गया, पर मद्रासका रोजगार कुछ बढ़ा है।

रेशमी कपड़ेका चालान प्रधानत ब्रिटन जाता है। बम्बई-से फारसकी खाडीमें माल जाता है। मद्रासमें प्रायद्वीपमें माल जाता है। मारिशस और उत्तरी अफ्रिकामें भी माल जाने लगा है। इन दोनों देशोंमें चालान बढनेकी सम्भावना

है। बर्मासे होकर शान राज्यमें कुछ माल जाता है, पर उसके बदलेमें उतना ही माल तैयार और रेशम श्याम तथा उत्तरी चीनसे आ जाता है।

सूअरका बाल

सूअरका बाल सयुक्तप्रान्तमें बटोरा जाता है और कलकत्ता से बाहर भेज दिया जाता है। इससे ब्रुश और भाड़ू बनाया जाता है। कानपुरमें एक छोटासा कारखाना है। इसमें ब्रुश बनता है। और इननेसे ही स्थानीय आवश्यकता पूरी हो जाती है। अभी हालमें इन्दौरमें एक कारखाना खुला है। जिन्दे जानवरोंका बाल मरे हुएसे ज्यादा कीमती समझा जाता है। यह केवल सयुक्तप्रान्तमें बटोरा जाता है।

युद्धके पहले जर्मनी और ब्रिटन माल जाता था। युद्धके बाद केवल ब्रिटन एकमात्र ग्राहक रह गया है।

ताड़का डण्ठल या रेशा

ताडका रेशा टूटीकोरिन और कोकोनाडामें पाया जाता है और ब्रिटन भेजा जाता है। यह भाड़ू और पाँवदान बनानेके काममें आता है। तडाके पत्तेसे ये रेशे निकाले जाते हैं। दक्षिण भारतमें विशेपकर कृष्णा, गोदावरी, टिनेवली और पालघाट प्रदेशमें—यह अधिकतासे पाया जाता है। यह रगकर और सादा दोनों तरहसे भेजा जाता है। इसका मूल्य लम्बाईके अनुसार होता है। तीन तरहके ये रेशे होते हैं—(१) १५ से १८ इञ्चतक, (२)

१२ से १४ इञ्चतक, (३) ८ से १२ इञ्चतक। हरएक चालानमें तीनो तरहके बराबर रेशे रहते हैं।

इसके प्रधान ग्राहक ब्रिटन, लंकाद्वीप और जापान हैं। कोकोनाडा, टूटीकोरिन, कालीकट और कोचीनके बन्दरगाहोंसे माल रवाना होता है।

मोमबत्ती

मोमबत्ती दो तरहकी होती है। एक तो जानवरोंकी चर्बीसे बनाई जाती है और दूसरी पेट्रोलियमको साफ करनेसे बनती है। रंगूनके पास सिरियम एक जगह है, वहां दोनोंके मेलसे मोमबत्ती बनती है। इस दशामें मोम गलाकर बर्त्तनमें ढाल दिया जाता है और जितनी कड़ी मोमबत्ती बनानी होती है उसी हिसाबसे चर्बी डाल दी जाती है। बत्ती भरे हुए टिनके सांचे तैयार रहते हैं, उनमें यह पिघला पदार्थ भरा जाता है। एक औसत दर्जेकी मशीनसे १५ मिनिटमें ३६० बत्तियां तैयार हो सकती हैं। चर्बीसे मोमबत्ती तैयार करनेके कारखाने कलकत्ता, मैसूर, मद्रास और बरौदा राज्यमें हैं। मोमबत्तीका चालान चीन, लंकाद्वीप, ब्रिटन, न्यूजीलैण्ड, प्रायद्वीप, फारस और श्याममें जाता है।

सेना (Senna)

सेना पेडकी पत्तियोंके रससे तैयार की जाती है और दवाके काममें आती है। सूदान, टेनीवली और मद्रासप्रान्तमें यह पैदा होती है। इस पौधेको उगानेके लिये खासतौरपर पेड़ तैयार किये जाते हैं। यह निश्चय रूपसे नहीं कहा जा सकता

कि कितने एकड़ भूमिमें इसकी खेती होती है। खेतोंमें ७०० पौंड प्रति एकड और बगीचोंमें करीब १४०० पौं० प्रति एकड पत्तिया पैदा होतो हैं। बोआईके ठीक ६० दिन बाद पत्तियोकी चुनाई शुरू हो जाती है। हरी हरी पत्तियाँ पेडोंसे तोड ली जाती हैं। अगर फूलोंकी कलिया कलम कर दी जाती हैं तो पत्तिया और भी पोढी हो जाती हैं। चुन चुन-कर पत्तिया छायामें सातसे दस दिनतक सूखनेके लिये रख दी जाती हैं। दस दिनके बाद सेना विक्रीके लिये तैयार हो जाती है। किसानोंसे दलाल माल खरीदता है और पत्तियोंके कदके अनुसार उन्हें छांटता है और चालान करनेवालोंके हाथ बेच देता है, जूनमें पत्तियोंका चुनाव आरम्भ होता है और दिस-म्बरतक चलता है।

इस देशमें जो सेना पैदा होती है उसमें रस अच्छा निकलता है। इसलिये उसकी माग भी अच्छी रहती है। ब्रिटन, अम रीका और फ्रान्स सेनाके प्रधान ग्राहक हैं।

कुचिला

कुचिलेका पेड हिन्दुस्तानके सभी प्रान्तोंमें पाया जाता है। नवम्बरमें फल चूने लगता है और उसे बटोर बटोरकर सुखाने लगते हैं। युद्धके पहले ब्रिटन, बेलजियम, जर्मनी, हालैंड और फ्रास कुचिलेके ग्राहक थे। कोचीन, मद्रास, कोकोनाडा, बम्बई और कलकत्ताके बन्दरगाहोंसे कुचिला रवाना होता है।

कोकोनाडासे जितना माल चालान होता है सब न्यूयार्क (अमरीका) जाता है।

कुनैनका पेड़ (Cinchona)

कुनैनका पेड यहाका उत्पन्न नहीं है। १८६२ ई०में ब्रिटिश सरकारने अमरीका (दक्षिण) से इसका बीज मँगाया और पेड लगाया। इसके बाद चाय और कहवाके खेतिहरोंने भी इसकी खेती आरम्भ कर दी। इस समय नीलगिरि, कुर्ग, मालाबार और दार्जिलिंगमें कुनैनकी खेती होती है। दोनों प्रान्तोंमें क्रमश २,४५२ और २,२०० एकड भूमिमें कुनैनकी खेती होती है। इसके अतिरिक्त मैसूर और ट्रावनकोर राज्यमें भी थाडी खेती होती है। ट्रावनकोरमें चाय और रबरकी खेतीसे अधिक लाभ होते देख लोगोंने इसकी खेती कम कर दी। उत्तरी भारतमें कुनैनकी खेती सरकारके हाथमें है। दक्षिणमें केवल ८०० एकड भूमि सरकारके हाथमें नहीं है।

कुनैनके पेड दोनों तरीकोंसे लगाये जाते हैं अर्थात् बीज बोकर भी उगाये जाते हैं और कलम भी किये जाते हैं। पाच वर्षके बाद पेड तैयार हो जाते हैं। अगर दस वर्षतक इन्हें रहने दिया जाय तो इनसे उम्दा कुनैन तैयार हो सकता है।

कुनैन तैयार करनेके तीन तरीके हैं —(१) डालियाँ काट ली जाती हैं अथवा पेड ही काट लिये जाते हैं। (२) पेडोंसे छाल उतार ली जाती है। (३) ऊपरका हिस्सा छाट लिया जाता है। इन छालोंको भारत सरकार खरीद लेती है और

अपने कारखानोंमें कुनैन बनानेके लिये भेज देती है अथवा बाहर चालान कर देती है। नीलगिरि जिलेमें नेडुवतम और दार्जिलिंगमें मंगवोमें कुनैन बनानेके कारखाने हैं।

ब्रिटिश साम्राज्यमें अभी जावासे माल मंगाना पड़ता है। अगर भारतमें कुनैनकी खेती बढ़ाई जाय तो जावा इस समय जो लाभ उठा रहा है वह भारतके हाथमें आ जायगा। आवश्यकता इस बातकी है कि नये खेतोंका पता लगाकर उन्हें तैयार किया जाय।

कुनैनका चालान केवलमात्र ब्रिटन होता है। बंगालमें जितना कुनैन पैदा होता है सब खर्च हो जाता है, क्योंकि इधर मलेरियाका प्रकोप अधिक रहता है और कुनैन मलेरियाका शत्रु है। दक्षिण प्रदेशमें जो माल निकलता है वह सब बाहर जाता है। पेड़ोंसे छाल उतारकर ही बेच दी जाती है। कुनैन तैयार नहीं किया जाता।

टूटीकोरिन, कालीकट और कोचीनके बन्दरगाहोंसे माल रवाना होता है।

आयात—तैयार कुनैनका चालान यहाँ बाहरसे आता है। तैयार कुनैन अमरीका और ब्रिटनसे आता है, पर यहा इसकी खेती नहीं होती।

गन्ना और शक्कर

किसी समयमें यहा गन्नेकी खेती बहुतायतसे होती थी। यह देश गन्नेका भाण्डार था। आज भी यहा गन्नेकी खेती

अन्य देशोंसे अधिक होती है, पर शकर कम निकलती है। यहाँ चीनीकी खपत इतनी अधिक है कि वहुतसा माल विदेशोंसे मगाना पडता है। यहासे गुडका चालान लंका और फीजी-द्वीप जाता है। गुडका व्यापार भारतीयोंके हाथमें है। विजगापट्टम, कोकोनाडा, टूटीकोरिन तथा वम्बईके बन्दरगाह गुडके चालानमें लगे रहते हैं।

तारपीन (Terpentine)

तारपीनका व्यापार यहाके लिये एकदम नया है। युद्धके पहले तारपीनके तेलका यहा एक भी कारखाना नहीं था। तारपीनका तेल सलईके पेडसे निकलता है। हिमालयकी पहाडियोंमे यह पेड वहुतायतसे उगता है। तारपीनका तेल बनानेके अभी केवल तीन कारखाने हैं—एक जूल्में, दूसरा भवालीमें और तीसरा बरेलीमें। सलईका पेड (जिससे तारपीनका तेल निकलता है) हिमालयकी तराईमें कोई ४,००,००० एकड भूमिमें है और देशी राज्योंमें भी इतनी ही भूमिमें है। इससे यह व्यापार बहुत ही अधिक वढाया जा सक्ता है। इसके अलावा वर्मा और आसाममें भी ये पेड हैं। अभी हालमें ही फ्राससे एक तरहका पेड मंगाकर लगाया गया है जिससे अच्छा तारपीनका तेल निकलेगा। पेडको छीलकर उसमें वर्तन लटका देते हैं। रस चू चूकर उसी वर्तनमें गिरता है और उसी रसको पकाकर तारपीन तैयार करते हैं। तारपीनका तेल वार्निश औ[illegible] काममें [illegible] और इससे जो (Rosin) रोजि[illegible] यह [illegible]

मिलोंके काममें आता है, साबुनके कारखानोंमें लगता है और सस्ती वार्निश भी उससे बनाई जाती है तथा चपड़ेमें भी उसका मेल दिया जाता है।

आयात—अभी तारपीनका चालान बाहरसे बहुत होता है, पर इतना अधिक साधन मौजूद है कि यहांकी तैयार की हुई तारपीनसे संसारभरका काम चल सकता है।

मोती

मोतियोंकी झील यहां दाक्षिणात्य और मर्गुईमें है। रामनद और टेनिवली जिलेकी मिलोंमें जो शंख पाये जाते हैं वह बंगाल जाकर चूड़ी बनानेके काममें आते हैं। मर्गुईकी झील जापानवालोंके हाथमें है।

आयात—इसके अलावा फारसकी खाड़ीसे मोतीका चालान यहां आता है।

हीरा

भारत हीरा, जवाहर और पन्नाके लिये प्राचीन कालसे मशहूर है। संसार-प्रसिद्ध कोहनूर हीरा गोलकुण्डाकी खानसे निकला था। पर इस समय यहाकी खानोंसे लाल और पन्ना ही निकलते हैं। उत्तरी बर्मामें इसकी खानें हैं। छोटे छोटे जवाहिरोंकी तो यहीं खपत हो जाती है पर बड़े लन्दन भेज दिये जाते हैं। मोगक खानका कबूतरी लाल संसारमें सबसे मूल्यवान समझा जाता है। सिन्ध, पंजाब और काश्मीरमें भी कुछ रत्न पैदा होते हैं।

चतुर्थ परिच्छेद

व्यापारकी मण्डियां।

रामकृष्णपुर—यह हाट हवडासे एक मील है। यहा ८० तोलेका सेर होता है। वगालके चावल और धानकी यह प्रधान मण्डी है। यह नगर हुगली नदीके किनारेपर है और रेलवे लाइनकी शाखा भी गई हुई है। इससे यहासे माल रवाना करनेमें वडो सुविधा होती है। चारों ओरसे चावल, धान, रबी, दाल, तेलहन, जमींकन्द, खारा निमक आदि विकनेके लिये आते हैं।

कारवार करनेके यहा तीन तरीके प्रचलित हैं। (१) पक्का वैग, (२) चालान मूल्य, (३) वोजक। दलालोंकी सहायता विना पक्का वैगका सौदा नहीं हो सकता। इसके लिये दलालोंको १) रुपया सैकडा दस्तूरी मिलती है। यहाकी मण्डीमें एक वात और प्रचलित है। वैशाखसे आश्विनतक वोरापीछे एक सेर और कार्तिकसे चैततक वोरा पीछे दो सेर काँटकर तब सौदा होता है। पर दश वीस वोरा माल खरीदनेवालोंके साथ यह रियायत नहीं की जाती। इसे *ढलता* कहते हैं।

हम ऊपर कह आये हैं कि अगर १०० या २०० वोरेका सौदा एक साथ होना है तव तो पक्का वस्ताके नियमोंका व्यवहार किया जाता है, नहीं तो चालानके अनुसार माल दिया जाता है।

इसमें तौलपर आधा सेर, बोरापीछे आधा सेर और बोराके मूल्यपर दो पैसा काटकर सौदा होता है।

पका वस्तामें तौलाई, कसाई, सिलाई और लदाईका खर्च खरीदारके मत्थे रहता है, पर चालानी सौदामें खरीदारको कुछ नहीं देना पडता। फुटकर सौदा लेनेमें तीन पैसा बोरा खर्च पडता है। उसमेंसे एक पैसा तो खरीदारको उसी समय दे देना पडता है। शेष दो पैसा सूदके मदमें दिखा दिया जाता है अर्थात् आठ दिनके भीतर अगर वह भुगतान कर देता हैं तो उसे दो पैसा बोरा फिरता मिलता है जो खर्चा मध्ये काट लिया जाता है। अगर वह आठ दिनके भीतर भुगतान नहीं देता तो उसे दो पैसा-बोराके हिसाबसे देना पडता है।

सिरामपुर—हुगली जिलेमें हुगली नदीके किनारे हवडासे ११ मील है। ई० आई० रेल्वेका स्टेशन है। ८० तोलेका सेर है। यहा पानका सवसे बडा दरीवा या मण्डी है। यहींसे पान रेलों और नावों द्वारा चालान किया जाता है। 'वगलक्ष्मी काटन मिल' और 'कल्यान काटन मिल्स' नामको दो सूती मिलें भी यहा हैं। ये मिले बहुत पुरानी है और हिन्दुस्तानियोंके रुपयेसे चलती हैं।

शिउराफुली—यह मण्डी सिरामपुरसे ठीक रेलवे स्टेशनसे दो मीलपर है। यहा मगल और शनिवारको हाट लगती है। यहा दो तरहका तौल है–८० तोला और ८२½ तोला। यहाकी मण्डीमें निम्नलिखित चीजें बिकनेको आती हैं–शाक भाजी और तरकारी, आलू, प्याज, सन और पाट, धान और चावल, गुड और सीरा

जाता है। मकान बनानेके लिये यहाँसे मगरा बालू (सरस्वती नदीकी बालू) का चालान बहुत होता है। रेंडीकी खलीका व्यापार भी अच्छा होता है।

बर्दवान—हवड़ा स्टेशनसे ६६ मीलपर है। मण्डी स्टेशनसे दो मीलपर है। यहाँ तीन तरहके सेर चलते हैं—६०, ८० और ८२ तोलेके। धान, चावल, कलाई, सीरा, तम्बाकू तथा अनाजकी यह प्रधान मण्डी है। इस मण्डीसे सम्बध रखनेवाली अनेक हाटें हैं जहाँ चावल और धानका खासा व्यापार होता है। विजयी प्रतापपुर, नूतनगज, बोरहाट, आलमगज और सदरघाट प्रधान हाट हैं। बर्दवानसे चालान पूर्वी बगाल, हवडा, बेलियाघाटा आदि स्थानोंको जाता है। मोटा चावलका चालान यहासे अधिक होता है। बर्दवानमें चावल कूटनेके ६ और तेल पेरनेके २ कारखाने हैं। भिन्न भिन्न प्रान्तोंके व्यापारी अपने आढतिये यहा रखते हैं जो उनके लिये सौदा करते हैं। इस तरह चना, गेहू, सरसों, मसूर, खेसारी (केराव), मटर, सीरा, चीनी, पोस्ता, मिरचा, घी, तेल, मसाला, बिनौला, आलू, प्याज, तम्बाकू, सन, पाट, कपास तथा लकडीकी यहा मण्डी है। बर्दवानकी मण्डी बगालकी मण्डियोंमें सबसे भारी है। यहाका सबसे बडा व्यापार धान और चावलका है। चन्दननगर, चिनसुरा, हुगली, भद्रेश्वर, शिवराफुली, बाली, भाटपाडा, सोदपुर आदि मण्डियोंमें यहींसे चावलका चालान जाता है।

बोनपास—बर्दवान जिलेमें हवडा स्टेशनसे यह ८१ मील

दूर है। लूपलाइनमें खाना जकशनके बाद यह पहला स्टेशन है, ६० और ८० तोलेका सेर चलता है। सोने चादीके गहने यहा बनते हैं तथा कलई भी होती है। पीतलके वर्तन, बन्दूक, फरसा या कुदाल, हसुआ, चाकू, सरौता, बरछा और भाला तथा अन्य लोहेके सामान यहाँ बनते हैं।

सोनामुखी—बाकुडा जिलामें दामोदर नदीके दूसरे किनारे-पर यह मण्डी है। रेलवे स्टेशन पनागरसे दस मील पडती है। ६० और ८० तोलेका सेर है। रेशमी कपडा जैसे, टसर, मटका और चद्दर बहुतायतसे बनता है और भिन्न भिन्न नगरोंमें भेजा जाता है। लाह, चावल, तथा जवकी भी यहा मण्डिया हैं।

रानीगंज—बर्दवान जिलेमें हवडा स्टेशनसे १२० मीलपर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। ८० तोलेका सेर है। बर्दवान, बाकुडा और मानभूमिकी मण्डियोंका इसे खजाना कहना चाहिये। यहा भिन्न भिन्न प्रान्तके व्यापारी सौदा करने आते हैं। धान, चावल और कोयलेका व्यापार प्रधान है। यहीं पर बर्नकम्पनीका कारखाना है जिसमें हरतरहके मिट्टीके सामान टाइल, पाइप आदि तैयार होते हैं और चालान भेजे जाते हैं। पीतलका काम भी यहा अच्छा होता है। कटोरो, लोटा और थाली यहा बनतो हैं।

यहां मारवाड़ियोंके तीन तेल पेरनेके कारखाने हैं। "बगाल पेपरमिल्स" का कागज बनानेका भी यहीं कारखाना

है। यहासे थोडी दूरपर वासामें चमडा रगने और सिझानेके लिये बहेरासे रग निकालनेका कारखाना है। यहाँसे रग तैयार करके स्काटलैण्ड भेजा जाता है। कोयलेकी यहां सबसे अच्छी और बडी बडी खानें हैं।

मधुपुर—सन्थाल परगनामें हवडा स्टेशनसे १८८ मीलपर है। स्टेशनके पास ही हफ्तेमें दो दिन सोम और शुक्रको मण्डी लगती है। ८० रुपयेका सेर है। मण्डीके दिन धान, चावल, अरहर, बहेरा, महुआ, लकडी बिकनेको आती हैं। मधुपुरके हाटमें बकरे और मुर्गिया भी बिकनेको आती हैं। इसके अलावा हल्दी, सरसों तथा अनन्तमूल भी बिकनेको आते हैं। महुआ, कोयना और बहेराका व्यापार यहा सबसे ज्यादा होता है। महुआको शराब बनानेवाले खरीदते हैं और बहेरा तथा कोयनेका चालान हवडा जाता है।

देवघर—सन्थाल परगनामें हवडासे २०५ मीलकी दूरीपर है। जैसीडिह जक्शनसे देवघरको दूसरी लाइन गई है। ८० तोलेका सेर है। अरहर, सीरा, महुआ, कोयना, घी, तिल, बहेरा, धान, चावल, कुरथी, जोन्हरी, तीसी, सरसों, रेंडी और पाटकी यहा मण्डी है। बडी अरहर या माघी अरहर यहा पूसासे आती है। देवघरके पासही नानीहाटमें चपडेका कारखाना है। यहासे तैयार चपडा कलकत्ता जाता है। वैद्यनाथधाम हिन्दुओंका तीर्थस्थान है। यहाकी जलवायु बहुत ही लाभदायक है।

सिमुलतला—मुगेर जिलेमें हवडासे २१७ मीलकी दूरीपर

यह नगर है। इसके पास ही तेलकी मण्डी लगती है। ८४ तोलेका सेर है। महुआ, कोयना, कोयनेका तेल, ओन्हरी, रहर, रेंडी, तीसी, सरसों, धान, बहेरा, लकड़ी तथा सोरा यहांकी मण्डीमें बिकने आते हैं।

गिरिडीह—हजारीबाग जिलेमें हवड़ासे २०६ मीलपर है। मधुपुर गाड़ी बदलनी होती है। स्टेशनके पास हा मण्डी है। ८० तोलेका सेर है। चावल, धान, महुआ, कोयना, कोयनेका तेल, ओन्हरी, बहेरा, गुड़, सरसोंका व्यापार यहां होता है। गिरिडीहका सारा व्यापार मारवाड़ियोंके हाथमें है। यहां कोयले और अभ्रककी खाने हैं।

पचम्बा—यह मण्डी गिरिडीहसे तीन मीलपर है। पीली, सरसों, बहेरा, पोस्ता और सोरेका यहां व्यापार होता है। यहाकी सरसोंमें तेल अधिक निकलता है। यहांका गुड़ भी अच्छा होता है।

कामा—मुंगेर जिलेमें हवड़ासे २२८ मीलकी दूरीपर है। स्टेशनके पासही मण्डी लगती है। ८४ तोलेका सेर है। रेसम और पाट, ओन्हरी, महुआ, कोयना तथा कोयनेका तेल, रेंडीका तेल, सरसों, गुड़, घी तथा तीसी यहां बिकने आती है। यहांका गुड़ अच्छा होता है। इस मण्डीमें गुड़का आमदनी सदा होता है। देहातोंमें ६० तोलेका सेर चलता है।

जमुई—मुंगेर जिलेमें हवड़ासे २५४ मीलकी दूरीपर है। दाह स्टेशनसे चार मील दूर है। बरसाती रास्ता खराब है। दो

नदिया पार करनी पड़ती हैं। ८४ तोलेका सेर है। महुआ कोयना, कोयनेका तेल, गुड, घी, सीसो यहा विकने आती है दक्षिणी बंगालमें यहासे गुडका चालान अधिक जाता है। इस मण्डीमें भी गुड़का आमदनी सौदा होता है। दलाल देहातोंसे खरीदकर माल देते हैं। देहातोंमें ६० तोलेका कच्चा सेर चलता है।

लखीसराय—मुंगेर जिलेमें हवडा स्टेशनसे २६२ मीलपर है। हाट स्टेशनके निकट है। ८४ तोलेका सेर है। सरसोंके तेल पेरनेकी यहां एक मिल है। अनाज तथा तेलहनकी यह प्रधान मण्डी है। घी, चीनी, दाल, खली, प्याज, लहसुन, तम्बाकू तथा मिरचेका व्यापार यहा अधिक होता है। यहा मारवाडियोंके कई गोले हैं। आसपास कोई मण्डी न होनेसे लखीसरायकी मण्डीकी दिनोंदिन उन्नति हो रही है।

बरहिया—मुंगेर जिलेमे हवडा स्टेशनसे २७१ मीलकी दूरी-पर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। ८४ तोलेका सेर है। बडे-दानेके चने, मटर, मसूर, खेसारी आदि यहा विकने आते हैं। यहाके मालमें धूल और गर्द अधिक होती है। मण्डीमें तैयारी माल बहुत कम मिलता है। आमदनी सौदा अधिक होता है। सडके कच्ची हैं और बैलगाडियोंका बन्दोबस्त ठीक नहीं, इससे बरसातमें कामकाजमें तकलीफ होती है।

मुकामा—पटना जिलामें हवड़ासे २८२ मीलकी दूरीपर है। मण्डी गंगाजीके घाटपर स्टेशनसे एक मीलकी दूरीपर है। ८४

तोलेका सेर है। इन मण्डीके अनाज उमदा होते हैं, पर इनमें गद मिली रहती है। गन्ना, जव, गेहूं, मिर्चा, खली, दाल, आलू, प्याज, लहसुन, तम्बाकू यहा बिकनेके लिये बाहरसे चालान आती हैं। चना, मसूर, खेसारी, मटर, और मिर्चेका व्यापार प्रधान है। माल अधिकतर नाव और स्टीमरसे आता है।

बरहीं—पटना जिलामें हवडासे २६६ मीलकी दूरीपर है। स्टेशनसे दो मीलपर गंगाके ठीक घाटपर मण्डी बनी है। इससे माल ले आने और ले जानेमें बड़ी सुविधा है। ८४ तोलेका सेर है। हर तरहके अनाज—तम्बाकू, आलू, प्याज, लहसुन, मिर्चा यहा बिकनेके लिये दरभगासे आते हैं। वासमती चावलकी यह प्रधान मण्डी है। मिर्चेके व्यापारका यह केन्द्र है। बगालके बहुत-से व्यापारी खाली मिर्चा खरीदनेके लिये यहां आते हैं।

पटना—हवडासे ३३२ मील दूर गंगा नदीके तटपर बसा है। ७१,८० और ८२ तोलेका सेर चलता है। हर चीजकी यहा मण्डी है। व्यापारके हिसाबसे कलकत्ताके बाद पटनाका ही स्थान है। हर तरहका सामान यहा बिक्रीके लिये तैयार रहता है। कई मिले और कारखाने भी हैं। भिन्न भिन्न चीजोंके लिये रेलवे कम्पनीने भिन्न भिन्न दर बना रखी है। इम्पीरियल बककी एक शाखा यहां है।

दीनापुर—पटना जिलामें हवडासे ३४४ मील है। पर स्टेशनके पास ही मण्डी बनी है। मण्डीसे ४ मीलपर गगाजीका घाट है। ८० तोलेका सेर है। चना, मसूर, गेहू, तीसी, रेंडी, बिनौल,

बनारस या काशी हबड़ासे ४२१ मील दूर है। मुगलसरायसे होकर जाना पड़ता है। ईस्ट इंडियन रेलवे मेन लाइन और गया (ग्रेंड कार्ड) लाइन मुगलसराय गई है। ई० आई० आर० और ओ० आर० आर० का यह जंकशन है। गंगा नदीके किनारेपर बसा हुआ है। यह व्यापारका केन्द्र है और हर तरहके सामान यहाँ बिकने आते हैं। ६०,२० और ८० तोलेके सेर यहां चलते हैं। यहाँ हर तरहका व्यापार होता है।

चना, गेहूं, रेंडी, तीसी, सरसों, खली, चीनी, पोस्ती, अरहर, घी, मूंग, आलू, अफीम, कम्बल, रेशमी कपड़े, चद्दर, धोतियां, साड़ियां, पीतलके बर्तन, रुद्राक्षकी मालाएं, लकड़ीके खिलौने, सुरती, तम्बाखू, सूंघनी, सिटकी, गंडेगंडी, इत्र, तेल, संगमरमरके बर्तन, हाथीदांतकी चीजें, लाहकी चूडियां, जवाहिरात, देवी देवताओंकी मूर्तियां तथा नारायणशिला आदि यहां मिलती हैं।

काशीका लंगड़ा आम, रामनगरका बैर और भंटा, बड़गांवकी मूली और अमरूद अच्छे फल हैं। माधोसिंह धुनियामें अलीचेका कारबार बहुत ही अच्छा होता है। काशी सिल्क हिन्दुस्तानभरमें प्रसिद्ध है। इसकी कारीगरी देखकर दांतों अंगुली दबानी पड़ती है। कितने अंग्रेज इस कारीगरीको देखकर दङ्ग हो जाते हैं। बनारसकी जरीके कामका मुकाबिला कहीं नहीं हो सकता। काशी सिल्ककी साड़ी तथा बेलबूटेदार चद्दरें, रंगबिरंगी साड़ियां, बिछौनेके चादर तथा दुपट्टे प्रसिद्ध हैं।

पीतलपर नक्काशीके ऐसे काम यहा होते हैं जो अन्यत्र कहीं नहीं पाये जाते। काशीका जर्दा और सुर्ती तथा खमीरा तम्बाखू मशहूर है। अचार और मुरब्बाके लिये भी यह स्थान सबसे मशहूर है। गल्लेके लिये विशेसरगंज और खोजवाकी मण्डी है। दालके लिये चेतगंजकी मण्डी है। शाक, भाजी तथा फलके लिये कमच्छा और विसेसरगंजकी मंडी है। दीनानाथका गोला मसालेके लिये सरनाम है। सूर्यकुण्डपर पानका दरीबा है। काशीके ऐसा पान शायद ही कहीं मिलता हो। आसपासमें पानकी खेती होती है, पान विकनेके लिये यहीं चला आता है। फुटकर और थोक सौदा होता है। काशीसे पूर्व दस कोसपर अहरौरा बाजार है। यहाँकी मण्डी घी, कत्था तथा हर्रेके लिये प्रसिद्ध है।

मिर्जापूर—हवडासे ४५८ मील है। अनाजकी यहाँ एक भी भारी मण्डी नहीं है। कम्बलका रोजगार यहा अच्छा होता है। पीतलके वर्तन यहाके मशहूर हैं। मिर्जापूरका पापड बड़ा ही स्वादिष्ठ होता है। ऐसा पापड शायद ही कहीं मिलता हो। मिर्जापूरका प्रधान व्यापार पत्थर है। पत्थरकी पटिया, उमौट, खम्भे, शिला, चौकी आदि यहासे भिन्न भिन्न स्थानोंमें भेजे जाते हैं। सील और चकी भी यहां अच्छी और बहुत बनती हैं। किसी समय मिर्जापूर लाहके व्यवसायका केन्द्र था। लाहसे चपड़ा तैयार करनेके यहां अनेकों कारखाने चलते थे। पर कितने उठ गये। फिर भी लाहका कामकाज होता

है। मिर्जापूर जिलेमें जङ्गल ही जङ्गल हैं। इन जङ्गलोंमें घासका रोजगार अच्छा चल सकता है। सरकारकी ओरसे प्रति वर्ष ठीका होता है और घास कटता रहता है। बरसातमें कटैयाका काम बन्द रहता है, क्योंकि अनेक पहाड़ी नदियां हैं, जिनमें जल भर आता है और रास्ता बन्द हो जाता है। मिर्जापूरसे थोडी दूर दक्षिण विण्डमगंजकी हाट लगती है। दक्षिणके लोग अनेक तरहके जङ्गली सामान–घी, कोयला, शहद, कत्था और कत्थेकी लकडी—लाकर बेचते हैं। ८४ तोलेका सेर है।

इलाहाबाद या प्रयाग—यमुना और गंगाके संगमपर यह शहर बसा है, पर व्यापार रेलसे ही होता है। नावसे माल लाने और लेजानेकी सुविधा कम है। हवड़ासे ५१४ मील है। यहां गल्लेका रोजगार अच्छा है। ९६ तोलेका सेर चलता है। इसके पास ही नैनी है। यहां ग्लासकी दो फैक्टरियां और चीनीकी मिलें हैं। यहांकी चीनीका चालान दूर दूरतक होता है। नैनीके कारखानेकी चिमनियां भी बाजारमें चलती हैं। इलाहाबादमें ई० आई० आर और ओ० आर० आर० का जंकशन है। नैनी ई० आई० आर० और जी० आई० पी० का जंकसन है।

दारानगर—ई० आई० आर० लाईनमें हवडा स्टेशनसे ५४४ मील शिराथू स्टेशन है। दारानगरकी मण्डी शिराथूसे २ मीलपर है। १०५ तोलेका सेर है। यहाँ गल्लेकी भारी मण्डी है। धोरनेका व्यापार सबसे बढा चढा है। इलाहाबाद जिलमें है।

खागा—हवडासे ५६५ मीलपर है। ८० तोलेका सेर है।

स्टेशनके पास ही मण्डी है। गल्लेकी आढ़तें हैं। सरसों और पोस्तेका व्यापार अधिक होता है। फतेहपुर जिलामें है।

कानपुर—हवड़ासे ६३३ मील है। ८० और ८२ तोलेका सेर है। कानपुर गंगाजीके दाहिने किनारेपर बसा है। कानपूर वर्तमान समयमें उन्नत नगर है। ओ० और आर०, ई० आई० आर०, बी० एन० डब्लू० आर०, बी० बी० सी० आई० आर० तथा जी० आई० पी० आर० का यहां जंकशन है। रेलवे स्टेशनके पास ही मण्डी है। कई कारखाने भी यहां अनेक हैं और खुल रहे हैं। चमड़ेका सबसे बड़ा कारखाना है। कपड़ेकी मिलोंका भी यह केन्द्र हो रहा है। तेल पेरनेकी भी अनेक कलें हैं। यहांका सरसोंका तेल कलकत्ताके बाजारमें सरनाम है। खलीका चालान पंजाब और दक्षिणी भागमें जाता है। दाल दरनेका काम यहां अधिक होता है। सूअरकी चर्बी और बालका यहां अच्छा व्यापार होता है। चमड़ा-खालका व्यापार अंगरेजोंके हाथमें है। चमड़ा सिझानेका काम यहां बहुतायतसे होता है। चीनी बनानेके जो कारखाने हैं, जिनमें गन्नासे चीनी बनायी जाती है। कानपुरमें—ऊनकी मिलें, सूतकी मिलें, दालकी मिलें, चावलकी मिलें, आटाकी मिलें, पाटकी मिलें, रुगड़े और चमड़ा सिझानेकी मिलें, चीनी बनानेकी मिलें, लोहा ढालनेकी मिलें, साबुनके कारखाने, बरफके कारखाने, मोजा और गंजी बिननेके कारखाने आदि हैं।

इटावा—हवड़ासे ७२० मील है। ८० तोलेका सेर है।

तोलेका सेर है। हर तरहके व्यापारकी मण्डियां हैं, पर संगमर्मरपर बेलबूटा, दरी तथा फर्सोंका व्यापार यहां सबसे अधिक है। जूतेके भी यहां कारखाने हैं। दर्पणके चौखटे, छोटी छोटी संदुकचियां यहां संगमर्मरके टुकडोंसे अच्छी बनती हैं। गल्लेकी भी कई भारी भारी आढतें हैं।

चन्दौसी—हवडेसे ८०३ मील है, १०० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। चन्दौसीका गेहूं सरनाम है। इससे उमदा गेहूं इस देशमें नहीं होता। इसके अलावा राई, सरसों और चक्कीगुडका चालान होता है।

अलीगढ—हवडासे ८५२ मीलपर है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी बनी है। अलीगढका घी प्रसिद्ध है। कपासका व्यापार भी होता है। गल्लेकी अच्छी मण्डी है। गेहूं, अरहर, तीसी, सरसों, पोस्ता और चक्कीगुडका चालान बिकनेके लिये बाहरसे आता है। अलीगढका मक्खन सबसे उत्तम होता है। कई एक डेयरी फार्म खुले हैं, जहांसे टिनोंमें भर भरकर मक्खन बाहर भेजा जाता है। मनवा ओटनेका और सूत कातने तथा कपडा बिननेके छोटे-मोटे कारखाने यहाँ हैं। अलीगढके तोले सबसे मजबूत और सच्चे होते हैं। ताला बनानेका सरकारी कारखाना भी अलीगढमें खुल गया है। यहांके बने ताले इङ्गलैण्डके लिवर तालेका मुकाबिला करते हैं।

मेरठ—हवडासे ६१६ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे कुछ दूरपर मण्डी है। कपास, गेहूं और चक्कीगुड-

की बडी बडी आढतें हैं। साबुनका भी यहां एक कारखाना है।

जौनपुर—गोमती नदीके किनारेपर मुगलसरायसे ओ० आर० रेलवेपर है। हवड़ासे ५१५ मीलपर है। ११२ तोलेका सेर होता है। स्टेशनसे दो मीलकी दूरीपर मण्डी है। गल्लेकी अच्छी मण्डी है। चीनी बनानेके कारखाने हैं। सरसों, पोस्ता और घी की बड़ी मण्डी है। जौनपुरका पहाडी आलू, मक्खी और खरबूजा मशहूर है। तेल तथा इत्र बनानेके अनेक कारखाने हैं। चमेली, बेला तथा केवड़ा आदिका तेल कलकत्तातक आता है।

दिल्ली—हवडा स्टेशनसे ९५६ मीलपर यमुना नदीके किनारे दिल्ली बसा है। यहा ई० आई० आर०, बी० बी० सी० आई०, जी० आई० पी० तथा ओ० आर० आर० का जंकशन है। हर तरहका कच्चा तथा तैयार माल यहा मिलता है। ८० तोलेका सेर है। दिल्लीमें हिन्दुस्तानी बिस्कुटका बड़ाभारी कारखाना है। दिल्लीसे मेवा और फलका रोजगार बहुत अच्छा हो सकता है, क्योंकि दिल्ली फलकी खान पेशावर, काबुल और काश्मीरके पड़ोसमें है। ब्रिटिश भारतकी राजधानी बननेसे इसका व्यवसायिक महत्व दिन-दिन बढ़ता जा रहा है। जवाहिरातका व्यापार बहुत अच्छा होता है।

मदनपुर—नदिया जिलेमें ई० बी० एस० रेलवेमें स्यालदह स्टेशनसे ३३ मील है। ८२१ तोलेका वजन है। स्टेशनसे दो मीलपर कालीगंजकी मण्डी है। सप्ताहमें दो दिन लगती है। रास्ता ठीक नहीं है इससे बरसातमें व्यापार नहीं होता। पाट,

गोआलन्दो—स्यालदह स्टेशनसे १०७ मीलपर है। तोलेका सेर है। ई०बी० रेलवे लाइनका यहाँ अन्त हो जाता यहासे स्टीमर और बड़ी बड़ी नावोंपर ढाका, बारीस खुलना, चटगाव, कचार, कलकत्ता, मुंगेर, भागलपुर व पटना माल जाता है। अनेक तरहके सामानोंकी यहा मण्डि है। मछलीके व्यापारकी यहा सबसे भारी मण्डी है। यहा तरबूज भी बड़ा और स्वादिष्ट होता है।

अगनघट्टा—स्यालदह स्टेशनसे ५१ मीलपर है। ८२½ तोलेक सेर है। चूर्नी नदीके किनारेपर यह शहर बसा है। बरसात नदीसे ही कारबार होता है। रेलवे स्टेशनके नजदीक मण्डी है खजूरके गुड और पाटकी यहा बडी भारी आढतें हैं। गल्लेक भी आढते हैं। नदिया जिलामें यह प्रधान मण्डी है।

कुष्टिया—स्यालदह स्टेशनसे ११० मीलपर है। ८० तोले का सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। मोथी मटर,मकई,धान चावल, खजूरका गुड आदिकी आढतें हैं। यहाकी हल्दी मशहू है। करघेके विने कपडोंका भी यहा अच्छा व्यापार है। पाटकी यहा बडी भारी मण्डी है। भादोंसे अगहनतक यहाँ पाटके व्यापारियोंकी बडी भीड रहती है। "मोहनी मिल" नामकी देशी सूती कपडेकी यहाँ एक मिल भी है। मोहनी मिलकी धोती मज-बूत और फोतेदार होती है। खजूरके गुडसे चीनी बनानेका भी यहा एक कारखाना है।

हसखली—स्यालदहसे बगूला और बगूलासे हसखली ५८

मीलपर है। ८२३ तोलेका सेर है। रेलवेस्टेशनसे ३ मीलपर मण्डी है। चुर्नी नदीके घाटपर मण्डी है। इससे वरसातमें माल ले जाने और ले आनेमें बड़ी सुविधा होती है। यहाँ कलाईकी सबसे बडी आढत है।

दमुकदिया—ई० बी० रेलवेमें स्यालदहसे १२० मील है। ८२½ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। खजूरका गुड, पाट और कलाईकी बडी बडी आढतें हैं। मछलीकी यहाँ बडी भारी मण्डी है। यहा मछली सस्ती मिलती है।

क्रिस्टोगंज—स्यालदहसे ६५ मील सिवनिवास स्टेशन है। इसी स्टेशनके पास क्रिस्टोगंज बाजार है। ८२½ तोलेका सेर है। खजूरका गुड तथा पाटकी यहा बडा भारी आढत है।

रानाघाट—स्यालदहसे ४६ मील है। ८२½ तोलेका सेर है। रानाघाट चुर्नी नदीके किनारेपर है। वरसातमें नावोंसे माल भेजनेमें बडी सुविधा है। मोथीकी यहा सबसे बडी आढत है। खजूरके गुडकी यहा बडी भारी मण्डी है। यहासे गुड भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाता है। रानाघाटका घी भी मशहूर है। मन्दिरोंमें टगनेवाला घटा भी यहा बहुतायतसे बनता है।

चकदह—स्यालदहसे ३८ मील दूर है। ८२ तोलेका सेर है। स्टेशनसे एक मीलपर हाट है। सप्ताहमें दो बार हाट लगती है। यहा बडे बडे आढतियों और दलालोंका अभाव है, इससे माल स्वय जाकर खरीदना पडता है। चकदहसे ६ मीलपर कमले गाव है। यहाका हिंगली तम्बाकू बहुत अच्छा होता है। वरसातमें

माल चुर्नी नदीसे होकर आता जाता है। हुगली, चन्दननगर, वैद्यवाटी, भद्रेश्वर, कांकिनारा, श्यामनगर आदि स्थानोंके व्यापारी हाटके दिन यहां आकर माल खरीदते हैं। चीनी बनानेके लिये यहासे कारखानेदार खजूरका गुड़ खरीदकर ले जाते हैं। यहांकी मोथी भी बहुत बढ़िया होती है।

हिली—आलईसे २१४ मील सिलीगुड़ी लाइनमें है। ८० तोलेका सेर है। बाजारसे ४ मील पर नदी है। बरसातमें माल भेजनेमें कुछ सहायता मिलती है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। बोगड़ा जिलेकी यह प्रधान मण्डी है। जिलेकी यह बड़ी भारी मण्डी है। सबसे अधिक आमदनी धान और चावल तथा पाटकी होती है। धानकी यहां बड़ी भारी आमद है। यहां बढ़िया चावलकी मण्डी है। यहांकी मण्डीमें इतना अधिक माल आता है कि किसी भी समयमें माल खरीदा जा सकता है।

मुड़ागाछा—स्यालदहसे ८४ मील है। हाट स्टेशनके पास है और मुड़ागाछा रेल बाजारके नामसे प्रसिद्ध है। पाट, चावल, सोपारी और खजूरका गुड़ यहां बिकने आता है। पाट और खजूरके गुड़की यहां सबसे भारी मण्डी है।

हसनाबाद—स्यालदहसे ४४ मील पर है। स्टेशनसे ४ मील है। ८० तोलेका सेर है। रविवार और बृहस्पतिवारको हाट लगती है। धान और चावलकी प्रधान मण्डी है। २४ परगनामें इतनी बड़ी एक भी चावलकी मण्डी नहीं है। बाजारसे स्टेशन

तक माल नावों द्वारा आता है। यहासे १५ मीलपर नडादल हाट है। बडादलमें कोई बडी आढत नहीं है।

कास्वा—हवडासे लूपलाइन होकर कटिहार और कटिहारसे कास्वा जाना होता है। स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर भी कास्वा रेल गई है। २६४ मील है। ८० और ८५ तोलेका सेर है। स्टेशन के पास बाजार है। पुरनिया जिलेमें धान और चावलकी यह सबसे बडी मण्डी है। उत्तरी बगालका धान और चावल यहाँ बिकने आता है और पूर्वी तथा पश्चिमी बगालकी ओर चालान जाता है। कास्वाका पाट बहुत बढिया होता है। यहा अग्रेजोंकी आढतें हैं जो पाट खरीदती हैं। यहा पाटका व्यवसाय प्रसिद्ध है। यहाकी सरसों भी अच्छी होती है, पर सरसोंका व्यापार कुछ ही महीने चलता है।

कटिहार—हवडासे लूपलाइनसे सैदाबगज और मनिहारीघाट होते हुए कटिहार पहुचना होता है। २४२ मील है। स्यालदहसे दमकदिया, स्टीमरसे घाट उतरकर सेराघाट, सेराघाटसे पार्वतीपुर होते हुए कटिहार रेल गई है। २६१ मील है। ८५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास हाट है। पाट, सन, तम्बाकू, कजला, सरसों, तीसी, चावल, धान, कम्बल, खलीका चालान यहा होता है।

बरसोई—लूपलाइनसे कटिहार होकर या स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर बरसोई जाना होता है। ८५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही बाजार है। महानन्द नदीके निकट होनेसे

माल ले आने और ले जानेकी बड़ी सुविधा है। सुखाकर मछली का यहा अच्छा व्यापार होता है। हाट सप्ताहमें एक बार लगता है। फिर भी पुरनियामें यह सबसे बडा हाट है। खजूरका गुड, पाट, सरसों, चावल मोटिया कपडा, कम्बल, शहद, मोम, बैलगाडोके पहिये, चौपाये, भैंस, बकरी, ऊंट, आदि यहा बिकने आते हैं। इसके अतिरिक्त मिर्चा और सूखी मछलीकी भी यहा मण्डी है। बोरा और चटाई भी यहा बिकने आती हैं। यहांसे सुरतीका चालान बर्मा सिगरेट बनानेके लिये होता है। यहाकी तम्बाकू बढिया होता है।

सोनाली—हवडासे कटिहार होकर अथवा स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर सोनाली जाया जाता है। ८५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास हो बाजार है। पुर्नियाकी तरह यहाका हाट है।

फरवेशगज—हवडासे कटिहार होकर अथवा स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर फरवेशगज रेल गई है। ८० और ८५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही बाजार है। कटिहारकी तरह यहा भी सौदा होता है।

फुलवारी—स्यालदह स्टेशनसे २५६ मील है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। ६० तोलेका सेर है। धान,चावल और पाटकी बडी भारी मण्डी है। इसलिये धान और चावलका चालान यहासे बहुत अधिक होता है। यहा घटिया और बढिया दोनों तरहका चावल होता है। फुलवारीकी मण्डी पाटके लिये मशहूर है। सावनसे अगहनतक पाटका सौदा होता रहता है।

दोमर—स्यालदहसे २८२ मील हैं। ६० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। धान, चावल, पाट और अजीर (ताजी तथा सूखी) तथा तम्बाकूका चालान होता है। कई तरहकी सुरती यहा चालान आती है। दूर दूरसे व्यापारी यहा सुरती खरीदने आते हैं। सुरती तौलकर भी बिकती है और कूत सौदा भी होता है। नये व्यापारीको कूत सौदा नहीं करना चाहिये।

किशनगंज—हवडासे कटिहार होकर अथवा स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर किशनगंज जाया जाता है। ८५ तथा ६० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। यहाकी मण्डी कटिहारकी-सी है। यहाके करघोंमें एक तरहका रङ्गीन कपडा तैयार होता है। इसे "फनश" कहते हैं। गाडीके पहिये, चटाई और मौरे भी यहा बनते हैं।

भूटान—सिकिमसे पूरब हिमालयकी तराईमें भूटान है। दार्जिलिङ्गसे ५० मील है। ऊंटगाडी, रिक्शा और टांगाकी सवारी चलती हैं। स्यालदहसे कौडिया, कौडियासे तीस्ता नदी पारकर मोगलहाट स्टेशन पहुचना होता है। मोगलहाटसे कुचबिहार ३२४ मील है। कुचबिहारसे भूटान ३० मील है। रास्ता खराब है। माल ले जाने, ले आनेकी सुविधा नहीं है, फिर भी व्यापारका यहा केन्द्र है। रेशम, अण्डी, मुश्क, घी, मोम, कम्बल, नारङ्गी, मोरपङ्ख, लाह, लकडी, शहद, रबर, हाथीका दांत यहा बाजारके दिन बिकने आते हैं। यहा सालमें लगातार तीन या चार महीनेतक हाट लगता है।

हजारों भोटिये और तिब्बती माल ले लेकर यहा आते हैं और बदलेमें विदेशी माल, कपड़ा अधिकतर, चीनी, बर्तन, सोपारी तथा बिसातखाना ले जाते हैं। यहां माल केवल खरीदने या बेचनेमें सुभीता नहीं है। व्यापारीको यहा वही माल लाना चाहिये जिसे वह सुविधासे भोटियोंको देकर उसके बदले उनकी वस्तु ले सकता हो। भूटानमें रबरकी खेती अच्छी होती है। रबरका व्यापार बहुत ही लाभदायक साबित हुआ है।

कम्बल, सूती कपडा, टट्टू, चौपाये, भेड, भैंस, जगली भैंस और उनकी सींगें, और पूंछें (जिसका चँवर बनता है) मुश्क, घी, रेशम, चाय, मोम, शहद, चमडा, लाह, रबर, हाथीके दाँत, कीमती चमडा यहा बिकनेके लिये आता है। अच्छासे अच्छा कम्बल यहा बिकनेके लिये आते हैं। निखालिस ऊनके ये कम्बल होते हैं। यहा मुश्क बहुतही सस्ते दरसे मिलती है। यहासे हाथीके दात खरीदकर मुर्शिदाबाद और कटक भेजनेमें बडा मुनाफा है। भूटान-के जङ्गलोंमें चन्दनकी लकडी भी होती है, जो यहा बिकने आती है। लोहेके औजार यहा बनाये जाते हैं और सस्ते बिकते हैं।

पूर्निया—हवडासे कटिहार होकर पूर्निया गाडी गई है। २८२ मील है। स्यालदहसे पार्वतीपुर होकर भी जाया जा सकता है। स्टेशनसे बाजार दो मील है। पाट, तम्बाकू, सरसों तथा सन यहासे भिन्न भिन्न स्थानोंमें चालान जाता है। चावलकी भी यहा बढिया मण्डी है। पूर्नियाका पाट बहुत ही उमदा होता है। यहाका पाट उत्तर पाटके नामसे विदित है। यहासे

नेपाल पक्की सड़क गई है। नेपालके व्यापारी माल लेकर पूर्निया बेचने आते हैं।

पूर्नियामें नील और चमडेके कारखाने हैं। आज भी यहां नीलकी १४ कोठियां चल रही हैं। हड्डी और चमडेका व्यापार मुसलमान व्यापारियोंके हाथमें है।

कटनी—हवडासे ६७६ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही बाजार है। गल्लेकी बडी भारी मण्डी है। पर कटनीकी मण्डी चूना और घीके लिये सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कटनीका चूना बाजारमें सबसे अधिक खपता है। कटनीका घी निखालिस नहीं होता, इससे सस्ता बिकता है। यहाकी मसूर अच्छी होती है और बहुतायतसे मिलती है। कटनीका सीमेण्ट भी बढिया होता है और लाल बालू यहाके गावोंमें मिलता है।

सीतापुर—हवडासे कानपुर गाडी बदलकर सीतापुर पहुंचना होता है। कानपुरसे लखनऊ, लखनऊसे सीतापुर गाडी गई है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके निकट ही बाजार है। सभी वस्तुओंकी यहा आढ़त है। गल्ले और पोस्तेकी सबसे बडी आढ़त यहापर है। सीतापुरका घी भी अच्छा होता है। सरसोंकी मण्डी यहा भारी है। यहासे घी, सरसों तथा पोस्ता दक्षिणी बङ्गाल चालान जाता है।

झांसी—दिल्लीसे होकर झासी ७४८ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। हर तरहके अनाज और गल्लेकी यहा मण्डी है। इसके अलावा झांसीका कपास, घी,

कम्बल, रस्से, शतरजी, गलीचा मशहूर है। यहा भी जरीका बढिया काम होता है। किसी समय यहाके जरीके कामकी खपत विलायतके बाजारमें अधिक थी।

कोच—स्टेशनके पास ही मण्डी है। १०२ तोलेका सेर है। यहाका घी नर्म होता है। घीके व्यापारमें बडी चाल चली जाती है। इससे अपना आदमी भेजकर माल खरीदनेमें सुविधा है। गल्लेका व्यापार अच्छा नहीं है। घीका चालान कलकत्ते आता है।

कन्नौज—कानपुरसे ओ० आर० रेलवेमें बैठकर पहुचना होता है। १०८ तोलेका सेर है। रेलवे स्टेशनके पास ही मण्डी है। हर तरहके गल्लेकी आढत है। कन्नौज इत्र और गुलाबजल, पानका मशाला, मशालेदार सुपारी, जरदा, सुर्ती, और तम्बाकूके लिये मशहूर है। इसलिये यहा हर तरहके फूलोंकी खेती होती है। गाजीपुर और जौनपुरसे यहा यह सब सामान सस्ता मिलता है। यहाका खरुआ प्रसिद्ध है।

शिकोहाबाद—हवड़ासे ७६६ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। हर तरहके गल्लेकी मण्डी है। आलू, गुड, घी और कपासकी बडी-बडी आढ़तें हैं। शिकोहाबादका घी बढ़िया दानेदार होता है।

बान्दा—इलाहाबादसे जी० आई० पी० रेलवेसे मानिकपुर जाना होता है। ८० तोलेका सेर होता है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। हर तरहके गल्लेकी यहा मण्डी है। यहा घी और

कपासका अच्छा व्यापार होता है। आसपासके देहातोंका घी बहुत ही बढ़िया होता है। केन नदीके प्रपातपर पानीकी चोटसे पत्थरके जो टुकड़े फट-फटकर चिकने हो जाते हैं उनसे छोटे छोटे खिलौने बढ़िया और सस्ते बनते हैं।

भटिण्डा—इलाहाबादसे राजपुर, राजपुरसे भटिण्डा। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे थोड़ी दूरपर मण्डी है। चना, गेहूं, तीसी, सरसों, रेंडी, अरहर, मसूर, खेसारी, घी और खली-की यहां बडी-बडी आढ़तें हैं। सरसोंका व्यापार सबसे अधिक होता है। बंगालके व्यापारी सरसों खरीदनेके लिये यहां आते हैं। भटिण्डाके घीका रंग लाल होता है। यह मिठाई बनानेके काममें आता है। बरसाती रास्ता खराब है।

पनौरी-हवड़ासे ५२५ मील है। ६६ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। हर तरहके गल्लेकी आढ़तें हैं। रेंडी-का तेल और खलीका कारबार सबसे अधिक होता है। रेलवे कम्पनीने यहां तेलका एक कारखाना खोल रखा है।

कालका-हवड़ासे १०६५ मील है। ८० और १०० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। यहां बांसका कारबार बढ़िया होता है। यहांका अंजीर भी बढ़िया और बहुत होता है। प्रधान व्यवसाय पहाड़ी आलूका है। सिमला, सोलन, कण्डाघाट, कलीघाट आदि स्थानोंसे आलू यहां आता है और चालान होता है। अनेक बङ्गाली व्यापारी कलकत्तासे आलू खरीदने यहां आते हैं।

औरिया-कानपुरसे फफन्द जंकशन होकर औरिया गाडी गई है। स्टेशनसे १५ मीलपर हाट है। १०२ तोलेका सेर है। यहांका घी बहुत ही मुलायम होता है। पर निखालिस नहीं मिलता। उसमें महुएका तेल मिला देते हैं। इसलिये केवल मिठाईके कामका होता है। न तो इसमें रंग होता है, न दाना होता है। घीके व्यापारी अपने आढ़तिये भेजते हैं। घीके अलावा गल्लेकी भी बड़ी मण्डी है और बाहर चालान जाता है।

सिरसारोड—दिल्लीसे रेवाडी जंकशन होकर सिरसा जाना होता है। गल्लेके लिये १०१ तोलेका सेर है और घी तथा तेलके लिये ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। गल्लेकी बडी-बडी आढ़तें हैं। यहांका घी मुलायम होता है।

बिहिया—हवड़ासे ३८२ मील आरा जिलामें है। गंगा जीके किनारे स्टेशनके पासही मण्डी है। ८० तोलेका सेर है। हर तरहके गल्लेकी मण्डी है,पर मसूर तथा मसूरकी दाल,खेसारी और चनेका चालान बहुत अधिक होता है। बरसातमें चालान अधिक होता है; क्योंकि नावोंसे माल भेजनेमें सुविधा होती है। यहांका भेली गुड भी उमदा होता है और यू० पी० तथा पंजाब जाता है। सस्ते मूल्यके भेडके बालके सादे और काले कम्बल यहां बनते हैं।

बिहटा—आरा जिलामें हवड़ासे ३५५ मील है। ८० तोले-का सेर है। गंगाजीके किनारेपर मण्डी बसी है। हर तरहके गल्लेकी मण्डी है। भेली-गुडका व्यापार सबसे अधिक होता

है। सप्ताहमें दो दिन, (मंगल और शुक्रको) दो दो मण्डियां लगती हैं। कलकत्तेकी ओर माल स्टीमरोंमें आता है और पश्चिमकी ओर रेलमें जाता है।

आरा—हवड़ासे ३६४ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे दो मीलपर मण्डी है। यहांकी आब हवा अच्छी है। हर तरहके गल्लेकी यहां मण्डी है। यहांके भेली गुड़का रंग बहुत ही अच्छा होता है, इसलिये विदेशोंमें इसकी अधिक खपत है। आराका कम्बल, आसन और गाढ़ा मशहूर है।

बक्सर—हवड़ासे ४११ मील है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। ८० तोलेका सेर है। एक मीलपर गंगाजी हैं। तीसी, सरसों, चना, मसूर, खेसारी, अरहर, गेहूं, बिनौला, चक्की गुड़, खली, घी, चीनी, कम्बल तथा शतरंजी आदिकी आढ़तें हैं; पर प्रधान व्यवसाय घी और चीनीका है। यहांके घीका रंग सफेद होता है और खानेमें स्वादिष्ट होता है। यहांसे जो चीनी चालान जाती है वह बक्सर शहर और गाजीपुरसे आती है। उसका नाम काशी चीनी है। यहांका चक्की गुड़ भी बढ़िया होता है। जाड़ेमें मछलीका चालान बहुत होता है। यहां खारी मसूर बहुतायतसे पैदा होती है। बक्सरमें सादा और काला कम्बल बनता है, पर बक्सरके जेलका कम्बल और दरी बढ़िया होते हैं। जेलमें पेरा हुआ सरसोंका तेल भी यहां निखालिस मिलता है। इसके अलावा आम, आलू और गोभीका भी यहां अच्छा रोज-गार होता है।

गुसखरा—लूपलाइनमें हवड़ासे ८७ मीलपर वर्द्धवान जिलामें है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। धान और चावलकी प्रधान आढते हैं। यहाके चावलमें ककटी या ककड़ी बहुत होती हैं। यहाके अधिकाश व्यापारी बगाली हैं। वर्द्धवान जिलेमें यह चावलकी सबसे बडी मण्डी है।

बोलपुर—हवड़ासे ९९ मील है। ८० तोलेका सेर है। वीरभूम जिलाका प्रधान नगर है और चावलकी यहा सबसे बडी मण्डी है। मिट्टीका तेल, नमक, चीनी, गल्ला, तेलहन, दाल, सीरा, तम्बाकू, घी, खारा नमक, आटा, मैदा, वर्तन, कपडा आदिका चालान यहासे अधिक होता है। स्टेशनसे एक मीलपर बाद्दागढ है। यहा चावलकी बडी भारी मण्डी है। यहा धान कूटनेके कई कारखाने हैं। मण्डीकी दशा दिन-दिन अच्छी होती जा रही है।

सान्थिया—लूपलाइनमें हवडासे ११९ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके निकट ही मण्डी है। वीरभूम जिलामें यह भी बडी मण्डी है। ओण्डल सन्थिया रेल खुलनेके पहले व्यापारकी दशा अच्छी थी, पर अब बिगड गई है। धान और चावलकी प्रधान मण्डी है। तम्बाकू, सीरा, गल्ला, खली, नमक, मिट्टीका तेल, कपडा, मसाला, यहां बिकता है। यहाका रहरी चावल प्रसिद्ध है। सरसोंके तेल पेरनेकी दो मिलें हैं।

दुब्राजपुर—ओण्डल-सथिया लाइनमें हवडासे १३८ मील है। स्टेशनसे एक मीलपर मण्डी है। ८० तोलेका सेर है।

वीरभूम जिलामें धान और चावलकी यह प्रधान मण्डी है। नमक, मिट्टीका तेल, कपडा, गल्ला, तम्बाकू, सोरा और चीनीका चालान यहासे होता है। सरसोंके तेल पेरनेको यहा कई मिले हैं।

नलहाटी—लूपलाइनमें हवडासे १४५ मील है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। धान और चावल बहुतायतसे यहा बिकनेके लिये आता है। वीरभूम जिलामें शहरी धानकी यह बडी मण्डी है। इसके अलावा अन्य तरहके अनाज भी यहासे आते जाते हैं।

नलहाटीके पास पहाडियोंका सिलसिला है। इसमें काला पत्थर निकलता है। इससे मिट्टी तोडी जाती है और सडकोंपर पीटनेके लिये चालान की जाती है।

वेलियाडागा—लूपलाइनमें हवडासे १४५ मीलपर भुटराई नामका स्टेशन है। इस स्टेशनसे तीन मीलपर वेलियाहट्टाकी मण्डी है। सन्थाल, भील तथा अन्य असभ्य जातिया जंगलों-से कपास, भैंस, बकरे, हलदी, बहेरा, चाय आदि बेचनेके लिये लाते हैं। इनसे यह सब माल खरीदकर भेजनेमें बडा लाभ है। यहा ५८½ तोलेका सेर चलता है। अंग्रेजोंकी कई एक रेशमकी फैक्टरियां हैं। इन कारखानोंमें रेशमी धागा तैयार होता है। पासके गावोंके जुलाहोंसे रेशमी कपडा बिनवाया जा सकता है। यहा छूटिंग बहुतायतसे मिलती है और थोडी पूंजी लगाकर भी यहा व्यापार बडे मजेमें चल सकता है। यहा खेती भी अच्छी

होती है। जगह स्वास्थ्यकर है। अगर थोड़ी भी पूंजी लगाकर काम किया जाय तो यहा अच्छा लाभ हो सकता है।

शेखपुरा—क्यूलसे एस० बी० लाइनसे होकर शेखपुरा जाना होता है। हवडासे २७८ मील है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनसे डेढ मीलपर मण्डी है। गल्लेकी आमद यहा अच्छी है, पर प्रधान व्यापार सरसों और तीसीका है। यहाका नैचा मशहूर है। यहासे थोडो दूरपर बारबीघा स्थान है। यहाका सन बहुत ही अच्छा और मजबूत होता है।

वारिसलीगञ्ज—हवडासे क्यूल होकर जाना होता है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। तीसी, सरसों, घी, सीरा, सन, रस्सी, बासमती चावल आदिकी यहां अच्छी मण्डी है। यहाका सरसों बढिया होता है। यहाका घी अच्छा नहीं होता। यहासे खजूरके गुड़का चालान दूर-दूरतक जाता है। आसपासमें चीनी साफ करनेके कारखाने हैं। यहासे चीनी संयुक्तप्रान्तमें भी जाती है। पर यहांके मारवाडी व्यापारी चीनीमें मेल डालकर बेचते हैं। इससे यहा चीनी खरीदनेमें बडा सावधान रहना चाहिये।

नवादा—हवडासे क्यूल होकर जाना होता है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। यहा घीकी बडी मण्डी है, पर घी बहुत बढिया नहीं होता। यहाकी सरसोंमें तेल अधिक निकलता है। यहाका खजूरका गुड़ भी बढिया होता है।

गया—हवडासे गया होती हुई रेल मोगलसराय चली गयी

है। क्यूलसे भी एक लाइन गयाको जाती है। ७२, ८० और ८२ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। गयाकी मण्डी बड़ी है। यहां हर तरहके अनाजकी आढ़तें हैं। सोरा, चक्कीगुड़, देशी चीनी, लाल मिर्चा, घी, आलू, गोभी, तम्बाकू, खली, पत्थर के बर्त्तन, सफेद तथा काले कम्बल आदिका बढ़िया व्यापार है। यहांसे सोरा, गुड़ और कम्बलका चालान दूर-दूरतक जाता है।

यहां चीनीके अनेक कारखाने हैं। यहांका घी बढ़िया होता है और बहुतायतसे मिलता है। हरिहरगंजमें घीकी सबसे बड़ी मण्डी है। घीके लिये पेशगी रुपया देहातोंमें बांट देनेसे अच्छा लाभ हो सकता है। ८० तोलेका सेर है। गयामें गोभी और आलू भी बहुत होता है। गयाका तम्बाकू भी मशहूर होता है। तम्बाकू बनानेके यहां अनेक कारखाने हैं। यहांके तम्बाकू-में जो सुगन्धि होती है वह कहीं अन्यत्र मयस्सर नहीं है। ७) से लेकर ८०) सेरतकका तम्बाकू यहां मिलता है।

बिहार—हवड़ासे ३२८ मील है। बख्तियारपुर गाड़ी बदलनी पड़ती है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनसे एक मीलपर मण्डी है। यह सबसे बड़ा बाजार है। यहां सनका व्यापार अधिक होता है। इसके अलावा हर तरहके गल्लेकी आढ़तें हैं। अनेक तरह-के कारखाने भी हैं। बिहारका सन अनेक स्थानोंमें भेजा जाता है। यहां आलू भी बहुतायतसे होता है। यहांसे आलू आसनसोल, रानीगंज, मकर, मेमारी, बर्दवान, गुस्कारा, बोलपुर, सैंथिया,

रामपुरहाट, मोगरा, चंदननगर, सिउराफुली, कलकत्ता आदि स्थानोंमें जाता है। विहारमें चीनीके अनेक कारखाने हैं। यहाका बासमती-चावल बहुत ही बढिया होता है। यहा सरसोंका चालान वाहरसे बहुत आता है। यहाके सरसोंसे बढ़िया तेल निकलता है। यहाके जुलाहे मोटिया कपड़ा बढिया बुनते हैं। इन कपडोंको पटना ले जाकर रग देते हैं और पटनहिया खरुआके नामसे इसे बेचते हैं। यहांपर सरकारी बुननेका कारखाना है। यहासे फसलका व्यापार जोरोंमें चलता है। इस तरह विहारकी मण्डी बारहों महीना काम करने लायक है।

गढवा—हवडासे गया, गयासे डालटेनगज, और डालटेनगजसे एम० जी० आरसे होकर गढवा पहुचना होता है। यहाका घी और सरसोंका व्यापार बहुत ही प्रसिद्ध है। घीका हाट यहा प्रति शनिवारको लगता है। इस हाटमें घी बेचनेके लिये दूर-दूरसे व्यापारी आते हैं। सरगूजा [रायपुर] के ग्वाले इस हाटमें घी लाकर बेचते हैं। रास्ता जंगली है, इसलिये भैंसों-पर लादकर सामान आता जाता है। यहांका घी निखालिस होता था। पर ये ग्वाले भी दिनपर दिन चालाक होते जा रहे हैं और घीमें महुएका तेल मिला देते हैं। अगर इस मण्डीमें आकर आसपासमें डेयरी खोल दी जाय तो अटूट लाभ हो सकता है, क्योंकि यहाके ग्वाले गौपालनका काम नही जानते या नहीं करना चाहते। दिनभर गाये लावारिसकी तरह चरा करती हैं और समयपर ग्वाले इन्हे दूह लिया करते हैं। गाय और

भैंसका घी एकमें मिला रहता है इससे इसका रग लाल होता है। निखालिस गाय या भैंसका घी कम ही मिलता है।

नौगछिया—हवड़ासे ई० आई० रेलवेसे भागलपुर और वहा गगा पार कर बी० एन० डब्लू रेलवेपर सवार होकर नौगछिया पहुचना होता है। गगाके दाहिने तटपर स्टेशनके पास ही मण्डी है। १०१ तोलेका सेर है। भागलपुरमें यह गल्लेकी सबसे बडी मण्डी है और अनेक तरहके गल्ले यहा बिकने आते हैं। आसपासकी भूमि बडी ही उपजाऊ है। हर तरहके गल्ले का यहा व्यापार होता है। यहाकी मिट्टी अच्छी होती है और पैदावार भी अधिक होती है। सरसों भी यहाका बढ़िया होता है। बरसातमें स्टीमरोंसे माल जाता है,नहीं तो रेलसे। इस तरह प्रकट होता है कि नौगछियाकी मण्डी बहुत अच्छी है।

खगरिया—हवडासे मुंगेर होकर स्टीमरसे खगरिया जाना होता है। ८८ तोलेका सेर है। गगाजीके तटपर मण्डी है। मुंगेर जिलेमें यह भारी मण्डी है। गल्लेका भारी व्यापार होता है। अरहर और सरसोंका व्यापार सबसे अधिक होता है। यहाका घी बहुत बढ़िया होता है और पीपोंमे भर भरकर कलकत्ता भेजा जाता है। कानपुरकी तरह यहा दालकी भी मण्डी है। यहा मछलीका व्यापार भी बढ़िया होता है।- खगरिया गगा और गण्डकके बीचमें है। बरसातमें दोनों नदियोंसे मछलिया पकडी जाती है और बगालकी ओर भेजी जाती हैं। मारवाडियोंकी

यहा तेलकी मिलें भी हैं। यहाका व्यवसाय बंगालियोंके हाथ था, पर अब मारवाडियोंकी ही तूती बोलती है।

टेंग्रा—हवडासे मुकामाघाट, स्टीमरसे गंगा पारकर सेम रिया स्टेशनसे टेंग्रा गाडी गई है। स्टेशनके पास ही मण्डी है ८४ तोलेका सेर है। छोटी मण्डी होनेपर भी कारबार बहु होता है। प्रधान व्यवसाय—मिर्चा, तीसी, सकरकन्द, आल अरहर, मकई, खली, घी, हलदी, तम्बाकू आदिका होत है। लाल मिर्चा और सकरकन्दका व्यापार अधिक होता है यहाका घी बढ़िया, दानेदार और सुगन्धित होता हैं। मोटा दान और पीला रग यहाके घीमें होता है। यहाका सबसे प्रधान औ बडा व्यापार नीलका है। आज भी यहा अनेकों नीलकी कोठिया हैं।

बेगूसराय—हवडासे जमालपुर होते हुए मुंगेरसे गगा पार कर बेगूसराय जाइये। मण्डी स्टेशनके पास है। ८४ तोलेका सेर है। बी० एन० डब्ल्यू रेलवेके खुल जानेसे यहाके व्यापार की रुख बदल गई है। यहाका बाजार छोटा होनेपर भी उन्नति कर रहा है। हरतरहके गल्लेका चालान यहासे होता है। यहाका घी बहुत बढिया होता है और मिर्चेका चालान भी बहुत होता है।

बकरीबाजार—बेगूसरायसे १२ मील है। यह मिर्चेकी सब से भारी मण्डी है। मण्डी स्टेशनके पास है। इससे माल भेजनेमें किसी तरहकी कठिनाई नहीं है। कोई बडी आढत नहीं है। इससे अपना आदमी भेजकर सौदा खरीदनेमें लाभ है।

पड़िहारा—हबड़ासे मु गेर, मु गेरसे गंगा पार कर साहेब-पुर कमाल जकशनकी गाडी पकडो। यहासे लखमनिया स्टेशन उतरो। लखमनिया स्टेशन पडिहारासे ८ मील है। ८४ तोलेका सेर है। यहाँ भी मिर्चेका कारबार है। अन्य तरहके सामान मुस्तसरसे मिलते हैं। यहाका घी मु गेर जिलेमें सबसे बढिया होता है। गण्डक नदी पार होनेसे स्टीमरोंसे भी माल आता जाता है। यहासे बखी दो मील है। यहा भी मिर्चकी बडी भारी मण्डी है।

मोतिहारी—हबडासे मुकामाघाट, मुकामाघाटसे गगा पार कर बी० एन० डबल्यू० से मुजफ्फरपुर जकशन होकर मोतिहारी पहुचना होता है। ८० तोलेका सेर होता है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। चम्पारन जिलेमें यह मण्डी सबसे बडी है। चम्पारन जिलेके गल्लेकी यह प्रधान मण्डी है। प्रधान माल तीसी, सरसों, चावल, मसूर, रेंडी, चीनी, मिर्चा, तम्बाकू, सोरा, भेली गुड, घी, खारा नमक, सज्जी, नील, खली, लहसुन, खाल आदिका चालान बहुतायतसे होता है। मोतिहारीका तम्बाकू, नील, खारा नमक और सज्जी बहुत उमदा होती है। यहाकी सुरती दूर दूर तक चालान जाती है। बर्माके व्यापारी सिगारबनानेके लिये यहा आकर सुरती खरीदते हैं। यहाके बोनिया खारा नमक और सज्जी बनाते हैं। यहासे निमक पटना, गया, बर्दवान, रानीगञ्ज, भागलपुर, बाकुडा आदि स्थानोंको जाता है। जाल बनाना, तेल पेरना, दरी बुनना तथा रुपया रखनेकी थैलीको बनानेके यहा

कारखाने हैं। रस्सी बनानेके यहा कई कारखाने हैं। दूर-दूरके मछुए यहाँसे जाल खरीदकर ले जाते है। यहा सीपसे बटन बनानेके दो देशी कारखाने हैं। यहाकी मण्डी भी मारवाडियोंके हाथमें है।

सीतामढी—हवडासे मुकामाघाट और दरभगा होकर सीतामढी जाना होता है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। गल्लेकी भारी मण्डो है। लाल मिर्चा, घी, भेली-गुड, पोस्ता, चीनीकी भी आढतें हैं। यहाका गुड बहुत बढिया होता है। घी साधारण होता है और बहुतायतसे मिलता है। तीसी, रडी और सरसोंका व्यापार यहा इतना अधिक होता है कि रालीब्रदर्सने अपनी आढत खोल दी है। यहासे माल सीधा कलकत्ता और बम्बईके बन्दरगाहोंमें जाता है। यहा सज्जी-के बनानेकी कम्पनी जारोंमें चलती है। सज्जी बनानेके अनेक कारखाने बनियोंके हाथमें हैं। धान काटनेका भी यहा एक बडा भारी कारखाना है। सरसोंका तेल पेरनेकी भी एक कल है यहाकी मण्डी भी व्यापारियोंके हाथमें है।

बेतिया—मोकामाघाटसे समस्तीपुर और मुजफ्फरपुर होकर बेतिया जाना होता है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे एक मील-पर मण्डी है। तीसी, सरसों, चना, मका, मसूर, पोस्ता, घी, सीरा, चीना, तम्बाकू, खली, रेंडी, मिर्चा, हल्दी, मोम, शहद, चमडा और लकडीका व्यापार प्रधान है। यहासे सीरेका चालान सबसे अधिक होती है। बेतियामें सबसे बढिया खजूरकी चटाई

होती है। यहाका घी साधारण होता है। फिर भी चालान अधिक होता है। यहाकी मण्डी भी मारवाड़ियोंके हाथमें है।

समस्तीपुर—हवड़ासे मुकामाघाट उतरकर सेमरियाघाट समस्तीपुर रेल गई है। ८८ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। तीसी, सरसों, घी, देशी चीनी, राव, भेलो, हल्दी, मिर्चा, पोस्ता, सुरती, आलू, आम, प्याज, लहसुन, पत्तीका चालान अधिक होता है। यहांका घी, खजूरकी खाड और मिर्चा प्रसिद्ध है। समस्तीपुरका घी बढ़िया होता है। चीनी बनानेके यहा कारखाने भी हैं। यहासे आम और लीचीका चालान बहुत अधिक होता है। इनके पेड़ भी भेजे जाते हैं। यहांका व्यापार देशवालियों और मारवाड़ियोंके हाथमें है।

रसरा—समस्तीपुरसे रसरा गाड़ी गई है। ८८ तोलेका सेर है। गण्डक नदीके किनारे स्टेशनके पास ही मण्डी है। दरभङ्गा जिलामें यह सबसे बड़ी मण्डी है। गल्ले तथा तेलहनकी यह प्रधान मण्डी है। यहाकी सरसों बढ़िया होती है। मिर्चा, लहसुन और तम्बाकू तथा तीसीकी आमदनी यहा अधिक है। यहाका तेल और खली बढ़िया होती है। बरसातमें गण्डक नदीमें नावें चलती हैं और माल ढो-ढोकर कलकत्ता लाया जाता है। मछलीका व्यापार भी अच्छा होता है।

दरभङ्गा—दरभङ्गाका बाजार स्टेशनके पास ही है। चार मोल की बस्तीमें कई मण्डियां हैं। बायीं ओर बागमती नदी है। चना, गेहू, तीसी, अरहर, मसूर, खेसारी, जव, तिनील, सरसों, पोस्ता,

रेंडी, खली, मिरचा, मक्का, लहसुन, प्याज, सुरती, घी, खारा नमक सज्जो, कम्बल, गुड, सीरा, चीनी, हलदी, मोम, शहद, सरसोंक तेल, मक्खन, आम, लीची, अमावट, गोभी, अजवाइन, शिलाजीत चिरैता, रीठी, गुग्गुल, मदार, गिलोय आदिका चालान नेपालकी तराईसे आता है। तीसीका चालान सबसे अधिक होता है। गल्लेका व्यापार इतना अधिक होता है कि रालीब्रदर्सने अपनी आढत खोल दी है।

यहाकी खाड मशहूर है। खूब गाढी और दानेदार होती है। यहाका गुड भी बढिया होता है और नागपुर, मध्यप्रदेश, उडीसा, मानभूम, कलकत्ता और मद्रास जाता है।

दरभङ्गाका घी भारतकी सभी मडियोंमें प्रसिद्ध है और इसकी माग अधिक रहती है। यहा बगाली, मारवाडी और देशवालियोंकी अनेक आढते हैं जो केवल घीका रोजगार करती हैं। दरभगाका घी दो तरहका होता है—(१) बक्की (२) महरा। दूध गरमाकर जमाते हैं और दहीको मथकर बकी घी निकालते हैं और दूधको ही मथकर महरा घी निकालते हैं। इसका रग पीला होता है। निखालिस महरा घीमें बहुत स्वाद होता है। भागलपुरके घीके अतिरिक्त कहींका भी घी इसका मुकाबला नहीं कर सकता। बकी घी निखालिस नहीं मिलता। इसमें महुयेका तेल तथा मूंगफलीका तेल मिला देते हैं। यहाके आढ़तिये पोस्तेका तेल तथा चर्बीतक मिला देते हैं, जिससे शरीरको हानि होनेका भय रहता है। आसपासके देहातोंका घी बढ़िया होता है।

नेपालकी तराईसे जो घी आता है उसका रंग साफ नहीं होता। आढतिये दोनों घीको मिलाकर सस्ते दरमें बेंचते हैं। महरा घी बढ़िया होते हुए भी खराब महकके कारण कलकत्तेके बाजारमें नहीं चलता।

सरसों, सरसोंका तेल और खलीका चालान भी यहासे अधिक होता है। आम, लीची और अमावटका चालान भी मौसिममें खूब होता है। लीची और आमके यहा अनेक जगीरे हैं, जहासे पेड मिल सकते हैं। मछलीका व्यापार भी अधिक होता है। नेपालको तराईके पहाडी अनेक तरहके सामान गाड़ियोंपर लादकर यहा बेचनेके लिये लाते हैं।

तम्बाकू और नीलके यहा अनेक कारखाने हैं। चीनीके भी कारखाने हैं। हाथके करघे और कम्बलका काम यहा अच्छा होता है। यहासे थोडी दूरपर झझारपुर है। यहा पीतलके बर्तन बनते हैं। किसी समयमें नीलका यहा बडा भारी कारबार था। सैकडों नीलकी कोठिया आज भी उसी तरह खडी हैं। खजूरकी चीनी बनानेके अनेक कारखाने हैं। यहाका व्यापार मारवाडी, बगाली और नेपालियोंके हाथमें है।

सकरी—दरभगा लाइनमें है। ८८ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास दो मण्डी हैं। गल्लेकी अच्छी मण्डी है। पर सकरीका खजूर, घी और आम सबसे अधिक मशहूर है। यहाकी खाडमें दाना अच्छा होता है। भेली गुडका भी अच्छा व्यापार है और विदेशोंमें चालान जाता है। यहाका सीरा तम्बाकूके

कारखानोंमें जाता है। चीनी साफ करनेके कई एक कारखाने जिनमें चीनी बनाई जाती है। आमका कारबार यहा ब चढा चढा है। अमावट और अमचूरका चालान यहासे अधि होता है। यहाकी मंडी बंगालियोंके हाथमें है।

मुजफ्फरपुर– बी० एन० डबल्यू० रेलवेमें है। ८० तोलेव सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। धान, चावल, मसूर, चन खेसारी, तीसी, पोस्ता, सरसों, रेडी, खली, मिर्चा, सुरतं लहसुन, प्याज, सज्जी, चमडा, अफीम, खारा नमक, घी, कम्बल भेली गुड, चीनी, हलदी, मक्खन, आम, लीची, गोभी, अमाव आदिकी आढतें हैं। यहाका घी भी अच्छा होता है। इसक रंग पीला होता है, दानेदार और खानेमें स्वादिष्ट होता है यहां महरा घी भी मिलता है। इसमें महक होती है। इसीर कलकत्तेके बाजारमें नहीं चलता। हाटके दिन नैपालकी तराईसे पहाडी अनेक तरहके सामान बेचनेके लिये लाते हैं और बदलेमें सामान खरीद ले जाते हैं।

मोटिया कपडा, पालकी, गाडीका पहिया, खडाऊँ आदि यहां उत्तम और सस्ती बनती हैं। किसी समय यहा नीलकी बडी-बडी कोठियां थीं, पर अब नीलका कारबार बहुत मन्दा पड गया है।

खजूरकी चीनी बनानेका यहा एक कारखाना है, जिसमें चीनी साफ की जाती है। यह चीनी दूर दूरतक जाती है। गया, मुंगेर, भागलपुर, पटना तथा बनारस आदि स्थानोंमें यहासे

रायका चालान जाता है, जो तम्बाकू बनानेके काममें आती है।

आम और लीचीका व्यापार यहा गरमीभर जोरोंसे चलता है। यहाकी लवंगिया लीचीका मुकाबिला नहीं हो सकता। आम तथा लीचीके पेड बेचनेके अनेक जखीरे भी हैं। फसलमें लोग यहा आकर आमका व्यापार करते हैं, अमावट तथा अमचूर तैयार करते हैं और फसलके बाद इसे बेचते हैं। हालमें ही आम और लीची ताजा रखनेके लिये एक कम्पनी खोली गई है।

यहा कम्बल भी बढिया बनता है। यहाका बना कम्बल चाय बागीचोंमें कुलियोंके ओढनेके लिये जाता है। यहा लोहे, चीनी, चावल और तेलके कारखाने हैं। सारा व्यापार मारवाडियों और देशवालियोंके हाथमें है।

गोरखपुर—बी॰ एन॰ डबल्यू॰ रेल्वेमें है। ८०, और १०५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही बाजार है। गल्लेकी बडी भारी मण्डी है। नेपालकी तराईसे यहा घी आता है और बाहर भेजा जाता है। इस घीमें हर तरहके जानवरोंका घी शामिल रहता है। इसलिये न तो इसमें कोई रंग रहता है और न स्वाद। रहर, मसूर, चना और खेसारीकी दाल तैयार करनेके यहा अच्छे कारखाने हैं। नेपालकी तराईके पहाडी हाटके दिन गाडियोंपर लाद लादकर सामान बेचनेके लिये लाते हैं। बढईका काम यहा उम्दा और अधिक होता है। चमडा सिझाने, लकडी

चीरने और लकडीके सामान बनानेके कई एक कारखाने हैं। गोरखपुरमे अनारस बहुतायतसे पैदा होता है। मण्डी मारवाडियों और देशवालियोके हाथमें है।

बरहज बाजार—गोरखपुर जिलेमें है। ५२ तोलेका सेर है। तीसी, सरसों, अरहर, मसूर, चीनी, वगैरहका चालान यहासे होता है। यहासे सीरा तम्बाकू बनानेके लिये बहुत जाता है। रहरकी दाल यहांकी बहुत अच्छी होती है और कलकत्ता चालान जाती है। चीनी बनानेका यहा बडा भारी कारखाना है। प्राय १५० चीनी साफ करनेके कारखाने हैं। हिन्दुस्थानमें चीनी बनानेका यह सबसे बड़ी मण्डी है। ५ मन २ सेरकी वजनमें चीनी बिकती है।

गाजीपुर—बी० एन०आर० रेलवेमें है। ई० आई० आर०से दिल्दारनगर उतरकर ताडीघाटसे होकर स्टीमरसे गगा पार कर गाजीपुर जाना होता है। १०३ तोलेका सेर होता है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। चना, गेहूं, तीसी, सरसों, पोस्ता, अरहर, खाड, घी, इत्र, तेल, गुलाबजल, गुलकन्दका यहा अच्छा व्यापार होता है। गाजीपुरका गुलाबजल मशहूर है। यहासे दूर-दूर चालान जाता है। तेल पेरने तथा लोहा ढालनेका एक बडा भारी कारखाना रेलके पास ही है। भेडकी बालका साधारण काला और सफेद कम्बल यहा बहुत बुना जाता है और सस्ता मिलता है।

गाजीपुरके पास ही जमनियाकी मण्डी है। जमनिया

स्टेशनके पास ही है। यहा भी गल्लेकी अच्छी मण्डी है। चना, तीसी, खेसारी, मटर, गेहूं की वडी-वडी आढते हैं।

वलिया—छोटी लाइनमें है। स्टेशनसे एक मीलपर वाजार है। गङ्गा नदीके घाटपर मण्डी है। १०३ तोलेका सेर है। तीसी, रेंडी, चीनी, घी, सीरा और गुडकी आढतें हैं। यहाका घी अच्छा होता है। सफेद और दानेदार होता है। यहा चीनी भी वहुत वनती है और चालान जाती है। यहासे चार मीलपर हनुमानगञ्जका वाज़ार है। यहा देशी चीनी तैयार होती है और "काशी-चीनी"के नामसे विकती है। यहीं ददरीका मेला लगता है। यहा हर तरहके जानवर विकने आते हैं। घीका व्यापार वङ्गालियोंके हाथमें है। अन्य व्यापार देशवाली और मारवाडियोंके हाथमें है। माल प्राय स्टीमरोंपर ही चालान जाता है।

गोंडा—छोटी लाइनमें है। जङ्कशन स्टेशन है। ८० तोलेका सेर है। मक्का, तीसी, सरसों, रेंडी, चीनी और अनाजका व्यापार प्रधान है। इनमें मक्की और सरसों वलरामपुर, वहराइच, नानपाडा, तुलसीपुर, नेपालगञ्ज रोड, कर्नलगंजमें वहुत ज्यादा होता है। यहाँ सरसोंका तेल भी निकाला जाता है।

यहा सूती और ऊनी कपडे वुने जाते हैं और जरीका काम किया जाता है। हाथीदातकी चूडिया वनती हैं। चीनी वनानेका एक कारखाना भी है। व्यापार देशवालियों और मारवाडियोंके हाथमें है।

रेवलगञ्ज—मोकामाघाटके दूसरी ओर है। ८० तोलेका

सेर हैं। स्टेशनके पास ही मण्डी है। चना, गेहूं, तीसी, सरसों, घी, लाल मिर्चा, खजूरकी खांड और चक्की गुड, आलू, अरहर तथा खलीकी आढतें हैं।

छपरा—मोकामाघाटके पास सारन जिलामें है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। पास ही घाघरा और गगाजीका सगम है। चना, गेहूं, तीसी, सरसों, मुलायम घी, खजूरकी खाड, गुड, सीरा, तम्बाकू, मिर्चा, आलू, प्याज, देशी चीनी, हलदी, पोस्ता, अरहरकी दाल, खली, रेंडीका तेल, खारा नमक, मक्का, लहसुन, मक्खन, कम्बल, तथा चमडेकी आढतें हैं। यहाका सबसे बडा चालानी माल सज्जी, खारा नमक, घी, रेंडीकी खली, आलू, चीनी और अरहरकी दाल है। यहा सज्जी बहुत बनती है। बरसातके अतिरिक्त बराबर काम जारी रहता है। यह काम नोनियोंके हाथमें है। बहुत ही लाभ दायक काम है।

यहाका घी पीले रगका होता है और खराब महक आती है। इससे सस्ता बिकता है। रेंडीका तेल निकालनेकी एक मिल है। इसमेंसे बढ़िया तेल निकलता है और चालान होता है। आलूकी खेती भी यहा अच्छी होती है। खारा नमक भी यहां बहुतायतसे पैदा होता है।

यहाके जुलाहे सूती कपडा बढिया तैयार करते हैं। भेडके बालके कम्बल यहा बनते हैं, जो चायके बागीचोंमें कुलियोंके लिये चालान जाते हैं। देशवाली और मारवाड़ियोंके हाथमें सारा व्यापार है।

पाकर—सन्थालपरगनामें है। १०५ तोलेका सेर है। स्टेशन-के पास बाजार है। चावल, धान, चना, मसूर, खेसारी, अरहर, मटर, रेंडी, खली, हल्दी, घी, तीसी, खजूरकी चटाईकी आढते हैं।

यहा अनेक शहरके व्यापारियोंकी आढतें हैं। गल्लेके व्यापारीको अपना एक आदमी यहा बराबर रखना चाहिये। हाटके दिन सन्ताल लोग बहेरा, शहद, मोम, अनन्तमूल, बासकी लाठी, लकडी, कोयला आदि बेचनेके लिये लाते हैं और सस्ती दरसे बेचते हैं, यहाकी जलवायु अच्छी है। यहा पत्थरसे गिट्टी बनानेका बडा भारी कारबार है, जो सडकोंके बनानेके काममें आती है। व्यापार मारवाडियों, देशवालियों और बङ्गालियोंके हाथमें है। यहा चपडा बनानेके बडे बडे कारखाने हैं।

राजमहल—सन्थाल परगनामें है। गगाजीके घाटपर स्टेशनके पास ही मण्डी है। जलवायु स्वास्थ्यकर है। ९२ तोले का सेर है। गल्ला, तिलहन, तेलहन, मिर्चा, चावल, धान, आलू, मछली, आम, प्याज, खली और घीकी बडी आढत हैं। यहा मछलिया सस्ती मिलती हैं और कलकत्ता चालान की जाती है। यहा मालदह आम बहुत अच्छा होता है और चालान जाता है। देशवालियों और मारवाडियोंके हाथमें व्यापार है।

यहा भी गिट्टी तोडनेका भारी कारबार है।

साहबगञ्ज—भागलपुर जिलेमें है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। सरसों, चना, गेहू, मसूर,

दाल, मिर्चा, तम्बाकू, आलू, प्याज, चावल, नमक, घी, चीनी, रेंडीका तेल, खारा, नमक, खानेका नमक तथा मूंगकी आढ़तें है। व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है, जो माल खरीदकर रखते हैं और समय आनेपर वेचते हैं।

यहा मारवाडियोंकी तेलकी तीन मिलें हैं, जिनमें सरसोंका तेल पेला जाता है। वगालके अतिरिक्त लुधियानाके व्यापारी बहुत-सी खली खरीदते हैं। यहासे खलीके चालानके लिये, रेलवे कम्पनीने भाडेमे खास रियायत कर दी है। सालभर बराबर व्यापार चलता रहता है।

पीरपैती—भागलपुर जिलेमें है। १०५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही हाट है। चावल, धान, तीसी, चना, रेंडी, सरसों, मसूर, खेसारी, मटर, मूंग, हल्दी, आलू, मिर्चा, खली-की आढते हैं। यहासे ६ मीलपर बडा हाट है। यही यहाके व्यापारका केन्द्र है। व्यापार देशवालियोंके हाथमें है। थोडे मारवाडी और वगाली भी हैं।

कोलगाव—भागलपुर जिलेमें है। १०५ तोलेका सेर है। हाट-के पाससे गगा नदी बहती है। चना, गेंहू, तीसी, मसूर, खेसारी, रेंडी, चावल, धान, खली, हल्दी, आलू, प्याज और अरहरकी आढते हैं। आलूकी खेती सबसे अधिक होती है। नये आलूका चालान सबसे पहले यहींसे होता है।

यहा मछलीका व्यापार खासा है। फसलके समयमें आमका चालान भी खूब होता है। यहाकी रेंडी बढ़िया होती है। फल-

फत्ताके बाजारमें इसकी माग अधिक रहती है। बरसातमें नावोंद्वारा माल जाता है। व्यापार मारवाडियों और देशवालियों-के हाथमें है।

सुलतानगञ्ज—भागलपुर जिलेमें हवडासे २८० मील है। १०१ तोलेका सेर है। चावल, धान, मका, चना, जव, मसूर, खेसारी, अरहर, रेंडो, तीसी, मिर्चा, आलू, प्याज, गोभी, आम, मछली, कम्बल, खलीकी आढतें हैं। इसके अलावा तैयारी माल की भी बडी मण्डी है। अक्टूबरमें आलूका अच्छा सौदा होता है।

आसपासके गावोंमें रेशम, टसर और चपनाकी बुनाई होती है। यह सब माल भागलपुर, मुंगेर और पटना भेजा जाता है। बरसातमें नावसे भी माल भेजा जाता है। व्यापार देशवालियों और मारवाडियोंके हाथमें है।

यहासे १० मीलपर असारगञ्जकी मण्डी है। यहां चावलकी मण्डी है। भागलपुर जिलेमें चावलकी यह सबसे बडी मण्डी है। इसके अलावा गल्ले और बीजकी भी मण्डी है।

भागलपुर—लूपलाइनमें है, १०१ तोलेका सेर है। स्टेशनसे एक मीलपर हाट है। सुजानगञ्जकी मण्डी सबसे बडी है। गेहूं, तीसी, सरसों, पोस्ता, सीरा, खजूरकी खाड, घी, चीनी, खली, चावल, धान, रेंडी, मसूर, खेसारी, अरहर, जोन्हरी, मिर्चा, आलू, प्याज, तम्बाकू, सन, पाटकी प्रधान आढतें हैं। इसके अलावा तरकारी और आमका व्यापार अच्छा होता है। सरसोंकी यहा

बडी आढतें हैं। संयुक्तप्रदेश आदि स्थानोंसे सरसोंका चालान आता है। यहाका सन बहुत ही उमदा होता है। घोडोंके लिये बिनौलका चालान यहासे होता है। देहातोंमें कम्बल बनते हैं पर जेलका कम्बल बढिया होता है। भागलपुरके पास नाथनगर है यहाका रेशमी कपडा मशहूर है। बम्बई, किशनभोग और मालदह आम बढिया मिलता है और सस्ता रहता है। आमके फसलपर यह व्यापार लाभदायक हो सकता है।

इसके पास ही सग्रामपुर गाव है। यहा खजूरका गुड बहुत बढिया होता है और दूर-दूरतक चालान जाता है। पास ही दूसरी मण्डी प्रतापगञ्ज है। यहा भैंसका घी बढिया होता है। यह घी बहुत ही साफ और स्वादिष्ट होता है। यहाकी सरसोंमें तेल अधिक निकलता है। तेल पेरनेकी चार मिलें हैं, लुधियाना (पञ्जाब) तक यहाका तेल जाता है। यहाकी खलीके खरीदार पञ्जाबी हैं। यहाकी खली ढोनेके लिये रेलवे कम्पनीने खास रियायती महसूल रखा है।

खड्गपुर—मुंगेर जिलेमें बरियारपुर स्टेशन (लूपलाइनमें) है। बरियारपुरसे खड्गपुर १० मील है। यहाका चावल सबसे उमदा होता है। मुंगेर और भागलपुरकी मण्डियोंमें यहांका चावल चालान जाता है। गल्ला, तेलहन, और घीकी भी आढतें हैं। बैलगाडियोंका प्रबन्ध अच्छा है। व्यापार देशवालियोंके हाथमें है।

मुंगेर—जमालपुरसे लूपलाइन होकर मुंगेर जाना होता

है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनसे एक मीलपर गगा नदीके किनारे मण्डी है। किसी जमानेमें यहा कई गोले थे। उस समय यहा नौ व्यापारको प्रधानता थी। इस समय सारा व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है। गल्ला, तेलहन, दाल, साग, भाजी, आमका व्यापार अधिक होता है। पत्थरकी स्लेटे यहा बनती हैं। स्टेशनसे दूसरी ओर लाल्दराजा है। यहा स्लेट, टाइल, प्याली, तश्तरी आदि मिलती हैं।

किसी समय मुगेरका "मुगेरा मटकी" घी प्रसिद्ध था। शहरमें उम्दा घी दर्शनके लिये भी नहीं मिल सकता। मारवाडी बनिये खराब घी बाहरसे मंगाते हैं और बेचते हैं। यहांके रहनेवाले देहातोंसे घी खरीदकर लाते हैं। किसी समय देहातोंसे घी बटोरनेमे भी लाभ था, पर अब धीरे धीरे यह व्यापार भी मर रहा है। इस समय घीका सारा व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है। निम्नलिखित स्थानोंमें घी मिलता है — खगरिया, सुराजगढ, ओलीपुर, टेग्रा, चकौर, खुतिया, किशनपुर, जाफरपुर, सामो, बेगूसराय, बवूट बगीचा, परिहार, चौकवाली। यहाके घीका रङ्ग पीला होता है, पर स्वादिष्ट होता है। महरा घी सबसे चढिया होता है। दो तेल पेरनेके कारखाने हैं। इनमें मैदा और आटा भी पीसा जाता है। सिगरेट बनानेका भी एक कारखाना है। नावोंसे माल सुभीतेसे जा सकता है।

विशुनपुर (विष्टोपर)—बाकुडा जिलामें बी०एन० आर० में है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे दो मीलपर मण्डी है। टसर,

मटका और रेशमी चद्दर यहाकी वढ़िया होती है। आसपासके गावोंमें कर्घे चलते हैं। यहाकी सुरती बहुत ही वढ़िया होती है। ऐसी सुरती कम ही मिलती है। पर गयाकी सुरतीका मुकाविला नहीं कर सकती। तेलकी दो मिले हैं जो मारवाड़ियोंके हाथमें हैं।

इसके पास ही सोनामुखी मण्डी है। यहासे रेशमी कपडेका चालान अधिक होता है।

वाकुड़ा—आसनसोल होकर अथवा खडगपुर होकर वाकुडा जाया जाता है। ६० और ८० तोलेका सेर है। धालकिसार नदीके किनारे स्टेशनसे एक मीलपर मण्डी है। धान और चावलकी यहा प्रधान आढतें हैं। इसके अलावा महुआ, वहेरा, मोम,शहद,मसूर,चपड़ा,रेशम,सरसों, गायके घीकी भी आढतें हैं। रेशमी और सूती (गाढा) कपडा, चपड़ा, कासाके वर्तन, जरी किनारीकी साडिया, टसरके कपडे यहा वहुतायतसे मिलते हैं। वाकुडाका व्यापार दिन दिन उन्नति करता जा रहा है। व्यापार मारवाडियों और वङ्गालियोंके हाथमें है। लाहसे चपडा वनानेके अनेक कारखाने हैं। लाहका व्यापार बहुत ही लाभदायक है। मारवाडियोंकी दो तेल पेरनेकी मिले हैं।

पुरालिया—वी० एन० आर० में है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। व्यापारके लिये यह वढिया जगह है। धान और चावलकी प्रधान आढतें हैं। इसके अलावा रेजिन और भैंसकी सींगकी छडियोंका व्यापार होता है। मानभूम जिलामें यह सबसे वड़ी मण्डी है।

राजगाव—राजगावकी मण्डी बाकुडासे तीन मीलपर है। धान और चावलकी प्रधान आढते हैं। यहासे चावल कोयलेकी खानोंमें जाता है। बहेरा, हल्दी, कपास, महुआ, कोयना, तेल, और घीकी भी आढतें हैं। यह व्यापार जनवरीसे अप्रैलतक रहता है। हाटके दिन सन्थाल लोग बहेरा, कुचिला, शहद,मोम तथा अन्य जडी-बूटिया लाकर बेच जाते हैं। यहाका रेशमी कपडा बढिया होता है। किसी समय यहा लाह और रेशमी कपडेके अनेक कारखाने थे। गोपीनाथपुरकी तसर मशहर है। दूर-दूरके व्यापारी यहा आते और माल (तसर) खरीदते हैं। गाढा, रूमाल, चादर भी यहा बुना जाता है। व्यापार अधिकतर मारवाडियों और बङ्गालियोंके हाथमें है।

चण्डील—मानभूमि जिलामें बी० एन० आर०में है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पासही मण्डी है। धान, चावल, महुआ, तेलहन, साल लकडी, शहद, हल्दी, बहेरा, तथा जङ्गली घास सस्ते दरसे मिलते हैं। लाहके अनेक कारखाने हैं।

झालदा—मानभूमि जिलामें बी० एन० आर०में है। ८०तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। धान,चावल, चपडाकी प्रधान आढतें हैं। महुआ, रेजिन,कोयना, गाँजाकी भी उपज होती है। सरसों,लाह, बहेरा,शहद,मोम और पाट भी मिलता है। छडी और लाठियोंका यह अड्डा है। चपडेके अनेक कारखाने आस पासमें हैं,लाहका कारवार बहुत पुराना है। मोटिया कपडा यहाके करघोंमें बुना जाता है। पीतल तथा कासाके

वर्तन भी यहां वनते हैं। कागज बनानेकी घास (सवाई) यहा वहुतायतसे पैदा होती है और मिलोंमें चालान जाती है। यहा रस्सा भी वढिया और मजवूत वनता है। झालदामें कोयलेकी खाने भी हैं, पर यहाका कोयला झरियाके कोयलेके समान नहीं होता। अभ्रकका भी कारखाना यहा है। व्यापार मारवाडियों, वङ्गालियों और अग्रेजोंके हाथमें है।

रांची—बी० एन० आर०में पुरलिया होकर जाना होता है। ८० तोलेका सेर है। जलवायु अच्छी है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। यहाकी तरकारिया कदमें वडी होती हैं। यहाका पपीता वहुत ही वड़ा, मीठा और स्वादिष्ट होता है। यहाके आलू एक-एक ढाई पावतकके होते हैं। यहा मिर्चा वहुत पैदा होता है। गिरनार पहाडीकी पैदा हुई चीजें यहीं विकने आती हैं। वीडीके लिये पलासकी पत्तिया यहींसे आती हैं। कागज बनानेकी घास भी यहा वहुत पैदा होती है। इस घासके व्यापारसे वहुत लाभ हो सकता है। लाहका कारवार भी लाभदायक है।

जनार पहाडीका चूना बढ़िया होता है। इससे मुलायम चूना सस्ते दरमें तैयार किया जा सकता है। सुवर्णरेखा नदीसे जाड़े और गरमीमें सफेद वालू निकाली जाती है। वासके डण्डे भी यहा वढिया मिलते हैं। यहा तिल भी वहुत पैदा होता है। पर इसमें गर्द वहुत मिली रहती है। यहाका घी वढिया, निखालिस सस्ता होता है। जमीन यहा सस्ती है। तरकारीकी खेती

बडी सुविधाके साथ की जा सकती है और अच्छा लाभ हो सकता है। प्रधान व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है। कुछ बङ्गाली भी दूकानदार हैं।

हजारीबाग—गया लाइनमें है। स्टेशनसे ४१ मीलपर मंडी है। नगरके चारों ओर पहाड़िया हैं। स्टेशनसे शहरतक मोटर (किरायेकी) जाती है। पहले सडक खराब थी। इससे व्यवसाय उन्नत अवस्थामें नहीं था। अभ्रकको यहापर अनेक खाने हैं। लाहके भी अनेक कारखानें हैं।

इधर थोडे दिनोंसे यहा चायकी खेती आरम्भ की गई है। इस समय उससे अच्छा लाभ हो रहा है। पर यहाकी चाय उतनी उमदा नहीं होती जितनी आसामकी चाय होती है। इसके अलावा कोयला और टीनका भी कारबार है। कितनी पहाडी चीजें यहा बडी सस्ती मिल जाती हैं। यहाकी सरसों बढिया होती है। हाटके दिन सन्थाल लोग यह सब चीजें लेकर आते हैं। उनसे सौदा करनेमें बहुत लाभ हो सकता है।

नागपुर—बी० एन० आर० में है। ८० तोलेका सेर है। बाजार स्टेशनके पास है। चावल, धान, लाद, शहद, बहेरा, कपास, साल लकडी, धूना, तिल, सरसों, महुआ, नारगी और मोमका चालान होता है। नागपुरी सन्तरा मशहूर है और दूर-दूरतक जाता है। लकडीका कारबार भी यहा अच्छा होता है। बडे बडे व्यापारियोंने यहाके जगलोंका ठेका सरकारसे ले लिया

हैं और बमरा राजकी ओरसे लकडीका बडा भारी कारखान खुला है। रेलकी लाइनोंपर जो पटरियां बिछी हैं वह यहीं जाती हैं।

रायगढ—बी० एन० आर०में है। ८० तोलेका सेर है स्टेशनके पास मण्डी है। सरसों, राई,धूना, तिल, कपास, बहेर साल, लकड़ी और मोमका यहासे चालान जाता है। यहाक आबहवा अच्छी है। यहासे चावल और धान (मोटा) का व्यापा बढिया होता है। सिंहभूमि जिलामें यह सबसे बडी मण्डी है इस मण्डीमें सालकी लकडिया पैदा होती हैं। सन्थाललोग अनेक तरहके जगलके सामान फल-फूल, जडी बूटी आदि लाक बेचते हैं, जो बहुत ही सस्ती पडती हैं।

उलूबेरिया—बी० एन० आर०में है। गंगाजीके किनारेपर स्टेशनसे दो मीलपर बाजार है। ८० तोलेका सेर है। बाजारसे एक मीलपर स्टीमरकी जेटी है।

धान और चावलकी बडी भारी मण्डी है। यहा धान कूटने की मिल नफेके साथ चल सकती है। यहा नारियल सबसे सस्ते मिलते हैं। मिट्टीके बर्तन भी यहा बहुत अच्छे बनते हैं। मछलीका व्यापार भी यहां अच्छा होता है। फल तथा शाक-भाजी भी यहा अच्छी होती हैं।

चाईबासा—बी० एन० आर०में है। स्टेशनसे १६ मीलपर मण्डी है। ८४ तोलेका सेर है। स्टेशनसे शहरतक मोटर जाती है। चारों तरफ पहाडियां हैं। धान, चावल, अरहर, रेशम,तसर,

हल्दी, वहेरा, कागज बनानेकी घास, शहद, मोम, सरसों, रेंडी, और पत्थरके वर्तनका चालान होता है। ज्यादातर व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है। कुछ व गाली व्यापारी भी हैं।

चाईं वासाका चावल और लकडी प्रसिद्ध है। मोटे चावलका चालान अधिक होता है। लकडीका व्यापार भी यहा खासा है।

धुलिया—वण्डल-वढरवा लाइनमें है, मुर्शिदाबाद जिलेमें गगाके किनारे है। ५६ तोलेका सेर है। चावल, खेसारी, चना, तीसी, सरसों, दाल, मसूर, चीनी, मिर्चा, हल्दी, खली, जव, मूग, आलू, सुर्नोका चालान होता है।

मालदह—ई०बी० रेलवेमें है। ७२ और ८० तोलेका सेर है। यहा पाटकी खेती सबसे अधिक होती है। इसके लिये राली ब्रदर्सने अपनी आढत खोल रखी है। गल्ला, दाल, मसाला आदिकी भी मण्डियां हैं। किसी समय यहा रेशम और टसरके वड़े-वडे कारखाने थे। इनमेंका वना माल यूरोपतक जाता था। पर अब वह व्यापार न रहा। मालदहके आम वडे ही मीठे होते हैं। यहाकी मिट्टीमें ऐसी तासीर है कि खट्टे आम यहा पैदाही नहीं हो सकते। यहाका अमावट भी वहुत ही स्वादिष्ट और वढिया होता है। यहांसे फलका व्यापार करना लाभदायक है। वगालियों और मारवाडियोंके हाथमें व्यापार है। एकाध अंग्रेजी कोठियां भी हैं।

चटमोहर—ई० बी० रेलवेमें पवना जिलामें है। ६० तोलेका सेर है। नदी पाससे ही बही है, इससे माल नावसे भी जाता

है। यहांका पाट और हल्दी बहुत बढ़िया होती हैं और अधिक मात्रामें चालान होती हैं। पबनामें यह दूसरी बडी मण्डी है।

भद्रक—बी० एन० आर०में है, स्टेशनसे तीन मीलपर मण्डी है। नूतन बाजारके नामसे मशहूर है। धान और चावलकी बडी बडी आढतें हैं। भैंसका घी, सरसों आदिका व्यापार भी अधिक होता है। यहा चावल सस्ता मिलता है। भेरा और धपूरा परगनोंमें भी मिल सकता है। ये स्थान भद्रकसे २० मीलपर हैं। १०५ तोलेका सेर है। यहांके चावलका चालान रामकृष्टोपुर जाता है। मण्डी मारवाडियोंके हाथमें है।

कटक—बी० एन० आर०में है। महानदी और खजूरी नदीके मुहानेपर है। ८० और १०५ तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। यहा अधिक माल आता जाता है। धान, चावल, लकडी, लाह, कपास, सूतका चालान यहा आता है। चूना, कुरथी, शहद, मोम, लकडीके सामान, चांदीके बर्तन, सींगके सामान (छड़िया) यहा बनते हैं और चालान किये जाते हैं। यहांका कजला चावल प्रसिद्ध है। यह चावल दूरदूर तक जाता है। सींगके सामान बहुत ही उम्दा और खूबसूरत बनाये जाते हैं। इनसे घडी, कलम, चाकूके बेंट, कंघे, हुक्केकी नली, खिलौने और शतरञ्जकी गोटिया बनाई जाती हैं।

चमडेका काम भी यहा बहुत होता है। किसी समय यहा स्लिपर (चट्टी) का व्यापार बहुत अधिक होता था।

चमड़ा सिझाने और साफ करनेके लिये अनेक कारखाने गये हैं, जिनमें अंग्रेजी तर्जके जूते, हैण्डबेग, सूटकेस बनते हैं।

कटकमें लकड़ीका कारबार भी बहुत होता है। क लकडी नेपाली लकड़ीका मुकाबिला नहीं कर सकती। ल के खिलौने यहा अच्छे बनते हैं। पत्थरका काम भी अधिक होता है। यहा गिट्टिया तोडी जाती हैं। इसका लेना बहुत ही लाभदायक है। चादीके बतन भी यहा बहुत सुन्दर बनते हैं। चाकू, कैंची, सरौता आदि बनानेके अच्छे-अच्छे कारखाने हैं।

कन्तारहाट—कटक जिलेमें है। जाजपुर रोड स्टेशनसे मीलपर मण्डी है। १०५ तोलेका सेर है। मङ्गल और शनिव को मण्डी लगती है। यहा धान और चावलकी खेती अ होती है। चावल और धान कूतकर बेचे जाते हैं। यह धान सूखने नहीं पाता कि बेच दिया जाता है। इससे व रहता है। सडक कच्ची है, इससे बरसातमें माल बेच बड़ी कठिनाई पडती है। जगली जानवरोंके आक्रमणका रहता है। यहाके व्यापारी नोट नहीं लेते, इससे नकद रुपये जरूरत पडती है। अनेक तरहकी असुविधाओंके रहते भी व्यापार करनेमें बहुत फायदा हो सकता है।

खडगपुर—बी० एन० आर० में है। ८० तोलेका सेर स्टेशनके पास ही मण्डी है। पुरानी मण्डी टूटती जा रही

नया बाजार—गोलबाजार बस रहा है। धान और चावलकी खेती सबसे अधिक होती है। यहासे मोटा चावल अधिक संख्यामें रामरघोपुर जाता है। व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है।

चन्द्रकोना—बी० एन० आर०में मिदनापुर जिलेमें है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे आठ मीलपर मण्डी है। पीतल और कासाके वर्तन तथा घीका व्यापार प्रधान है। यहाका गायका घी बहुत बढिया, सुगन्धदार और स्वादिष्ट होता है। यह घी मटकियोंमें भर-भरकर नावोंपर बंगाल जाता है। घीके अलावा मक्खन और दहीका भी चालान यहासे जाता है।

इसके पास ही खरार गाव है। यहा पीतल और कांसेके वर्तन बढिया बनते हैं। व्यापार बङ्गालियोंके हाथमें है।

मिदनापुर—कसाई नदीके किनारे बी० एन० आर०में बसा है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनसे दो मीलपर मण्डी है। धान और चावलकी बडी-बडी आढतें हैं। रेशम, चीनी, कपास, पान, गाढा, चटाई तथा पीतलके वर्तनोंका भी व्यापार होता है। यहाकी मोटी चटाइयां मशहूर हैं। यहा धान कूटनेकी तीन मिलें हैं। व्यापार मारवाडियों और बगालियोंके हाथमें है।

बालेश्वर—बी० एन० आर०में समुद्रके किनारे है। ८० तोलेका सेर है। मोतीगञ्जका प्रधान हाट है। निमकका कारबार अधिक होता है। किसी समय यहा निमक बनानेके बडे-

बडे कारखाने थे और लोगोंकी जीविका चलती थी, पर जबसे सरकारने इस व्यापारको हथिया लिया है ये कारखाने बन्द हो गये। चावल, पत्थरके बर्तन, सूखी मछली, मसाला और गल्ले-का चालान होता है। यहाका चावल बढिया नही होता और सूखनेपर वजनमें घटता है। इसलिये देखभालकर परता मिलाकर दाम रखना चाहिये। अप्रेलतक मन पीछे एक सेर और मईसे आधसेर सुखवुन दिया जाता है। फिर भी घटी लगनेका भय रहता है। दलालोंके मारफत खरीदनेमें घाटा है। गावोंमें स्वय जाकर माल खरीदना चाहिये। यहासे थोडी दूरपर रेयना है। दो मनका बोरा बिकता है। यहासे चावल सुविधाके साथ खरीदा जा सकता है। चावलकी दूसरी मण्डी मेतीगञ्ज है। यहा कई एक बडी-बडी आढतें हैं। व्यापार ज्यादातर मारवाडियोंके हाथमें है, पर मद्रासी भी धीरे-धीरे आने लगे हैं। गाय और भैंसका घी यहा बढिया मिलता है, पर अब नारियल अथवा मूंगफलीके तेलकी मिलाल करके खराब कर दिया जाता है। निखालिस घीका मिलना कठिन है। पत्थरके बर्तन भी बहुत बनते और चालान होते हैं। गाढा कपडा और चटाई यहा बहुत बनती हैं। पीतल और कासाके बर्तन बनानेके भी कारखाने हैं। बालेश्वरकी थालिया मशहूर हैं। व्यापार दिन दिन उन्नति करता जा रहा है। रेशम-के बारीक और मेहिया काम भी यहा होते हैं। पासके जगलों-से सालकी लकडी यहा आती है। लकडीका व्यापार भी

अच्छा होता है। सूखी मछलीका चालान कलकत्ता व
होता है। मसाला—हल्दी, धनियां, मिर्च, अजवानकी
यहा खेती होती है। व्यापार मारवाड़ियों, मुसलमानों और म
सियोंके हाथमें है।

बरहामपुर—बी० एन० आर०में पहाड़ोंके बीचमें यह ज
है। जिला गञ्जाम सूबा मद्रास है। पाट, चावल, नारियल, प
कुर्थी, लाल मिर्चा, हल्दी, मक्का, इमलीका चालान अधिक हो
है। इसके अलावा और अनेक चीजोंका व्यापार है। दू
मछली, गोश्त, तरकारी और फल यहां सस्ता मिलता
समुद्रके किनारे शहर बसा है। यहांसे चावल और कुर्थी
चालान रामकृष्टोपुर जाता है। आस-पासके गावोंमें क
बहुतायतसे चलते हैं। सूती तथा रेशमी रंगीन कपड़ा
करघोंमें तैयार होता है। इच्छापुर, गञ्जाम तथा नानपाड
निमक बनानेके कारखाने हैं। यहासे ६ मीलपर गोपालपु
की जेटी है। यहापर स्टीमर ठहरता है। पर स्टीमरसे मा
भेजनेमें सुभीता नहीं है, क्योंकि स्टीमरतक माल ले आने
बैलगाड़ीका किराया अधिक लग जाता है।

यहाका वजन विचित्र है। १२० तोलेका सेर होता है
इसे वीसा कहते हैं। मोराग १२ सेरका होता है। इस सेर
८० तोले होते हैं। ८ वीसाका एक मोराग होता है
१ पोढ़ साढे पाच तोलेका होता है। यहां भिन्न-भिन्न
वस्तुओंके लिये भिन्न-भिन्न तौल है। गुड, चीनी औ

हल्दीके लिये ऊपरका वजन काममें लाया जाता है। घी और मिर्चके समान कीमती जिन्सें ११० तोलेके सेरके हिसावसे वेची जाती हैं। सुपारीके लिये ४ मोराग, ६ वीसा और १० पोढका वजन है। पौंड भी कहीं कहीं चलता है। यहाके स्थानीय आढतिये प्रधान व्यापारी हैं।

वाकरगञ्ज—स्यालदहसे खुलना और खुलनासे स्टीमरपर वाकरगञ्ज जाना होता है। चावल और सुपारीका व्यापार प्रधान है। वल्लम चावलका चालान यहासे वरावर हुआ करता है। केवल कलकत्तेमें यह चावल २,०००,००० टन आता है। इस चावलके खरीददार वाकरगञ्ज न जाकर हूलरहाटमें खरीदते हैं।

स्टीमरसे माल भेजनेमें सुविधा है पर एक कठिनाई है। अकेले दुकेले स्टीमरोंको पाकर डाकू लूट लेते हैं। हूलरहाटके पास ही झालाकाटी, कलमकाटी, सकुरिया, भण्डारिया, काली मूर्त्ती, नालचीरा, वनारीपाडा, काऊखाटा, नालचोटी, कालीगञ्ज, दौलतखा, फिरोजपुरमें सप्ताहमें एक वार हाट लगता है। इन हाटोंमें माल खरीदनेमें सुविधा है। यहांसे माल खरीदकर हूलरहाट जाता है और वहासे चालान किया जाता है।

यहा भी भिन्न-भिन्न तरहके तौल हैं। पर मूल्य निर्धारित करनेके लिये १०० तोलेका सेर है और २५ सेरका मन।

सुपारीका चालान भी अधिक होता है। इसके अलावा तीसी, हल्दी, नारियल, चीनी, चमडा, सन्द्री लकडी, मिट्टीके वर्तन,

अच्छा होता है। सूखी मछलीका चालान कलकत्ता बहुत होता है। मसाला—हल्दी, धनिया, मिर्च, अजवानकी भी यहा खेती होती है। व्यापार मारवाडियों, मुसलमानों और मद्रासियोंके हाथमें है।

बरहामपुर—बी० एन० आर०में पहाडोंके बीचमें यह जगह है। जिला गञ्जाम सूबा मद्रास है। पाट, चावल, नारियल, पान, कुर्थी, लाल मिर्चा, हल्दी, मक्का, इमलीका चालान अधिक होता है। इसके अलावा और अनेक चीजोंका व्यापार है। दूध, मछली, गोश्त, तरकारी और फल यहा सस्ता मिलता है। समुद्रके किनारे शहर बसा है। यहासे चावल और कुर्थीका चालान रामकृष्टोपुर जाता है। आस-पासके गावोंमें करघे बहुतायतसे चलते हैं। सूती तथा रेशमी रंगीन कपडा इन करघोंमें तैयार होता है। इच्छापुर, गञ्जाम तथा नानपाडामें निमक बनानेके कारखाने हैं। यहासे ६ मीलपर गोपालपुरकी जेटी है। यहापर स्टीमर ठहरता है। पर स्टीमरसे माल भेजनेमें सुभीता हीं है, क्योंकि स्टीमरतक माल ले आनेमें बैलगाडीका किराया अधिक लग जाता है।

यहाका वजन विचित्र है। १२० तोलेका सेर होता है। इसे वीसा कहते हैं। मोराग १२ सेरका होता है। इस सेरमें ८० तोले होते हैं। ८ बीसाका एक मोरांग होता है। १ पोढ साढे पांच तोलेका होता है। यहा भिन्न-भिन्न वस्तुओंके लिये भिन्न-भिन्न तौल हैं। गुड, चीनी और

हल्दीके लिये ऊपरका वजन काममें लाया जाता है। घी और मिर्चके समान कीमती जिन्सें ११० तोलेके सेरके हिसाबसे बेची जाती हैं। सुपारीके लिये ४ मोराग, ६ चौसा और १० पोढ़का वजन है। पौंड भी कहीं कहीं चलता है। यहाके स्थानीय आढ़तिये प्रधान व्यापारी हैं।

बाकरगञ्ज—ग्वालदहसे खुलना और खुलनासे स्टीमरपर बाकरगञ्ज जाना होता है। चावल और सुपारीका व्यापार प्रधान है। बल्लम चावलका चालान यहासे बराबर हुआ करता है। केवल कलकत्तेमें यह चावल २,०००,००० टन आता है। इस चावलके खरीददार बाकरगञ्ज न जाकर हूलरहाटमें खरीदते हैं।

स्टीमरसे माल भेजनेमें सुविधा है पर एक कठिनाई है। अकेले दुकेले स्टीमरोंको पाकर डाकू लूट लेते हैं। हूलरहाटके पास ही झालाकाटी, कलमकाटी, सकुरिया, भण्डारिया, काली मूर्ती, नालचीरा, बनारीपाडा, काऊपाटा, नालचोटी, फालीगञ्ज, दौलतखा, फिरोजपुरमें सप्ताहमें एक बार हाट लगता है। इन हाटोंमें माल खरीदनेमें सुविधा है। यहांसे माल खरीदकर हूलरहाट जाता है और वहासे चालान किया जाता है।

यहा भी भिन्न-भिन्न तरहके तौल हैं। पर मूल्य निर्धारित करनेके लिये १०० तोलेका सेर है और २५ सेरका मन।

सुपारीका चालान भी अधिक होता है। इसके अलावा तीसी, हल्दी, नारियल, चीनी, चमडा, सज्जी लकडी, मिट्टीके बर्तन,

गाडोके पहिये, बांस, हड्डी, घी और मछली आदिका व्यापार होता है। कालीसुरी, कलासकाटी और लखानामें मेला लगता है। इस मेलेमें गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि विकने आती हैं। बाकरगञ्जमें सीपकी पैदावार अधिक है। अगर सीपको काममें लानेके लिये कारखाने खोले जायं तो, अधिक लाभ हो सकता है।

धपारी—फरीदपुर जिलेमें है। रेल और नावका रास्ता है। साराघाटसे ३ मीलपर धपारी पद्मा नदीके तटपर बसा है। ६० तोलेका सेर है। बरसातमें नावसे, अन्य ऋतुमें रेलगाडीसे माल जाता है। नदीके किनारेकी भूमि बडी उपजाऊ है। पहले धानकी खेती अधिक होती थी पर अब पाटकी खेती अधिक होती है। चना, मसूर, खेसारी, मूंग (मोथी), धनिया, मिर्चा, हल्दी, अञ्जीर और पाटका चालान यहांसे होता है। यहांसे पाटका चालान कलकत्ता और सिराजगञ्ज होता है।

बरसाना—मुर्शिदाबाद जिलेमें है। स्टेशनके पास ही मंडी है। मीलभरपर चुर्नी नदी बहती है। ८० और ८२½ तोलेका सेर है। धान, चावल, चना, खेसारी, मसूर, अरहर, सरसों, तीसी, पाट यहांसे बाहर जाते हैं। धानका तौल ८० तोलेका है। और सब चीजोंका ८२½ तोलेका है। सोम और शुक्रवारको हाट लगता है। आसपासके गावोंसे उन दिनों माल बिकनेके लिये आता है। व्यापारी लोग हाटके दिन आकर यहांसे माल खरीद ले जाते हैं। बरसातमें माल नावों द्वारा भेजा जाता है। व्यापार बङ्गालियोंके हाथमें है।

नारायणगञ्ज—ढाका जिलामें है। गोवालन्दोसे होकर स्टीमर द्वारा जाना होता है। किसी समयमें यह बन्दरगाह था। अब चटगांवने इसका स्थान ग्रहण कर लिया है। ढाका जिलेमें यह प्रधान मण्डी है। पाटका व्यापार सबसे अधिक होता है। पाटके अलावा धान और चावलका भी व्यापार होता है। दूर दूरके गावों और मण्डियोंसे पाट यहा आकर बिकता है। सिल्हटकी नारङ्गीका यह सबसे बड़ा हाट है। आसामसे शहद यहा बिकनेको आती हैं। भोवाल और रङ्गपुरसे लकड़ी बिकने आती है। पुर्नियासे सुरती, मैमनसिंहसे कपास, चमड़ा, मिट्टीका तेल, हाथीका दांत, काली मिर्च, मोम और बर्मा चावलका चालान आता है। आसामसे अण्डी आती है। पटनासे शाक और तरकारी आती है।

नाटोर—राजशाही जिलेमें ई० बी० रेलवेसे पार्वतीपुर होकर जाना होता है। ८० तोलेका सेर है। धान, पाट, सुरतीकी यहा अच्छी फसल होती है। पान, सरसों, गेहू, जव, गन्ना, मकाकी भी खेती होती है। यहासे तिरहुत चावल अधिक जाता है। नौगांव और पांचपुरमें गांजा बहुत पैदा होता है। सरकारी देख रेखमें गांजेकी खेती होती है।

रामपुर बोलियामें कपड़ेकी रंगाई अच्छी होती है। कलम और बुधपुरमें ताम्बे और पीतलके बर्तन बनते हैं। किसी समय राजशाहीके रेशमी कपडे मशहूर थे। इस्ट इण्डिया कम्पनीने यह व्यापार नष्ट कर डाला। यहांके जुलाहे अब टसर बुनते

हैं। हालमें कई कारखाने खुले हैं, जहा धोती और चद्दर तैयार की जाती हैं।

सालमें यहा दो बार मेला लगता है। पहला मेला रामपुर बोलियाके पास शितूरमें अक्टूबरमें लगता है और दूसरा मेला नौगावके पास मन्दिरमें अप्रेलमें लगता है। दूर दूरके लोग—नैपालकी तराईसे भी—यहा आते हैं और गाय, बैल, भैंस, बकरी, घोडा, ऊंट तथा खेतीके औजार, सूत, ऊन, और बर्तन आदि बेच जाते हैं। मोम बनानेका यहा एक कारखाना है, जो मजेमें चल रहा है।

मेखलीगज—कूचविहार जिलेमें ई० बी० आर० लाइनमें है। ८० तोलेका सेर है। पास ही तिस्ता नदी है। सुरती, पाट, धान, चावल, सरसों, घासका चालान यहासे अधिक जाता है। यहाके पाटमें नमी अधिक रहती है। यहाके व्यापारी पाटको भिगोकर वजन भारी कर देते हैं। पाटके खरीददारोंको बडी सावधानीसे काम लेना चाहिये। पाटका सारा व्यापार मारवाडियोंके हाथमें है। वहीं गाठें बधकर कलकत्ता चालान जाती हैं। हल्दीवाडी और चोरावाबमें अग्रेजोंकी आढते हैं। बर्मासे लोग यहा सुरती खरीदने आते हैं। मेखलीगञ्ज और लालबाजार सुरतीकी मण्डिया हैं। यहाकी सुरती बर्मावालोंको बहुत पसन्द है।

बोरा तैयार करनेका भी यहा बडा भारी कारखाना है। किसी समय यहा रङ्गीन शतरञ्जी और मशहरीका कपडा अच्छा

तैयार होता था। यहा निरालिस घी और सरसोंका तेल बहुतायतसे मिलता है। मोटा धान और चावल यहा बहुत पैदा होता है। यहासे यूरोप माल चालान जाता है।

बोगरा—ई० बी० आर० में है। स्टेशनसे मीलभरपर मडी है। पास ही करोतोया नदी बहती है। ८० तोलेका सेर है। करोतोया नदी बरसातमें काम लायक रहती है। चावल, धान और पाटका व्यापार मुख्य है। यहासे पाट सिराजगञ्ज भेजा जाता है। वहा गाठें बधती हैं और कलकत्ता चालान जाती हैं। यहा चावलकी सबसे बडी मण्डी है। यहासे चावल तिरहुत और आसाम जाता है। चावलके बाद हड्डी और चमडेका व्यापार है। यह व्यापार मुसलमानोंके हाथमें है। पाचबीबी और शिवगज में चीनी बनती है और कौडाहाट में बिकने जाती है। तसर और गाढा कपडा बुननेके कारखाने हैं। गल्ला, दाल आदि बाहरसे आता है।

मीरकादिम—ई० बी आर० में ग्वालन्दो होकर ज़ाना होता है। ढाका ज़िलेमें है। स्टेशनसे मीलभरपर मण्डी है, जो रेकाबीबाज़ारके नामसे विख्यात है। ८२½ तोलेका सेर है। चावल, धान और पाटकी खेती होती है। माल नावोंपर ढोया जाता है। दूर दूरसे माल यहा आता है और बिकता है। गल्ला और दाल तथा तेलहन बिकनेके लिये आता है। यहा गुडकी बिक्री भी अधिक होती है। खजूरके गुडका चालान यहां अधिक होता है। कालीगञ्ज, केशवपुर, बसण्डिया और फुल-

तल्लाके गुड यहा विकने आते हैं। ढाका जिलेमें यह सबसे वडी मण्डी है।

कोमिला—नोवाखाली जिलेमें है। रेल और स्टीमरसे जाना पडता है। यहा पाट, चावल और सोपारीका प्रधान व्यापार है। गल्ला (रवी) और दाल वाहरसे आती हैं। यहा लोग वाहरसे पाट खरीदने आते हैं और कलकत्ता भेजते हैं। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही वाजार है। आलू, सुरती, सीरा, प्याज, दाल, मसूर, मूंग और घोका चालान यहा आता है। यहाका हुका और खड़ाऊं बहुत बढिया होती हैं। यहाकी पालिसका मुकाबला नहीं किया जा सक्ता। यहाके कारीगर पालिस करनेका ढङ्ग दूसरोंको नहीं बतलाते, इसलिये यह कला नष्ट हुई जा रही है।

दिनाजपुर—पारवतीपुर जङ्कशनसे होकर जाना होता है। ८० तोलेका सेर है। स्टेशनके पास ही मण्डी है। थोडी दूरपर महानन्दा नदी है। पूर्वी बङ्गालमें माल नदी द्वारा जाता है। मोटे और महीन चावलकी यह वडी मण्डी है। यहा चावलकी खरीद वारहों मास हुआ करती है। यहासे चावल लङ्का और मारिसस जाता है। पाटका व्यापार भी यहा होता है। कितनी ही अग्रेजी कोठियोंने अपनी आढते यहा खोल दी हैं और पाट खरीदते हैं। पाटको गाठें यहीं बाधकर कलकत्ता चालान जाती हैं। पाटके अतिरिक्त चावल, सरसों, सोरा और वोराका चालान यहासे होता है। जुलाहे मोटा वोरा अच्छा

बुनते हैं। रेशमी कपड़े और अण्डीकी भी बुनाई होती है। नेकयो और अटहवाडामें गोला लगता है। चौपायों और खेतीके औजारोकी, खासी बिक्री होती है। यहा पगडी खैर बहुत मिलता है। मोमबत्ती बनानेका एक कारखाना है। मोथेकी चटाई यहा बीनी जाती है।

सेराजगज—ई० बी० आर० से गोआलन्दो और गोआलन्दोसे स्टीमर द्वारा सेराजगञ्ज पहुचना होता है। स्टेशनसे आध मीलपर मण्डी है। पाससे जमुना नदी बही है। ६० तोलेका सेर है। यहाका पाट बढ़िया होता है। सेराजगञ्जी मार्का (पाटका) ससारके सभी मार्काओंमें विख्यात है। पूर्वी बगालमें पाटकी यह सबसे बड़ी मण्डी है। मैमनसिंह, बोग्रा, रगपुर, पबनासे खुला पाट यहा आता है और गाठें बध बधकर चालान जाता है। कलकत्ताके बड़े बड़े अग्रेज व्यपारियोने यहा आढतें खोल रखी हैं। यहांसे माल रवाना करनेमें किसी तरहकी असुविधा नहीं है। फागुन और चैतके महीनेमें मटर, मसूर, खेसारी, चना, सरसों, गेहू यहा आते हैं और चालान जाते हैं। जेठसे इनका चालान घटने लगता है। आषाढसे कार्तिकतक पाटका काम जारी रहता है। यहा पाटकी गाठें बाधनेके कई एक प्रेस हैं। मल्लाहोंके जाकेट तैयार करनेके यहा कारखाने हैं।

अजमेर—घोडे और टट्टूका यहा हरसाल पुष्करमें मेला लगता है। यह स्थान अजमेरसे ७ मीलकी दूरीपर है।

अम्बाला—पञ्जाबकी भारी मण्डी है। रूई साफ करनेकी कल, आटे और शीशेके कारखाने हैं। यहा दरी अच्छी और चदिया बिनी जाती है। ऊन, रेशम, तेलहन, अद्रक, हल्दी और अनाजका बडा व्यापार होता है।

अमृतसर—सिक्खोंका प्रधान तीर्थ-क्षेत्र, पञ्जाबका व्यापारिक केन्द्र है। यहाके दुशाले और गलीचे मशहूर होते हैं। ऊनी रेशमी कपडे और जरदोजीके बडे बडे कारखाने हैं।

कसूर—लाहौर जिलामें मेथी, खरबूजा, मिट्टीके बर्तन, देशी जूती और लूंगीकी बडी भारी मण्डी है।

कालका—घास, लाठी और आलू और अद्रककी बडी भारी मण्डी है। यहाका पहाडी आलू भारतके हर प्रान्तमें जाता है।

कांगडा—चादीके वर्तन और मीनाकारीका सबसे प्रधान स्थान है।

जलन्धर—रेशमका बडा भारी कारबार होता है और लकडीका उमदा काम होता है।

लाहौर—पञ्जाबकी राजाधानी और व्यापारका केन्द्र है।

लुधियाना—पशमीना, दोशाला, सूती कपडा तथा गुलबन्दके कारखानों और व्यापारकी मशहूर जगह है।

शेखूपुरा—पञ्जाबमें है। यहाँ आलू, प्याज, सन, सुतरी गडगडाका नल वगैरहका बडा भारी व्यापार होता है।

स्यालकोट—हर तरहके व्यापारकी जगह है।

— ० —

नीचेकी तालिकामें यह दिखलाया गया है कि अगर १ शिलिंग ३ पेंसका रुपया होता हो तो पौंडकी क्या दर होगी। १० पौंडतकके भिन्न दिये गये हैं। पेंसमें $\frac{१}{३२}$ हिस्से तकका हिसाब है।

पेंस	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	४
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	८
$\frac{१}{८}$	०	०	१	६
$\frac{१}{४}$	०	०	३	२
$\frac{१}{२}$	०	०	६	४
१	०	१	०	८
२	०	२	१	६
३	०	३	२	४
४	०	४	३	२
५	०	५	४	०
६	०	६	४	८
७	०	७	५	६
८	०	८	६	४
९	०	९	७	२
१०	०	१०	८	०
११	०	११	८	८

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	१२	९	६
२	१	९	७	२
३	२	६	४	८
४	३	३	२	४
५	४	०	०	०
६	४	१२	९	६
७	५	९	७	२
८	६	६	४	८
९	७	३	२	४
१०	८	०	०	०
११	८	१२	९	६
१२	९	९	७	२
१३	१०	६	४	८
१४	११	३	२	४
१५	१२	०	०	०
१६	१२	१२	९	६
१७	१३	९	७	२
१८	१४	६	४	८
१९	१५	३	२	४

पौं०	रु०	आ	पा
१	१६		
२	३२		
३	४८		
४	६४		
५	८०		
६	९६		
७	११२		
८	१२८		
९	१४४		
१०	१६०		

इस दरसे अनेकानेक संख्याका अङ्क निकाल लिया जा सकता है। उदाहरणके लिये अगर किसीको ५१ पौंड ११ शि० ६½ पें० का रुपया आना पाई बतलाना है तो उसे तीनों टेबुलोंमेंसे अलग अलग हिसाब निकालकर जोड लेना चाहिये और रुपया आना पाई मिल जायगा।

जैसे—तीसरे टेबुलमें पौंडका मूल्य रुपयेमें दिया है उसे देखनेसे माल
होगा कि ५५ पौं० का ८८० रु० हुअ
दूसरे टेबुलमें शि० का दिया हुआ है उसे देखनेसे
विदित हुआ कि ११ शि० का ८॥)॥६ हुअ
पहले टेबुलमें पेंसका मू० दिया „ „ ६½ पें०का करीब ।६) हु

इस तरह कुल टोटल ८८६ रु० ३ आना ६ पाई होगा

अगर १ शि० ३ १/३२ पेंस १ रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा०	द०
१/३२	०	०	०	३६
१/१६	०	०	०	७६
१/८	०	०	१	५६
१/४	०	०	३	१६
१/२	०	०	६	३८
१	०	१	०	६७
२	०	२	१	५४
३	०	३	२	३२
४	०	४	३	०६
५	०	५	३	८६
६	०	६	४	६४
७	०	७	५	४१
८	०	८	६	१८
९	०	९	६	९६
१०	०	१०	७	७३
११	०	११	८	५०

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	१२	९	२८
२	१	९	६	५६
३	२	६	३	८४
४	३	३	१	१२
५	३	१५	१०	४०
६	४	१२	७	६८
७	५	९	४	९६
८	६	६	२	२४
९	७	२	११	५२
१०	७	१५	८	८०
११	८	१२	६	०८
१२	९	९	३	३६
१३	१०	६	०	६४
१४	११	२	९	९२
१५	११	१५	७	२०
१६	१२	१२	४	४८
१७	१३	९	१	७६
१८	१४	५	११	०५
१९	१५	२	८	३३

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	१५	१५	५	६१
	३१	१४	११	२२
३	४७	१४	४	८४
४	६३	१३	१०	४५
५	७९	१३	४	०६
६	९५	१२	९	६८
७	१११	१२	३	२९
८	१२७	११	८	९०
९	१४३	११	२	५१
१०	१५९	१०	८	१३

अगर १ शि० ३१/१६ पेंस १ रुपयेकी दर हो।

पेंस	रु०	आ०	पा०	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा०	द०
१/३२	०	०	०	३९	१	०	१२	८	९६	१	१५	१४	११	२५
१/१६	०	०	०	७९	२	१	९	५	९२	२	३१	१३	१०	५०
१/८	०	०	१	५९	३	२	६	२	८८	३	४७	१२	९	७५
१/४	०	०	३	१८	४	३	२	११	८५	४	६३	११	९	०१
१/२	०	०	६	३७	५	३	१५	८	८१	५	७९	१०	८	२६
१	०	१	०	६४	६	४	१२	५	७७	६	९५	९	७	५१
२	०	२	१	४९	७	५	९	२	७३	७	१११	८	६	७७
३	०	३	२	२४	८	६	५	११	७०	८	१२७	७	६	०२
४	०	४	२	९८	९	७	२	८	६६	९	१४३	६	५	२७
५	०	५	३	७३	१०	७	१५	५	६२	१०	१५९	५	४	५३
६	०	६	४	४८	११	८	१२	२	५८					
७	०	७	५	२२	१२	९	८	११	५५					
८	०	८	५	९७	१३	१०	५	८	५१					
९	०	९	६	७२	१४	११	२	५	४७					
१०	०	१०	७	४६	१५	११	१५	२	४४					
११	०	११	८	२१	१६	१२	११	११	४०					
					१७	१३	८	८	३६					
					१८	१४	५	५	३३					
					१९	१५	२	२	२९					

अगर १ शि० $३\frac{३}{३२}$ पस १ रुपयेकी दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३९	१	०	१२	८	६४	१	१५	१४	४	९१
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	७९	२	१	९	५	२९	२	३१	१२	९	८३
$\frac{१}{८}$	०	०	१	५९	३	२	६	१	९३	३	४७	११	२	७५
$\frac{१}{४}$	०	०	३	१८	४	३	२	१०	५८	४	६३	९	७	६७
$\frac{१}{२}$	०	०	६	३६	५	३	१५	७	२३	५	७९	८	०	५९
१	०	१	०	७२	६	४	१२	३	८७	६	९५	६	५	५१
२	०	२	१	४४	७	५	९	०	५२	७	१११	४	१०	४३
३	०	३	२	१६	८	६	५	९	१६	८	१२७	३	३	३५
४	०	४	२	८८	९	७	२	५	८१	९	१४३	१	८	२७
५	०	५	३	६०	१०	७	१५	२	४६	१०	१५९	०	१	१९
६	०	६	४	३२	११	८	११	११	१०					
७	०	७	५	०४	१२	९	८	७	७५					
८	०	८	५	७६	१३	१०	५	४	३९					
९	०	९	६	४८	१४	११	२	१	०४					
१०	०	१०	७	२०	१५	११	१४	९	६८					
११	०	११	७	९२	१६	१२	११	६	३३					
					१७	१३	८	२	९८					
					१८	१४	४	११	६२					
					१९	१५	१	८	२७					

अगर १ शि० ३⅛ पेंस १ रुपयेकी दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	दं०	शि०	रु०	आ०	पा	दं०	पौ०	रु०	आ०	पा	दं०
१/३२	०	०	०	३९	१	०	१२	८	३३	१	१५	१३	१०	६१
१/१६	०	०	०	७९	२	१	९	४	६६	२	३१	११	९	२२
१/८	०	०	१	५८	३	२	६	०	९९	३	४७	९	७	८३
१/४	०	०	३	१७	४	३	२	९	३२	४	६३	७	६	४४
१/२	०	०	६	३४	५	३	१५	५	६५	५	७९	५	५	०५
१	०	१	०	६९	६	४	१२	१	९८	६	९५	३	३	६६
२	०	२	१	३८	७	५	८	१०	३१	७	१११	१	२	२८
३	०	३	२	०८	८	६	५	६	६४	८	१२६	१५	०	८९
४	०	४	२	७७	९	७	२	२	९७	९	१४२	१२	११	५०
५	०	५	३	४७	१०	७	१४	११	३०	१०	१५८	१०	१०	११
६	०	६	४	१६	११	८	११	७	६३					
७	०	७	४	८६	१२	९	८	३	९६					
८	०	८	५	५५	१३	१०	५	०	२९					
९	०	९	६	२४	१४	११	१	८	६२					
१०	०	१०	६	९४	१५	११	१४	४	९५					
११	०	११	७	६३	१६	१२	११	१	२८					
					१७	१३	७	९	६१					
					१८	१४	४	५	९५					
					१९	१५	१	२	२८					

अगर १ शि० ३$\frac{५}{३२}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	दं०	शि०	रु०	आ०	पा	दं०	पौं०	रु०	आ०	पा	दं०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३९	१	०	१२	८	०१	१	१५	१३	४	३३
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	७९	२	१	९	४	०३	२	३१	१०	८	६६
$\frac{१}{८}$	०	०	१	५८	३	२	६	०	०४	३	४७	८	०	९९
$\frac{१}{४}$	०	०	३	१६	४	३	२	८	०६	४	६३	५	५	३२
$\frac{१}{२}$	०	०	६	३३	५	३	१५	४	०८	५	७९	२	९	६४
१	०	१	०	६६	६	४	१२	०	०९	६	९५	०	१	९७
२	०	२	१	३३	७	५	८	८	११	७	११०	१३	६	३०
३	०	३	२	००	८	६	५	४	१३	८	१२६	१०	१०	६३
४	०	४	२	६७	९	७	२	०	१४	९	१४२	८	२	९६
५	०	५	३	३४	१०	७	१४	८	१६		१५८	५	७	२९
६	०	६	४	००	११	८	११	४	१८					
७	०	७	४	६७	१२	९	८	०	१९					
८	०	८	५	३४	१३	१०	४	८	२१					
९	०	९	६	०१	१४	११	१	४	२३					
१०	०	१०	६	६८	१५	११	१४	०	२४					
११	०	११	७	३४	१६	१२	१०	८	२६					
					१७	१३	७	४	२७					
					१८	१४	४	०	२९					
					१९	१५	०	८	३१					

अगर १ शि० ३१⁵⁄₁₆ पेंस एक रुपयेकी दर हो।

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१⁄३२	०	०	०	३९	१	०	१२	७	९०	१	१५	१२	१०	०७
१⁄१६	०	०	०	७९	२	१	९	३	८०	२	३१	९	८	१४
१⁄८	०	०	१	५८	३	२	५	११	११	३	४७	६	६	२२
१⁄४	०	०	३	१६	४	३	२	६	८१	४	६३	३	४	२९
१⁄२	०	०	६	३२	५	३	१५	२	७१	५	७९	०	२	३७
१	०	१	०	४	६	४	११	१०	७२	६	९४	१३	०	४४
२	०	२	१	२८	७	५	८	५	६२	७	११०	९	१०	५१
३	०	३	१	९२	८	६	५	१	६३	८	१२६	६	८	५९
४	०	४	२	५६	९	७	२	९	३३	९	१४२	३	६	६६
५	०	५	३	२१	१०	७	१४	५	०३	१०	१५८	०	४	७४
६	०	६	३	८५	११	८	११	०	७४					
७	०	७	४	४९	१२	९	७	८	४४					
८	०	८	५	१३	१३	१०	४	४	१४					
९	०	९	५	७७	१४	११	०	११	८५					
१०	०	१०	६	४२	१५	११	१३	७	५५					
११	०	११	७	०६	१६	१२	१०	३	२५					
					१७	१३	६	१०	९६					
					१८	१४	३	६	६६					
					१९	१५	०	२	३७					

अगर १ शि० ३$\frac{?}{??}$ एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३६	१	०	१२	७	३६	१	१५	१२	३	८४
१/१६	०	०	०	७८	२	१	९	२	७८	२	३१	८	७	६८
१/८	०	०	१	५७	३	२	५	१०	१७	३	४७	४	११	५३
१/४	०	०	३	१५	४	३	२	५	५६	४	६३	१	३	३७
१/२	०	०	६	३०	५	३	१५	०	९६	५	७८	१३	७	२२
१	०	१	०	६१	६	४	११	८	३५	६	९४	९	११	०६
२	०	२	१	२३	७	५	८	३	७४	७	११०	६	२	९०
३	०	३	१	८४	८	६	४	११	१३	८	१२६	२	६	७५
४	०	४	२	४५	९	७	१	६	५३	९	१४१	१४	१०	५९
५	०	५	३	०८	१०	७	१४	१	९२	१०	१५७	११	२	४३
६	०	६	३	६९	११	८	१०	९	३१					
७	०	७	४	३१	१२	९	७	४	७०					
८	०	८	४	९२	१३	१०	४	०	०९					
९	०	९	५	५४	१४	११	०	७	४९					
१०	०	१०	६	१६	१५	११	१३	२	८८					
११	०	११	६	७७	१६	१२	९	१०	२७					
					१७	१३	६	५	६६					
					१८	१४	३	१	०५					
					१९	१४	१५	८	४५					

अगर १ शि० ३¼ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३९	१	०	१२	७	०८	१	१५	११	९	६३
१/१६	०	०	०	७८	२	१	९	२	१६	२	३१	७	७	२७
१/८	०	०	१	५७	३	२	५	९	२४	३	४७	३	४	९१
१/४	०	०	३	१४	४	३	२	४	३२	४	६२	१५	२	५५
१/२	०	०	६	२९	५	३	१४	११	४१	५	७८	११	०	१९
१	०	१	०	५९	६	४	११	६	४९	६	९४	६	९	८३
२	०	२	१	१८	७	५	८	१	५७	७	११०	२	७	४७
३	०	३	१	७७	८	६	४	८	६५	८	१२५	१४	५	११
४	०	४	२	३६	९	७	१	३	७३	९	१४१	१०	२	७५
५	०	५	२	९५	१०	७	१३	१०	८२	१०	१५७	६	०	३९
६	०	६	३	५४	११	८	१०	५	९०					
७	०	७	४	१३	१२	९	७	०	९८					
८	०	८	४	७२	१३	१०	३	८	०६					
९	०	९	५	३१	१४	११	०	३	१४					
१०	०	१०	५	९०	१५	११	१२	१०	२२					
११	०	११	६	४९	१६	१२	९	५	३०					
					१७	१३	६	०	३९					
					१८	१४	२	७	४७					
					१९	१४	१५	२	५५					

अगर १ शि० ३$\frac{१}{३२}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३६	१	०	१२	६	७६	१	१५	११	३	४६
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	७८	२	१	६	१	५४	२	३१	६	६	६७
$\frac{१}{८}$	०	०	१	५७	३	२	५	८	३१	३	४७	१	१०	३८
$\frac{१}{४}$	०	०	३	१४	४	३	२	३	०६	४	६२	१३	१	८४
$\frac{१}{२}$	०	०	६	२८	५	३	१४	६	८६	५	७८	८	५	३०
१	०	१	०	५६	६	४	११	४	६३	६	६४	३	८	७६
२	०	२	१	१२	७	५	७	११	४१	७	१०६	१५	०	२२
३	०	३	१	६६	८	६	४	६	१८	८	१२५	१०	३	६८
४	०	४	२	२५	६	७	१	०	६५	६	१४१	५	७	१४
५	०	५	२	८२	१०	७	१३	७	७३	१०	१५७	०	१०	६०
६	०	६	३	३८	११	८	१०	२	५०					
७	०	७	३	६५	१२	६	६	६	२७					
८	०	८	४	५१	१३	१०	३	४	०४					
६	०	६	५	०८	१४	१०	१५	१०	८२					
१०	०	१०	५	६४	१५	११	१२	५	५६					
११	०	११	६	२०	१६	१२	६	०	३६					
					१७	१३	५	७	१४					
					१८	१४	२	१	६१					
					१६	१४	१४	८	६८					

अगर १ शि० ३ ५/१६ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३९	१	०	१२	६	४६	१	१५	१०	९	३०
१/१६	०	०	०	७८	२	१	९	०	९३	२	३१	५	६	६१
१/८	०	०	१	५६	३	२	५	७	३९	३	४७	०	३	९१
१/४	०	०	३	१३	४	३	२	१	८६	४	६२	११	१	२२
१/२	०	०	६	२६	५	३	१४	८	३२	५	७८	५	१०	५२
१	०	१	०	५३	६	४	११	२	७९	६	९४	०	७	८३
२	०	२	१	०७	७	५	७	९	२५	७	१०९	११	५	१४
३	०	३	१	६१	८	६	४	३	७२	८	१२५	६	२	४४
४	०	४	२	१५	९	७	०	१०	१८	९	१४१	०	११	७५
५	०	५	२	६९	१०	७	१३	४	६५	१०	१५६	११	९	०६
६	०	६	३	२३	११	८	९	११	११					
७	०	७	३	७७	१२	९	६	५	५८					
८	०	८	४	३१	१३	१०	३	०	०४					
९	०	९	४	८४	१४	१०	१५	६	५१					
१०	०	१०	५	३८	१५	११	१२	०	९७					
११	०	११	५	९२	१६	१२	८	७	४४					
					१७	१३	५	१	९१					
					१८	१४	१	८	३७					
					१९	१४	१४	२	८४					

अगर १ शि० ३१/३२ पेंस एक रुपयेकी दर हो।

पेंस	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३९
१/१६	०	०	०	७८
१/८	०	०	१	५६
१/४	०	०	३	१२
१/२	०	०	६	२५
१	०	१	०	५१
२	०	२	१	०२
३	०	३	१	५४
४	०	४	२	०५
५	०	५	२	५६
६	०	६	३	०७
७	०	७	३	५९
८	०	८	४	१०
९	०	९	४	६१
१०	०	१०	५	१३
११	०	११	५	६४

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	१२	६	१५
२	१	९	०	३१
३	२	५	६	४७
४	३	२	०	६३
५	३	१४	६	७९
६	४	११	०	९५
७	५	७	७	११
८	६	४	१	२७
९	७	०	७	४३
१०	७	१३	१	५८
११	८	९	७	७४
१२	९	६	१	९०
१३	१०	२	८	०६
१४	१०	१५	२	२२
१५	११	११	८	३८
१६	१२	८	२	५४
१७	१३	४	८	७०
१८	१४	१	२	८५
१९	१४	१३	९	०१

पौं०	रु०	आ०	पा०	द०
१	१५	१०	३	१[illegible]
२	३१	४	६	३[illegible]
३	४६	१४	९	५[illegible]
४	६२	९	०	७[illegible]
५	७८	३	३	८[illegible]
६	९३	१३	७	०[illegible]
७	१०९	७	१०	२[illegible]
८	१२५	२	१	४[illegible]
९	१४०	१२	४	५[illegible]
१०	१५६	६	७	७[illegible]

अगर १ शि० ३ ३/८ पेंस एक रुपयेको दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३९	१	०	१२	५	८५	१	१५	९	९	०७
१/१६	०	०	०	७८	२	१	८	११	७०	२	३१	३	६	१४
१/८	०	०	१	५६	३	२	५	५	५६	३	४६	१३	३	२२
१/४	०	०	३	१२	४	३	१	११	४१	४	६२	७	०	२९
१/२	०	०	६	२४	५	३	१४	५	२६	५	७८	०	९	३६
१	०	१	०	४८	६	४	१०	११	१२	६	९३	१०	६	४३
२	०	२	०	९७	७	५	७	४	९७	७	१०९	४	३	५१
३	०	३	१	४५	८	६	३	१०	८२	८	१२४	१४	०	५८
४	०	४	१	९५	९	७	०	४	६८	९	१४०	७	९	६५
५	०	५	२	४३	१०	७	१२	१०	५३	१०	१५६	१	६	७३
६	०	६	२	९२	११	८	९	४	३९					
७	०	७	३	४१	१२	९	५	१०	२४					
८	०	८	३	९०	१३	१०	२	४	०९					
९	०	९	४	३९	१४	१०	१४	९	९५					
१०	०	१०	४	८७	१५	११	११	३	८०					
११	०	११	५	३६	१६	१२	७	९	६५					
					१७	१३	४	३	५१					
					१८	१४	०	९	३६					
					१९	१४	१३	३	२१					

अगर १ शि० ३$\frac{१}{४}\frac{३}{२}$ पेन्स एक रुपयेकी दर हो

स	रु०	आ०	प.	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३८	१	०	१२	५	५५	१	१५	६	२	६६
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	७७	२	१	८	११	०६	२	३१	०	५	६८
$\frac{१}{८}$	०	०	१	५५	३	२	५	४	६४	३	४६	११	८	६८
$\frac{१}{४}$	०	०	३	११	४	३	१	१०	२१	४	६०	४	११	६७
$\frac{१}{२}$	०	०	६	२३	५	३	१४	३	७४	५	७७	१४	२	६७
१	०	१	०	४६	६	४	१०	६	२६	६	६३	७	५	६६
२	०	२	०	६२	७	५	७	२	८४	७	१०६	०	८	६५
३	०	३	१	३८	८	६	३	८	३६	८	१२४	६	११	६५
४	०	४	१	८५	९	७	०	१	६४	९	१४०	३	२	६४
५	०	५	२	३१	१०	७	१२	७	४६	१०	१५५	१२	५	६३
६	०	६	२	७७	११	८	९	१	०४					
७	०	७	३	२३	१२	९	५	६	५६					
८	०	८	३	७०	१३	१०	२	०	१४					
९	०	९	४	१६	१४	१०	१४	५	६					
१०	०	१०	४	६२	१५	११	१०	११	२४					
११	०	११	५	०८	१६	१२	७	४	७६					
					१७	१३	३	१०	३४					
					१८	१४	०	३	८६					
					१९	१४	१२	९	४४					

अगर १ शि० ३ ३/८ प स एक रुपयेकी दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौ०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३८	१	०	१२	५	२४	१	१५	८	८	६६
१/१६	०	०	०	७७	२	१	८	१०	४६	२	३१	१	५	८७
१/८	०	०	१	५५	३	२	५	३	७४	३	४६	१०	२	८१
१/४	०	०	३	१०	४	३	१	८	९८	४	६२	२	११	७५
१/२	०	०	६	२१	५	३	१४	२	२३	५	७७	११	८	६६
१	०	१	०	४३	६	४	१०	७	४८	६	९३	४	५	६३
२	०	२	०	८७	७	५	७	०	७२	७	१०८	१३	२	५७
३	०	३	१	३१	८	६	३	५	९७	८	१२४	५	११	५१
४	०	४	१	७४	९	६	१५	११	२२	९	१३९	१४	८	४५
५	०	५	२	१८	१०	७	१२	४	४७	१०	१५५	७	५	३९
६	०	६	२	२६	११	८	८	९	७१					
७	०	७	३	०६	१२	९	५	२	९६					
८	०	८	३	४९	१३	१०	१	८	२१					
९	०	९	३	९३	१४	१०	१४	१	४६					
१०	०	१०	४	३७	१५	११	१०	६	७०					
११	०	११	४	८१	१६	१२	६	११	९५					
					१७	१३	३	५	१९					
					१८	१३	१५	१०	४४					
					१९	१४	१२	३	६९					

अगर १ शि० ३१/२५ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा०	द०
१/३२	०	०	०	३८
१/१६	०	०	०	७७
१/८	०	०	१	५५
१/४	०	०	३	१०
१/२	०	०	६	२०
१	०	१	०	४१
२	०	२	०	८२
३	०	३	१	२३
४	०	४	१	६४
५	०	५	२	०६
६	०	६	२	४७
७	०	७	२	८८
८	०	८	३	२९
९	०	९	३	७०
१०	०	१०	४	१२
११	०	११	४	५३

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	१२	४	९४
[illegible]	१	८	९	८९
३	२	५	२	८३
४	३	१	७	७८
५	३	१४	०	७२
६	४	१०	५	६७
७	५	६	१०	६१
८	६	[illegible]	३	५६
९	६	१५	८	५०
१०	७	१२	१	४५
११	८	८	६	३९
१२	९	४	११	३४
१३	१०	१	४	२९
१४	१०	१३	९	२३
१५	११	१०	२	१७
१६	१२	६	७	१२
१७	१३	३	०	०७
१८	१३	१५	५	०१
१९	१४	११	९	९६

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	१५	८	२	९०
२	३१	०	५	८१
३	४६	८	८	७२
४	६२	०	११	६३
५	७७	९	२	५४
६	९३	१	५	४५
७	१०८	९	८	३६
८	१२४	१	११	२७
९	१३९	१०	२	१८
१०	१५५	२	५	०९

अगर १ शि० ३½ पेंस एक रुपयेकी दर हो।

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा०	द०
१/३२	०	०	०	३८	१	०	१२	४	६४	१	१५	७	८	९०
१/१६	०	०	०	७७	२	१	८	९	२९	२	३०	१५	५	८०
१/८	०	०	१	५४	३	२	५	१	९३	३	४६	७	२	७१
१/४	०	०	३	०९	४	३	१	६	५८	४	६१	१४	११	६१
१/२	०	०	६	१९	५	३	१३	११	२२	५	७७	६	८	५१
१	०	१	०	३८	६	४	१०	३	८७	६	९२	१४	५	४१
२	०	२	०	७७	७	५	६	८	५१	७	१०८	६	२	३२
३	०	३	१	१६	८	६	३	१	१६	८	१२३	१३	११	२२
४	०	४	१	५४	९	६	१५	५	८०	९	१३९	५	८	१२
५	०	५	१	९३	१०	७	११	१०	४५	१०	१५४	१३	५	०३
६	०	६	२	३२	११	८	८	३	०९					
७	०	७	२	७१	१२	९	४	७	७४					
८	०	८	३	०९	१३	१०	१	०	३९					
९	०	९	३	४८	१४	१०	१३	५	०३					
१०	०	१०	३	८७	१५	११	९	९	६७					
११	०	११	४	२५	१६	१२	६	२	३२					
					१७	१३	२	६	९६					
					१८	१३	१४	११	६१					
					१९	१४	११	४	-५					

तीन पेंस और ४ पेंसके भीतरसे शेष भग्नांशोंका मूल्य निकालनेके लिये साधारण जोड बाकीसे काम ले लेना चाहिये। जैसे अगर किसीको १ शि० ३ ३/१६ पेन्सके हिसाबसे रुपया, आना, पाई बनाना हो तो पहले इसके टुकडे कर दे जैसे १।३ ३/१६=१।३½+३/१६ अर्थात् १।३½ पेंसके हिसाबमेंसे ३/१६ पेंसके हिसाबसे जो कुछ आता हो उसे घटानेसे १।३ ३/१६ का मूल्य निकल आवेगा। ३/१६ पेन्सका दाम निकालनेके लिए १।३ ३/१६ पेन्समेंसे १।३ पेंसका मूल्य घटाना होगा। यह संख्या (—) होगी, इसीलिये १।३½ पेंसके हिसाबमेंसे ३/१६ पेंसके हिसाबसे जो कुछ आता है उसे जोडनेके बजाय घटानेसे ही १।३ ३/१६ पेंसका मूल्य

अगर १ शि० ४ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३७	१	०	१२			१	१५			
१/१६	०	०	०	७५	२	१	८			२	३०			
१/८	०	०	१	५०	३	२	४			३	४५			
१/४	०	०	३	०	४	३	०			४	६०			
१/२	०	०	६	०	५	३	१२			५	७५			
१	०	१	०	०	६	४	८			६	९०			
२	०	२	०	०	७	५	४			७	१०५			
३	०	३	०	०	८	६	०			८	१२०			
४	०	४	०	०	९	६	१२			९	१३५			
५	०	५	०	०	१०	७	८			१०	१५०			
६	०	६	०	०	११	८	४							
७	०	७	०	०	१२	९	०							
८	०	८	०	०	१३	९	१२							
९	०	९	०	०	१४	१०	८							
१०	०	१०	०	०	१५	११	४							
११	०	११	०	०	१६	१२	०							
					१७	१२	१२							
					१८	१३	८							
					१९	१४	४							

अगर १ शि० ४ १/१६ पेन्स एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३७	१	०	११	११	७१	१	१४	१५	६	३८
१/१६	०	०	०	७४	२	१	७	११	४३	२	२६	१५	०	७७
१/८	०	०	१	४६	३	२	३	११	१५	३	४४	१४	७	१५
१/४	०	०	२	६६	४	२	१५	१०	८७	४	५६	१४	१	५४
१/२	०	०	५	६८	५	३	११	१०	५६	५	७४	१३	७	६३
१	०	०	११	६७	६	४	७	१०	३१	६	८६	१३	२	३१
२	०	१	११	६५	७	५	३	१०	०३	७	१०४	१२	८	७०
३	०	२	११	६३	८	५	१५	६	७५	८	११६	१२	३	०८
४	०	३	११	६०	६	६	११	६	४७	६	१३४	११	६	४७
५	०	४	११	८८	१०	७	७	६	१६	१०	१४६	११	३	८६
६	०	५	११	८६	११	८	३	८	६१					
७	०	६	११	८३	१२	८	१५	८	६३					
८	०	७	११	८१	१३	६	११	८	३५					
६	०	८	११	७८	१४	१०	७	८	०६					
१०	०	६	११	७६	१५	११	३	७	७८					
११	०	१०	११	७४	१६	११	१५	७	५०					
					१७	१२	११	६	२२					
					१८	१३	७	६	६४					
					१६	१४	३	६	६६					

अगर १ शि० ४ १/१६ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा.	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३७	१	०	११	११	४४	१	१४	१५	०	७६
१/१६	०	०	०	७४	२	१	७	१०	८९	-	२६	१४	१	५८
१/८	०	०	१	४६	३	२	३	१०	३१	३	४४	१३	२	३८
१/४	०	०	२	६८	४	२	१५	६	७५	४	५६	१२	३	१७
१/२	०	०	५	६७	५	३	११	६	१६	५	७४	११	३	६६
१	०	०	११	६५	६	४	७	८	६३	६	८६	१०	४	७६
२	०	१	११	६०	७	५	३	८	०७	७	१०४	[illegible]	५	५५
३	०	२	११	८६	८	५	१५	७	५१	८	११६	८	६	३५
४	०	३	११	८१	९	६	११	[illegible]	९५	९	१३४	७	७	१४
५	०	४	११	७६	१०	७	७	६	३९	१०	१४९	६	७	९३
६	०	५	११	७२	११	८	३	५	८३					
७	०	६	११	६७	१२	८	१५	५	२७					
८	०	७	११	६२	१३	९	११	४	७१					
९	०	८	११	५८	१४	१०	७	४	१५					
१०	०	९	११	५३	१५	११	३	३	५९					
११	०	१०	११	४८	१६	११	१५	३	०३					
					१७	१२	११	२	४७					
					१८	१३	७	१	९१					
					१९	१४	३	१	३५					

अगर १ शि० ४$\frac{३}{३२}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३७	१	०	११	११	१६	१	१४	१४	७	२२
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	७४	२	१	७	१०	३२	२	२६	१३	२	४४
$\frac{१}{८}$	०	०	१	४९	३	२	३	९	४८	३	४४	११	९	६७
$\frac{१}{४}$	०	०	२	९८	४	२	१५	८	६४	४	५९	१०	४	८९
$\frac{१}{२}$	०	०	५	९६	५	३	११	७	८०	५	७४	९	०	११
१	०	०	११	९३	६	४	७	६	९६	६	८९	७	७	३४
२	०	१	११	८५	७	५	३	६	१२	७	१०४	६	२	५६
३	०	२	११	७९	८	५	१५	५	२९	८	११९	४	९	७८
४	०	३	११	७२	९	६	११	४	४५	९	१३४	३	५	०१
५	०	४	११	६५	१०	७	७	३	६१	१०	१४९	२	०	२३
६	०	५	११	५८	११	८	३	२	७७					
७	०	६	११	५१	१२	८	१५	१	९३					
८	०	७	११	४४	१३	९	११	१	०९					
९	०	८	११	३७	१४	१०	७	०	२५					
१०	०	९	११	३०	१५	११	२	११	४१					
११	०	१०	११	२३	१६	११	१४	१०	५७					
					१७	१२	१०	९	७३					
					१८	१३	६	८	९०					
					१९	१४	२	८	०६					

अगर १ शि० ४½ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा०	द०	शि०	रु०	आ०	पा०	द०	पौं०	रु०	आ०	पा०	द०
१/३२	०	०	०	३६	१	०	११	१०	८८	१	१४	१४	१	६७
१/१६	०	०	०	७४	२	१	७	६	७६	२	२६	१२	३	३४
१/८	०	०	१	४८	३	२	३	८	६५	३	४४	१०	५	०२
१/४	०	०	२	६७	४	२	१५	७	५३	४	५६	८	६	६६
१/२	०	०	५	६५	५	३	११	६	४१	५	७४	६	८	३७
१	०	०	११	६०	६	४	७	५	३०	६	८६	४	१०	०४
२	०	१	११	८१	७	५	३	४	१८	७	१०४	२	११	७२
३	०	२	११	७२	८	५	१५	३	०७	८	११६	१	१	३६
४	०	३	११	६२	६	६	११	१	६५	६	१३३	१५	३	०७
५	०	४	११	५३	१०	७	७	०	८३	१०	१५८	१३	४	७४
६	०	५	११	४४	११	८	२	११	७२					
७	०	६	११	३४	१२	८	१४	१०	६०					
८	०	७	११	२५	१३	६	१०	६	४८					
६	०	८	११	१६	१४	१०	६	८	३७					
१०	०	६	११	०७	१५	११	२	७	२५					
११	०	१०	१०	६७	१६	११	१४	६	१३					
					१७	१२	१०	५	०२					
					१८	१३	६	३	६०					
					१६	१४	२	२	७६					

विस्तार-भयसे हमने केवल १/३२, १/१६, ३/३२ और ½ के हिसाबसे व्यौरा दे दिया है। अब जिस भग्नाशका व्यौरा निकालना हो, पहले की तरह घटा-बढाकर निकाल सकते हैं।

जैसे १ शिलिंग ४५/३२ पेन्सका हिसाब निकालनेके लिये १ शिलिंग ४ पेन्सकी तालिकासे १ शिलिंग ४३/३२ पेन्सका व्यौरा घटाकर जो शेष बचे उसे १ शि० ४३/३२ के व्यौरेसे घटा [illegible] ४५/३२ पेन्सका व्यौरा निकल आवेगा। [illegible] व्यौरा निकाल लिया जा सकता है।

अगर १ शि० ५ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३५
१/१६	०	०	०	७०
१/८	०	०	१	४१
१/४	०	०	२	८२
१/२	०	०	५	६४
१	०	०	११	२९
२	०	१	१०	५८
३	०	२	९	८८
४	०	३	९	१७
५	०	४	८	४७
६	०	५	७	७६
७	०	६	७	०५
८	०	७	६	३५
९	०	८	५	६४
१०	०	९	४	९४
११	०	१०	४	२३

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	११	३	५२
२	१	६	७	०५
३	२	१	१०	५८
४	२	१३	२	११
५	३	८	५	६४
६	४	३	९	१७
७	४	१५	०	७०
८	५	१०	४	२३
९	६	५	७	७६
१०	७	०	११	२९
११	७	१२	२	८२
१२	८	७	६	३५
१३	९	२	९	८८
१४	९	१४	१	४१
१५	१०	९	४	९४
१६	११	४	८	४७
१७	१२	०	०	००
१८	१२	११	३	५२
१९	१३	६	७	०५

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	१४	१	१०	५८
२	२८	३	९	१७
३	४२	५	७	७६
४	५६	७	६	३५
५	७०	९	४	९४
६	८४	११	३	५२
७	९८	१३	२	११
८	११२	१५	०	७०
९	१२७	०	११	२९
१०	१४१	२	९	८८

अगर १ शि० ५ १/३२ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३५
१/१६	०	०	०	७०
१/८	०	०	१	४०
१/४	०	०	२	८१
१/२	०	०	५	६३
१	०	०	११	२७
२	०	१	१०	५४
३	०	२	९	८२
४	०	३	९	०९
५	०	४	८	३६
६	०	५	७	६४
७	०	६	६	९१
८	०	७	६	१८
९	०	८	५	४६
१०	०	९	४	७३
११	०	१०	४	००

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	११	३	२८
२	१	६	६	५६
३	[illegible]	२	९	८४
४	२	१३	१	१२
५	३	[illegible]	४	४०
६	४	३	७	६८
७	४	१४	१०	९६
८	५	१०	२	२४
९	६	[illegible]	५	५२
१०	७	०	८	८०
११	७	१२	०	०८
१२	८	७	३	३६
१३	९	२	६	६४
१४	९	१३	९	९२
१५	१०	९	१	२१
१६	११	४	४	४९
१७	११	१५	७	७७
१८	१२	१०	११	०५
१९	१३	६	२	३३

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	१४	१	५	६१
२	२८	७	११	२२
३	४२	४	४	८४
४	५६	५	१०	४५
५	७०	७	४	०७
६	८४	८	९	६८
७	९८	१०	३	३०
८	११२	११	८	९१
९	१२६	१३	२	५३
१०	१४०	१४	८	१४

अगर १ शि० ५ १/१६ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३५	१	०	११	३	०३	१	१४	१	०	६५
१/१६	०	०	०	७०	२	१	६	६	०६	२	२८	२	१	३१
१/८	०	०	१	४०	३	२	१	९	०९	३	४२	३	१	९७
१/४	०	०	२	८१	४	२	१३	०	१३	४	५६	४	२	६३
१/२	०	०	५	६२	५	३	८	३	१६	५	७०	५	३	२९
१	०	०	११	२५	६	४	३	६	१९	६	८४	६	३	९५
२	०	१	१०	५०	७	४	१४	९	२३	७	९८	७	४	६१
३	०	२	९	७५	८	५	१०	०	२६	८	११२	८	५	२७
४	०	३	९	०१	९	६	५	३	२९	९	१२६	९	५	९३
५	०	४	८	२६	१०	७	०	६	३२	१०	१४०	१०	६	५९
६	०	५	७	५१	११	७	११	९	३६					
७	०	६	६	७६	१२	८	७	०	३९					
८	०	७	६	०२	१३	९	२	३	४२					
९	०	८	५	२७	१४	९	१३	६	४६					
१०	०	९	४	५२	१५	१०	८	९	४९					
११	०	१०	३	७८	१६	११	४	०	५२					
					१७	११	१५	३	५५					
					१८	१२	१०	६	५८					
					१९	१३	५	९	६२					

अगर १ शि० ५ ३/३२ एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३५	१	०	११	२	७८	१	१४	०	७	७२
१/१६	०	०	०	७०	२	१	६	५	५७	२	२८	१	३	४४
१/८	०	०	१	४०	३	२	१	८	३५	३	४२	१	११	१६
१/४	०	०	२	८०	४	२	१२	११	१४	४	५६	२	६	८८
१/२	०	०	५	६१	५	३	८	१	९३	५	७०	३	२	६१
१	०	०	११	२३	६	४	३	४	७१	६	८४	३	१०	३३
२	०	१	१०	४६	७	४	१४	७	५०	७	९८	४	६	०५
३	०	२	९	६९	८	५	९	१०	२८	८	११२	५	१	७७
४	०	३	८	९२	९	६	५	१	०७	९	१२६	५	९	४९
५	०	४	८	१५	१०	७	०	३	८६	१०	१४०	६	५	२२
६	०	५	७	३९	११	७	११	६	६४					
७	०	६	६	६२	१२	८	६	९	४३					
८	०	७	५	८५	१३	९	२	०	२१					
९	०	८	५	०९	१४	९	१३	३	००					
१०	०	९	४	३२	१५	१०	८	५	७९					
११	०	१०	३	५५	१६	११	३	८	५७					
					१७	११	१४	११	३६					
					१८	१२	१०	२	१४					
					१९	१३	५	४	९३					

अगर १ शि० ५ १/८ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३५	१	०	११	२	५४	१	१४	०	२	८०
१/१६	०	०	०	७०	२	१	६	५	०८	२	२८	०	५	६०
१/८	०	०	१	४०	३	२	१	७	६२	३	४२	०	८	४०
१/४	०	०	२	८०	४	२	१२	१०	१६	४	५६	०	११	२१
१/२	०	०	५	६०	५	३	८	०	७०	५	७०	१	२	०१
१	०	०	११	२१	६	४	३	३	२४	६	८४	१	४	८१
२	०	१	१०	४२	७	४	१४	५	७८	७	९८	१	७	६२
३	०	२	९	६३	८	५	९	८	३२	८	११२	१	१०	४२
४	०	३	८	८४	९	६	४	१०	८६	९	१२६	२	१	२२
५	०	४	८	०५	१०	७	०	१	४०	१०	१४०	२	४	०२
६	०	५	७	२७	११	७	११	३	९४					
७	०	६	६	४८	१२	८	६	६	४८					
८	०	७	५	६९	१३	९	१	९	०२					
९	०	८	४	९०	१४	९	१२	११	५६					
१०	०	९	४	११	१५	१०	८	२	१०					
११	०	१०	३	३२	१६	११	३	४	६४					
					१७	११	१४	७	१८					
					१८	१२	९	९	७२					
					१९	१३	५	०	२६					

अगर १शि० ६ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३३	१	०	१०	८		१	१३	५	४	
१/१६	०	०	०	६६	२	१	५	४		२	२६	१०	८	
१/८	०	०	१	३३	३	२	०	०		३	४०	०	०	
१/४	०	०	२	६६	४	२	१०	८		४	५३	५	४	
१/२	०	०	५	३३	५	३	५	४		५	६६	१०	८	
१	०	०	१०	६६	६	४	०	०		६	८०	०	०	
२	०	१	९	३३	७	४	१०	८		७	९३	५	४	
३	०	२	८	००	८	५	५	४		८	१०६	१०	८	
४	०	३	६	६६	९	६	०	०		९	१२०	०	०	
५	०	४	५	३३	१०	६	१०	८		१०	१३३	५	४	
६	०	५	४	००	११	७	५	४						
७	०	६	२	६६	१२	८	०	०						
८	०	७	१	३३	१३	८	१०	८						
९	०	८	०	००	१४	९	५	४						
१०	०	८	१०	६६	१५	१०	०	०						
११	०	९	९	३३	१६	१०	१०	८						
					१७	११	५	४						
					१८	१२	०	०						
					१९	१२	१०	८						

अगर १ शि० ६ १/३२ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३३	१	०	१०	७	७७	१	१३	४	११	५६
१/१६	०	०	०	६६	२	१	५	३	५५	२	२६	९	११	७२
१/८	०	०	१	३३	३	१	१५	११	३३	३	३९	१४	१०	६९
१/४	०	०	२	६६	४	२	१०	६	११	४	५३	३	१०	७८
१/२	०	०	५	३२	५	३	५	२	८९	५	६६	८	९	८१
१	०	०	१०	६४	६	३	१५	१०	६६	६	७९	१३	९	३८
२	०	१	९	२९	७	४	१०	६	४४	७	९३	२	८	१४
३	०	२	७	९४	८	५	५	२	२२	८	१०६	७	८	५०
४	०	३	६	५९	९	५	१५	१०	००	९	११९	१२	८	०
५	०	४	५	२४	१०	६	१०	५	७८	१०	१३३	१	७	६३
६	०	५	३	८८	११	७	५	१	५५					
७	०	६	२	५३	१२	७	१५	९	३३					
८	०	७	१	१८	१३	८	१०	५	११					
९	०	७	११	८३	१४	९	५	०	८९					
१०	०	८	१०	४८	१५	९	१५	८	६७					
११	०	९	९	१३	१६	१०	१०	४	४५					
					१७	११	५	०	२२					
					१८	११	१५	८	००					
					१९	१२	१०	३	७८					

अगर १ शि० ६$\frac{1}{16}$ पेन्स एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{1}{32}$	०	०	०	३३	१	०	१०	७	५५	१	१३	४	७	१४
$\frac{1}{16}$	०	०	०	६६	२	१	५	३	११	२	२६	९	२	२८
$\frac{1}{8}$	०	०	१	३२	३	१	१५	१०	६७	३	३९	१३	९	४२
$\frac{1}{4}$	०	०	२	६५	४	२	१०	६	२२	४	५३	२	४	५६
$\frac{1}{2}$	०	०	५	३१	५	३	५	१	७८	५	६६	६	११	७०
१	०	०	१०	६३	६	३	१५	९	३४	६	७९	११	६	८५
२	०	१	९	२६	७	४	१०	४	९०	७	९३	०	१	९९
३	०	२	७	८८	८	५	५	०	४५	८	१०६	४	९	१३
४	०	३	६	५१	९	५	१५	८	०१	९	११९	९	४	२७
५	०	४	५	१४	१०	६	१०	३	५७	१०	१३२	१३	११	४१
६	०	५	३	७७	११	७	४	११	१२					
७	०	६	२	४०	१२	७	१५	६	६८					
८	०	७	१	०३	१३	८	१०	२	२४					
९	०	७	११	६६	१४	९	४	९	७९					
१०	०	८	१०	२९	१५	९	१५	५	३५					
११	०	९	८	९२	१६	१०	१०	०	९१					
					१७	११	४	८	४६					
					१८	११	१५	४	०२					
					१९	१२	९	११	५८					

अगर १ शि० ६, ३/३२ पेन्स एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३३	१	०	१०	७	३३	१	१३	४	२	७३
१/१६	०	०	०	६६	२	१	५	२	६७	२	२६	८	५	४७
१/८	०	०	१	३२	३	१	१५	१०	०१	३	३९	१२	८	२०
१/४	०	०	२	६५	४	२	१०	५	३४	४	५३	०	१०	९४
१/२	०	०	५	३०	५	३	५	०	६८	५	६६	५	१	६७
१	०	०	१०	६१	६	३	१५	८	०२	६	७९	९	४	४१
२	०	१	९	२२	७	४	१०	३	३५	७	९३	१३	७	१५
३	०	२	७	८३	८	५	४	१०	६९	८	१०६	१	९	८८
४	०	३	६	४४	९	५	१५	६	०३	९	११९	६	०	६२
५	०	४	५	०५	१०	६	१०	१	३६	१०	१३२	१०	३	३५
६	०	५	३	६६	११	७	४	८	७०					
७	०	६	२	२७	१२	७	१५	४	०४					
८	०	७	०	८९	१३	८	९	११	३७					
९	०	७	११	५०	१४	९	४	६	७१					
१०	०	८	१०	११	१५	९	१५	२	०५					
११	०	९	८	७२	१६	१०	९	९	३८					
					१७	११	४	४	७२					
					१८	११	१५	०	०६					
					१९	१२	९	७	३९					

अगर १ शि० ६ १/८ पैंस एक रुपयेकी दर हो

पैंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३३	१	०	१०	७	११	१	१३	३	१०	३४
१/१६	०	०	०	६६	२	१	[illegible]	२	२३	[illegible]	२६	७	८	६९
१/८	०	०	१	३२	३	१	१५	९	३५	३	३९	११	७	०३
१/४	०	०	२	६४	४	२	१०	४	४६	४	५२	१५	५	३७
१/२	०	०	५	९	५	३	४	११	५८	५	६६	३	३	७२
१	०	०	१०	५९	६	३	१५	६	७०	६	७९	७	२	०६
२	०	१	९	१८	७	४	१०	१	८२	७	९२	११	०	४१
३	०	२	७	७७	८	५	४	८	९३	८	१०५	१४	१०	७५
४	०	३	६	३७	९	५	१५	४	०५	९	११९	२	९	१०
५	०	४	४	९६	१०	६	९	११	१७	१०	१३२	६	७	४४
६	०	५	३	५५	११	७	४	६	२८					
७	०	६	२	१५	१२	७	१५	१	४०					
८	०	७	०	७४	१३	८	९	८	५२					
९	०	७	११	३३	१४	९	४	३	६४					
१०	०	८	९	९३	१५	९	१४	१०	७५					
११	०	९	८	५२	१६	१०	९	५	८७					
					१७	११	४	०	९९					
					१८	११	१४	८	११					
					१९	१२	९	३	४२					

अगर १ शि० ७ पेंस एक रुपयेकी दर हो

स	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३१
१/१६	०	०	०	६३
१/८	०	०	१	२६
१/४	०	०	२	५२
१/२	०	०	५	०५
१	०	०	१०	१०
२	०	१	८	२१
३	०	२	६	३१
४	०	३	४	४२
५	०	४	२	५२
६	०	५	०	६३
७	०	५	१०	७३
८	०	६	८	८४
९	०	७	६	९४
१०	०	८	५	०५
११	०	९	३	१५

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	१०	१	२६
२	१	४	२	५२
३	१	१४	३	७८
४	२	८	५	०५
५	३	२	६	३१
६	३	१२	७	५७
७	४	६	८	८४
८	५	०	१०	१०
९	५	१०	११	३६
१०	६	५	०	६३
११	६	१५	१	८९
१२	७	९	३	१५
१३	८	३	४	४२
१४	८	१३	५	६८
१५	९	७	६	९४
१६	१०	१	८	२१
१७	१०	११	९	४७
१८	११	५	१०	७३
१९	१२	०	०	००

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	१२	१०	१	२६
२	२५	४	२	५२
३	३७	१४	३	७८
४	५०	८	५	०५
५	६३	२	६	३१
६	७५	१२	७	५७
७	८८	६	८	८४
८	१०१	०	१०	१०
९	११३	१०	११	३६
१०	१२६	५	०	६३

अगर १ शि० ७$\frac{1}{32}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पें०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा-	द०
$\frac{1}{32}$	०	०	०	३१	१	०	१०	१	०६	१	१२	९	९	२८
$\frac{1}{16}$	०	०	०	६३	२	१	४	२	१२	२	२५	३	६	५६
$\frac{1}{8}$	०	०	१	२६	३	१	१४	३	१९	३	३७	१३	३	८४
$\frac{1}{4}$	०	०	२	५२	४	२	८	४	२५	४	५०	७	१	१२
$\frac{1}{2}$	०	०	५	०४	५	३	२	५	३२	५	६३	०	१०	४०
१	०	०	१०	०८	६	३	१२	६	३८	६	७५	१०	७	६८
२	०	१	८	१७	७	४	६	७	४४	७	८८	४	४	९६
३	०	२	६	२६	८	५	०	८	५१	८	१००	१४	२	२४
४	०	३	४	३५	९	५	१०	९	५७	९	११३	७	११	५२
५	०	४	२	४४	१०	६	४	१०	६४	१०	१२६	१	८	८०
६	०	५	०	५३	११	६	१४	११	७०					
७	०	५	१०	६२	१२	७	९	०	७६					
८	०	६	८	७०	१३	८	३	१	८३					
९	०	७	६	७९	१४	८	१३	२	८९					
१०	०	८	४	८८	१५	९	७	३	९६					
११	०	९	२	९७	१६	१०	१	५	०२					
					१७	१०	११	६	०८					
					१८	११	५	७	१५					
					१९	११	१५	८	२१					

अगर १ शि० ७१/१६ पेंस एक रुपयेको दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३१	१	०	१०	०	८६	१	१२	९	५	३१
१/१६	०	०	०	६२	२	१	४	१	७३	२	२५	२	१०	६२
१/८	०	०	१	२५	३	१	१४	२	५९	३	३७	१२	३	९३
१/४	०	०	२	५१	४	२	८	३	४६	४	५०	५	९	२४
१/२	०	०	५	०३	५	३	२	४	३२	५	६२	१५	२	५५
१	०	०	१०	०७	६	३	१२	५	१९	६	७५	८	७	८६
२	०	१	८	१४	७	४	६	६	०५	७	८८	२	१	१८
३	०	२	६	२१	८	५	०	६	९२	८	१००	११	६	४९
४	०	३	४	२८	९	५	१०	७	७९	९	११३	४	११	८०
५	०	४	२	३५	१०	६	४	८	६५	१०	१२५	१४	५	११
६	०	५	०	४३	११	६	१४	९	५२					
७	०	५	१०	५०	१२	७	८	१०	३८					
८	०	६	८	५७	१३	८	२	११	२५					
९	०	७	६	६४	१४	८	१३	०	११					
१०	०	८	४	७२	१५	९	७	०	९८					
११	०	९	२	७९	१६	१०	१	१	८४					
					१७	१०	११	२	७१					
					१८	११	५	३	५८					
					१९	११	१५	४	४४					

अगर १ शि० ७$\frac{१}{३२}$ पेन्स एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	३१	१	०	१०	०	६६	१	१२	९	१	३५
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	६२	२	१	४	१	३३	२	२५	२	२	७१
$\frac{१}{८}$	०	०	१	२५	३	१	१४	२	००	३	३७	११	४	०६
$\frac{१}{४}$	०	०	२	५१	४	२	८	२	६७	४	५०	४	५	४२
$\frac{१}{२}$	०	०	५	०२	५	३	२	३	३३	५	६२	१३	६	७७
१	०	०	१०	०५	६	३	१२	४	००	६	७५	६	८	१३
२	०	१	८	११	७	४	६	४	६७	७	८७	१५	९	४८
३	०	२	६	१६	८	५	०	५	३४	८	१००	८	१०	८४
४	०	३	४	२२	९	५	१०	६	०१	९	११३	२	०	१९
५	०	४	२	२७	१०	६	४	६	६७	१०	१२५	११	१	५५
६	०	५	०	३३	११	६	१४	७	३४					
७	०	५	१०	३९	१२	७	८	८	०१					
८	०	६	८	४४	१३	८	२	८	६८					
९	०	७	६	५०	१४	८	१२	९	३४					
१०	०	८	४	५५	१५	९	६	१०	०१					
११	०	९	२	६१	१६	१०	०	१०	६८					
					१७	१०	१०	११	३५					
					१८	११	५	०	०१					
					१९	११	१५	०	६८					

अगर १ शि० ७⅛ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३१	१	०	१०	०	४८	१	१२	८	६	४१
१/१६	०	०	०	६२	२	१	४	०	६४	२	२५	१	६	८२
१/८	०	०	१	२५	३	१	१४	१	४१	३	३७	१०	४	२३
१/४	०	०	२	५०	४	२	८	१	८८	४	५०	३	१	६४
१/२	०	०	५	०१	५	३	२	२	३५	५	६२	११	११	०५
१	०	०	१०	०३	६	३	१२	२	८२	६	७५	४	८	४७
२	०	१	८	०७	७	४	६	३	२९	७	८७	१३	५	८८
३	०	२	६	११	८	५	०	३	७६	८	१००	६	३	२९
४	०	३	४	१५	९	५	१०	४	२३	९	११२	१५	०	७०
५	०	४	२	१९	१०	६	४	४	७०	१०	१२५	७	१०	११
६	०	५	०	२३	११	६	१४	५	१७					
७	०	५	१०	२६	१२	७	८	५	६४					
८	०	६	८	३१	१३	८	२	६	११					
९	०	७	६	३५	१४	८	१२	६	५८					
१०	०	८	४	३९	१५	९	६	७	०५					
११	०	९	२	४३	१६	१०	०	७	५२					
					१७	१०	१०	८	००					
					१८	११	४	८	४७					
					१९	११	१४	८	९४					

अगर १ शि० ८ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	३	१	०	९	७	२	१	१२			
१/१६	०	०	०	६	२	१	३	२	४	२	२४			
१/८	०	०	१	२	३	१	१२	९	६	३	३६			
१/४	०	०	२	४	४	२	६	४	८	४	४८			
१/२	०	०	४	८	५	३	०	०	०	५	६०			
१	०	०	६	६	६	३	९	७	२	६	७२			
२	०	१	७	२	७	४	३	२	४	७	८४			
३	०	२	४	८	८	४	१२	९	६	८	९६			
४	०	३	७	४	९	५	६	४	८	९	१०८			
५	०	४	०	०	१०	६	०	०	०	१०	१२०			
६	०	४	९	६	११	६	९	७	२					
७	०	५	७	२	१२	७	३	२	४					
८	०	६	४	८	१३	७	१२	९	६					
९	०	७	२	४	१४	८	६	४	८					
१०	०	८	०	०	१५	९	०	०	०					
११	०	८	९	६	१६	९	९	७	२					
					१७	१०	३	२	४					
					१८	१०	१२	९	६					
					१९	११	६	४	८					

अगर १ शि० ८$\frac{५}{१६}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

०	रु०	आ०	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	२९
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	५९
$\frac{१}{८}$	०	०	१	१९
$\frac{१}{४}$	०	०	२	३९
$\frac{१}{२}$	०	०	४	७९
१	०	०	९	५८
२	०	१	७	१७
३	०	२	४	७५
४	०	३	२	३४
५	०	३	११	९२
६	०	४	९	५१
७	०	५	७	०९
८	०	६	४	६८
९	०	७	२	२[illegible]
१०	०	७	११	८५
११	०	८	९	४३

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	९	७	०२
२	१	३	२	०४
३	१	१२	९	०६
४	२	६	४	०८
५	२	१५	११	१०
६	३	९	६	१२
७	४	३	१	१४
८	४	१२	८	१६
९	५	६	३	१८
१०	५	१५	१०	२०
११	६	९	५	२२
१२	७	३	०	२४
१३	७	१२	७	२६
१४	८	६	२	२८
१५	८	१५	९	३०
१६	९	९	४	३२
१७	१०	३	११	३४
१८	१०	१२	६	३६
१९	११	६	१	३८

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	११	१५	८	४०
२	२३	१५	४	८१
३	३५	१५	१	२१
४	४७	१४	९	६२
५	५९	१४	६	०२
६	७१	१४	२	४३
७	८३	१३	१०	८३
८	९५	१३	७	२४
९	१०७	१३	३	६५
१०	११९	१३	०	०५

अगर १ शि० $८\frac{१}{१६}$ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ	पा	द०
$\frac{१}{३२}$	०	०	०	२९
$\frac{१}{१६}$	०	०	०	५९
$\frac{१}{८}$	०	०	१	१९
$\frac{१}{४}$	०	०	२	३९
$\frac{१}{२}$	०	०	४	७८
१	०	०	९	५७
२	०	१	७	१४
३	०	२	४	७१
४	०	३	२	२८
५	०	३	११	८५
६	०	४	९	४२
७	०	५	६	९९
८	०	६	४	५६
९	०	७	२	१३
१०	०	७	११	७०
११	०	८	९	२७

शि०	रु०	आ०	पा	द०
१	०	९	६	८४
२	१	३	१	६८
३	१	१२	८	५२
४	२	६	३	३६
५	२	१५	१०	२०
६	३	९	५	०४
७	४	२	११	८८
८	४	१२	६	७२
९	५	६	१	५६
१०	५	१५	८	४१
११	६	९	३	२५
१२	७	२	१०	०९
१३	७	१२	४	९३
१४	८	५	११	७७
१५	८	१५	६	६१
१६	९	९	१	४५
१७	१०	२	८	२९
१८	१०	१२	३	१४
१९	११	५	९	९८

पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१	११	१५	४	८३
२	२३	१४	९	६४
३	३५	१४	२	४९
४	४७	१३	७	२९
५	५९	१३	०	११
६	७१	१२	४	९३
७	८३	११	९	७०
८	९५	११	२	५७
९	१०७	१०	७	४०
१०	११९	१०	०	२२

अगर १ शि० ८ ३/३२ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	२९	१	०	९	६	६६	१	११	१५	१	२५
१/१६	०	०	०	५९	२	१	३	१	३३	२	२३	१४	२	५०
१/८	०	०	१	१९	३	१	१२	७	९८	३	३५	१३	३	७५
१/४	०	०	२	३८	४	२	६	२	६५	४	४७	१२	५	००
१/२	०	०	४	७७	५	२	१५	९	३१	५	५९	११	६	२५
१	०	०	९	५५	६	३	९	३	९७	६	७१	१०	७	५०
२	०	१	७	११	७	४	२	१०	६३	७	८३	९	८	७५
३	०	२	४	६६	८	४	१२	५	३०	८	९५	८	१०	००
४	०	३	२	२२	९	५	५	११	९६	९	०७	७	११	२५
५	०	३	११	७७	१०	५	१५	६	६२	१०	११९	७	०	५०
६	०	४	९	३३	११	६	९	१	२८					
७	०	५	६	८८	१२	७	२	७	९५					
८	०	६	४	४४	१३	७	१२	२	६१					
९	०	७	१	९९	१४	८	५	९	२७					
१०	०	७	११	५५	१५	८	१५	३	९३					
११	०	८	९	१०	१६	९	८	१०	६०					
					१७	१०	२	५	२६					
					१८	१०	११	११	९२					
					१९	११	५	६	५८					

अगर १ शि० ८⅛ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पेंस	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	२९	१	०	९	६	४८	१	११	१४	९	६९
१/१६	०	०	०	५९	२	१	३	०	९६	२	२३	१३	७	३७
१/८	०	०	१	१९	३	१	१२	७	४५	३	३५	१२	५	०६
१/४	०	०	२	३८	४	२	६	१	९३	४	४७	११	२	७१
१/२	०	०	४	७७	५	२	१५	८	४२	५	५९	१०	०	४४
१	०	०	९	५४	६	३	९	२	९०	६	७१	८	१०	[illegible]
२	०	१	७	०८	७	४	२	९	३९	७	८३	७	७	[illegible]
३	०	२	४	६२	८	४	१२	३	८७	८	९५	६	५	५१
४	०	३	२	१६	९	५	५	१०	३६	९	१०७	५	३	२०
५	०	३	११	७०	१०	५	१५	४	८४	१०	११९	४	०	८९
६	०	४	९	२४	११	६	८	११	[illegible]					
७	०	५	६	७८	१२	७	२	५	८१					
८	०	६	४	३२	१३	७	१२	०	२९					
९	०	७	१	८६	१४	८	५	६	७८					
१०	०	७	११	४०	१५	८	१५	१	२६					
११	०	८	८	९४	१६	९	८	७	७५					
					१७	१०	२	२	२३					
					१८	१०	११	८	७२					
					१९	११	५	३	२०					

अगर १ शि० ९ पेंस एक रुपयेकी दर हो

पे०	रु०	आ०	पा	द०	शि०	रु०	आ०	पा	द०	पौं०	रु०	आ०	पा	द०
१/३२	०	०	०	२८	१	०	९	१	७१	१	११	६	१०	२८
१/१६	०	०	०	५७	२	१	२	३	४२	२	२२	१३	८	५७
१/८	०	०	१	१४	३	१	११	५	१४	३	३४	४	६	८५
१/४	०	०	२	२८	४	२	४	६	८५	४	४५	११	५	१४
१/२	०	०	४	५७	५	२	१३	८	५७	५	५७	२	३	४२
१	०	०	९	१४	६	३	६	१०	२८	६	६८	९	१	७१
२	०	१	६	२८	७	४	०	०	००	७	८०	०	०	००
३	०	२	३	४२	८	४	९	१	७१	८	९१	६	१०	२८
४	०	३	०	५७	९	५	२	३	४२	९	१०२	१३	८	५७
५	०	३	९	७१	१०	५	११	५	१४	१०	११४	४	६	८५
६	०	४	६	८५	११	६	४	६	८५					
७	०	५	४	००	१२	६	१३	८	५७					
८	०	६	१	१४	१३	७	६	१०	२८					
९	०	६	१०	२८	१४	८	०	०	००					
१०	०	७	७	४२	१५	८	९	१	७१					
११	०	८	४	५७	१६	९	२	३	४२					
					१७	९	११	५	१४					
					१८	१०	४	६	८५					
					१९	१०	१३	८	५७					

वजनकी तालिका

(इ)स तालिकामें वाजार तौल और अङ्गरेजी तौलका फर्क दिखलाया गया है

मन	से.	छ	टन	ह०	का	पौं	औं	ड्रा	द०	टन	ह०	का	पौं	औं	मन	से	छ	द०
०	०	१	०	०	०	०	२	०	८५	०	०	०	०	१	०	०	०	४८
०	०	२	०	०	०	०	४	१	७०	०	०	०	०	२	०	०	०	९७
०	०	३	०	०	०	०	६	२	५६	०	०	०	०	३	०	०	१	४६
०	०	४	०	०	०	०	८	३	४१	०	०	७	०	४	०	०	१	९४
०	०	८	०	०	०	१	०	६	८२	०	०	०	०	५	०	०	२	४३
०	१	०	०	०	०	२	०	१३	६५	०	०	०	०	१०	०	०	४	८७
०	२	०	०	०	०	४	१	११	३०	०	०	०	१	०	०	०	७	७९
०	३	०	०	०	०	६	२	८	९६	०	०	०	२	०	०	०	१५	५८
०	४	०	०	०	०	८	३	६	६१	०	०	०	३	०	०	१	७	३७
०	५	०	०	०	०	१०	४	४	२६	०	०	०	४	०	०	१	१५	१६
०	६	०	०	०	०	१२	५	१	९२	०	०	०	५	०	०	२	६	६६
०	७	०	०	०	०	१४	५	१५	५७	०	०	०	१०	०	०	४	१३	९२
०	८	०	०	०	०	१६	६	१३	२२	०	०	०	२०	०	०	९	११	८४
०	९	०	०	०	०	१८	७	१०	८८	०	०	१	०	०	०	१३	१०	१८
०	१०	०	०	०	०	२०	८	८	५३	०	०	२	०	०	०	२७	४	३६
०	२०	०	०	०	१	१३	१	१	०६	०	१	०	०	०	१	१४	८	७२
०	३०	०	०	०	२	५	९	९	६०	०	२	०	०	०	२	२९	१	४५
[illegible]	०	०	०	०	२	२६	२	२	१३	०	३	०	०	०	४	३	१०	१८
[illegible]	०	०	०	१	१	२४	४	४	२६	०	४	०	०	०	५	१८	२	९०
[illegible]	०	०	०	२	०	२२	६	६	४०	०	५	०	०	०	६	३२	११	६३
[illegible]	०	०	०	२	३	०	८	८	५३	०	६	०	०	०	८	७	४	३६
[illegible]	०	०	०	३	२	१८	१०	१०	६६	०	७	०	०	०	९	२१	१३	०९
[illegible]	०	०	०	४	१	१६	१२	१२	८०	०	८	०	०	०	१०	३६	५	८१
[illegible]	०	०	०	५	०	१४	१४	१४	९३	०	९	०	०	०	१२	१०	१४	५४
[illegible]	०	०	०	५	३	१३	१	१	०६	०	१०	०	०	०	१३	२५	७	२७
[illegible]	०	०	०	६	२	११	३	३	२०	१	०	०	०	०	२७	१०	१४	५४
०	०	०	०	७	१	९	५	५	३३	२	०	०	०	०	५४	२१	१३	०९
०	०	०	०	१४	२	१८	१०	१०	६६	३	०	०	०	०	८१	३२	११	६३
०	०	०	०	२	०	०	०	०	००	४	०	०	०	०	१०९	३	१०	१८
०	०	०	०	९	१	९	५	५	३३	५	०	०	०	०	१३६	१४	८	७२
०	०	०	०	१६	२	१८	१०	१०	६६	६	०	०	०	०	१६३	२५	७	२७
										७	०	०	०	०	१९०	३६	५	८१

नीचे लिखी तालिकामें दिखलाया गया है कि यहाके प्रधान प्रधान बन्दरगाहोंपर मालके वजनका तथा उसपर लिये जानेवाले किरायेका क्या हिसाब रखा गया है—

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
सनाय (Aloes) अथवा सनायका अर्क		पीपामें ४० क्यूबिक फीट	पीपा या संदूकमें २० हण्डर		पीपामें ४० क्यू० फीट
फिटकरी (Alum)		बोरेमें १६ हण्डर	२० हण्डर	.	बोरेमें १६ ह०
पहननेके तैयार कपड़े (Apparel)	.	४० क्यूबिक फीट	५० क्यू० फीट	पे० ४० क्यू० फीट	पे० ४०क्यू०फीट
आरारोट		पेटीमें ४० ,,	पे० ५० ,,	,, ५० ,,	,, ४० ,,
बाजरी		बोरेमें १८ हण्डर	. .		बो० १८ ह०
बरिला (Barilla)	.	१६ हण्डर	२० हण्डर	.	१६ ह०
छाल	...		बोरेमें ६ ह०	२० हण्डर	
जव	२० हण्डर	बोरेमें १५ हण्डर			बो० १५ ह०
छोमी				२० हण्डर	.

म वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
	२० हण्डर	पेटीमें ४० क्यूबिक फीट	२० हण्डर	२० हण्डर ग्रोस	बोरेमें ४० क्यूबिक फीट
ती	२० हण्डर	बोरेमें १३ हन्डर	१८ हण्डर	२० हण्डर	बोरेमें १३ हंडर
तूस	•	सीधा चौकोर कुन्दा ४० क्यूबिक फीट			सीधा चौकोर कुन्दा ४० क्यूबिक फीट
चूरा	२० हण्डर	चूरा और धूल २० हण्डर चूरा बोरेमें (चेम्बरने जो किश्त निर्धारित कर दी है उसके अनुसार) २० हण्डर		हण्डी खड़ी और चूरा २० हण्डर	चूरा और धूल २० हण्डर पीसी हुई बोरेमें चेम्बरने जो किश्त निर्धारित कर दी है १७ ह०, १'५ ह० १८ हण्डर

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
हड्डी	पीसी हुई २० हण्डर या ५० क्यूबिक फीट (यह स्टीमरकी रुचिपर है)	पीसी हुई बोरेमें, चेम्बरके नियमके अनुसार (क) ११ हण्डर (ख) १४ हण्डर (ग) १७ हण्डर	..	—	खडी हड्डी
किनार्द	४० क्यूबिक फीट	४० क्यूबिक फीट	५० क्यूबिक फीट	५० क्यूबिक फीट	४० क्यूबिक फीट
सुहागा (Borax)	२० हण्डर	पेटीमें ४० क्यूबिक फीट बोरेमें १६ क्युबिक फीट	२० हण्डर पेटीमें ५० क्यूबिक फीट		पेटामें ४० क्यूबिक फीट बोरेमें १६ हन्डर
बातल (काली)				४० क्यूबिक फीट	

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करावी प्रति टन
कर (Bran)	१४ हण्डर	कसकर बोरेमें १० हण्डर बिना कसा बोरेमें ६ हण्डर	..	२० हण्डर	कसकर बोरेमें १० हण्डर बिनाकसा बोरेमें ६ हण्डर
धक (Brime stone)	.	...	२० हण्डर	२० हण्डर	.
भरका बाल	४० क्यूबिक फीट		—	—	
...के सींग	. .	बण्डलोंमें ६ हण्डर			बण्डलोंमें ६ हण्डर
...दी सोना	मूल्यके अनुसार	सेकडेपर	सेकडेपर	सेकडेपर	सैकडेपर
...र	पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	पेटीमें ४० क्यूबिक फीट	पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	पेटीमें ४० क्यूबिक फीट

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
बेत और छड़ी (Batton)	अगर जहाजके दोनों किनारोंपर खुली लादी जाय २० हण्डर	बण्डलोंमें १३ हण्डर	अगर जहाजके ऊपर दोनों किनारोंपर खुली लादी जाय २० हण्डर	अगर जहाजोंपर दोनों किनारोंपर खुली लादी जाय २० हण्डर	बण्डलोंमें १३ हण्डर
पोटाशकी राख	२० क्यूबिक फीट	—	.	.	—
दालचीनी	गाठमें ८ हण्डर सन्दूकमें ५० क्यूबिक फीट	बण्डलोंमें ४० क्यूबिक फीट	गाठमें ८ ह० सन्दूकमें ५० क्यू० फीट बोरेमें १० ह०	सन्दूकमें ८ ह०	बण्डलोंमें ४० क्यू० फीट
दरी	५० क्यूबिक फीट	.			
जावित्री (Cassia)	बोरेमें १२ हण्डर	छाल और कली ६० क्यू० फीट	सब शामिल ५० क्यू० फीट		— छाल और कली [illegible]

...नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
...ड़ी	१५ हण्डर	कानपुरी मोटे दाने तथा जिनमें इनका २ प्रति सैकड़ेसे अधिक मेल हो १० हं०, जिनमें कानपुरी का मेल २ प्रति सैकडेसे कम हो १३ हण्डर	१५ हण्डर	१५ हं०	१५ हं०
...त्रसम	५०, क्यूबिक फीट	८ ह०	..	..	८ ह०
मिर्चा (लाल)	(सूखा) बोरे या थण्डलोंमें ८ हण्डर		बोरेमें १२ हं० गाठमें १४ हं०	बोरेमें ८ हं०	..

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
गोखुल (Chinaroot)		पेटीमें ४० क्यू० फीट	बोरेमें ११ ह० सन्दूकमें ५० क्यू० फीट	बोरेमें ११ ह०	पेटीमें ४० क्यू० फीट
चिरेता	बण्डलोंमें ५० क्यू० फीट		५० क्यू० फीट	गाँठमें १६ ह०	—
चमड़ा क्रोम	२० हण्डर		.		
करनेका मशाला					
सिगार		४० क्यूबिक फीट	५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	४० क्यू० फीट
जावित्री	बोरेमें ८ हण्डर पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें ८ हण्डर	बोरेमें ८ हण्डर पेटीमें ५ ह०	बोरेमें ८ ह० ..	पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें ८ हण्डर
कोयला	२० हण्डर		२० ह०	२० ह०	२० हण्डर
कोकोआ		बोरेमें १० ह०	.		बोरेमें १० ह०
गिरीका तेल	...	११ हण्डर	...	...	११ हण्डर

…म वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
…ा	बोरेमें १८ रु०	बोरेमें १४ रु० पेटीमें ४० क्यू० फीट	बोरेमें १८ रु० पीपेमें १६ रु० पेटीमें १७ रु०	पीपेमें १६ रु०	पेटीमें ४० क्यू० फीट बो० १२ हण्डर
…लकी जटा	आटी १० हण्डर	गांठ ४० क्यू० फीट बण्डल या बिखरा ५ रु०	रस्सी और जटा कसी गाँठमें ५० क्यू० फीट	बंडल १० रु० बिखरा	गाठ ४० क्यू० फीट
…की रस्सी		आटी ४० क्यू० फीट		…	आटी ४० क्यू० फीट
…ा	२० हण्डर			…	
…	१२ हण्डर	गांठमें ८ रु०	बोरेमें १२ रु०	बोरेमें १४ रु०	गांठमें ८ हण्डर
…की खली	२० हण्डर	..			..
…		बिना तैयारी (नमूना नहीं) बोरेमें १६ रु०			बिना तैयारी (नमूना नहीं) बोरेमें १६ रु०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बंबई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
धनिया	१२ ह०		१२ ह०	—	
कपास	५० ह०	गाठमें ४० क्यू० फीट	गाठमें ५० क्यू० फीट	गाठमें ५० क्यू० फीट	गांठमें ४० क्यू० फीट
घेनउल		१३ हण्डर		घेनउलका तेल २१ ह० घेनउल १५ ह० घेनउलकी खली २० हण्डर ग्रोस	१३ ह०
सूत			५० क्यू० फीट		
सूती कपड़ा			५० क्यू० फीट		
फौडी	२० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें १६ ह०	२० ह० बोरेमें १७ ह०		पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें १६ ह०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
च) हीर	बोरेमें १८ ह० पेटीमें ५० क्यू० फीट कुलमें २० हं० से वजन अधिक न हो	बोरेमें या पेटीमें जो कसी न हो १३ ह०		पेटीमें २० ह० मोल बोरेमें १६ ह०	बोरे या पेटीमें जो कसी न हो १३ हं० ४० क्यू० फीट
लेंडर रोल वगैरह		४० क्यू० फीट	...		
खजूरका छोहारा	ओदा २० हं० सूखा १६ ह०	ओदा १६ हं० सूखा १३ ह०	ओदा २० ह० सूखा १६ हं०		ओदा १६ हं० सूखा १३ हं०
ाल	२० हं०	चूरा बोरेमें १७ हंडर	२० हं०	बोरेमें २० हं०	चूरा या कूटा हुआ बोरेमें १७ हण्डर

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
ड्रेगन्स ब्लड	•	पेटीमें ६० क्यूबिक फीट			पेटीमें ४० क्यू० फीट
आबनूस		सीधा चौकोर ४० क्यू० फीट नहीं तो १६ हं०	• •	•	सीधा चौकोर ४० क्यू० फीट नहीं तो १६ हं०
हाथी दांत		पेटीमें ४० क्यू० फीट ढेर १४ हण्डर बिखरा १६ ह०	ढेर १६ हंडर पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट ढेर २० हं०	पे० ४० क्यू० फीट बोझ १४ ह० बिखरा १६ हं०
मेथी		१७ हण्डर	•		१७ हं०
हर तरहके रेशे	• ५० क्यू० फीट		१६ हंडर खजूरके रेशे		
मछलीकी खाद			•		चेम्बरके नमूनेके अनुसार ६ ह०
	•	बोरेमें १८ हण्डर		बोरेमें २० हं०	१८ हण्डर

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
कुर्सी टेबुल		४० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	४० क्यू० फीट
लहसुन प्याज	१२ हण्डर	.	१२ हण्डर	१२ हण्डर	.
घी	..		..	..	पीपामें ४० क्यूबिक फीट
अंजीर	१६ हण्डर	सूखी पेटीमें ४० क्यू० फीट सूखी बोरेमें १० हंडर	बोरे या गाठमें १२ हण्डर पेटीमें ५० क्यू० फीट	बोरेमे १६ हन्डर	सूखी पेटीमें ४० क्यू० फीट सूखी बोरेमें १० हंडर
चना	२० हण्डर	बोरेमें १७ ह०	२० हण्डर	बोरेमें २० हण्डर	१७ हं०,
मूंगफली	.	छीली हुई १३ हंडर छिलकेदार ६ हण्डर	छीली हुई १६ हण्डर छिलकेदार १२ हं०	.	छीली हुई १२ हं० छिलकेदार ६ हं०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन नेट
गोंद	पेटीमें ५० क्यू० फीट	हर तरहका पे० ४० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	हर तरहका पे० ४० क्यू० फीट
गाजा	५० क्यू० फीट ५० क्यू० फीट या २० ह० (स्टीमरकी इच्छापर)		५० क्यू० फीट ५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट ५० क्यू० फीट	
	गाठ ५० क्यू० फीट	गाठ ४० क्यू० फीट बिना कसाया बंडल ६ ह०	गांठ ५० क्यू० फीट	गाठ ५० क्यू० फीट	गाठ ४० क्यू० फीट बिना कसाया बण्डल ६ ह०
चमड़ा और खाल	गांठ ५० क्यू० फीट गांठ ५० क्यू०	कसी गाठ ४० क्यू० फीट बिना कसी और छोटी गाठ ४० क्यू० फी०	खाल ५० क्यू० फीट	कसी गाठ ४० क्यू० फीट बिना कसी और छोटी गाठ ४० क्यू० फी०	

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
खुर और सींग	गाय और भैसके बिना घसे हुए २० रु० बोरे या बण्डलोंमें ५० क्यू० फीट हिरणके बोरे या बण्डलोंमें ५० क्यू० फीट	गाय और भैंसके सींग बिना कसे १३ रु० हिरणके सींग बिना बन्धे ६ रु० सींगके नोक १३ रु० भैंसके सींग बण्डलोंमें ६ रु०	२० रु० गाय और भैंसके सींग २० रु० हिरणकी सींग १६ रु० —	गाय और भैंसके सींग २० रु० — .. — —	गाय और भैंसके सींग १३ रु० हिरणके सींग बिना कसे ६ रु० हरतरहका १३ रु० भैंसके सींग बण्डलोंमें ६ रु०
हरताल			..		पेटीमें ४० क्यू० फीट
रबर	पेटीमें ५० क्यू० फीट	.		बोरेमें २० रु०	—

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
नील	५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट		पेटीमें ४० क्यू० फीट
लोहा		पुराना २० ह० रेल २० हं०	—	२० ह०	पुराना टुकरा २० हं० रेल या स्टील २० हं०
जगरी					१८ ह०
जवार		बोरेमें १८ ह०		—	बोरेमें १८ ह०
पाट	५० क्यू० फीट		गाँठ ५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	
सेमल सेमरका बीज	५० क्यू० फीट १५ हं०		—	—	१६ ह०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
लाह	बटन, बीज तथा छड और चपड़ा बोरेमें १६ ह० पेटीमें ५० क्यू० फीट किटी या तरछट बोरेमें २० ह० लाहका रंग पेटीमें ५० क्यू० फीट	लाहका रंग पीपे या पेटीमें ४० क्यू० फीट	लाहकी पट्टी बोरेमें १६ ह० लाहका रंग ५० क्यू० फीट दाना पेटीमें ५० क्यू० फीट बोरेमें १६ ह० चपड़ा पेटीमें ५० क्यू० फीट बोरेमें १६ ह० छड़ी पेटीमें ५० क्यू० फीट बोरेमें १६ ह०	लाहकी छड़ी बोरेमें १६ ह० चपड़ा पेटीमें ५० क्यू० फीट लाह पेटीमें ५० क्यू० फीट लाहका रंग ५० क्यू० फीट लाहकी बट्टी बोरेमें १६ ह०	लाहका रंग पीपेमें या पेटीमें ४० क्यू० फीट लाह बोरेमें १३ ह०
सूअरकी चर्बी	२० ह०	...	५० क्यू० फीट		..

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
चपड़ा	पेटी या गाठमें ५० क्यू० फीट	...	•	•	• •
मसूर	२० रु०			•	२० रु०
तीसी	२० रु०	बोरेमें १६ रु०	१८ रु०	२० रु०	बोरेमें १६ रु०
मशीनरी			२० रु०	२० रु०	बोरेमें १७ रु०
मगनीज	२० रु०	•	•		
धातु			२० रु०	२० रु०	•
भुट्टा, जोन्हरी				२० रु०	
सीरा	२० रु० ग्रोस			२ प रुन	
सीप	बोरे या पेटीमें २० रु०	पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें १६ रु०	२० रु० बोरेमें २० रु० पेटीमें ३० रु०		पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें १६ रु०
महुआ	कोयना (फल) २० रु०	महुआ १८ रु० कोयना बोरेमें १३ रु०			महुआ १८रु० कोयना बोरेमें १३ रु०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति नट नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
मटरकी दाल					१८ रु०
मंजीठ	रंग पेटीमें ५० क्यू० फीट	मदारकी जड़ पेटीमें या गांठ ४० क्यू० फीट बोरा या बंडलमें ८ रु०	५० क्यू० फीट	...	मदारकी जड़ पेटीमें या गांठमें ४० क्यू० फीट बण्डल या बो० ८ रु०
मुश्क		पेटीमें ४० क्यू० फीट			पेटीमें ४० क्यू० फीट
मसूर		बोरेमें २०			पेटीमें ४० क्यू० फीट
सरसों	२० रु०	१६ रु०	१८ रु०	२० रु०	१६ रु०
वहर्डा	समूचा या टुकड़ा १६ रु०	बोरेमें १३ रु० बोरेमें पीसा ११ रु० बुकनी १५ रु०	१७ रु०		बोरेमें १३ रु०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
कुचिला	बीज १६हण्डर	पेटीमें ४० क्यू० फीट बोरेमें १३ हं०	बोरेमें या पेटीमें १६ ह०		पेटीमें ५० क्यू० फीट बोरेमें १३ ह०
जई	१६ ह०	—	१२ हण्डर	१६ हण्डर	
तेल	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पीपेमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें २० हण्डर	पीपेमें ४ ह०	पेटीमें ४० क्यू० फीट
तेलहनकी खली	२० हण्डर	चूरा १६ हण्डर मशीनका दबाया गिरीके अति- रिक्त १७ हं० गिरीका १५ हं० टुकड़ा १२ हं० हरतरहकी खली १२ ह०	पूनक २० ह०	खली तेलहनकी २० हण्डर	खली चका बोरेमें १६ ह०

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	करांची प्रति टन
अफीम	प्रति पेटी	प्रति पेटी	.	.	प्रति पेटी
धान	१६ हण्डर	बोरेमें १३ ह०	बोरेमें १५ ह०	२० हण्डर	बोरेमें १३ ह०
मोम	...			पेटीमें २० ह०	.
मिर्च	लवग १२ ह० काली १४ हण्डर	बोरेमें १३ ह०	बोरेमें १६ ह०	.	.
पिग लोहा	२० हण्डर	...	...	..	..
पिग तांबा					
तख्ता	.	.	५० क्यूबिक फीट	५० क्यू० फीट	.
पोस्तादाना	२० ह०	१½ हंडरके बोरेमें १४ हण्डर जोड़ा बोरेमें (१½ हण्डरके) १३ हण्डर एकला बोरा (१⅛ हण्डर) १४ ह०: डबलबोरा (१⅛ हंडर) १४ ह०	१५ ह०	..	डबल बोरा (१½ हण्डर) १३ ह० सिङ्गल बोरा (१⅛ हण्डर) १५ ह० डबल बोरा (१⅛ हण्डर) १४ ह० बोरेमें (१½ ह०) १४ हण्डर

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
बिधरा				५० क्यू० फीट	
रेल लोहा फौलाद				५० क्यू० फीट	
राई	२० हं०	१६ हं०	१८ हं०	२० हं०	१६ हं०
लाल लकड़ी	चमड़ा रंगनेके लिये २० हं० या ५० क्यू० फीट	१३ हं०	चमड़ा रंगनेके लिये २० हं०		१३ हं०
चावल	२० हं०	बोरेमें १८ हं०	बोरेमें २० हं०	बोरेमें २० हं०	बोरेमें १८ हं०
चावलका आटा				२० हण्डर	
शराब			पीपेमें २१० गैलन	पीपेमें २ प चन	
कुसुम	२० हं० या ५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट	गांठमें ५० क्यू० फीट		४० क्यू० फीट
चर्बी		बोरेमें १३ हं०			१३ हं०
सबूदाना		पेटीमें ४० क्यूबिक फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बंबई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
निमक	२० हण्डर	२८ मन ८२$\frac{२}{७}$ पौं०	२० ह०	२० ह०	२८ मन ८२$\frac{२}{३}$ पौं०
सज्जी	२० हण्डर	२० हण्डर	२० हण्डर	२० हण्डर	२० हण्डर
चन्दन		६ हण्डर जड और चैली ७ हंडर	..		...
सार्सा परिला			५० क्यू० फीट		..
मुहरका चपड़ा		पेटीमें ४० क्यूबिक फीट	पेटीमें ५० क्यूबिक फीट	...	पेटीमें ४० क्यूबिक फीट
सुतुही घोंघा		बोरेमें १६ ह०	२० हण्डर	२० हण्डर	१६ हण्डर
रेशम	कच्चा बोरेमें ५० क्यू० फीट पेटी या गाठ ५० क्यू० फीट	गाट ८ हं० पेटीमें ४० क्यू० फीट	कच्चा गाठमें १० हण्डर तैयार कपड़ा ५० क्यू० फीट	रेशम पेटीमें ५० क्यू० फीट तैयार कपड़ा ५० क्यू० फीट	गाड ८ हंडर पेटीमें ४० क्यू० फीट

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रंगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
रेशम	छाटा हुआ ५० क्यू० फीट बसम ५० क्यू० फीट कपड़ा ५० क्यू० फीट			छाटा हुआ ५० क्यू० फीट कच्चा गाठ ५० क्यू० फीट	-
साबुन	बोरेमें १५ हन्डर पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट
चीनी	२० ह०	डबल बोरा १६ ह०	बोरेमें १५ हण्डर मय खजूरके बोरेमें २० हण्डर	बोरेमें २० ह०	बोरेमें १६ ह०
इमली	पेटी या पीपामें २० हण्डर	१५ हण्डर	पीपामें २० हंडर	पीपामें २० हंडर	१५ हंडर
चाय	५० क्यूबिक फीट पूरा १६ हण्डर	पेटीमें ४० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ५० क्यू० फीट	पेटीमें ४० क्यू० फीट

नाम वस्तु	कलकत्ता प्रति टन नेट	बम्बई प्रति टन	मद्रास प्रति टन नेट	रगून प्रति टन नेट	कराची प्रति टन
साल लकड़ी		चौकोर तख्ता ४० क्यू० फीट	..	गोला कुन्दा ५० क्यू० फीट	गोला कुन्दा ४० क्यू० फीट
लकड़ी	५० क्यू० फीट		५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	..
सुरती	गाठ या पेटी ५० क्यू० फीट	गाठ ५० क्यू० फीट	गाठ ५० क्यू० फीट	गाठ ५० क्यू० फीट	गाठ ४० क्यू० फीट
कछुएकी खोपड़ी	... ..	पेटी ४० क्यू० फीट	पेटी ५० क्यू० फीट	..	पेटी ४० क्यू० फीट
हल्दी	१६ हण्डर	बोरेमें ११ हण्डर	बोरेमें १४ ह०	.	बोरेमें ११ हण्डर
ट्वाइन धागा	पेटीमें ५० क्यू० फीट		.	.	...
गेहूं	२० हण्डर	१८ हण्डर	२० हण्डर	२० हण्डर	१८ हण्डर
शराब और स्पिरिट		पीपेमें पेटीमें ४० क्यू० फीट			पीपे और पेटीमें ४० क्यू० फीट
ऊन	५० क्यू० फीट	गाठ ४० क्यू० फीट	गांठ ५० क्यू० फीट	५० क्यू० फीट	४० क्यू० फीट
अन्य सामान जिनका नाम नहीं दिया गया है	५० क्यू० फीट या २० हण्डर		गाठ या पेटी ५० क्यू० फीट		..

नोट—प्रत्येक वस्तुकी प्रत्येक खानेमें जो वज़नकी दर दी गई है उतना या उतनेसे अधिक होनेसे पूरे टनका किराया लगता है, जैसे अगर बजरी बोरेमें कसकर भेजी जाय तो १८ हण्डर होनेसे बम्बई बन्दरगाहपर पूरा टनभरका भाडा ले लिया जायगा। अथवा मोम (शहदकी मक्खीका) बोरेमें भरकर लादा जाय तो ४० क्यूबिक फीटका भाडा एक टनके भाडेके बराबर होगा। एक फुट चौडा, एक फुट लंबा और एक फुट ऊंचा एक क्यूबिक फुटके बराबर हुआ।

हिन्दुस्थानकी प्रधान प्रधान रेलवे लाइनोंके नाम तथा मार्ग और प्रधान-प्रधान व्यापारके केन्द्र

रेलोंके नाम तथा उनका प्रधान स्थान।	कहां कहां होकर गई हैं तथा कौन कौन प्रधान नगर हैं
बेंगाल नागपुर रेलवे (कलकत्ता)	मध्यप्रान्तका पूर्वी भाग विहार और उडीसा होती हुई मद्रास प्रान्तके विजगापत्तम नगरतक गई है। प्रधान नगर—रायपुर, नागपुर, जबलपुर, अमरावती।
बम्बई बडोदा से ट्रल इण्डिया रेलवे (बम्बई)	बम्बई सूबाका उत्तरी भाग, मध्यभारत तथा राजपूतानाका दक्षिणी भाग। प्रधान नगर—सूरत भडोच, अहमदाबाद, मथुरा, दिल्ली।

रेलोंके नाम तथा उनका प्रधान स्थान।	कहां-कहां होकर गई हैं तथा कौन-कौन प्रधान नगर हैं।
* ईस्टर्न बङ्गाल स्टेट रेलवे (कलकत्ता)	पूर्वी बङ्गाल, आसामका उत्तर-पश्चिमी भाग, उत्तरी गंगाका मैदान, बङ्गालमें हिमालयतक। प्रधान नगर—नैहाटी, मुर्शिदाबाद, पबना, ग्वालन्दो, नरायनगंज।
* ईस्ट इण्डिया रेलवे (कलकत्ता)	पञ्जाबका दक्षिणी भाग, संयुक्त प्रांत, बिहार तथा पश्चिमी बङ्गाल। प्रधान नगर—मिर्जापुर, बनारस, इलाहाबाद, कटनी, कानपुर, आगरा, अलीगढ़, दिल्ली।
* ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे (बम्बई)	बम्बई सूबाका मध्यभाग, हैदराबाद, मध्यप्रान्तका मध्यभाग, मध्यभारत, संयुक्तप्रांतका दक्षिणी भाग, राजपूतानाके चन्द भाग। प्रधाननगर—पूना, रैचर, अहमदनगर, नासिक, शोलापुर, अकोला, अमरावती, नागपुर, जबलपुर, कटनी, ग्वालियर, आगरा।
मद्रास एण्ड सदर्न मरहट्टा रेलवे (मद्रास)	मद्रास सूबाका उत्तरीय तथा मध्य भाग, हैदराबादका थोडा भाग, बम्बई सूबा और मैसूरका दक्षिणी भाग। प्रधान नगर—बंगलोर, मैसूर, गुन्तकल, पूना, गन्तूर, बेजवाडा, इलोर, कोकोनाडा।
निजाम गारंटीड स्टेट रेलवे (सिकन्दराबाद)	हैदराबाद स्टेट। प्रधान नगर—बेजवाडा सिगरेनी, हैदराबाद।

रेलोंके नाम तथा उनका प्रधान स्थान	कहा कहा होकर गई हैं तथा कौन कौन प्रधान नगर हैं
* नार्थ वेस्टर्न रेलवे	सिन्ध, पञ्जाब, नार्थवेस्टर्न सीमाप्रान्त, बलूचिस्तान । प्रधान नगर—हैदराबाद [सिन्ध] लरकना, शिकारपुर, जको बाबाद, क्वेटा, रावलपिंडी, लाहोर, अमृतसर, लायलपुर ।
* अवध एण्ड रुहेलखंड रेलवे (लखनऊ)	संयुक्तप्रान्तका पूर्वी तथा मध्य भाग । प्रधान नगर-बनारस, लखनऊ,फैजाबाद अलीगढ़,मीरठ,सहारनपुर तथा देहरादून ।
साउथ इण्डियन रेलवे (त्रिचनापली)	दक्षिणी भारत, लंकातक गई है। प्रधान नगर—त्रिचनापली,मदुरा,सलेम, कोयम्बतूर, कालीकट तथा तूतीकोरिन ।
आसाम बंगाल रेलवे (चटगांव)	आसाम प्रान्त । प्रधान नगर—नारायन-गञ्ज, सिलहट, सिलचर, गौहाटी ।
बङ्गाल तथा नार्थ वेस्टर्न रेलवे	विहार और संयुक्तप्रान्त का उत्तरी भाग । प्रधान नगर—मुंगेर, गोरखपुर, इलाहाबाद ।
बर्मा रेलवे	उत्तरी तथा दक्षिणी बर्मा, प्रधान नगर —पेगू, किंगयान, मंडाले, बेसिन, मर्तबान [यहींसे मौलमीन जाना होता है]

* लाइनें हैं ।

रेलवे-संबंधी नियम

वाणिज्य-व्यापार सफलतापूर्वक चलानेके लिये इस बातकी आवश्यकता प्रतीत होती है कि रेलवेद्वारा माल भेजनेके कुछ नियमोंकी भी जानकारी हमें हो। बिना इसके हमारा कार-बार सुभांतिके साथ नहीं चल सकता और हमें अनेक तरहकी असुविधाओंका सामना करना पडता है। इसलिये प्रकरणमें रेलवेके कुछ नियम तथा महसूल-संबंधी कानून और रिस्क नोटपर कुछ शब्द लिखे जायेंगे। आशा है, इस प्रकरणमें हम जो कुछ लिखेंगे उससे हमारे व्यापारमें वडी सुविधा होगी और व्यापारियोंको पूरा लाभ होगा।

यहींपर एक बात और भी लिख देना चाहते हैं। इस प्रकरणको लिखनेमें हमने प्रधानतया ई० आई० आर० अर्थात् बडी लाइनके नियमोंका ही सहारा लिया है। इसके अलावा कई एक रेलवे लाइने हैं जिनके माल संबधी अलग नियम हैं। पर सभी रेलवे लाइनोंके नियम प्राय: एकसे हैं और एक दूसरेमें इतना कम अन्तर है कि उनपर अलग कुछ लिखनेकी आवश्यकता नही है।

१—कुल रेलोंमें स्टैण्डर्ड टाइम प्रचलित है जो कलकत्ता टाइमसे २४ मिनिट पीछे चलता है।

महसूल पार्सलसेः—

२—पार्सल गाड़ीका महसूल दो तरहसे लगाया जाता है,

जो रेलवे कम्पनीकी इच्छापर मुनहसर है। (क) वज़नके हिसाव से (ख) आयतनके हिसावसे।

नोट—आयतनके हिसावमें २ वर्गफीट १० सेरके वरावर माना जाता है।

(क) पार्सलसे माल भेजनेमें जितने वंडल रहेंगे प्रत्येक अलग समझे जायगे।

(ख)एक वर्ग फुट आयतनके पार्सलको ५ सेर मानकर उसके महसूलका हिसाव किया जाता है।

(ग)फल, शाक, तरकारी, सडनेवाली वस्तु तथा खलिया बोरा आदिका महसूल पहले ही दे देना पडता है। शेषका महसूल भेजनेवालेकी इच्छापर है।

(घ)प्रत्येक पार्सल्के साथ एक फारवार्डिंग नोट तैयार करके दाखिल करना पडता है, जिसमें भेजने और पानेवालेका नाम, पता तथा मालकी तादाद और कैफ़ियत रहती है।

(ङ) माल लगानेपर जो विल्टी या रसीद मिलती है उसके दाखिल करनेपर छुडानेवाले स्टेशनपर माल मिलता है। जिसके नाम माल भेजा हुआ रहता है अगर वह छुडाने न जाय तो विल्टीके पीछे लिखकर अपना हस्ताक्षर कर दे कि अमुक व्यक्तिको माल दे दिया जाय।

(च) अगर रसीद या विल्टी खो गई तो रेलवे कम्पनी आठ आनेके कागजपर (जिसे इण्डेम्निटी वांड Indemnity Bond कहते हैं) लिखवाकर माल छोड देती है। अगर माल सडनेवाली

साधारणत. यही पाच तरीके हैं जिनसे माल रवाना किया जाता और ऊपरके हिसाबसे किराया लिया जाता है, पर वजन जितना अधिक बढता जायगा तथा दूरी जितनी अधिक होती जायगी, किरायेकी दर उतनी ही कम होती जायगी।

शिड्यल रेट उसे कहते हैं जो क्लास रेट (अर्थात् जो रेट ऊपर दी गयी है) से कम हो।

मालगाडीमें १४ सेरसे कम वजनका चालान नहीं लिया जाता और आठ आनेसे कम महसूल भी नहीं लिया जाता।

एक स्टेशनसे यदि ५ तरहका भी माल मिलाकर ८१ मन हो जाय तो रेलवे-कम्पनी एक अलग वेगन दे देती है। इससे महाजनको बडो सुविधा होती है। इनसे कम वजनका माल ब्रेकमें जाता है। इसमें हर तरहके नुकसानियतकी सम्भावना रहती है। माल भी ठीक समयपर नहीं पहुचता, क्योंकि रास्तेमें अनेक स्थानोंपर उतराने चढानेमें माल गडबड हो जाता है। पूरी गाडी लेनेपर बडी लाइन ८६ मन और छोटी लाइन ५४ मनका किराया लेती है।

वापसी (Refund)

अगर किसी मालमें अधिक महसूल लगा लिया गया हो तो उसकी वापसीके लिये रेलवे अफसरोंके पास ६ मासके भीतर ही लिखा पढी करनी चाहिये।

अगर किसी मालका भूलसे कम वजन लिख दिया गया हो अथवा भूलसे कम महसूल लगाया गया हो तो माल छोडनेके

समय रेलवे फार्मवारी पूरा महसूल ले सकते हैं, पर ज्याद लिया रहनेपर वापस देते नहीं। छुडानेवालेको इस बातप सदा ध्यान रखना चाहिये कि अगर महसूल अधिक लगाय गया है तो वे छुड़ाते समय वापस ले सकते हैं।

मालमें अगर किसो तरहका नुकसान वगैरह हो तो माल वापस लेते समय रिमार्कके खानेमें सविस्तर विवरण लिख देना चाहिये और नीचे अपना हस्ताक्षर कर देना चाहिये। रेलवे-क्लार्क अनेक तरहकी बाधा उपस्थित करते हैं, पर कुछ सुनना नहीं चाहिये। ऐसा न करनेपर फिर बादको लिखापढी करना बेकार होता है। कहीं सुनवाई नहीं होती।

टर्मिनल चार्ज

खुदरा माल और किसी-किसी मालकी पूरी गाडीमें भी टर्मिनल नामका एक चार्ज महसूलके अलावा लगाया जाता है, जो कि स्पेशल और फर्स्ट क्लासकी जिन्सको छोडकर बाकी सबके ऊपर लगाया जाता है। इस टर्मिनल चार्जका रेट ६ पाई प्रति-मन है। एक दूसरे तरहका भी टर्मिनल चार्ज है जिसे शोर्ट-डिस्टेन्स टर्मिनल चार्ज कहते हैं। यह चार्ज उसी हालतमें लगता है-जब कि भेजा हुआ माल ७५ मीलसे कम दूरीपर जाता हो। इसके भीतर किसी मालपर ३ पाई और किसीपर ६ पाई लगता है।

ससे कम वजन और कम दूरीकी रेटसे भी कम हो तो उस
ालतमे उस कम महसूलका इस्तेमाल किया जा सकता है,
से "डिफरेंशल रेट"(Differential rate) कहते हैं। उदाहरण-
 लिये अगर किसी एक चीजका वजन ३४० मन हो और वह
०० मीलकी दूरीपर भेजी जाती हो तो उसका महसूल ३ पाईकी
रसे लगाया जायगा। पर इससे कमके लिये ६ पाई मन है।
ब मान लीजिये कि हम जो माल भेज रहे हैं वह ३३२ मन है
ौर १६६ मील जाता है। केवल थोडी कमीके लिये हमें
वल महसूल देना पडता है। ऐसी हालतमें डिफरेंशल रेटसे
हसूल लिया जाता है और भेजनेवालेको सुविधा दी जाती है।

कम्बाइण्ड रेट

अगर किसी मालके भेजनेकी रेट भेजनेवाले स्टेशनसे पहु-
नेवाले स्टेशनतक सीधा चालान देनेसे ज्यादा पडे पर
सके दरमियानी स्टेशनोंमें एकसे दूसरे स्टेशनतक कोई खास
िराया हो—जो कम हो—तो उस अवस्थामें भेजनेवाले स्टेशनसे
स स्टेशनकी जहांतक खास किराया हो—और उससे पहुंचनेवाले
टेशनतककी जो रेट हो उन दोनोंको जोडकर चार्ज करना चाहिये।
ही कम्बाइण्ड रेट है। उदाहरणके लिये भागलपुरसे दानापुर-
ी क्लास रेट चार आना मन है पर उसी चीजकी भागल-
रसे मोकामातक स्पेशल रेट डेढ आना है और मोकामासे
ानापुरतककी एक आना मन है। इस तरह भागलपुरसे दाना
रकी कम्बाइण्ड रेट $1\frac{1}{2}+1 = 2\frac{1}{2}$ आना हुई।

रिस्क-नोट

रेलवे कम्पनीका यह सबसे बड़ा हथियार है। इस हथियारकी बदौलत माल भेजनेवालोंको वह अन्धा बनाकर उनका हाथ-पैर बांध देती है और उन्हें हर तरहसे लाचार कर देती है। रिस्क नोटमें साधारण महसूलसे कम महसूल लगता है। इसलिये भेजनेवाले लालचमें पड़कर सदा रिस्क-नोटमें माल भेजनेके लिये तैयार रहते हैं। पर इसका फल उन्हें बहुत बुरा भोगना पड़ता है। इसका वर्णन आगे किया जायगा।

रिस्कनोट दो तरहके होते हैं —

(१) रेलवे रिस्क-नोट—जिस मालके नुकसानियतकी जिम्मेदारी रेलवे कम्पनी लेती है उसे रेलवे-रिस्क कहते हैं।

(२) ओनर्स रिस्क—जिस मालकी नुकसानियतकी जिम्मेदारी भेजनेवालेके सिर रहती है उसे ओनर्स-रिस्क कहते हैं।

ओनर्स-रिस्क कई तरहके होते हैं—

रिस्क-नोट फार्म (ए)—अगर कोई वस्तु इस लापरवाहीसे पैक की गयी हो अर्थात् सिली हो कि रास्तेमें उसके नुकसान हो जानेका भय हो तो रेलवे-कम्पनी इस रिस्क-नोटपर भेजनेवालेसे दस्तखत करा लेती है।

रिस्क-नोट-फार्म (बी)—कम महसूल देनेके प्रलोभनमें पड़कर भेजनेवाला महाजन जब मालके हर तरहकी नुकसानियतकी

जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता है और रेलवे कम्पनी रत्तीभर भी जिम्मेदार नहीं रहती, तब यह फार्म काममें लाया जाता है।

रिस्क-नोट फार्म (सी)—जो माल बन्द गाडीमें जाने लायक है और खुली गाडीमें जानेसे कुछ क्षतिकी सम्भावना है और भेजनेवाला अपनी मर्जीसे खुली गाडीमें भेजना चाहे तो उस अवस्थामें रेलवे-कम्पनी उस जिम्मेदारीसे बरी होनेके लिये यह रिस्कनोट लिखा लेती है।

रिस्क-नोट फार्म (डी)—भभकनेवाली या ऐसी कोई चीज साधारण भाडेपर भेजी जाता है तो रेलवे-कम्पनी इस फार्मपर दस्तखत करवा लेती है।

रिस्क-नोट फार्म (ई,एफ)—का इस्तेमाल जानवरोंके भेजनेमें होता है, जैसे हाथी, घोडा, ऊट, बैल, आदि।

रिस्क-नोट फार्म (जी,एच)—अगर माल भेजनेवाला हरएक वस्तुके लिये रिस्क नोट न लिखकर ६ मासके लिये लगातार बन्दोबस्त कर लेता है तो (डी) के स्थानपर (जी) फार्म भर दिया जाता है और (बी) के स्थानपर (एच) फार्म भर दिया जाता है।

रिस्क-नोट फार्म (एक्स)—का इस्तेमाल स्पिरिट,तेल आदिके लिये होता है।

रिस्क-नोट फार्म (वाई)—अगर एकबारगी ६ मासके लिये बन्दोबस्त करना हो तो (एक्स) की जगह (वाई) का प्रयोग होता है।

रिस्क-नोट

रेलवे कम्पनीका यह सबसे बड़ा हथियार है। इस हथियारकी बदौलत माल भेजनेवालोंको वह अन्धा बनाकर उनका हाथ-पैर बाध देती है और उन्हें हर तरहसे लाचार कर देती है। रिस्क नोटमें साधारण महसूलसे कम महसूल लगता है। इसलिये भेजनेवाले लालचमें पड़कर सदा रिस्क-नोटमें माल भेजनेके लिये तैयार रहते हैं। पर इसका फल उन्हें बहुत बुरा भोगना पडता है। इसका वर्णन आगे किया जायगा।

रिस्कनोट दो तरहके होते हैं —

(१) रेलवे-रिस्क-नोट—जिस मालके नुकसानियतकी जिम्मेदारी रेलवे कम्पनी लेती है उसे रेलवे-रिस्क कहते हैं।

(२) ओनर्स-रिस्क—जिस मालकी नुकसानियतकी जिम्मेदारी भेजनेवालेके सिर रहती है उसे ओनर्स रिस्क कहते हैं।

ओनर्स-रिस्क कई तरहके होते हैं —

रिस्क-नोट फार्म (ए)—अगर कोई वस्तु इस लापरवाहीसे पैक की गयी हो अर्थात् सिली हो कि रास्तेमें उसके नुकसान हो जानेका भय हो तो रेलवे-कम्पनी इस रिस्क-नोटपर भेजनेवालेसे दस्तखत करा लेती है।

रिस्क-नोट-फार्म (बी)— कम महसूल देनेके कर भेजनेवाला महाजन जब मालके

ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता है और रेलवे कम्पनी रत्तीभर भी ज़िम्मेदार नहीं रहती, तब यह फार्म काममें लाया जाता है।

रिस्क-नोट फार्म (सी)—जो माल बन्द गाडीमें जाने लायक है और खुली गाडीमें जानेसे कुछ क्षतिकी सम्भावना है और भेजनेवाला अपनी मर्जीसे खुली गाडीमें भेजना चाहे तो उस अवस्थामें रेलवे-कम्पनी उस ज़िम्मेदारीसे बरी होनेके लिये यह रिस्कनोट लिखा लेती है।

रिस्क-नोट फार्म (डी)—भभकनेवाली या ऐसी कोई चीज़ साधारण भाड़ेपर भेजी जाता है तो रेलवे-कम्पनी इस फार्मपर दस्तखत करवा लेती है।

रिस्क-नोट फार्म (ई,एफ)—का इस्तेमाल जानवरोंके भेजनेमें होता है, जैसे हाथी, घोडा, ऊंट, बैल, आदि।

रिस्क-नोट फार्म (जी,एच)—अगर माल भेजनेवाला हरएक वस्तुके लिये रिस्क नोट न लिखकर ६ मासके लिये लगातार बन्दोबस्त कर लेता है तो (डी) के स्थानपर (जी) फार्म भर दिया जाता है और (बी) के स्थानपर (एच) फार्म भर दिया जाता है।

रिस्क-नोट फार्म (एक्स)—का इस्तेमाल स्पिरिट,तेल आदिके लिये होता है।

रिस्क-नोट फार्म (वाई)—अगर एकबारगी ६ मासके लिये बन्दोबस्त करना हो तो (एक्स) की जगह (वाई) का प्रयोग होता है।

डिक्लेरेशन आफ गुड्स

मालके हरएक चालानके साथ भेजनेवालेका दस्तखती एक फारवर्डिंग नोट जिसमें मालकी तादाद, वजन, किस्म, कहा जायगा, किस भावमें जायगा,आदि बातें लिखी रहती हैं, दाखिल करना पडता है। यह छपा हुआ फार्म कुल माल-गोदामोंमें विना मूल्य मिलता है और माल मुहर्रिरको इसे बिना किसी फीसके भर देनेका हुक्म है। हर हालतमें भेजनेवालेका इसपर दस्तखत होना चाहिये।

माल भेजनेवालोंको फारवर्डिङ्ग नोटके विषयमें सावधान रहना चाहिये, क्योंकि सारा दारमदार इसीपर है। अगर फारवर्डिङ्ग नोटमें किसी तरहका गोलमाल हुआ तो मालकी जिम्मेदारी रेलवे कम्पनीपर नहीं रह सकती।

मारका

माल भेजनेवालेको हर एक बण्डलपर अपना मार्का साफ-साफ देना चाहिये,जिसमें रेलवेवालोंको माल पहचाननेमें किसी तरहकी कठिनाई न हो।

रेलवे कम्पनी रेलवे अहातेमें आये हुए मालकी तबतक जवाबदेह न होगी जबतक उस मालके लिये छपी हुई रसीद नहीं दी गई है, और मालका भार रेलवे-कर्मचारीने अपने ऊपर नहीं ले लिया है।

अगर नियत समयके भीतर माल नहीं छुडा लिया जाता है और न छुडानेके कारण किसी तरहकी खराबी या हानि आ जाती है तो रेलवे कम्पनी उसके लिये जिम्मेदार नहीं होती, पर इससे डिमारिजकी रेटमें किसी तरहका अन्तर नहीं पड सकता। डिमारिज हर हालतमें उसी तरह देना पडेगा।

अगर किसी दैवी घटनाके कारण जैसे आग, पानी, मालमें किसी तरहकी खराबी आ जाय तो रेलवे कम्पनी जवाबदेह नहीं है। इसी तरह अगर नाजुक चीजे —काच, शीशा आदि ठीक तरहसे पैक न की गई हों और टूट जाय तो रेलवे कम्पनी जवाबदेह नहीं है।

अनक्लेम्ड गुड्स

अगर कोई माल पहुचनेवाले स्टेशनपर एक मासतक पडा रहता है और उसका कोई दावीदार नहीं होता तो वह माल रेलवे-कम्पनीके "लास्ट प्रापर्टी आफिस" में भेज दिया जाता है और वहा ६ मासतक पडा रहता है। अगर ६ मासके भीतर भी उस मालका कोई दावीदार न हुआ तो अखबारोंमें दो सप्ताहकी सूचना निकालकर वह माल नीलाम कर दिया जाता है।

समाप्त

डिक्लेरेशन आफ गुड्स

मालके हरएक चालानके साथ भेजनेवालेका दस्तखती एक फारवर्डिंग नोट जिसमें मालकी तादाद, वजन, किस्म, कहा जायगा, किस भावमें जायगा, आदि बातें लिखी रहती हैं, दाखिल करना पडता है। यह छपा हुआ फार्म कुल माल गोदामोंमें विना मूल्य मिलता है और माल-मुहर्रिरको इसे बिना किसी फीसके भर देनेका हुक्म है। हर हालतमें भेजनेवालेका इसपर दस्तखत होना चाहिये।

माल भेजनेवालोंको फारवर्डिङ्ग नोटके विषयमें सावधान रहना चाहिये, क्योंकि सारा दारमदार इसीपर है। अगर फारवर्डिङ्ग नोटमे किसी तरहका गोलमाल हुआ तो मालकी जिम्मेदारी रेलवे कम्पनीपर नहीं रह सकती।

मारका

माल भेजनेवालेको हर एक वण्डलपर अपना मार्का साफ साफ देना चाहिये, जिसमें रेलवेवालोंको माल पहचाननेमें किसी तरहकी कठिनाई न हो।

- रेलवे कम्पनी रेलवे अहातेमें आये हुए मालकी तबतक जवाबदेह न होगी जबतक उस मालके लिये छपी हुई रसीद नहीं दी गई है, और मालका भार रेलवे-कर्मचारीने अपने ऊपर नहीं ले लिया है।

अगर नियत समयके भीतर माल नहीं छुडा लिया जाता है और न छुड़ानेके कारण किसी तरहकी खराबी या हानि आ जाती है तो रेलवे कम्पनी उसके लिये जिम्मेदार नहीं होती, पर इससे डिमारिजकी रेटमें किसी तरहका अन्तर नहीं पड सकता। डिमारिज हर हालतमें उसी तरह देना पडेगा।

अगर किसी दैवी घटनाके कारण जैसे आग, पानी, मालमें किसी तरहकी खराबी आ जाय तो रेलवे कम्पनी जवाबदेह नहीं है। इसी तरह अगर नाजुक चीजे —काच, शीशा आदि ठीक तरहसे पैक न की गई हों और टूट जाय तो रेलवे कम्पनी जवाबदेह नहीं है।

अनक्लेम्ड गुड्स

अगर कोई माल पहुचनेवाले स्टेशनपर एक मासतक पडा रहता है और उसका कोई दावीदार नहीं होता तो वह माल रेलवे-कम्पनीके "लास्ट प्रापर्टी आफिस" में भेज दिया जाता है और वहा ६ मासतक पडा रहता है। अगर ६ मासके भीतर भी उस मालका कोई दावीदार न हुआ तो अखबारोंमें दो सप्ताहकी सूचना निकालकर वह माल नीलाम कर दिया जाता है।

समाप्त

व्यापार-सङ्गठन

लेखक—पण्डित गौरीशङ्कर शुक्ल 'पथिक' बी० काम०

इस पुस्तकमें व्यापार-सम्बन्धी प्राय उन सभी विषयोंका वर्णन किया गया है जिनकी व्यापारियोंको हमेशा जरूरत रहा करती है। लिमिटेड कम्पनियोंके सङ्गठन तथा संचालन आदिके विषयका विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है तथा आयात व निर्यात (Export and Import)के कठिन विषयको समझानेकी पूरी चेष्टा की गयी । विक्रय कलापर भी बहुतसी ऐसी बातें लिखी गयी हैं जिन्हें जान लेना एक सच्चे व्यापारीके लिये बहुत आवश्यक है। अन्तमें समुद्री तथा आगके बीमेके सम्बन्धमें आवश्यकीय बातोंका विशद रूपसे वर्णन किया गया है। करीब ५५० पृष्ठकी सजिल्द पुस्तकका मूल्य केवल २) हरेक व्यापारीको इसकी एक प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिये।